नमो सुयदेवस्स

पंचम गणधर भगवत् सुधर्मा स्वामि-प्रणीत षष्ट आगम अंग

सचित्र
ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र

प्रथम भाग

(मूल पाठ-हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद सहित)

प्रधान सम्पादक

उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

सम्पादक

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

प्रकाशक

पद्म प्रकाशन

पद्मधाम, नरेला, दिल्ली-११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की तिरेसठवीं पावन दीक्षा जयन्ती पर प्रकाशित

सचित्र आगम माला का चतुर्थ पुष्प

* **सचित्र ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र**
(प्रथम भाग)

* **प्रधान सम्पादक** :
उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

* **सम्पादक** :
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

* **अंग्रेजी अनुवादक** :
सुरेन्द्र बोथरा

* **चित्रकार**
सरदार पुरुषोत्तमसिंह

* **प्रकाशक**

पद्म प्रकाशन
पद्मधाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

*

दिवाकर प्रकाशन
ए-७, अवागढ हाउस, एम. जी रोड,
आगरा-२८२ ००२ फोन ३५११६५

* **प्रथम आवृत्ति** :
वि स २०५३ चैत्र
ईस्वी सन् १९९६, मार्च

* **मूल्य** :
मात्र पाँच सौ रुपया

NAMO SUYADEVASSA

THE SIXTH AGAM-ANGA BY THE FIFTH GANADHAR, BHAGAVAT SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED
JNĀTĀ DHARMA KATHĀṄGA SŪTRA

(ORIGINAL TEXT WITH HINDI AND ENGLISH TRANSLATIONS)

Editor-in-Chief
UP-PRAVARTAK SHRI AMAR MUNI

Editor
SRICHAND SURANA 'SARAS'

PUBLISHERS
PADMA PRAKASHAN
PADMADHAM, NARELA, DELHI-110 040

Published on the occasion of the sixty third anniversary of the pious Diksha ceremony of Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj

THE FOURTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

* **Illustrated Jnātā Dharma Kathānga Sūtra**
(First Part)

* **Editor-in-Chief :**
Up-Pravartak Shri Amar Muni

* **Editor :**
Srichand Surana 'Saras'

* **Translator :**
Surendra Bothara

* **Illustrator :**
Sardar Purushottam Singh

* **Publishers :**
PADMA PRAKASHAN
Padmadham, Narela Mandi, Delhi-110 040

*

DIWAKAR PRAKASHAN
A-7, Awagarh House, M. G. Road,
Agra-282 002 Phone 351165

* **First Edition :**
Chaitra, 2053 Vikram
March, 1996

* **Price :**
Rupees Five Hundred only

सेवा, सरलता एवं समता मूर्ति
उत्तरभारतीय प्रवर्त्तक परम श्रद्धेय गुरुदेव
भण्डारी श्री पद्मचन्द्रजी म.
के पावन कर-कमलों में सविनय समर्पित
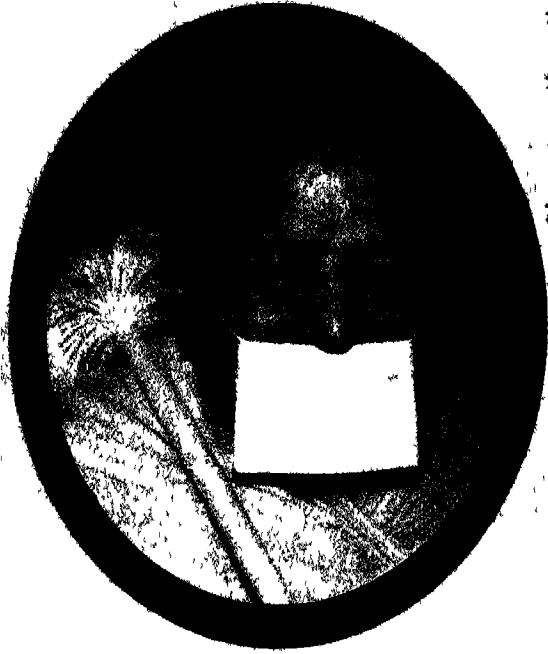
समर्पण
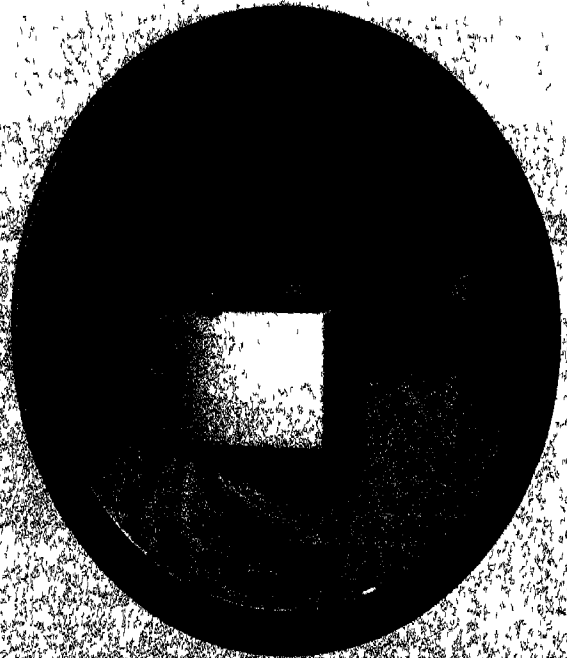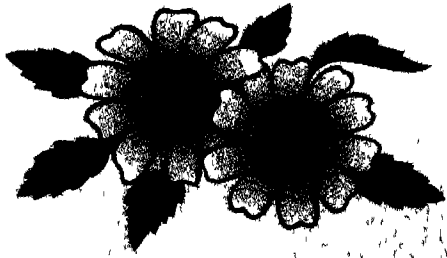
गुरुजनों का चरण सेवक
विनीत
अमर मुनि (उप प्रवर्त्तक)

वैराग्यशील आत्माओं की भागवती जैन दीक्षा दिनांक ४ फरवरी १९९६ को पश्चिम विहार, दिल्ली में सम्पन्न हुई ।

आपके दीक्षा प्रसंग पर शास्त्र–सेवा हेतु सहयोग प्राप्त हुआ तदर्थ धन्यवाद ।

श्री पुनीत जैन

कुमारी रजनी जैन

कुमारी हिमानी जैन

कुमारी शिवानी जैन

कुमारी यशा जैन

कुमारी निष्ठा जैन

कुमारी सलोनी जैन
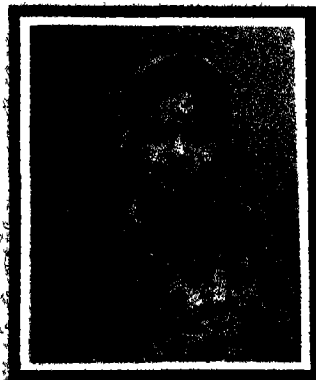
कुमारी संचिता जैन

कुमारी माधुरी जैन
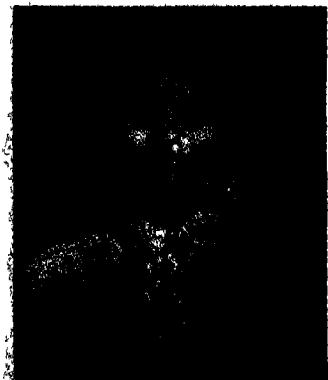
कुमारी भावना जैन

प्रकाशकीय

इस संसार में बुद्धिमान् और विद्वान् तो हजारों-लाखों मिलेंगे, परन्तु ज्ञानी बहुत कम मिलेंगे। ज्ञानी होने का मतलब है—जीव और जगत् के प्रति संतुलित ज्ञान तथा आत्मा-परमात्मा, जड़-चेतन, अध्यात्म और विज्ञान की सही समझ और सही वर्तना। वही संतुलित जीवन जी सकता है और दूसरों को भी जीवन की संतुलित शैली सिखा सकता है।

धर्मशास्त्र ज्ञान देता है, जीवन जीने की कला सिखाता है। इसलिए हम धर्मशास्त्र को कोरी पुस्तक या ग्रन्थ नहीं कह सकते, वह शास्त्र है और शास्त्र जीवन पर, मन पर शासन करने वाला होता है। इसलिए वह मानव का तृतीय नेत्र है। आज की भाषा में शास्त्र इंसान का ज़मीर है, आत्मा का विवेक है। और इसीलिए शास्त्र-स्वाध्याय का अपना खास महत्त्व है।

उ. भा. प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज सतत शास्त्र-स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहते हैं। धर्मशास्त्र घर-घर में पहुँचें, पढ़े जायें उनका स्वाध्याय हो—यही उनकी हार्दिक इच्छा है, जीवन की बहुत बडी अभिलाषा है। इसलिए वे पिछले तीस वर्षों से सतत प्रेरणा एवं प्रचार करते रहे हैं। शास्त्र प्रकाशन के क्षेत्र में उनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से लगभग ३० लाख रुपए से अधिक का साहित्य अब तक प्रकाशित/प्रचारित भी हो चुका है। यह हमारे लिए गौरव और प्रेरणा की बात है।

गुरुदेवश्री के प्रधान शिष्य, विद्वद्रत्न और प्रबल धर्म प्रचारक प्रवचन भूषण उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज इस दिशा में बड़े उत्साह और निष्ठा के साथ प्रयत्न कर रहे हैं। आपश्री के प्रयत्नों से पहले श्री प्रश्नव्याकरणसूत्र (दो भाग), श्री सूत्रकृतांगसूत्र (दो भाग), भगवतीसूत्र (चार भाग) हिन्दी व्याख्या सहित प्रकाशित हुए। फिर आपश्री ने आगमों के सचित्र प्रकाशन की योजना पर कार्यारम्भ किया, जिसके अन्तर्गत अब तक अन्तकृद्दशासूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, कल्पसूत्र एवं तीर्थंकर चरित्र (चित्रमय) प्रकाशित हो चुके हैं। अब ज्ञातासूत्र पाठकों के हाथों में है। हम चाहते हैं चित्रों में रुचि लेकर पाठक इन शास्त्रों का स्वाध्याय करें। चित्रों के कारण कठिन विषय भी सरल बन जाने के कारण उन्हें समझने में भी सुविधा रहेगी। सचित्र आगम प्रकाशन के क्षेत्र में गुरुदेवश्री के आशीर्वाद तथा उपप्रवर्त्तकश्री की सबल प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द जी सुराना इस शास्त्र-सेवा के कार्य में निष्ठापूर्वक संलग्न हैं और उनके सत्प्रयासों से यह कार्य सुचारु रूप में आगे बढ़ रहा है। शास्त्र-सेवा के इस बहुत ही खर्चीले कार्य में गुरुदेवश्री के अनेक श्रद्धालु भक्तजनों ने अपनी अन्तःकरण की प्रेरणा से उदारतापूर्वक सहयोग किया है और कर रहे हैं। अनेक विदुषी श्रमणियों ने भी इस कार्य में सद्गृहस्थों को प्रेरणा प्रदान कर सहयोग का हाथ-बढ़ाया है और हमारी योजना को बल प्रदान किया है। हम आप सभी के सहयोग, सद्भाव का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

हम अपने पाठकों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे स्वयं इन शास्त्रों को पढ़ें, दूसरों को पढ़ने की प्रेरणा देवें तथा विभिन्न ज्ञान भण्डारों, पुस्तकालयों आदि में भेंट करें ताकि अन्य लोग भी लाभ उठा सकें। विदेशों में बसे अपने प्रिय मित्रों को भी अमूल्य उपहार रूप में भेंट भेजे। इसी शुभभावना के साथ—

महेन्द्रकुमार जैन

PUBLISHERS NOTE

One may find thousands of intelligent and scholarly individuals in this world but it is hard to find even a few truly wise and sagacious ones Balanced knowledge of life and matter; right understanding of soul, super-soul (the God), living and non-living, spiritualism and science, and other such concepts; and moulding ones life accordingly makes a person truly wise or sagacious Only such an individual can lead a balanced life and inspire and guide others towards a balanced life style

Religious texts provide knowledge and teach the art of living As such, religious texts are not mere books, they are Shastras or that which rules over life and soul It is for this reason that they are known as the third eye of the humans In modern idiom Shastra is the morality and rationality of man That is why the study of Shastras is given so much importance.

U B Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj always inspires his followers to study Shastras. It is his earnest desire that religious texts reach every house and, more and more people read and study them In fact it is like an important ambition to him He has been working whole heartedly towards this goal for last thirty years Thanks to his inspiration and guidance that in the field of publication alone, a large sum of three million rupees has been spent till date.

These publications are not just dumped in godowns, as is generally done, but are widely distributed This is a matter of pride as well as encouragement for us

The principle disciple of Gurudev Shri, Up-pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj, who himself is a great scholar, strong propagator, and eloquent orator, is working hard in this direction with all sincerity and enthusiasm It was with his efforts that Shri Prashna-vyakaran Sutra (two volumes), Shri Sutra-kritanga Sutra (two volumes), and Shri Bhagavati Sutra (four volumes) were published. After this, he launched the project of publishing illustrated Agam literature. Under this project the already published works are—Illustrated Antakritdasha Sutra, Illustrated Uttaradhyayan Sutra, Illustrated Kalpa Sutra and Illustrated Tirthankar Charitra. We are now pleased to present the Jnata Dharma Katha Sutra to our readers.
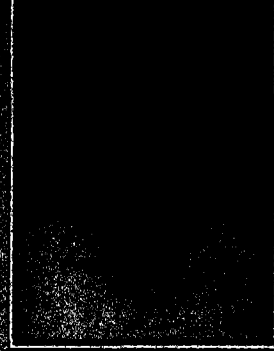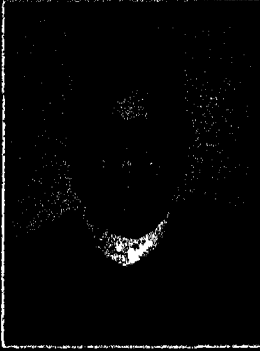
१ **ला प्रेमचन्द जी जैन,** ७, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-७

आप पूज्य गुरुदेव उ भा प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म एवं उप प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म के परम भक्त उदारमना सज्जन हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती जगमती जैन भी बडी भावनाशील श्राविका है। आपके सुपुत्र हैं श्री सतीश जैन, श्री सुनील जैन, श्री अशोक जैन एव श्री शिव जैन। आपका सभी परिवार बड़ा धर्मशील और सुसंस्कार सम्पन्न है। श्री पुनीत मुनि जी के धर्मपिता बनने का सौभाग्य भी आपको मिला है।

२ **श्री स्वरूपसिंह जी जैन (हलालपुर वाले) सुपुत्र स्व. श्री चन्दगीराम जैन ए-२/७, राणा प्रताप बाग दिल्ली-७**

दिल्ली में आपका भारत होजरी फैक्ट्री के नाम से अच्छा व्यवसाय है। आप पूज्य गुरुदेव प्रवर्तक श्री जी म. के सांसारिक भतीजे हैं। आपके सुपुत्र हैं, श्री अनिल जैन, सुनील जैन, अजय जैन, संजय जैन तथा आपकी तीन पुत्रियाँ हैं। आपका सभी परिवार गुरुदेव श्री के प्रति विशेष आस्थाशील है।

३ **लाला मानसिंह जी जैन (हलालपुर वाले) राणा प्रताप बाग, दिल्ली-७**

आपके सुपुत्र हैं—श्री विमलकुमार जैन, श्री ओमप्रकाश जैन, श्री [illegible] जैन। आप भाइयों ने अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में उदार सहयोग प्रदान कर [illegible] और गुरुभक्ति का परिचय दिया है।
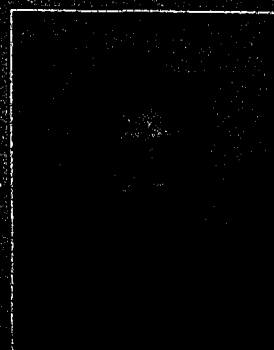
शास्त्र-सेवा में सहयोग देने वाले भाग्यशाली दानवीर गुरुभक्तों के चित्र एवं परिचय

१. श्री बिल्लुचन्द जी जैन
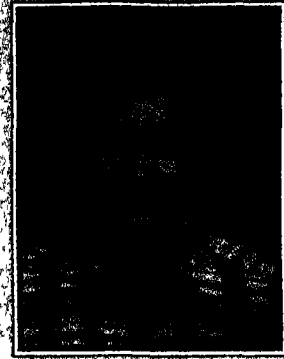
२. श्री अनिलकुमार जैन

१. **श्री बिल्लुचन्द जी जैन, ११५ अरिहंत नगर दिल्ली-२६**

आप बड़े ही धार्मिक विचारों के भावनाशील सज्जन हैं। गुरुदेव प्रवर्तक श्री के भक्त हैं। आपने अपनी स्व. धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी जैन की पुण्य स्मृति में शास्त्र-प्रकाशन में उदार सहयोग प्रदान किया है।

२ **श्री अनिलकुमार जैन** बी एस सी (ऑनर्स) (हलालपुर वाले) राणा प्रताप बाग, दिल्ली-७

आपश्री स्वरूपसिंह जी जैन के सुपुत्र है। आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त युवक हैं। पिताश्री के साथ तथा अपना स्वतत्र व्यवसाय सँभालते हुए धर्म एव समाज सेवा के कार्य में उत्साहपूर्वक सहयोग करते है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सासारिक पौत्र लगते हैं।

३. **श्री राजेशकुमार जी, सुपुत्र श्री सतपाल जी (पेहवावाले)**

आपके पिताश्री सतपाल जी गुरुदेव प्रवर्तक श्री जी के परम भक्त हैं। आप धर्मप्रेमी और परम सेवा भावी उदार सज्जन हैं। शास्त्र प्रकाशन, जन-सेवा और लोक कल्याण के कार्यों में लक्ष्मी का सदुपयोग करते रहते हैं। पिता के संस्कार पुत्रों में भी पल्लवित होते हैं। आप भी पिताजी की तरह उदार गुरुभक्त उत्साही युवक हैं।

४ **श्री मुन्नीलाल जी जैन, १४३-बी, वीर नगर, दिल्ली-७**

आप तपस्वी श्री बसन्तराय जी जैन के सुपुत्र हैं। बड़े सरल स्वभावी गुरुभक्त उदार हृदय के श्रावक है। शास्त्र प्रकाशन व संत सतियों की सेवा में भी तन-मन-धन से सहयोग-सेवा करते रहते हैं। गुरुदेव श्री के परम भक्त हैं।

३. श्री राजेशकुमार जी

४. श्री मुन्नीलाल जी जैन

It is our earnest desire that the reader studies these texts with the help of the illustrations. Even difficult and hard subjects are made simple and easy to comprehend with the help of illustrations. Blessings of Gurudev Shri and continued inspiration by Up-pravartak Shri have drawn the famous scholar Srichand ji Surana and his team into this project and with his earnest efforts it is progressing satisfactorily

In this high cost project, many of Gurudev Shri's devotees have generously contributed and continue to do so. Many scholarly Shraman's have extended a helping hand by inspiring devotees to contribute and thus bolstered our involvement in this project We gratefully welcome your good wishes and contributions and hope that it would continue in the future.

We expect from our readers that they read, inspire others to read these attractive and informative publications, and send these as gift to various libraries and other such centres so that many others may be benefitted. These books may also be sent to friends living abroad With the hope that you will respond—

Mahendra Kumar Jain
President, Padma Prakashan

आत्म-कथ्य

आत्मा को पवित्र और विशुद्ध बनाने वाला साधन है--धर्म। शुद्धि (उपादान--) की दृष्टि से धर्म का आधार है--आत्मा। किन्तु आत्म-शुद्धि के लिए साधना तप-जप आदि की क्रियाओं का सम्यक् ज्ञान होना भी जरूरी है, और उस ज्ञान का निमित्त कारण है--शास्त्र। धर्म ग्रन्थ।

प्रत्येक धर्म परम्परा में धर्म ग्रन्थों का पठन-पाठन-स्वाध्याय-श्रवण इसलिए किया जाता है कि उनसे साध्य का, साधनों का ज्ञान भी होता है और जिन महापुरुषों व सत्पुरुषों ने धर्माचरण द्वारा अपना कल्याण किया है उनका प्रेरक पवित्र जीवन दर्पण की भाँति हमारे सामने उपस्थित हो जाता है, जिससे धर्माचरण की क्रिया सुविधाजनक हो जाती है।

भगवान महावीर ने जो धर्मोपदेश दिया, आत्म-शुद्धि की साधना का मार्ग बताया, उन धर्म-वचनों का संकलित रूप आगम है। आगम वाणी उस समय की लोक-भाषा प्राकृत--अर्द्धमागधी में है। किसी समय अर्द्धमागधी जनता की बोलचाल की भाषा थी, परन्तु आज वह अनजान और कठिन भाषा बन गई है। इसलिए शास्त्र पढ़ने से लोग कतराते हैं और केवल उनका अनुवाद अपनी भाषा में पढ़कर ही संतोष कर लेते हैं।

भगवान महावीर के उपदेशों व तत्त्वज्ञान को विषयक्रम के अनुसार चार अनुयोगों में बाँटा गया है, जिनमें एक अनुयोग है--धर्म-कथानुयोग। कथा, उदाहरण, दृष्टान्त व रूपक के द्वारा उपदेश देना और धर्म का तत्त्व समझाना एक सरल और रोचक शैली है। इसलिए कथानुयोग की शैली सबसे अधिक रुचिकर व लोकप्रिय बनी है। कथानुयोग में जिन शास्त्रों/आगमों का नाम आता है उनमें ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र सबसे अधिक प्रसिद्ध, और सबसे अधिक रोचक तथा सबसे बड़ा है। यों तो अन्तकृद्दशासूत्र, उपासकदशांग, अनुत्तरोपपातिक, निरयावलिका, राजप्रश्नीय, विपाकसूत्र आदि भी कथा-प्रधान होने से कथानुयोग में ही गिने जाते हैं किन्तु ज्ञाताधर्मकथा सूत्र का स्थान कुछ विशेषता रखता है। इस सूत्र की भाषा अन्य आगमों की अपेक्षा अधिक प्रौढ़, साहित्यिक और लालित्यपूर्ण है। अन्य कथाओं की अपेक्षा इसकी कथाएँ भी अधिक रोचक और विश्वस्तर की हैं। ज्ञातासूत्र की कुछ कथाएँ तो बौद्ध साहित्य में, वैदिक ग्रन्थों व विदेशी कथा साहित्य में भी मिलती हैं। जैसे मेघकुमार की कथा जातक के नन्द की कथा से, दो कछुओं की कथा गीता की टीकाओं में तथा रोहिणी ज्ञात की कथा बाइबिल की मेथ्यू और लूक की कथा से काफी समानता रखती है। इससे यह प्रतीत होता है कि ज्ञातासूत्र की सैकड़ों कथाएँ धीरे-धीरे सम्पूर्ण विश्व साहित्य में रूपान्तरित हो गई हैं।

अन्तरंग परिचय

इस सूत्र का नाम ज्ञाता-धर्म-कथा है। जिस पर टीका करते हुए आचार्य श्री अभयदेवसूरि ने लिखा है–ज्ञात का अर्थ है उदाहरण और धर्मकथा से तात्पर्य है प्रसिद्ध धर्म कथाएँ। दोनों शब्द मिलकर बनता है–ज्ञात-धर्म कथा। किन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि यहाँ 'ज्ञात' शब्द प्राकृत शब्द 'नाय' से बना है। भगवान महावीर का एक नाम है ज्ञातपुत्र। नायपुत्त। यहाँ 'ज्ञात' शब्द भगवान महावीर की ओर संकेत करता है और तब इसका अर्थ होता है–ज्ञात-धर्म कथाएँ अर्थात् भगवान महावीर द्वारा कथित धर्म कथाएँ। यह अर्थ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। ज्ञाताधर्मकथा का सरल अर्थ यह भी कर सकते हैं कि ज्ञाता अर्थात् सर्वज्ञ, भगवान महावीर। उनकी कही हुई धर्म कथाएँ। ज्ञातासूत्र के दो श्रुतस्कंध हैं। प्रथम श्रुतस्कंध में १९ अध्ययन हैं जबकि दूसरे श्रुतस्कंध के १० वर्ग हैं।

प्रथम श्रुतस्कंध की सभी कथाएँ स्वयं उदाहरण हैं, और फिर उपनय के साथ विषय को अधिक संगति देती हैं। इन कथाओं के माध्यम से अनेक प्रकार की शिक्षाएँ, तत्त्वज्ञान, प्रेरणा और साधक के लिए मार्गदर्शन मिलता है।

सचित्र आगम प्रकाशन माला

तीन वर्ष पूर्व हमने पूज्य गुरुदेव उ. भा. प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की साठवीं दीक्षा जयन्ती मनाई थी। तब मेरे मन में सचित्र आगम प्रकाशन की भावना मूर्त्तरूप ले रही थी। उसी वर्ष मैंने प्रयोग के रूप में भगवान महावीर की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र का सचित्र सम्पादन प्रकाशन किया था। वह प्रयोग बहुत सफल रहा। सर्वत्र प्रशंसित हुआ और आगम के अध्ययन से दूर रहने वाले भी चित्रमय आगम होने से रुचिपूर्वक पढ़ने लगे। मेरे पास अनेक विद्वानों के, विज्ञ मुनिवरों के तथा अनेकानेक धर्म-प्रेमियों के पत्र आये और सभी ने इस प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। युग की इस आवश्यकता और उपयोगिता को देखकर हमने इस योजना को और आगे बढ़ाने का संकल्प किया। जिसके अन्तर्गत सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र, सचित्र कल्पसूत्र, सचित्र तीर्थंकर चरित्र प्रकाशित हुआ। और अब सचित्र ज्ञाताधर्मकथागसूत्र पाठकों के हाथों में पहुँच रहा है।

ज्ञातासूत्र काफी बड़ा होने से उसे दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम भाग में आठ अध्ययन लिए गये हैं। शेष दूसरे भाग में प्रकाशित होंगे।

इस सूत्र की सम्पादन शैली में थोड़ा परिवर्तन भी किया है। आमुख में सर्वप्रथम अध्ययन के शीर्षक का स्पष्टीकरण किया है जिससे अध्ययन का विषय ज्ञात हो सके तथा इसी के साथ कथा-सार भी दिया है।

मूल पाठ में सूत्र संख्या की कोई निश्चित परम्परा प्राचीन प्रतियों में नहीं अपनाई गई है अतः इस संस्करण में सूत्र संख्या कथा-प्रवाह की सुविधानुसार रखी गई है। मूल पाठ में अपेक्षाकृत लम्बे तथा संयुक्त शब्दों में संधि स्थलों पर विराम चिह्न (डैश) दिये हैं जिससे पठन तथा उच्चारण में सुविधा हो

मूल पाठ में वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक अंशों को अनेकानेक बार दोहराए जाने की शैली का प्रयोग हुआ है। अनुवाद में इन्हें यथासंभव सक्षिप्त किया है तथा 'पूर्वसम' आदि इंगितों का प्रयोग किया गया है। चित्रों को अधिक सुगमता से बोधगम्य बनाने के लिए चित्र-शीर्षक के स्थान पर प्रत्येक चित्र के पीछे तत्संबंधित कथा प्रसंग संक्षेप में दिया गया है।

अध्ययन के अन्त में विशेष शब्दों का स्पष्टीकरण एवं उपसंहार तथा टीका में आई हुई उपनय गाथाएँ भी ले ली हैं। इस प्रकार सम्पादन में सर्वांगता लाने का प्रयास किया है। टिप्पण एवं परिशिष्ट की शैली मुझे कम पसन्द है, क्योंकि उससे पाठक को इधर-उधर पृष्ठ उलटने पड़ते हैं। अत प्रत्येक अध्ययन से सम्बन्धित सभी सामग्री वहीं एक स्थान पर देने का प्रयास किया है। आशा है पाठकों को यह शैली अधिक सुन्दर व रुचिकर लगेगी।

कृतज्ञता प्रदर्शन

परम पूज्य गुरुदेव उ भा प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के असीम आशीर्वाद से सचित्र आगम प्रकाशन का यह कार्यक्रम निर्विघ्न रूप से गति पकड़ रहा है यह मेरे लिए परम प्रसन्नता का विषय है। इस प्रकाशन मे महासती जी तपचक्रेश्वरी उपप्रवर्तिनी श्री मोहनमाला जी म , उपप्रवर्तिनी डॉ सरिता जी म तथा अनेक गुरुभक्त उदार सद्गृहस्थों ने अपना सहयोग करके गुरुभक्ति और श्रुतभक्ति का परिचय दिया है। साथ ही शास्त्र-सेवा का पुण्य उपार्जन किया है। यह सभी के लिए अनुकरणीय है।

साहित्यकार श्रीचन्द जी सुराना ने सदा की भाँति इसके सम्पादन, मुद्रण मे अपनी सम्पूर्ण बौद्धिक-चेतना को नियोजित किया है तथा श्रीयुत सुरेन्द्र जी बोथरा ने सुन्दर सटीक अंग्रेजी अनुवाद के साथ संपादन सहयोग करके इसकी उपयोगिता मे चार चाँद लगाये हैं। मैं सभी के प्रति हार्दिक भाव से कृतज्ञ हूँ।

—अमर मुनि

NOTE FROM THE EDITOR-IN-CHIEF

The means of making the soul pious and pure is Dharma. The subjective basis of Dharma is soul. But in order to achieve the goal of purification it is essential to have the proper and working knowledge of the processes like penance, chanting, meditation, and other such practices The source of this knowledge are Shastra or religious scriptures.

In every religious tradition the reading, teaching, listening, and study of religious books is done for the purpose of acquiring knowledge about the means of upliftment and the goal; they also give us vivid description of the inspiring lives of great and pious souls who have attained high status with the help of religious conduct All this helps us follow the right path or proper conduct.

The religious teachings of Bhagavan Mahavir and the path of purification shown by him are compiled as Agams These scriptures are in the then prevailing language of the common man, Ardhamagadhi—Prakrit. Some time in the past, Ardhamagadhi was the most popular language of the masses, but today it has become a lesser known and so a difficult language. That is why people avoid reading original texts and are content with reading translations in the language they know

The teachings of Bhagavan Mahavir have been divided subject-wise into four categories titled Anuyog The first Anuyog or category is Dharma Kathanuyog or the category of religious stories To preach religion and explain its fundamentals with the help of stories, examples, instances, and metaphors is a simple and absorbing style As such, this category has proved to be the most accepted and popular one.

Of the works listed in this category the most famous, interesting, and largest is Jnata Dharma Kathanga Although Antakritdasha Sutra, Upasak-dashang, Anuttaropapatik, Niriyavalika, Rajprashniya, Vipak Sutra etc. are listed in this category, Jnata Dharma Katha Sutra occupies a very special place. The language of this scripture is mature, refined, and flowery. As

compared to the stories from other works those in this work are much more interesting and conforming to international standards

Some of the stories from Jnata Sutra have parallels in Buddhist, Vedic as well as foreign literature For example the story of Megh Kumar has a parallel in the story of Nand from the Jatak literature, the story of two tortoises has parallels in commentaries on Gita; the story of Rohini has similarities with stories of Methew and Luke from the Bible All this points toward the fact that many stories from Jnata Sutra have slowly spread all around the world and have been adapted and absorbed in the world literature

INTRODUCTION TO THE TEXT

There are two sections in the Jnata Sutra. The first section contains nineteen chapters and the second has ten sub-sections. The name of this work is Jnata Dharma Katha. Acharya Abhaya Dev Suri has commented on this term—Jnata means example and Dharma Katha means popular religious tales Both these combined mean—examples and religious tales Some scholars say that the word Jnata has been derived from the Prakrit word Naya One of the names of Bhagavan Mahavir is Naya-putta or Jnata-putra Here the word Jnata points towards Bhagavan Mahavir So according to this theory Jnata Dharma Katha means the religious stories told by Bhagavan Mahavir This interpretation appears to be more appropriate Another meaning is religious tales told by Jnata (omniscient or Bhagavan Mahavir)

All the stories in the first section are based on examples The verses drawing conclusion at the end of each story make it easy to grasp the lesson contained These stories impart moral values, knowledge of the fundamentals, inspiration, and guidance for spiritual practices

THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

Three years back we had celebrated the sixtieth anniversary of the Diksha ceremony of revered Gurudev U B Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji Maharaj At that time the plan for publication of illustrated Agams was taking shape in my mind. The very same year I launched and concluded the editing and publication of the last sermon of Bhagavan Mahavir, Illustrated Uttaradhyayan Sutra

The experiment proved to be highly successful. It was widely acclaimed and even the unwilling started studying the illustrated Agam with interest. I received numerous letters from scholars, scholarly ascetics, and devotees freely praising this effort I resolved to further this project looking at prevailing need and usefulness of such works. Illustrated Antakritdasha Sutra, Illustrated Kalpa Sutra, and Illustrated Tirthankar Charitra have already been published under this scheme. Now this Illustrated Jnata Dharma Kathanga Sutra is being released.

As the Jnata Sutra is a voluminous work, it is being published in two parts First part contains eight chapters. The remaining shall come in the second part

Some changes have been incorporated in the style of editing. A section has been added before every chapter. This contains explanation about the title and topic of the chapter and, gist of the story

In the old copies of the original text no established rule has been followed regarding the numbering of the paragraphs or Sutras. As such, freedom has been taken in numbering the paragraphs according to the flow of the story In the Prakrit text dash has been given to break the long combined words to facilitate reciting.

In the original text the descriptive and elaborative passages are repeated verbatim again and again. This appears to be the writing style of that period However, in the translation such passages have been made as brief as possible using the indicators like (etc.), (as mentioned earlier), etc. To make the illustration easily understandable relevant brief excerpts from the stories have been given on the back of every illustration.

At the end of the chapter a glossary, conclusion and the verses indicating the message of the story have been given. Thus effort has been made to use an all enveloping editing style. I do not like much the use of foot notes and appendices unless it becomes essential. This is because in that style of editing the reader has to suffer breaks while reading, by repeatedly referring to foot notes and turning pages to look for appendices. As such, effort has been made to provide all possible reference material with the chapter itself. I hope that the readers would appreciate and like this style

ACKNOWLEDGEMENTS

It is a matter of extreme pleasure for me that with the blessings of revered Gurudev U. B. Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji Maharaj the project of publication of illustrated Agam literature is gathering speed By extending whole hearted support to this publication Mahasati ji Tap-Chakreshwari, Up-Pravartini Shri Mohanmala ji M , Up-Pravartini Dr Sarita ji M. and many devoted and generous followers have revealed their devotion for the Guru and the word of the Lord Such gesture is exemplary and should be emulated by all.

As always, Srichand ji Surana, an author and scholar in his own right, has incorporated all his acumen in editing and printing this work Shri Surendra Bothara has added to its utility by providing a comprehensive free flowing English translation as well as assistance in editing I express my sincere gratitude to them all

—Amar Muni

विषयानुक्रम

CONTENTS

* * *

ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र

(प्रथम भाग)

Jnātā Dharma Kathānga Sūtra

(FIRST VOLUME)
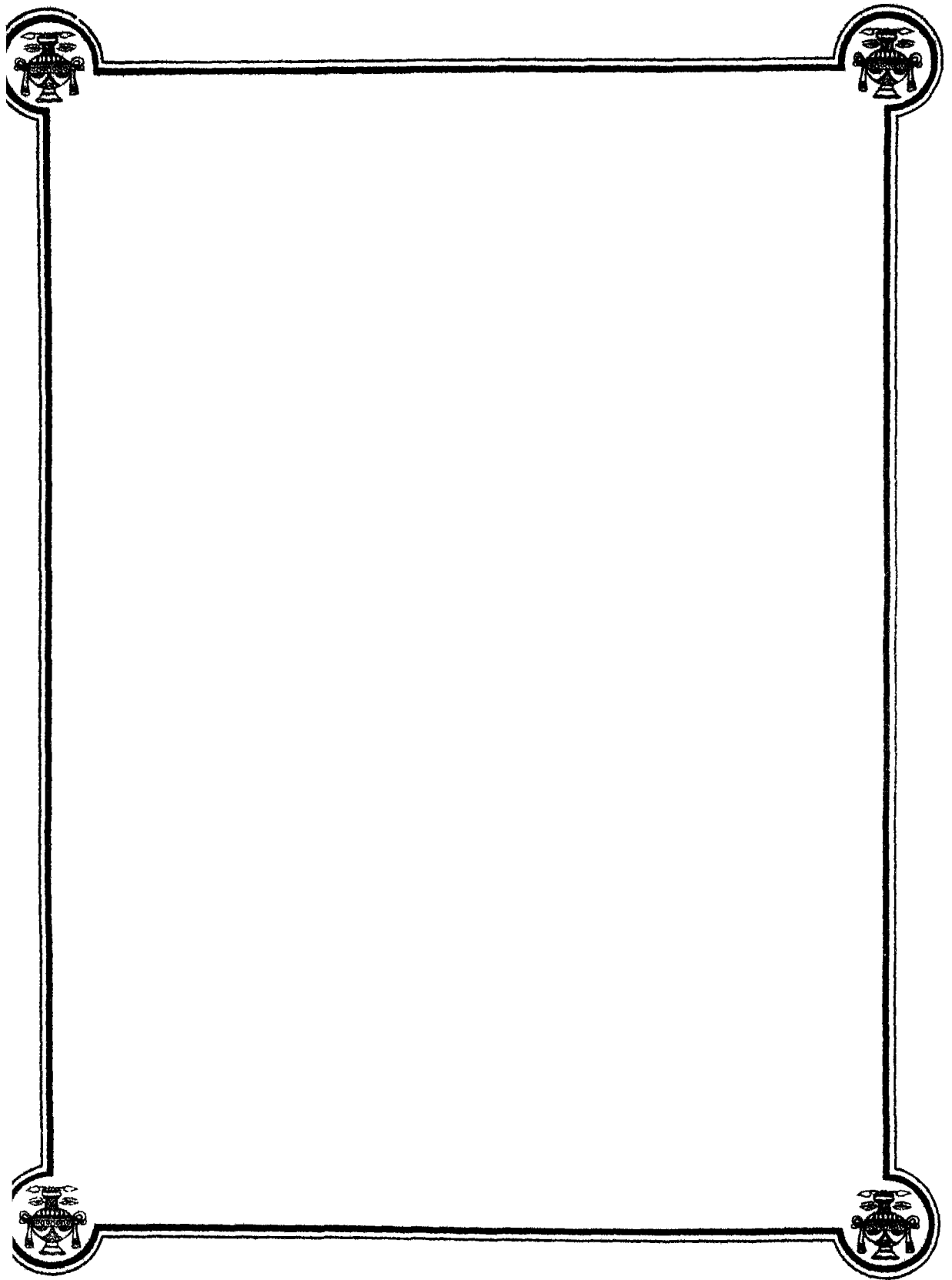
प्रथम अध्ययन : उत्क्षिप्त ज्ञात : आमुख

शीर्षक—उक्खित्ते—उत्क्षिप्त/उत्त्थित अर्थात् उठाया हुआ या उठा हुआ। यह एक स्थिति का नाम है जिसमे कोई वस्तु अपनी सामान्य स्थिति से उठ, किसी उच्च स्थिति में पहुँचकर स्थिर हो जाय। वह स्थिति पार्थिव भी हो सकती है, मानसिक भी तथा आत्मिक भी। इस कथा में ये सभी स्थितियाँ समन्वित हैं और उनका आधार है अन्त:प्रेरित करुणा। प्रत्येक आयाम में किसी उच्च स्थिति पर पहुँचना और उस स्थिति को बनाये रखना, इस भागीरथ प्रयत्न में करुणा की अनोखी महत्ता का बेजोड़ उदाहरण इस कथा मे प्रस्तुत किया गया है।

कथासार—राजगृह (मगध) के राजा श्रेणिक के नदा नामक रानी से अभयकुमार नाम का पुत्र था। वह अतीव बुद्धिमान् व मेधावी था तथा समस्त राज-काज का संचालन उसी के हाथ में था। राजा श्रेणिक के एक अन्य रानी थी जिसका नाम धारिणी था। वह एक रात अपने मुँह में एक श्वेत हाथी को प्रवेश करने का स्वप्न देख जाग पड़ी। राजा श्रेणिक तथा स्वप्नवेत्ता पण्डितों ने इस स्वप्न को एक तेजस्वी पुत्र-प्राप्ति का सकेत बताया।

धारिणी गर्भवती हुई और तीसरे महीने में उसे असमय मेघ तथा वर्षाकाल में वन-उद्यानादि में भ्रमण का आनन्द लेने का दोहद उत्पन्न हुआ। धारिणी ने श्रेणिक राजा से दोहद की बात कही। असमय में वर्षाकाल की सभावना न होने से चिन्तित राजा ने अपने मेधावी पुत्र अभयकुमार से सारी बात कही। अभयकुमार ने पिता को आश्वस्त किया और अपने पूर्व-जन्म के मित्र एक देव का आह्वान कर उससे सहायता माँगी। देव ने अकाल मेघ तथा वर्षाऋतु की दैवी रचना कर धारिणीदेवी का दोहद पूरा करवाया।

यथा समय धारिणीदेवी ने पुत्र प्रसव किया और अकाल मेघ के दोहद से सूचित होने के कारण राजा ने उसका नाम मेघकुमार रखा। कुमार धीरे-धीरे बढ़ने लगा। यथा समय उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई और युवा होने पर आठ सुन्दर राज-कन्याओं के साथ विवाह कर दिया गया।

एक बार श्रमण भगवान महावीर राजगृह पधारे। जन-समूह उनका उपदेश सुनने उमड़ पड़ा। मेघकुमार भी सूचना प्राप्त होने पर उनका उपदेश सुनने गया। भगवान के वचन सुन मेघ को वैराग्य उत्पन्न हुआ और उसने दीक्षा लेने का निर्णय लिया। मेघ अपने माता-पिता से अनुमति लेने गया तो उन्होने उसे बहुत समझाने की चेष्टा की कि गृहस्थ जीवन के सभी आनन्द भोगने के बाद दीक्षा लेने का विचार करे। पर मेघ अपने निर्णय पर अटल रहा और अन्तत: दीक्षा ले ली।

श्रमण जीवन के प्रथम दिन ही मेघ असुविधाओं के कारण विचलित हो गया। रात्रि को उसकी शय्या द्वार के निकट लगी थी और अपने-अपने कार्य से आते-जाते अन्य श्रमणों के पाँव आदि छू जाने से उसे रात भर नीद नही आई। विचलित मेघकुमार भगवान महावीर के पास आया। उसकी चंचल मनोदशा देखकर भगवान महावीर ने स्वयं ही उसकी समस्या बताई और साथ ही उसके पूर्व-जन्म की कथा सुनाई।

-इस भव से तीसरे पूर्व-भव में मेघकुमार ने हाथी के रूप में जन्म लिया था। भयंकर दावानल से त्रसित अपनी प्यास बुझाने वह गजराज तालाब में उतरा तो उसमें रहे दलदल में फँस गया। ऐसी स्थिति में उसे एक तरुण शत्रु हाथी ने अपने पैने दाँतों से छेद दिया। मृत्यु-पश्चात् वह जीव पुन एक गजराज के रूप में जन्मा। एक बार दावानल को देख उसे पूर्व-जन्म के अनुभव का आभास हुआ और उसने अपने दल सहित नदी के तट पर एक विशाल क्षेत्र को वृक्ष व घास-फूस आदि जलने वाले पदार्थों से विहीन कर सुरक्षित मंडल तैयार कर लिया।

एक बार जब पुन भीषण दावानल प्रज्वलित हुआ तो भयभीत गजराज अपने दल सहित उस क्षेत्र की ओर भागा। वहाँ पहले से ही भयभीत वन-चर ठसाठस भरे पड़े थे। गजराज भी जैसे-तैसे उस भीड़ में घुसा और जहाँ स्थान पाया वहीं खडा हो गया। कुछ देर बाद उसने शरीर खुजाने को अपना एक पैर उठाया तो उस स्थान पर एक भयभीत खरगोश दुबक गया। गजराज ने यह देखा तो उसके हृदय में करुणा/अनुकम्पा का भाव उमड़ पडा। अनुकम्पावश उसने अपना पैर उठाये ही रखा। वह दावानल अढाई दिन में शात हुआ और तब सारे पशु उस सुरक्षित स्थान से बाहर चले गये। गजराज ने भी वहाँ से प्रस्थान के लिये जब अपने उठे हुए पैर को धरती पर टिकाने की चेष्टा की तो थकान और जकड़न के मारे वह धरती पर गिर पडा। तीन दिन तक असह्य वेदना भोगने के पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। करुणा से पवित्र हुई शुद्ध भावनाओ द्वारा जो कर्म बन्धन हुआ उसके फलस्वरूप वह जीव मेघकुमार के रूप में जन्मा।

पूर्व-जन्मों की यह कथा सुनाकर भगवान ने मेघकुमार से कहा कि जब पशु के रूप मे करुणा से प्रेरित हो एक नन्हे-से खरगोश की असुविधा का भी ध्यान रखने की सामर्थ्य उभरी थी तो आज क्या हुआ है? ज्ञानवान, बुद्धिमान् तथा गुणवान मनुष्य रूप में भी क्या श्रमणो द्वारा प्राप्त तनिक-सी असुविधा से विचलित हो जाना उसे शोभा देता है? सज्ञान तितिक्षा से कर्म निर्जरा करना महान् फलदायी होता है।

प्रभु के इस उलाहने ने मेघकुमार की आँखे खोल दीं। उसे पश्चात्ताप हुआ और अतीत के ऊहापोह में लीन उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। पूर्व-भव की सभी बाते चलचित्र की भाँति स्पष्ट हो गईं। उसने अपने आपको संयम में स्थिर किया तथा यह व्रत लिया कि अपने नेत्रों के अतिरिक्त समस्त शरीर को श्रमणो की सेवा में अर्पित कर देगा। इसके बाद मेघकुमार ने सभी अग-शास्त्रो का अध्ययन किया और तीव्र तपस्या करते हुए आयुष्य पूर्ण कर अनुत्तर देव लोक मे जन्म लिया। वहाँ की आयु पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर वह जीव मोक्ष प्राप्त करेगा।

FIRST CHAPTER : UTKSHIPTA JNATA : INTRODUCTION

Title—Utkshipta Jnata or "the tale of the elevated" The word Utkshipta means elevated or raised It indicates a condition where a thing rises from its normal state to a higher state and remains there The context may be physical, mental or spiritual This story includes this elevated state in all these three contexts and the

inspiring cause is inherent compassion In the herculean task of rising and remaining in that elevated state this feeling of compassion plays a unique and important role. This story vividly highlights that role.

Gist of the Story—King Shrenik and queen Nanda of Rajagriha (Magadh) had a son named Abhay Kumar He was extremely intelligent and worldly wise On behalf of King Shrenik he managed all the affairs of the state King Shrenik had another beautiful queen whose name was Dharini One night she saw a dream of a giant white elephant entering her mouth, and got up King Shrenik and the dream-diviners interpreted that Queen Dharini will give birth to a brilliant son

Queen Dharini became pregnant and during the third month of pregnancy she had a desire to enjoy untimely monsoon She informed King Shrenik When the king could not come up with any solution he was frustrated and worried He told everything to his able son Abhay Kumar, who assured the king, invoked a friendly god and sought his help This god created an enchanting atmosphere of untimely monsoon and fulfilled the queen's desire

In due course Dharini gave birth to a child who grew into a healthy and intelligent youth After proper education he was married to eight beautiful princesses

Shraman Bhagavan Mahavir once arrived in Rajagriha city Finding about the arrival of Shraman Bhagavan Mahavir, throngs of people came to pay homage to him and listen to his discourse Megh Kumar also came there The profound and inspiring discourse of Bhagavan Mahavir evoked feelings of detachment in Megh Kumar He decided to get initiated into Mahavir's order King Shrenik and Megh Kumar's mother tried instilling fear and antipathy for ascetic discipline But the awakened spirit is never afraid of any hurdle or pain Accepting his request Shraman Bhagavan Mahavir initiated Megh Kumar into the order

On the very first night, being the junior most, Megh Kumar was allotted the last place, near the gate, to sleep During the night, for their essential duties, many ascetics kept on going out and coming back Disturbed by all the commotion of this perambulation Megh Kumar could not sleep a wink throughout the night Next morning he went to Shraman Bhagavan Mahavir who became aware of Megh's problem without his telling To pacify his inner turmoil Bhagavan narrated a story—

"Megh! Once upon a time in the valley of the Vaitadhya mountain there lived a giant elephant named Sumeruprabh Once, driven by a forest-fire and, in search of water it entered a large pond and was caught in the swamp Just at that moment another strong and young elephant arrived and driven by a feeling of animosity from the past, it pierced Sumeruprabh's back with its sharp tusks The elephant died suffering

In the next life it was born a red elephant named Meruprabh in the valley of the Vindhyas Once, seeing a forest fire it recalled the experience from its last birth It marked a large area of one Yojan and with the help of the herd cleared it of all combustible things like dry leaves, logs, etc in order to take refuge in some such contingency During the next summer once again a terrible forest-fire started To save itself, the red elephant rushed towards the arena that it had cleared In that arena numerous animals had already taken refuge When the red elephant reached there it also squeezed in and stood where it found a little space

"After some time it lifted one of its legs to scratch some itching part of its body At that instant a small rabbit crept in and occupied that space When the elephant wanted to put back its leg on the ground it found that a tiny rabbit is occupying that space The realization that its leg would crush the rabbit to death overwhelmed it with compassion Instead of putting its feet back on the ground the elephant kept it lifted As a result of its pure feeling of compassion it reduced the period of the cycle of rebirths and also earned a human-life-span

"The forest fire burned for two and a half days By then the elephant was completely exhausted With the desire to rush away from that place, as soon as it stretched its cramped leg it toppled and fell on the ground It suffered excruciating agony for three days and died From there it descended into the womb of queen Dharini in this town of Rajagriha Megh! You were that elephant in your earlier life

"Megh! Just consider this that in the life you spent as an animal you were still inspired by the compassion for living beings In this life as a human being though you have disciplined your senses, the very first night you have failed to tolerate even the slightest of inconveniences The good deed from the life as an animal has pushed you towards spiritual light, do not be driven back to darkness by the infirm mundane attitude Wake up, and know that tolerance inspired by purity of purpose leads to great achievements "

The inspiring rebuke by Shraman Bhagavan Mahavir shook him to the core and ascetic Megh's desire for spiritual upliftment redoubled He fell at the feet of Shraman Bhagavan Mahavir and said, "Bhante! Since this moment I commit every part of my body excepting my eyes to the service of the ascetics " He then commenced a strictly disciplined ascetic life absorbing all the knowledge of the Canons and indulging in most vigorous of penances

After observing the ascetic conduct for almost twelve years, Megh finally met his end As a result of his great penance and purity of feelings, after death his soul has taken birth as a god in the Anuttar dimension of gods He will be born as a human being in the Mahavideh area and attain Nirvana

■■

पढमं अज्झयणं : उक्खित्तणाए
प्रथम अध्ययन : उत्क्षिप्त ज्ञात
FIRST CHAPTER : UTKSHIPTA JNATA

प्रारम्भ

सूत्र १ : तेणं कालेणं तेणं समए णं चंपा नामं नयरी होत्था, वण्णओ।

तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था, वण्णओ।

तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिओ नामं राया होत्था, वण्णओ।

सूत्र १ : ऐसा वर्णन है (औपपातिक आदि सूत्रों में) कि काल के उस भाग व उस समय (चौथे आरे के अन्तिम समय) में चम्पा नाम की एक रमणीय नगरी थी। उसके बाहर ईशानकोण की दिशा (उत्तर-पूर्व) में पूर्णभद्र नाम का एक चैत्य था। चम्पा नगरी में तब कुणिक नामक राजा राज्य करता था। इन सबका विस्तृत वर्णन औपपातिक सूत्र में है।

THE BEGINNING

1. It is said that during that period of time (the last part of the fourth section of the current cycle of time) there was a beautiful town named Champa. Just outside the town, in the north-east direction, there was a temple complex known as Purnabhadra Chaitya. The ruler of Champa, then, was king Kunik. (All these details are mentioned in the Aupapatik Sutra.)

आर्य सुधर्मा स्वामी

सूत्र २ : तेणं कालेणं तेणं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बल-रूप-विणय-णाण-दंसण-चरित्त-लाघव-संपन्ने, ओयंसी, तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी, जियकोहे, जियमाणे, जियमाए, जियलोहे, जियइंदिए, जियनिद्दे, जियपरिसहे, जीवियास-मरण-भयविप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, एवं करण-चरण-निग्गह-णिच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खंति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मंत-बंभ-वेय-नय-नियम-सच्च-सोय-णाण-दंसण-चरित्तप्पहाणे, ओराले, घोरे, घोरव्वए घोरतवस्सी, घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे, संखित्त-विउल-तेउलेस्से, चोद्दसपुव्वी, चउनाणोवगए।

पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहं-सुहेणं विहरमाणे, जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ; ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

सूत्र २ : काल के उस भाग में अथवा उस समय श्रमण भगवान महावीर के शिष्य (पंचम गणधर) आर्य सुधर्मा नामक स्थविर विद्यमान थे। वे उच्च कुल व जाति सम्पन्न थे। बलवान, रूपवान और विनयवान होने के साथ-साथ ज्ञान, दर्शन व चारित्र सम्पन्न भी थे। इन सभी गुणों से युक्त होते हुए भी वे अहंकार तथा परिग्रह से मुक्त थे; अर्थात् लाघव संपन्न थे। ओज, तेज, वचन-पटुता और यश से वे परिपूर्ण थे। क्रोध, मान, माया, लोभ पर ही नहीं, वे तो इन्द्रियों पर, नींद पर और परिषहों पर भी विजय प्राप्त कर चुके थे। जीने की इच्छा और मृत्यु की आशंका-भय, इन दोनों से रहित हो गये थे वे। वे तपप्रधान और गुणप्रधान थे। करण (करणसत्तरी–पिण्ड विशुद्धि, ग्रहणैषणा आदि आचार के मर्मज्ञ), चरण (चरणसत्तरी–पंच महाव्रत आदि के पालन में निपुण), निग्रह, निश्चय, आर्जव, मार्दव, लाघव, क्षमा, गुप्ति, मुक्ति, विद्या, मंत्र, ब्रह्मचर्य, वेद, नय, नियम, सत्य, शौच, ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुणों के सर्वश्रेष्ठ धारक थे। वे उदार थे और सदाचार के कठोर पालक। व्रत, तपस्या और ब्रह्मचर्य में वे दृढ़तया उत्कृष्ट थे और शरीर से अलिप्त। विपुल-तेजोलेश्या को अपने आप में समेट लिया था उन्होंने। वे चौदह पूर्वो के जानकार और चार ज्ञान के धारक थे।

ऐसे सुधर्मा स्वामी अपने पाँच सौ शिष्यों सहित एक के बाद दूसरे गाँव में विचरते हुए, सुखपूर्वक विहार करते हुए चम्पा नगरी में जहाँ पूर्णभद्र चैत्य था वहाँ आये। यथानियम आज्ञा अवग्रह प्राप्त कर वे उस चैत्य में ठहरे और आत्मा को संयम एवं तप में भावित करते, रमाते हुए रहने लगे।

ARYA SUDHARMA SWAMI

2. During that period of time the fifth chief-disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, Arya Sudharma, was living. He belonged to a prominent family and caste. Besides being strong, handsome, and humble he was also endowed with right-knowledge, right-perception, and right-conduct. In spite of having all these rare virtues he was free of conceit and greed; in other words, he had the virtue termed as Laghav or extreme brevity of ego and desire for possessions. He was rich in qualities like power, aura, eloquence and the resultant fame He

had conquered anger, conceit, illusion, and greed and, at the same time, he had also won over the senses, sleep, and afflictions. The desire to live and the fear of death, both had no place in his mind.

Penance and virtues occupied most prominent place in his life. He had profound knowledge of the rules of ascetic conduct (Karan-sattari), and at the same time he also immaculately followed those rules (Charan-sattari). He was ideally endowed with virtues like Nigraha (self-control), Nishchaya (determination), Arjava (simplicity), Mardava (humility), Laghav (extreme brevity of ego and desire for possessions), Kshama (forgiveness), Gupti (discipline of attitude and behaviour), Mukti (freedom), Vidya (esoteric skills), Mantra, Brahmacharya (celibacy), Veda (scriptures), Naya (logic), Niyam (discipline), Satya (truth), Shauch (cleansing), Jnana (knowledge), Darshan (perception), and Charitra (conduct).

He was benevolent as well as strict adherent of right conduct. He was extremely resolute in observation of vows, penance, and celibacy. He had no attachment for his body. He had acquired the hyper-potent Tejoleshya (fire power). He had the complete knowledge of all the fourteen Purvas (sublime scriptures). And finally, he possessed all the four branches of knowledge.

Wandering from one village to another along with his five hundred disciples, Sudharma Swami arrived at the Purnabhadra Chaitya in the town of Champa After seeking formal permission he camped there and started his spiritual activities related to inner discipline and penance

सूत्र ३ : तए णं चंपाए नयरीए परिसा निग्गया। कोणिओ निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा जामेव दिसं पाउब्भूआ, तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र ३ · इसके बाद चम्पा नगरी से निकलकर जनसमूह और राजा कुणिक भी पूर्णभद्र चैत्य मे आये। इस जनसमूह को सुधर्मा स्वामी ने धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनने के बाद सभी अपने-अपने स्थान को लौट गए।

3. After that, throngs of people as also king Kunik came out of the town and went to the temple. Sudharma Swami gave a discourse and the masses returned home.

सूत्र ४ : तेणं कालेणं तेणं समए णं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबूणामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव....... अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढं जाणू अहोसिरे झाण-कोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

सूत्र ४ : उस समय आर्य सुधर्मा अनगार के प्रधान शिष्य थे काश्यप गोत्र के आर्य जम्बू अनगार। वे सात हाथ ऊँचे और पूर्वोक्त (कनक समान गौरवर्ण वाले तपस्वी, ब्रह्मचर्य में लीन आदि) गुणों से संपन्न थे। वे आर्य सुधर्मा से न अधिक दूर न अधिक पास रहते थे। वे उचित स्थान पर, घुटना ऊपर और मस्तक नीचा किये ध्यान के उपयुक्त आसन में बैठ तप और संयम में सतत लीन रहते थे।

4. Arya Jambu of the Kashyap clan was the senior disciple of Sudharma Swami. He was seven feet tall and had all the virtues detailed above He always remained in proximity of Sudharma Swami, neither very far nor very near All the time he used to sit at a proper place in a proper posture suitable for meditation, with raised knee and bent head, absorbed in practices of discipline and penance

जम्बू स्वामी की जिज्ञासा

सूत्र ५ : तए णं से अज्जजंबूणामे अणगारे जायसड्ढे, जायसंसए, जायकोउहल्ले, संजातसड्ढे, संजातसंसए, संजातकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे, उप्पन्नसंसए, उप्पन्नकोउहल्ले, समुप्पन्नसड्ढे, समुप्पन्नसंसए, समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति। उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ। करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहं पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी–

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं, आइगरेणं, तित्थयरेणं, जाव सासय ठाणमुवगए णं, पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भंते ! अंगस्स णायाधम्मकहाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ५ : आर्य जम्बू अनगार के मन में एक कुतूहल उत्पन्न हुआ जो क्रमश: गहरा होते-होते संशय में परिणत हो गया और फिर जिज्ञासा बन गया। वे उठ खड़े हुए और आर्य सुधर्मा स्थविर के निकट आये। आर्य सुधर्मा स्थविर की दक्षिण दिशा से आरम्भ कर

तीन बार प्रदक्षिणा कर उन्होंने वाणी से स्तुति और शरीर झुकाकर वन्दना की। फिर वे आर्य सुधर्मा स्थविर से न बहुत दूर न बहुत पास उचित स्थान पर उनके सम्मुख बैठ गये और उत्तर की अपेक्षा लिये दोनों हाथ जोड़ विनय एवं भक्तिपूर्वक बोले–

"हे भंते ! श्रमण भगवान महावीर ने, जो धर्म के आदि पुरुष तीर्थंकर थे, (शक्रेन्द्र स्तुति के समान गुण वर्णन) और सिद्ध गति रूप शाश्वत स्थान को प्राप्त हो चुके हैं, पाँचवें अंग का आपके कथनानुसार अर्थ बताया है तो छठे अंग, ज्ञाताधर्मकथा, का क्या अर्थ बताया है ?"

CURIOSITY OF JAMBU SWAMI

5. A curiosity sparked in the mind of ascetic Arya Jambu and it slowly grew into a doubt and then a query. He got up and approached Sudharma Swami He circum-ambulated Sudharma Swami three times clockwise, uttered a panegyric, and bowed before him. He sat down near Sudharma Swami and joining his palms humbly and respectfully put forth his question—

"Bhante! If according to you this is the text of the fifth Anga (Jain canon) as given by Shraman Bhagavan Mahavir, the Tirthankar and propagator of religion (as detailed in the panegyric by Shakrendra, the king of gods) who has attained the eternal abode of the Siddha-state, what is the text and meaning of the sixth Anga, Jnata Dharma Katha, as given by him?"

सुधर्मा स्वामी का समाधान

सूत्र ६ . जबु त्ति, तए ण अज्जसुहम्मे तेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं वयासी–एवं खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा–१. णायाणि य २. धम्मकहाओ य।

सूत्र ६ : आर्य सुधर्मा ने आर्य जम्बू को उत्तर दिया–"हे जम्बू ! उन श्रमण भगवान महावीर ने छठे अंग के दो श्रुतस्कन्धों का उपदेश दिया है। वे १. ज्ञात और २. धर्मकथा नाम से प्रसिद्ध हैं।"

REPLY BY SUDHARMA SWAMI

6. Sudharma Swami replied, "O Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir has preached the sixth Anga in two parts that are popularly known as - 1 Jnata and 2. Dharma Katha."

सूत्र ७ : जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा–णायाणि य धम्मकहाओ य, पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

सूत्र ७ . भंते ! उन भगवान महावीर ने छठे अंग के जो ज्ञात और धर्मकथा नामक दो श्रुतस्कन्ध कहे हैं उनमें से ज्ञात नामक प्रथम श्रुतस्कन्ध के कितने अध्ययन बताये हैं ?

7. Bhante! Of these two parts, how many chapters are there in the first part of the text known as Jnata?

सूत्र ८ . एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं-अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

उक्खित्तणाए, संघाडे, अंडे कुम्मे य, सेलगे।
तुंबे य, रोहिणी, मल्ली, माइंदी, चंदिमाइ य॥१॥
दावद्दवे, उदगणाए, मंडुक्के, तेयली, वि य।
णंदिफले, अमरकंका, आइण्णे, सुसमाइ य॥२॥
अवरे य पुंडरीए, णामा एगूणवीसइमे।

सूत्र ८ : हे जम्बू ! उन श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञात नामक श्रुतस्कन्ध के उन्नीस अध्ययनो का उपदेश दिया है। वे इस प्रकार हैं : १ उत्क्षिप्त ज्ञात, २ सघाट, ३ अडक, ४ कूर्म, ५ शैलक, ६ तुम्ब ७ रोहिणी, ८. मल्ली, ९. माकंदी, १०. चन्द्र, ११ दावद्रव वृक्ष, १२ उदक, १३ मडूक, १४ तेतलीपुत्र, १५ नन्दीफल, १६ अमरकका, १७. आकीर्ण, १८. सुषमा और १९. पुण्डरीक-कुण्डरीक।

8. Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir has preached nineteen chapters of this Jnata section. They are— 1 Utkshipta Jnata, 2 Sanghata, 3 Andak, 4 Kurma, 5 Shailak, 6 Tumba, 7 Rohini, 8 Malli, 9 Makandi, 10 Chandra, 11 Davadrava Vriksha, 12 Udaka, 13 Mandook, 14 Tetaliputra, 15. Nandiphal, 16 Amarkanka, 17 Akirna, 18 Sushama, and 19 Pundarik-kundarik

सूत्र ९ : जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाण एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–उक्खित्तणाए जाव पुंडरीए य, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठ पण्णत्ते ?

सूत्र ९ : भंते ! उन भगवान महावीर ने यह जो उत्क्षिप्त ज्ञात से पुण्डरीक पर्यन्त उन्नीस अध्ययनों का उपदेश दिया है उनमें से प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?

9. Bhante! Out of these nineteen chapters what is the text and meaning of the first chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir

कथारम्भ

सूत्र १० : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समए णं इहेव जंबुद्दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ। गुणसीले चेइए वण्णओ।

तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए णामं राया होत्था महया हिमवंत. वण्णओ। तस्स णं सेणियस्स रण्णो णंदा णामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया वण्णओ।

सूत्र १० हे जम्बू ! समय के उस भाग में जम्बू द्वीप के भारतवर्ष के दक्षिण भरत नामक क्षेत्र मे राजगृह नामक नगर था। इस नगर के बाहर गुणशील नामक चैत्य था (इस नगर और चैत्य का वर्णन औपपातिक सूत्र में उपलब्ध है)।

राजगृह नगर मे श्रेणिक नाम का राजा राज्य करता था। ऐसा वर्णन है (औपपातिक सूत्र मे) कि वह राजा महाहिमवत पर्वत के समान गुण वाला था। श्रेणिक राजा की नन्दा नामक रानी थी जो सुकुमार अगों वाली थी।

THE STORY

10. Jambu! During that period of time there was a town named Rajagriha in the south Bharat area of Bharatvarsh in the Jambu continent Outside this town was a temple named Gunashil Chaitya. King Shrenik was the ruler of Rajagriha. It is said that the virtues he possessed were as lofty as the Himalayas. King Shrenik had a beautiful queen named Nanda. (as detailed in the Aupapatik Sutra)

सूत्र ११ . तस्स णं सेणियस्स पुत्ते णंदादेवीए अत्तए अभए णामं कुमारे होत्था; अहीण जाव साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-णीति-सुप्पउत्तणय-विहण्णू, ईहा-वूह-मग्गण-गवेसण-अत्थ-सत्थमई, विसारए, उप्पत्तियाए, वेणइयाए, कम्मयाए, पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, णिच्छएसु य, आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे, मेढी, पमाणं, आहारे, आलंबणभूए, पमाणभूए, आहारभूए, चक्खुभूए, सव्वकज्जेसु य, सव्वभूमियासु

य-लद्धपच्चए, विइण्णवियारे, रज्जधुरचिंतए यावि होत्था सेणियस्स रण्णो रज्जं च, रट्ठं य, कोसं च, कोट्ठागारं च, बलं च, वाहणं च, पुरं च, अंतेउरं च, सयमेव समुपेक्खमाणे-समुपेक्खमाणे विहरइ।

सूत्र ११ : श्रेणिक राजा और नंदा रानी के अभयकुमार नाम का एक पुत्र था। अभयकुमार शरीर से परिपूर्ण, गुण सम्पन्न सुन्दर स्वरूप वाले थे। वह राजनीति, व्यवसायनीति तथा न्यायनीति में निष्णात थे और चतुरंग अर्थनीति के ज्ञाता थे। चारों बुद्धियों के धारक अभयकुमार विभिन्न कार्यों तथा विषयों मे राजा श्रेणिक के सलाहकार थे। पारिवारिक कार्यों में, मंत्रणा, रहस्यमय तथा गुप्त कार्यों में तथा कोई भी निर्णय करने में राजा श्रेणिक उनसे समय-समय पर सलाह लेते रहते थे। सबके लिये धुरी, आधार और सहारा बनने वाले अभयकुमार स्वय प्रमाण रूप थे, आधार रूप थे और पथ-प्रदर्शक थे। वे राजा श्रेणिक के राज्य, राष्ट्र, कोष, भडार, सेना, वाहन, नगर व महल तथा अन्त पुर, सभी की व्यवस्था देखते थे।

11. King Shrenik and queen Nanda had a son named Abhay Kumar He had a perfectly proportioned, highly endowed and beautifully formed body He was a master of politics, business management, and law He had also studied all the four branches of economics Endowed with four types of wisdom, Abhay Kumar was the advisor of King Shrenik in various fields and subjects King Shrenik used to take his advise from time to time before taking any decision in the matters of family, state, and secrecy. Acting as an axis, base, and support for others Abhay Kumar himself was the embodiment of authenticity, the symbol of support, and the source of path-finding light On behalf of King Shrenik he managed all the affairs of the state, nation, exchequer, store, defense, transport, town, palace, and family

सूत्र १२ : तस्स णं सेणियस्स रण्णो धारिणीणामं देवी होत्था सुकुमालपाणि-पाया अहीण पंचिंदियसरीरा सेणिएणं रण्णा सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरइ।

सूत्र १२. श्रेणिक राजा के धारिणी नाम की एक और रानी थी जो अत्यन्त रूपवान और गुण सम्पन्न थी।

12. King Shrenik had another highly endowed and beautiful queen whose name was Dharini

शयनागार-वर्णन

सूत्र १३ : तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि छक्कट्ठक-लट्ठ-मट्ठ-संठिय-खंभुग्गय-पवरवरसालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयण-थूभिय-विडंगजालद्धचंद-णिज्जूहकंतर-कणयालि-चंदसालिया-विभत्तिकलिए, सरसच्छधाऊवल-वण्णरइए, बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे, अब्भितरओ पसत्त-सुइलिहियचित्त-कम्मे, णाणाविहपंचवण्ण-मणि-रयणकोट्टिमतले, पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-उल्लोयचित्तियतले, चंदणवर-कणगकलस-सुविणिम्मिय-पडिपुंजिय-सरसपउमसोहंत-दारभाए, पयरग्गालंबंतमणि-मुत्तदाम-सुविरइयदारसोहे, सुगंध-वरकुसुम-मउयपम्हल-सयणोवयारे, मणहिययनिव्वुइकरे,कप्पूर-लवंग-मलय-चंदण-कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवडज्झंतसुरभिमघमघंत गंधुद्धयाभिरामे, सुगंधवर-गंधिए गंध-वट्टिभूए, मणिकिरणपणासियंधयारे, किं बहुणा ? जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-वेलंबियवरघरए,

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि, सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे, दुहओ उन्नए, मज्झेण य गंभीरे, गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए, ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छिन्ने, अत्थरय-मलय-नवतय-कुसत्त-लिंब-सीहकेसरपच्चुत्थए, सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए, सुरम्मे, आइणग-रूय- बूर-णवणीय-तुल्लफासे; पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्त-जागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी एगं महं सत्तुस्सेहं-रययकूडसन्निहं, नहयलंसि सोमं सोमाकारं लीलायत जभायमाणं मुहमइगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा।

सूत्र १३ धारिणी देवी एक अत्यन्त मनोहारी महल में रहती थी। उस महल में स्थिरता और विशालता के लिये उचित स्थान पर उचित रीति से छः-छः काष्ठ खंडों से विशिष्ट आकार के सुन्दर खंभे बने हुए थे। इन घिसकर चिकने किये खंभों पर जीवन्त लगती सुन्दर पुतलियाँ उकेरी हुई थीं। इस महल पर चमकती मणिरत्नों की तथा सोने की छोटी-छोटी छतरियाँ बनी हुई थीं। सुन्दर छज्जे, मनोहारी जाली-झरोखे, अर्द्धचन्द्राकार सीढ़ियाँ और रत्नजड़ित द्वार-घोडले उस महल की शोभा बढ़ा रहे थे। स्थान-स्थान पर सुन्दर आकार की नालियाँ बनी थीं। भवन के ऊपरी भाग में चन्द्रशाला बनी हुई थी। भवन के शयन कक्ष मे चूने और स्वच्छ गेरू का रंग किया हुआ था। बाहर से सफेदी की हुई थी और चिकने पत्थर से घिसाई होने के कारण वह चमक रहा था। शयनागार की भीतरी दीवारो पर पशु, पक्षी, मनुष्य आदि के सुन्दर मनोहारी चित्र बने हुए थे। आगार के आँगन में पंचरंगे मणिरत्न जड़े हुए थे और छत की दीवार पर कमल के आकार की, फूलों से भरी, मालती आदि की बेलों के चित्र बने हुए थे। द्वार भाग पर सोने के मांगलिक कलश रखे थे जिनके मुख खिले हुए कमल से ढँके थे। दरवाजे पर सोने के तार में पिरोई मणियों

और मोतियों की मालाएँ लटक रही थी। उस शयनागार मे बिछी शय्या को सुगंधित, रंग-बिरंगे, कोमल और रोएँदार फूलों से सजाया गया था। वह कक्ष मन को अतीव आनन्द देने वाला था। कपूर, लौग, मलय-चन्दन, काला अगर, उत्तम चीडा, लोबान आदि की धूप की सुगन्ध से वह कक्ष भरपूर सुवासित था। अन्य तरह-तरह की सुगन्धो से महकता वह कक्ष ऐसा लग रहा था जैसे असख्य फूलों की गन्ध से महकती वाटिका। अनेक मणि-रत्नो से बिखरते प्रकाश के कारण वहॉ से अधकार का लोप हो गया था। इस शयनागार के विषय में इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नही है कि वह अपनी शोभा से श्रेष्ठतम देव विमान को भी लज्जित कर रहा था।

ऐसे अपूर्व शयनागार मे एक शय्या बिछी हुई है। उस पर शरीर की लम्बाई जितना गद्दा बिछा हुआ है जिसके दोनों छोरो पर सिर तथा पैरो की ओर दो तकिये रखे है। यह शय्या दोनो ओर उठी हुई और बीच मे गहरी है। गगा नदी की बालू मे जैसे पॉव धँस जाते हैं वैसे ही इस शय्या मे भार रखने से यह नीचे धँस जाती है। इस पर रग-बिरगी कशीदा कढ़ी रेशम की महीन चादर बिछी हुई है। इस पर मलय, नवतक, कुशक्त, लिम्ब तथा सिह केसर से बने कपड़ों की स्वच्छ चद्दरे एक के ऊपर एक बिछी हुई है। इन सबकी धूल से रक्षा करने के लिये एक और सादी चद्दर ऊपर ढकी हुई है। इस शय्या पर एक लाल रंग की मच्छरदानी भी तनी हुई है। ऐसी सजी हुई यह शय्या बडी सुरम्य है। छूने मे यह शय्या कोमल चमड़े, धुनी रुई, बूर वनस्पति, मक्खन और आक की रूई के समान कोमल और स्निग्ध है।

स्वप्न

रात का पहला पहर बीतने के बाद इस सुन्दर शय्या पर रानी धारिणी सोई हुई थी। अर्द्धनिद्रित अवस्था मे, जब रह-रहकर नीद के झोके आ रहे थे, उन्होने एक अत्यन्त विशाल, चाँदी के पर्वत-शिखर जैसे सफेद, सात हाथ ऊँचे प्रशस्त और सर्वाग सुन्दर हाथी को क्रीडा करते जम्हाई लेते आकाश से उतर अपने मुँह मे प्रवेश करते देखा। यह स्वप्न देखते ही वे जाग पडी।

THE BEDROOM

13. Queen Dharını lıved ın a beautıful palace Large wooden pıllars, beautıfully made ın a unıque shape wıth sıx blocks of wood, were erected at proper spots to add to the grandeur and stabılıty of the palace Lovely and lıfe lıke figures were chıseled on these polıshed pıllars Small decoratıve canopıes made of gold and gem stones could be seen at the roof top Beautıful balustrades, attractıve grılls and
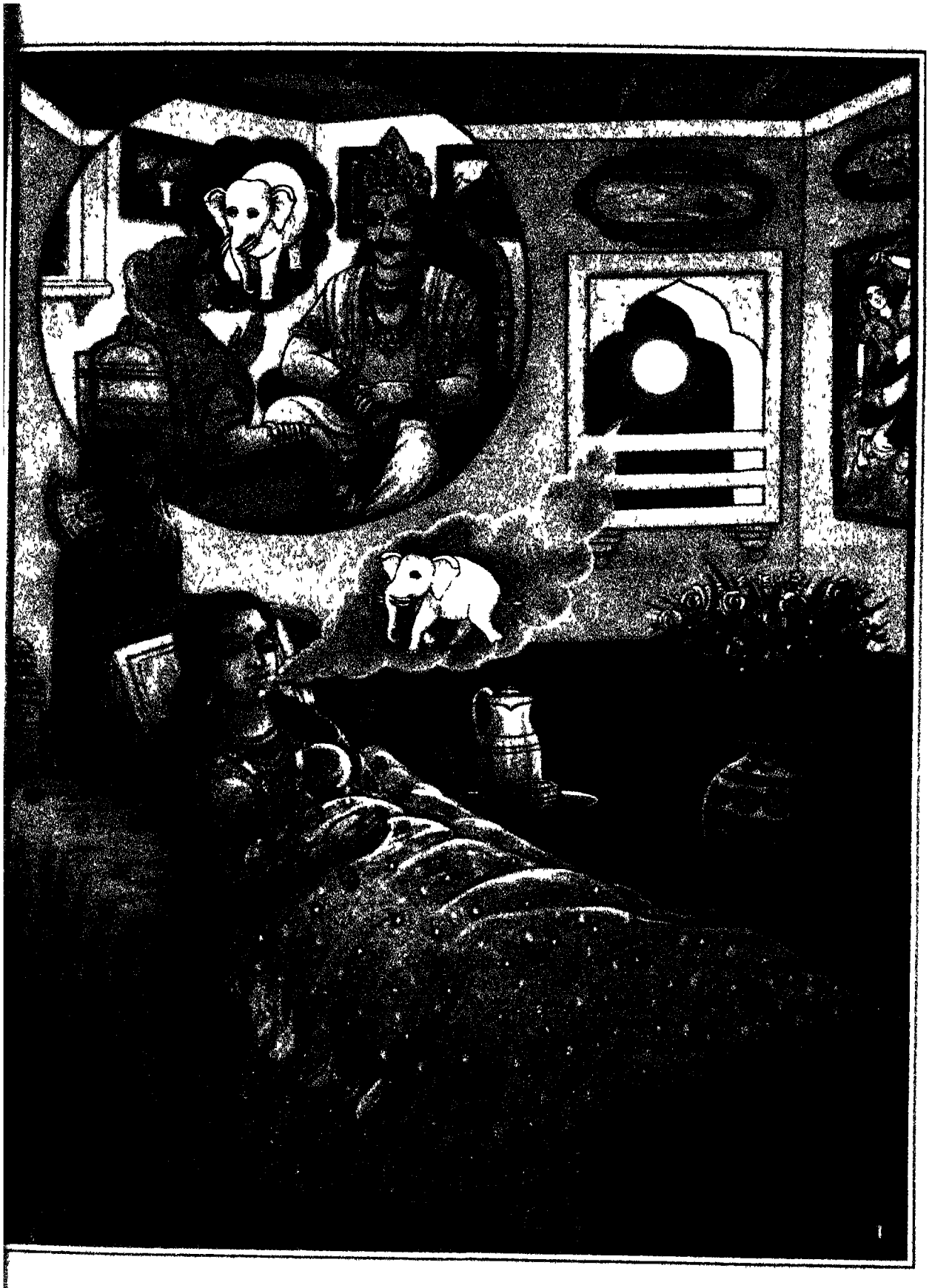
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

शुभ स्वप्न दर्शन

चित्र १

एक रात महाराज श्रेणिक की रानी धारिणी ने अपने भव्य शयनागार में सोते हुए शुभ स्वप्न देखा। एक उज्ज्वल वर्ण का चार दाँत वाला विशालकाय हाथी आकाश मार्ग से उतरता हुआ मुख मार्ग द्वारा उसके उदर में प्रवेश कर रहा है। यह शुभ स्वप्न देखकर रानी जाग उठी। वह उठकर महाराज श्रेणिक के कक्ष मे आई। महाराज को जगाकर उसने अपना स्वप्न सुनाकर इस विचित्र शुभ स्वप्न का फल पूछा।

महाराज ने बताया देवी ! आप शीघ्र ही एक पुण्यशाली पुत्र की माता बनेगी।

(अध्ययन १)

SEEING THE AUSPICIOUS DREAM

ILLUSTRATION 1

One night King Shrenik's queen, Dharini sleeping in her gorgeous bedroom sees a dream. A great white elephant having four tusks descends from the sky, enters her mouth, and reaches into her womb. The queen is awakened by this auspicious dream. She goes into the room of king Shrenik and asks for the meaning of this strange auspicious dream after waking him up. The king replies that she shall soon give birth to a brilliant son.

(CHAPTER-1)

over-hangs, semi-circular steps, and gem-studded door-tops enhanced the beauty of this palace Drainage pipes in attractive shapes were fitted at appropriate places On the top floor of the palace was a Chandrashala (an attic to watch and enjoy the moon)

The bedroom-walls of this palace were white-washed The outer walls of this room were also white-washed and polished with smooth stones The inner walls of this chamber were adorned with frescoes of animal, bird, human, and other such attractive motifs. Multi-coloured gem stones were studded on the floor, and the ceiling was decorated with floral motifs Near the door were placed auspicious golden urns covered with blooming lotus flowers Beads and pearls strung in gold wire were decoratively suspended over the door. The bed in this room was decorated with fragrant, colourful, soft and velvety flowers. It had a pleasing appearance and was filled with aroma of a variety of burning incenses including Kapur, cloves, sandal wood, black agar, good quality Cheed, and Loban The added fragrance of other aromatic substances had made the room redolent like a bouquet of flowers The glow from the decorated jewels was dispelling the darkness in the room It would not be an exaggeration to state that in grandeur this bedroom surpassed the best of the abodes of gods

In such exquisite room was placed a bed It was made to the measure of the queen There were pillows lying at both ends It was raised on both sides and sunken in the middle. On this bed, soft and pliant like the beach sand of the Ganges, was laid out a bed spread of colourfully embroidered silk. It was further covered with bed-sheets woven from fibers of Malaya, Navatak, Kushakt, Limb, and lion-mane. Over and above all these was spread a plain white bed sheet for protection from dust A red coloured mosquito-net was put around it. This decorated and inviting bed was as soft to touch as chamois leather, softest cotton, Bura plant, fresh butter, or Aak fiber.

THE DREAM

During the second quarter of the night Queen Dharini was sleeping in this beautiful bed Dozing and lying half asleep in the bed she saw a dream A giant seven feet tall, grand, and ideally beautiful elephant,

white like a heap of silver, yawning and playfully descending from the sky, entered her mouth She got up immediately after this dream

सूत्र १४. तए ण सा धारिणी देवी अयमेयारूव उराल, कल्लाण सिवं धन्न मगल्ल सस्सिरीयं महासुमिण पासित्ता ण पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठा चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया धाराहय-कलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा त सुमिण ओगिण्हइ। ओगिण्हइत्ता सयणिज्जाओ उट्ठेति, उट्ठेइत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता अतुरियमचवलमसभंताए अविलबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुन्नाहि मणामाहिं उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहिं मगल्लाहिं सस्सिरियाहि, हिययगमणिज्जाहि, हिययपल्हायणिज्जाहि मिय-महुर-रिभिय-गभीर-सस्सिरीयाहि गिराहि सलवमाणी सलवमाणी पडिबोहेइ। पडिबोहेत्ता सेणिएण रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणि-कणग-रयण-भत्तिचित्तसि भद्दासणसि निसीयइ। निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहिअ सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु, सेणियं राय एव वयासी–

एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि सालिगणवट्टिए जाव नियगवयणमइवयत गय सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा। त एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सूत्र १४ ऐसे उदारादि फलयुक्त महास्वप्न को देखकर जागी धारिणी देवी आनन्दमग्न हो गई। उसका मन हर्ष विभोर हो उठा। वर्षा से भीगे कदम्ब के फूल की तरह उसका रोम-रोम पुलक उठा। उसने सपने को याद किया और तव शय्या से उठ पाद-पीठ पर होती हुई धरती पर उतरी। वह पूर्ण जाग्रत हो तत्काल मन्द-मन्द चपलतारहित राजहस जैसी चाल से राजा श्रेणिक के कमरे मे गई। इष्टादि गुणो से सपन्न (इष्ट= अच्छी लगने वाली, प्रिय, मन को मुग्ध करने वाली, हृदय को प्रसन्न करने वाली, मधुर उदार शिष्टतायुक्त, सुन्दर शब्दावली से मगलकारक बनाने वाली) वाणी का उच्चारण कर उसने श्रेणिक राजा को जगाया और उनकी अनुमति लेकर वह सोने के रत्नजडित और चित्रित भद्रासन पर बैठी। आश्वस्त होकर दोनो हाथ जोड, मस्तक के ऊपर घुमा, ललाट से छुआकर मधुर स्वर मे श्रेणिक राजा से कहा–

"हे देवानुप्रिय ! आज जब मै अपनी शय्या पर सो रही थी तव सपने मे एक भव्य हाथी को अपने मुँह मे प्रवेश करते देखकर जाग पडी। हे देवानुप्रिय ! इस उदारादि गुण सपन्न स्वप्न का भविष्य मे क्या कल्याणकारी फल मिलेगा ?"

14. Waking up after this radiant (etc) dream, Queen Dharini was filled with joy Her heart was brimming over with happiness As a Kadamba flower blossoms at the touch of rain drops, every pore of Queen Dharini's body became alive with a sensation of ecstasy She brooded over the vivid dream and got up from the bed She moved away from the bed and drifting with the grace of a swan approached the bed of King Shrenik with unhurried gait and steady steps

She gently woke him up uttering loving, touching, and appropriate words in her soft, sweet, pleasing and melodious voice with gracious, clear, warm, and polite accent Seeking permission from King Shrenik she made herself comfortable on a golden and gem studded seat Controlling her excitement and regaining her composure she greeted the king with folded hands and uttered in her sweet voice—

"Beloved of gods! Today while I was sleeping in my bed I saw in my dream a gorgeous elephant enter my mouth This dream broke my slumber I feel that this great dream is a precursor of some auspicious incident in the near future Is it not?"

सूत्र १५ तए णं सेणिए राया धारिणीए देवीए अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए धाराहय-नीव-सुरभिकुसुम-चचुमालइयतणू ऊससियरोमकूवे त सुमिण उग्गिण्हइ। उग्गिण्हित्ता ईह पविसति, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेण तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गह करेइ। करित्ता धारिणि देवि ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहि मिउमहुररिभियगभीरसस्सिरियाहि वग्गूहिं अणुवूहेमाणे अणुवूहेमाणे एव वयासी।

सूत्र १५ श्रेणिक राजा धारिणी देवी की बात सुन-समझकर प्रसन्न हुआ और उसके मन को सतोष प्राप्त हुआ। उसके मन मे प्रीति उत्पन्न हुई। उसे परम सौम्यता (शाति) और आह्लाद मिले। वह हर्ष-विभोर हो उठा। वर्षा की बूँदो मे भीगे सुगन्धित कदम्ब वृक्ष की तरह उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा। उसने स्वप्न को समझा और उसके फल का चिन्तन किया। अपनी स्वाभाविक प्रज्ञा और विज्ञान-बुद्धि द्वारा उसने स्वप्न के विशिष्ट अर्थ व फल का निश्चय किया। फिर वह बारबार प्रशसा करते हुए हृदय को सुख देने वाली अपनी मधुर गभीर वाणी मे कहने लगा–

15. Queen Dharini's words filled King Shrenik with joy Like Queen Dharini his heart also brimmed over with delightful ecstasy He

ruminated over the dream and pondered what ıt augured Wıth the help of hıs ınborn ıntellıgence and dıscernıng mınd, he ınterpreted the dream and what ıt forebode He then conveyed sweetly to Queen Dharını—

श्रेणिक द्वारा स्वप्नफल-कथन

सूत्र १६ उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे, कल्लाणे ण तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे, सिवे धन्ने मगल्ले-सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मगल्ल-कारए ण तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए, पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए रज्जलाभो भोगलाभो सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एव खलु तुम देवाणुप्पिए नवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण अद्धट्ठमाण य राइदियाणं विइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडिंसय कुलतिलक कुलकित्तिकर, कुलवित्तिकर, कुलणदिकर, कुलजसकर, कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय जाव दारय पयाहिसि।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ। त उराले ण तुमे देवीए सुमणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउ-कल्लाणकारए ण तुमे देवी ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुबूहेइ।

सूत्र १६. "हे देवानुप्रिये ! तुमने उदार, श्रेष्ठ व कल्याणकारी स्वप्न देखा है। हे देवानुप्रिये ! तुमने शिव-सुखदायक, मगल रूपादि गुणो वाला स्वप्न देखा है। जिसके फलस्वरूप अर्थ, भोग, पुत्र, सुख व राज्य लाभ होगा। निश्चित ही तुम नौ महीने और साढ़े सात दिन पूरे होने पर एक पुत्र रत्न को जन्म दोगी। तुम्हारा यह पुत्र हमारे कुल के लिए ध्वजा, दीपक, पर्वत, भूषण, तिलक आदि के समान कीर्ति बढाने वाला होगा। वह कुल का सूर्य, आधार व पादप-वृक्ष होगा। वह कुल का निर्वाह करने वाला, यश बढाने वाला, और विशेष वृद्धि करने वाला होगा। वह सुकोमल हाथ-पैर वाला, किसी भी प्रकार की हीनता से रहित सम्पूर्ण पचेन्द्रिय शरीर वाला होगा। उसका शरीर मान, उन्मान और परिमाण से पूर्ण व सर्वांग सुन्दर होगा। वह शुभ लक्षण, व्यजन आदि गुणो से युक्त होगा। वह शोभावान, चन्द्रमा के समान सौम्य आकृति वाला, कान्त, मनोज्ञ और प्रियदर्शी होगा।

"वह बचपन बीतने पर कला, विज्ञान आदि सभी विषयो मे पारगत होकर यौवन प्राप्त करेगा। तब वह शूरवीर, तेजस्वी, विशाल, बलशाली, तथा वाहन, सेना, राज्य आदि का

स्वामी राजा होगा। अत देवी ! तुमने जो महास्वप्न देखा है वह अत्युत्तम है।" श्रेणिक राजा ने अनेक बार स्वप्न की प्रशसा की।

INTERPRETATION BY SHRENIK

16. "O beloved of gods! You have seen bountiful dream that is harbinger of well being and good fortune You will gain wealth, grandeur, a son, joy, and expansion of kingdom It is certain that you will give birth to a son after nine months and seven and a half days from today This son of yours will bring glory to our clan, as do a flag, a lamp, a mountain, a crown, and an auspicious mark on the forehead For our clan he will be like the sun, a support, and a shade giving tree He will have delicate limbs, faultless and acute senses, and a perfectly formed body His body will have all the auspicious marks and signs, and it will be ideally proportioned in terms of shape height and weight Like a divine child he will be absolutely beautiful, charming, and handsome Like the moon he will be soothingly radiant

"As he passes the age of infancy he will grow into a youth of mature intelligence and having perfect knowledge of all subjects including arts and sciences He will then be a king having courage, bravery, glory, benevolence, power, vehicles, army, and kingdom Thus you have seen the best of all dreams" King Shrenik praised the dream over and again

सूत्र १७ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहिय जाव सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी–

एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय अवितहमेय असदिद्धमेय इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय इच्छियपडिच्छियमेय, सच्चे ण एसमट्ठे ज णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिण सम्म पडिच्छइ। पडिच्छित्ता सेणिएण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणि-कणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयसि सयणिज्जसि निसीअइ। निसीइत्ता एव वयासी–

मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहि त्ति कट्टु देवय-गुरुजणसबद्धाहि पसत्थाहि धम्मियाहिं कहाहि सुमिणजागरिय पडिजागरमाणी विहरइ।

सूत्र १७. धारिणी रानी श्रेणिक राजा से स्वप्न का अर्थ सुन-समझकर अत्यन्त प्रसन्न हुई और दोनो हाथ जोड अजलि को ललाट पर लगाकर बोली–

"हे देवानुप्रिय ! नि सन्देह आपकी बात सत्य है। यह आशानुरूप, अभीष्ट और इच्छित है। यह स्वप्न-फल प्रमाणित है।" स्वप्न के अर्थ को मन से स्वीकार कर श्रेणिक राजा की आज्ञा लेकर वह स्वर्ण-रजत-मणिरत्नो से मण्डित भद्रासन से उठी और अपनी स्वाभाविक चाल से चलती हुई अपने शयनागार मे वापस आई। शय्या पर बैठकर वह सोचने लगी–

"मेरा ये मगलमय स्वप्न अन्य दु स्वप्नो से कही निष्फल न हो जाये इसलिये मुझे देव और गुरुजन विषयक उच्च, मागलिक और धर्मरस भरी कथाओ की सहायता से जागते रहना चाहिये।" यह सोचकर वह उस रात जागती रही।

17. These words of King Shrenik made Queen Dharini happy and contented She greeted King Shrenik courteously and with joined palms and exclaimed, "Undoubtedly, beloved of Gods, what you say is true Your statement is not just desirable, it is also the indicator of the fulfillment of our cherished desires Your interpretation is absolutely correct " Sincerely accepting the interpretation, she took leave of King Shrenik, got up from her seat and returned to her bedroom with her natural graceful gait Sitting on her bed she started thinking—

"Lest this dream lose its auspicious effect due to later bad dreams, let me keep awake with the help of pious, auspicious, and religious tales about gods and elders " Guided by these thoughts she did not sleep during the rest of the night

राजगृह की सजावट

सूत्र १८ तए ण सेणिए राया पच्चूसकालसमयसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बाहिरिय उवट्ठाणसाल अज्ज सविसेस परमरम्म गंधोदगसित्तसुइय-समज्जिओवलित्त पचवन्न-सरस-सुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयार-कलिय कालागरु-पवरकदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झत-मघमघतगधुयाभिराम सुगधवरगधिय गधवट्टिभूय करेह कारवेह य, करित्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।

तए ण ते कोडुबियपुरिसा सेणिए ण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणति।

सूत्र १८. उधर प्रातःकाल होने पर श्रेणिक राजा ने कुटुम्बियों (सेवकों) को बुलाया और कहा—"हे देवानुप्रियो ! आज बाहरी सभा मडप (उपस्थान शाला) मे जल्दी ही उत्तम सुगन्धित जल छिडको, उसकी सफाई करो और वहाँ चन्दन का लेप करो। पाँच रग के श्रेष्ठ सुगन्धित फूलो से उसे सजाओ। तरह-तरह की सुगन्धित धूप जलाकर उसे सुवासित करो और रमणीय बनाओ। इधर-उधर सुगन्धित चूर्ण बिखराकर उसे सुगन्ध के पिटारे जैसा बना दो। ये सब काम तुम स्वय तथा अन्यो की सहायता से पूरा कर मुझे सूचित करो।"

श्रेणिक राजा की यह आज्ञा सुन वे लोग प्रसन्न हुए और आज्ञा पालन करने चले गए; कार्य पूर्ण करके लौटे और राजा को सूचना दी।

DECORATING RAJAGRIHA

18. As the dawn approached, King Shrenik summoned the members of his staff and said, "O beloved of gods! Hurry up and get the outer assembly hall cleaned, anointed and sprinkled with good fragrant water Decorate it with enchanting, fragrant and multicoloured flowers Burn a variety of incenses to make it redolent and pleasant Turn it into a chamber of perfume by sprinkling aromatic powders Do all this yourself, and with the help of others, and report back "

Hearing the king's order they happily left and after completing the entrusted work they returned and informed the king

सूत्र १९ तए ण सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियम्मि, अह पडुरे पभाए, रत्तासोगपगास-किसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-बधुजीवग-पारावयचलण-नयण-परहुय-सुरत्तलोयण-जासुमिणकुसुम-जलियजलण-तवणिज्जकलस-हिंगुलयनियर-रूवाइरेगरेहन्त-सस्सिरीए दिवागरे अहकमेण उदिए, तस्स दिणकरपरपरावयारपारद्धम्मि अधयारे, बालातवकुकुमेण खइएव्व जीवलोए, लोयणविसआणुआस-विगसत-विसददसियम्मि लोए, कमलागरसडबोहए उट्ठियम्मि सूर महस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयणिज्जाओ उट्ठेति।

सूत्र १९ रात बीतने पर, उषाकाल मे पौ फटने पर मृग-नयनो के समान कमल की कलियाँ खिलने लगी थी और सुनहरी आभा छिटक रही थी। लाल अशोक, टेसू, तोते की चोच, चिर्मी का अधोभाग, रक्त पुष्प, कबूतर के पजे व ऑख, जवा कुसुम के फूलो का ढेर, धधकती अग्नि, सिंदूर, आदि के लाल रग से भी अधिक चमकता और शोभामय सूर्य

धीरे-धीरे उग रहा था। उसकी किरणो के प्रभाव से अंधकार का नाश हो गया था। उसकी प्रथम किरणो के तेज से समस्त ससार कुकुम (गुलाल) जैसे लाल रग मे नहा गया था। प्रकाश के इस विस्तार से धीरे-धीरे समस्त ससार स्पष्ट दिखाई देने लगा था। ऐसे तेजोमय हजारों किरणो वाले जाज्वल्यमान सूर्य के उगने पर राजा श्रेणिक अपनी शय्या से उठे।

19. At the hour of dawn buds of Utpal lotuses started blossoming and a golden glow started spreading with the slowly rising sun Brighter and more beautiful then the colour of red Ashoka flower, Tesu flower, beak of a parrot, Gunja seed, Rakta flower, talons and eyes of a pigeon, a heap of Javakusum flowers, vermilion, etc , the morning sun was slowly rising on the horizon The onslaught of its rays had destroyed darkness Its first rays had coloured everything with a red hue, as if the world was drenched in a solution of vermilion With the dawning of such a scintillating sun, having infinite rays, King Shrenik got up from his bed

राजा श्रेणिक की तैयारी

उट्ठित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसाल अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेगवायाम-जोग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहि सते परिस्सन्ते, सयपागेहि सहस्सपागेहि सुगधवरतेल्लमाइएहि पीणणिज्जेहि दीवणिज्जेहि मदणिज्जेहि विहणिज्जेहि, सव्विदियगायपल्हायणिज्जेहि अब्भगएहिं अब्भगिए समाणे, तेल्लचम्मसि पडिपुण्णपाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहि पुरिसेहि छेएहि दक्खेहि पट्ठेहि कुसलेहि मेहावीहिं निउणेहि निउणसिप्पोवगएहि जियपरिस्समेहि अब्भगण-परिमद्दणुव्वट्टण-करणगुणनिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए सवाहणाए सबाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिणिक्खमइ।

शय्या से उठकर राजा श्रेणिक व्यायामशाला की तरफ गए। उसमे प्रवेश कर उन्होने शस्त्राभ्यास, कूद, अंगो को मोडना, कुश्ती, आसन आदि कई प्रकार के व्यायाम किए। व्यायाम से थक जाने पर उन्होने सुगन्धित शतपाक, सहस्रपाक तेलो से मालिश करवाई। यह मालिश रस-रक्त आदि सप्त धातु को बढ़ाने वाली है, जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाली, शुक्रवर्धक और बलवर्धक है, तथा अग-प्रत्यग को आनन्द देने वाली है। मालिश करने वाले अनुचर कोमल हथेलियो और पगथलियो वाले तथा बलिष्ठ थे। वे तेल लगाने, मालिश करने, पसीना बाहर निकालने आदि मर्दन-कला के विभिन्न अगो के विशेषज्ञ थे। वे अपने कार्य मे प्रवीण (देश-काल के अनुरूप कार्य करने वाले), चतुर और मेहनती थे। इन लोगो

ने राजा श्रेणिक के शरीर को सुख और स्वास्थ्य प्रदान करने वाली चार तरह की, अस्थि-सुखकारक, मॉंस-सुखकारक, त्वचा-सुखकारक और रोम-सुखकारक मालिश भली प्रकार से की। मालिश द्वारा थकान मिटाकर स्फूर्तिवान राजा श्रेणिक व्यायामशाला से बाहर निकले।

PREPARATIONS BY KING SHRENIK

Leavıng the bed Kıng Shrenık went to hıs gymnasıum There he completed varıous routınes ıncludıng the practıce of weapons, jumpıng, gymnastıcs, wrestlıng, and yogıc postures After these tırıng routınes, he went for a massage wıth medıcated and flavoured oıls lıke Shata-pak and Sahastra-pak (cooked, refined, and medıcated hundred and thousand tımes)

Thıs massage was nourıshıng and refreshıng for the seven constıtuents (Dhatu) of the body ıncludıng blood, juıces, and marrow It ıncreased the potency and strength of the body and, at the same tıme, gave pleasure and exhılaratıon to every part The masseurs were strong and well-buılt but wıth soft palms and heels They were experts of all aspects of massagıng ıncludıng the rubbıng of oıl, kneadıng, and makıng one sweat They expertly gave kıng Sıddhartha four types of pleasant and healthy massage—bone stımulatıng, muscle stımulatıng, skın stımulatıng, and haır stımulatıng Kıng Shrenık came out of the gymnasıum after removıng fatıgue and gettıng refreshed.

पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ। अणुपविसित्ता. समंतजालाभिरामे विचित्तमणि-रयणकोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमडवसि णाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने,

सुहोदगेहि फुप्फोदगेहिं गधोदएहिं, सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए

तत्थ कोउयसएहि बहुविहेहिं कल्लाणगपवर मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमालगंध-कासाइयलूहियगे अहत-सुमहग्घ-दूसरयणसुसंवुए सरससुरभि-गोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे आविद्धमणि-सुवण्णे कप्पियहारद्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे पिणद्धगेविज्जे अंगुलेज्जग-ललियंग-ललियकयाभरणे णाणामणि-कडग-तुडय-थभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्त-सिरए

हारोत्थयसुकय-रइयवच्छे पालब-पलबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे मुद्दियापिगलगुलीए णाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिह-निउणोविय-मिसिमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलए, कि बहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलकियविभूसिए नरिदे सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण उभओ चउचामरवालवीइयगे मगल-जयसद्दकयालोए

अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाइ-दूय-सधिवालसद्धि सपरिवुडे धवलमहामेह-निग्गए विव गहगणदिप्पत्तरिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पियदसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ। पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाण-साला तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सनिसन्ने।

फिर वे स्नानगृह मे गए, जिसमे मोतियो की झालर और सुन्दर जालियो वाला तथा ऑगन मे रत्न जडा मनोहर स्नान मण्डप था। वहाँ पहुँचकर कई मणिरत्नो से बनी अनोखी चौकी पर वे आराम से बैठे और गुनगुने पुष्पोदक, गन्धोदक, उष्णोदक, शुभोदक और शुद्धोदक से अच्छी तरह स्नान किया। स्नान करते समय उन्होने अनेक कौतुक क्रीडाएं भी की।

स्वच्छता और आनन्द प्रदान करने वाले स्नान के बाद उन्होने पक्षियो के पखो जैसे नरम, रोएँदार और सुगन्धित तौलियो से शरीर पोछा, सरस व सुगन्धित गोशीर्ष चन्दन का लेप किया और अगराग लगाया। कोरे (नये) और बहुमूल्य वस्त्र धारण किये। फिर उन्होने पवित्र माला, मणियो से जडे सोने के हार, अर्द्ध हार, तथा त्रिशर हार और कठे गले मे पहने, जिनसे उनका वक्षस्थल दर्शनीय बन गया। कमर मे लम्ब झूमकेदार करधनी और हाथो मे रत्न जडे कडे और भुजबन्ध पहने। अगुलियो मे अगूठियाँ पहनी जिनकी पीत आभा से वे चमकने लगी। कानो मे कुडल पहने जिनसे उनका मुखमण्डल चमकने लगा। मुकुट धारण करने से उनका मस्तक आलोकित हो उठा। इस प्रकार इन आभूषणो से उनका सारा शरीर दमक उठा। फिर उन्होने कधे पर लम्बा लटकता हुआ दुपट्टा डाला। श्रेष्ठ कारीगरो द्वारा बनाया गया, मणिरत्न तथा सोना जडा, सुन्दर, बहुमूल्य, चमकीला, दृढ़ साँधो वाला वीर-वलय पहना। शब्दो मे उनका वर्णन कैसे किया जाय ? श्रेणिक राजा मानो साक्षात् कल्पवृक्ष लग रहे थे।

सेवको ने उनके मस्तक के ऊपर कोरट फूलो की माला लटके छत्र की छाया की हुई थी। अन्य सेवक श्रेष्ठ सफेद चामर दुला रहे थे। उन्हे देखते ही लोग जय-जयकार करने लगे।

इस तरह सजकर राजा श्रेणिक स्नानागार से बाहर निकले। जैसे बादलो से चन्द्रमा निकलकर ग्रह, नक्षत्र और तारो के बीच शोभित होता है, वैसे ही राजा श्रेणिक स्नानागार से निकल अनेक गणनायको, दण्डनायको, युवराजों, पट्टधारियों (राज्य सम्मान प्राप्त व्यक्ति), जमींदारो, चौधरियो, मन्त्रियों, महामन्त्रियों, ज्योतिषियो, द्वारपालो, आमात्यो, दासो, पीठमर्दको, प्रतिष्ठित नागरिको, व्यापारियो, श्रेष्ठियों, सेनापतियो, सार्थवाहों, दूतों, सन्धिपालो आदि के बीच शोभित होने लगे। फिर वे बाहरी सभा मण्डप मे आए और पूर्व दिशा की ओर मुख कर सिहासन पर बैठ गए।

He then went into the bathroom where there was a bath chamber with a floor inlaid with gemstones and a ceiling decorated with a hanging net and laces made of pearls King Shrenik made himself comfortable on a gem studded stool and took his bath with pure, clean, warm, and perfumed water He made this bath all the more enjoyable by playful activities

After this cleansing and refreshing bath he rubbed his body dry with a flossy, soft, and perfumed towel He then got his body anointed with a creamy paste made fragrant with sandal wood and Goshirsha

His whole body was then adorned with auspicious garlands Gem studded golden necklaces like Haar, Ardhahaar, Trishar-haar, Kantha, etc , adorned his neck and chest A girdle with dangling chains was on his waist, gem studded armlets and bracelets on his arms, glittering golden rings on his fingers, shiny earrings dangled near his face, and a radiant crown was placed on his head

All these glittering ornaments added a radiance to the graceful presence of King Shrenik The king flung an exquisite long shawl over his shoulders, under this was a gorgeous upper garment made by expert artisans using gems, brocade, and other costly, shiny and elegant materials It was also strong and protective It is hard to describe his grace and elegance in words It was as if King Shrenik looked like the wish-fulfilling tree (Kalpavriksha)

Attendants held over his head a regal parasol from which garlands of Korant flowers dangled Other attendants fanned him with best quality white whisks (Chamar) The moment he appeared on the threshold, people greeted him with hails of victory

Adorned thus, King Shrenik came out of the bathroom and joined the attending luminaries including numerous chieftains, administrators, princes, knights of honour, landlords, village-heads, ministers, chief ministers, astrologers, guards, secretaries, personal servants, senior citizens, businessmen, merchants, commanders, caravan chiefs, ambassadors, diplomats, etc It appeared as if coming out of the cover of dark clouds, the moon was perched in the midst of stars and planets with all its grandeur and beauty The king then came to the outer assembly hall and sat down on the throne facing the east

स्वप्न-पाठक

सूत्र २० तए ण से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामते उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे अट्ठ भद्दासणाइ सेयवत्थपच्चुत्थुयाइ सिद्धत्थमगलोवयारकयसतिकम्माइ रयावेइ। रयावित्ता णाणामणिरयणमडिय अहियपेच्छणिज्जरूव महग्घवरपट्टणुग्गय सण्हबहुभत्तिसयचित्तट्ठाण ईहामिय-उसभ-तुरय-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्त सुखचियवरकणगपवर-पेरत-देसभाग अब्भितरिय जवणिय अछावेइ, अछावेत्ता अच्छरग-मउअमसूरग-उत्थइय धवलवत्थ-पच्चत्थुय विसिट्ठ अगसुहफासय सुमउय धारिणीए देवीए भद्दासण रयावेइ। रयावेत्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ। सद्दावेत्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसत्थ-कुसले सुविणपाढए सद्दावेह, सद्दावेत्ता एयमाणत्तिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह।

सूत्र २०. राजा श्रेणिक ने अपने निकट ईशानकोण की ओर उचित स्थान पर आठ भद्रासन लगवाए जो सफेद वस्त्र से ढँके थे तथा उन पर मागलिक उपचार हेतु सफेद सरसो के दाने रखे गये थे। बैठक के भीतर उपयुक्त स्थान पर मणिरत्नो मे शोभित एक बहुमूल्य, उत्तम और दर्शनीय पर्दा लगवाया। किसी प्रसिद्ध नगर मे बने मुलायम कपडे से तैयार किये इस पर्दे (यवनिका) पर ईहामृग (भेडिया), वृषभ, अश्व, मकर, पक्षी, किन्नर, चमरी गाय, हाथी, पद्मलता आदि के सुन्दर चित्र बने थे और सोने की जरी का काम किया हुआ था। इस पर्दे के पीछे धारिणी देवी के लिए एक सुन्दर, कोमल सफेद वस्त्र (खोल–कवर) से ढका शरीर के लिए सुखद स्पर्श वाला भद्रासन लगवाया। फिर राजा ने सेवको (कौटुम्बिक) को बुलाया और कहा–"हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही अष्टाग महानिमित्त के सूत्र व अर्थ के पारगत, विविध शास्त्रो के ज्ञाता और स्वप्न-फल समझने-बताने वालो (पडितो) को बुलाकर लाओ।

THE DREAM-DIVINERS

20. King Shrenik got eight chairs with white covers installed in the area north-east of his throne and for auspicious treatment got white mustard seeds placed on them A gorgeous, rich and gem studded screen-partition was placed on the inner side of this throne platform This screen was made of soft imported cloth with exquisite illustrations of Iha-mrig (wolf), bull, horse, crocodile, birds, Kinnars (lower gods), yak, elephant, lotus creeper, etc embroidered and enriched with brocade A beautiful gem studded throne with soft, comfortable cushions and pillows with clean white cotton covers was placed behind the screen for Queen Dharini

After making all these arrangements King Shrenik summoned his attendants and said, "Beloved of gods! call the scholars of the eight-fold scripture of augury and various other scriptures, and also the dream diviners, as soon as possible

सूत्र २१ तए ण ते कोडुंबियपुरिसा सेणिए ण रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु 'एव देवो तह त्ति' आणाए विणएण वयण पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति।

सूत्र २१. राजा के इस कथन पर सेवक आनन्दित हुए। दोनो हाथो को जोड़ अँगुलियों की पोरो को मिलाकर अजलिबद्ध किया और मस्तक के पास घुमाकर बोले, "हे देव ! ऐसा ही हो।" विनयपूर्वक आज्ञा शिरोधार्य कर वे राजगृह नगर के बीच होते हुए उस भाग मे पहुँचे जहाँ स्वप्न-फल वेत्ता पण्डित रहते थे। वहाँ पहुँचकर पण्डितो को राजसभा मे आने का निमन्त्रण दिया।

21. The attendants happily and humbly accepted the king's order Crossing the crowded streets of Rajagriha they reached the area where the scholars of augury and allied subjects lived and, extended the king's invitation to them for attending the assembly

सूत्र २२ तए ण ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता

अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरा हरियालिय-सिद्धत्थकयमुद्धाणा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स मज्झमज्झेण जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता एगयओ मिलन्ति, मिलित्ता सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारेण अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिये राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। सेणिएणं रन्ना अच्चिय-वंदिय-पूइय-माणिय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति।

सूत्र २२. यह निमन्त्रण पाकर वे पण्डित हर्षित हुए और स्नान व बलिकर्म–कुल देवता का पूजन आदि कर उन्होंने तिलक आदि लगाये। सभी मांगलिक और प्रायश्चित्त अनुष्ठान (दही, अक्षत, सरसों, दूब आदि मांगलिक वस्तुओं से अशुभ स्वप्न, शकुन आदि के दोष दूर करना) पूरे कर वे तैयार हुए। राजसभा में जाने योग्य शुद्ध, मांगलिक वस्त्र तथा भार में हल्के परन्तु मूल्यवान गहने धारण किये और मंगल हेतु सरसों, दूब आदि मस्तक पर रखकर अपने घरों से बाहर निकले। राजगृह नगर के बीच होते हुए वे राजा श्रेणिक के विशाल भवन के द्वार पर आए। वहाँ एकत्र होकर वे सब साथ मिलकर बाहरी सभा मण्डप में राजा श्रेणिक के पास आए और हाथ जोड जय-जयकार कर राजा को बधाई दी। राजा श्रेणिक ने उन पंडितों को नमस्कार किया, चन्दन , तिलक आदि लगाकर उनकी अर्चना की तथा आदर-सत्कारपूर्वक मधुर स्वर में उनका बहुमान किया। फिर वे सब अपने लिए नियत भद्रासनों पर क्रमशः बैठ गए। राजा ने पुष्प, फल, वस्त्र आदि भेंटकर उनका सम्मान किया।

22. The scholars felt pleased and honoured getting the invitation After taking there bath they completed their ritual routines of awakening protective spirits, repentance for mistakes, offerings to gods, using auspicious things like curd, rice, mustard, grass, etc Putting auspicious marks on their foreheads, they dressed themselves in clean and sober costumes suitable for the king's assembly They embellished themselves with light but rich ornaments As an auspicious ritual they put mustard and grass on their heads and came out of their houses Passing through the town they approached the gate of the great palace of King Shrenik After assembling at the gate they entered the hall in a group and went near the king Joining their palms they greeted the king, wishing him success and victory, and blessed him King Shrenik, folding his hands, greeted the pundits sweetly giving them due respect and recognition The scholars took the

seats offered to them and the kıng honoured them by offerıng flowers, fruıts, and garments

सूत्र २३ तए ण सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणि ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फ-फल-पडिपुण्णहत्थे परेण विणएणं ते सुमिणपाढए एव वयासी–एवं खल देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता ण पडिबुद्धा। त एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सूत्र २३. श्रेणिक राजा ने धारिणी रानी को पर्दे के पीछे बिठाया और हाथ में फल-फूल लेकर विनयपूर्वक उन पडितो से कहा–"हे देवानुप्रियो ! आज रात्रि मे धारिणी गनी ने (पूर्व वर्णन के अनुसार) एक महास्वप्न देखा और जाग पडी। हे देवानुप्रियो ! मेरा अनुमान है कि इस उदार महास्वप्न का कोई विशेष कल्याणकारी फल होना चाहिए।"

23. Queen Dharını took her seat behınd the screen Kıng Shrenık took flowers and fruıts ın hand and addressed the scholars, "O beloved of gods! Queen Dharını saw a dream last nıght and got up (he gave detaıls as mentıoned earlıer) I assume that thıs great and auspıcıous dream ıs an ındıcatıon of some specıal achıevement ın the future "

स्वप्न-पाठको द्वारा फलादेश

सूत्र २४ तए ण ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया त सुमिण ओगिण्हति। ओगिण्हित्ता ईह अणुपविसति, अणुपविसित्ता अन्नमन्नेण सद्धि सचालेति, सचालित्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा उच्चारेमाणा एव वयासी–

सूत्र २४ श्रेणिक गजा का यह कथन सुन स्वप्न पाठक सतुष्ट व प्रसन्न हुए। पहले उन्होने उस स्वप्न के विषय मे सामान्य रूप से विचार किया और फिर अर्थ पर विशेष रूप से चिन्तन किया। परस्पर विचार-विमर्श कर, एक-दूसरे का अभिप्राय समझ स्वप्न के साथ ही उसके अर्थ की गहराई तक पहुँचे। जब वे इस विषय मे एकमत हो गए तब श्रेणिक गजा से स्वप्नशास्त्र के नियमानुसार अपना मतव्य कहने लगे–

INTERPRETATION BY DREAM-DIVINERS

24. The dream dıvıners were happy to hear the words of Kıng Shrenık They first gave a cursory thought to the dream and then a

deep and evaluative contemplation They consulted with each other in an in-depth discussion about the meaning and indications of the dream. When they reached a unanimous agreement about the meaning of the dream they conveyed their opinion, based on the relevant scriptures, to King Shrenik—

सूत्र २५. एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा। तत्थं णं सामी ! अरहंतमायरो वा, चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणसि एएसिं तीसाए महासुमिणाण इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति–

तं जहा–

गय-उसभ-सीह-अभिसेय–दाम-ससि-दिणयरं झयं कुभ।
पउमसर-सागर-विमाण–भवण-रयणुच्चय-सिहिं च॥

वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति।

बलदेवमायरो वा बलदेवंसि-गब्भ वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्ह महासुमिणाण अण्णयरे चत्तारि महासुमिणे पसित्ता ण पडिबुज्झति।

मडलियमायरो वा मंडलियसि गब्भ वक्कमणाणंसि एएसि चोद्दसण्ह महासुमिणाण अन्नयर एगं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति।

सूत्र २५. "हे स्वामी ! हमारे स्वप्न शास्त्र के अनुसार बयालीस स्वप्न और तीस महास्वप्न, यो कुल बहत्तर स्वप्न बताए गये है। हे स्वामी ! जब अरहत अथवा चक्रवर्ती गर्भ मे आते हैं तब उनकी माताएँ तीस महास्वप्नो मे से ये चौदह महास्वप्न देखकर जागती हैं–

१. हाथी, २ वृषभ, ३ सिह, ४ लक्ष्मी-अभिषेक, ५ पुष्पमाला, ६ चन्द्र, ७ सूर्य, ८ ध्वजा, ९ पूर्ण कुभ, १0 पद्म सरोवर, ११ क्षीर सागर, १२ देव-विमान (अथवा भवन), १३ रत्न-राशि, तथा १४ निर्धूम अग्नि।

जब वासुदेव गर्भ में आते है तब उनकी माताऍ इन चौदह स्वप्नो मे से कोई भी सात स्वप्न देखकर जागती हैं।

जब बलदेव गर्भ मे आते हैं तब उनकी माताएँ इन महास्वप्नो मे से कोई भी चार स्वप्न देखकर जागती हैं।

माण्डलिक राजा के गर्भ में आने पर उनकी माताएँ इनमें से कोई भी एक महास्वप्न देखकर जागती हैं।

25. "Sire! According to the science of dreams there are seventy two types of dreams, out of which forty two are known as common dreams and the remaining thirty as great dreams Sire! When an Arihant or a Chakravarti is conceived, his mother sees fourteen of the thirty great dreams, they are—1 An elephant, 2 a bull, 3 a lion, 4 the annointing of goddess Laxmi, 5 a garland, 6 the moon, 7 the sun, 8. a flag, 9. an urn, 10 lotus pond, 11 the sea, 12 a space vehicle (Viman), 13 a heap of jewels, and 14 a smokeless fire

When a Vasudev is conceived his mother sees any seven out of these fourteen dreams

When it is a Baldev in the womb the mother sees any four of these fourteen dreams

When it is a Mandalik Raja (regional sovereign) in the womb the mother sees any one of these fourteen dreams

सूत्र २६ इमे य ण सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे। त उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे। जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी ! रज्जलाभो सामी ! एव खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव दारग पयाहिसि।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिन्नविउलबल-वाहणे रज्जवती राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं उराले ण सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुबूहेति।

सूत्र २६ "हे स्वामी ! धारिणी देवी ने इनमे से एक आरोग्य, तुष्टि व दीर्घायु दायक तथा मगल व कल्याणकारक महास्वप्न देखा है। हे स्वामी ! यह अर्थ, भोग, पुत्र व राज्य लाभ प्रदान करने वाला है। अत धारिणी देवी पूरे नौ महीने बीतने पर एक पुत्ररत्न को जन्म देगी।

आपका वह पुत्र बाल्यावस्था पार करने पर शूरवीर और पराक्रमी होगा, विशाल सेना का स्वामी होगा, अनेक जागीरदारो का अधिपति राजा होगा अथवा एक आत्मसयमी

अणगार। अत हे स्वामी ! धारिणी देवी ने यह जो स्वप्न देखा है वह उत्तम फलदायक है।" स्वप्न-पाठको ने इन शब्दो मे बारबार स्वप्न की सराहना की।

26. "Sire! Queen Dharini has seen one of these fourteen dreams that are harbingers of good fortune You will gain wealth, grandeur, a son, and expansion of your kingdom After nine months Queen Dharini will give birth to a son.

"As your son passes the age of infancy he will either be a brave and courageous king having a large army and knights, or a self disciplined ascetic As such, Sire! Queen Dharini has indeed seen a bountiful and auspicious dream " With these words the dream diviners praised the dream again and again

स्वप्न-पाठकों का सम्मान

सूत्र २७. तए ण सेणिए राया तेसि सुमिणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियए करयल जाव एव वयासी–

एवमेय देवाणुप्पिया ! जाव जन्न तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुमिण सम्म पडिच्छइ। पडिच्छित्ता ते सुमिणपाढए विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण-वत्थ-गध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ समाणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुल जीवियारिह पीतिदाण दलयइ। दलइत्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र २७ श्रेणिक राजा उन स्वप्न-पाठको के मुख से यह स्वप्न-फल सुन-समझकर प्रसन्न हुए और हाथ जोडकर उनसे बोले–

"हे देवानुप्रियो ! आप लोगो का कथन यथार्थ है, सत्य है।" इस कथन के साथ राजा ने स्वप्न-फल को मान्य कर लिया और उन स्वप्न-पाठको का अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य सामग्री तथा वस्त्र, गध, माला एव अलकार से सत्कार, सम्मान किया। उन्हे जीवन-निर्वाह योग्य प्रीतिदान (मानधन) देकर विदा किया।

FELICITATION OF DREAM-DIVINERS

27. Hearing about the interpretation of the dream, King Shrenik became very pleased and with folded hands addressed the dream diviners—

"O beloved of gods! You have indeed revealed the truth and reality," with these words he accepted the interpretation with full faith and

respect He felicitated the scholars by presenting them food, flowers, cloth, incense, garlands, ornaments, etc He donated these things in sufficient quantity to fulfill their needs for life and, bid them farewell.

सूत्र २८. तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धारिणिं देविं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा जाव एग महासुमिणं जाव भुज्जो भुज्जो अणुवूहइ।

सूत्र २८ श्रेणिक राजा तब सिहासन पर से उठे, धारिणी देवी के निकट गए और बोले--"हे देवानुप्रिये ! स्वप्नशास्त्र मे बयालीस स्वप्न और तीस महास्वप्न बताये गये हैं। आपने उनमे से एक महास्वप्न देखा है " इस प्रकार उन्होंने स्वप्न-पाठको द्वारा बतायी बाते कही और बार-बार उनका अनुमोदन किया।

28. After this, King Shrenik got up from his throne, approached Queen Dharini and said, "O beloved of gods! Of the forty two common and thirty great dreams described in the scriptures about dreams, you have seen one of the great dreams " he repeated the words of the dream diviners and affirmed again and again

सूत्र २९ तए ण धारिणी देवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया त सुमिण सम्म पडिच्छइ। पडिच्छित्ता जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता ण्हाया कायबलिकम्मा जाव विपुलाहि जाव विहरइ।

सूत्र २९ धारिणी देवी राजा श्रेणिक की बाते सुन-समझकर हर्ष विभोर हो उठी। उन्होंने उस स्वप्न को हितकारक रूप मे स्वीकार किया और अपने महल में आईं। स्नानादि कर मागलिक अनुष्ठान किये और सुख-शाति से समय व्यतीत करने लगीं।

29. Hearing and understanding the statement of King Shrenik, the queen effused with joy She accepted the dream as beneficial and returned to her chamber She took her bath and performed various auspicious rituals She lived in peace and happiness thereafter

धारिणी का दोहद

सूत्र ३० तए ण तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था--

सूत्र ३० इस घटना के बाद तीसरे महीने मे जब गर्भवती माता का दोहद काल होता है, धारिणी देवी को अकाल-मेघ का दोहद उत्पन्न हुआ। उसका वर्णन इस प्रकार है--

DHARINI'S DOHAD

30. The third month of pregnancy is the period of Dohad (desires of a pregnant mother) During this period Queen Dharini had a desire of enjoyment of untimely monsoon The description of her desire is as follows—

सूत्र ३१. धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ, सपुन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ, तयत्थाओ ण ताओ कयपुन्नाओ, कयलक्खणाओ, कयविहवाओ, सुलद्धे तासि माणुस्सए जम्म-जीवियफले, जाओ ण मेहेसु अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु अब्भुन्नएसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु

धतधोतरुप्पपट्ट-अक-सख-चद-कुद-सालि-पिट्ठरासि-समप्पभेसु

चिउर-हरियालभेय-चपग–सण–कोरट–सरिसय-पउमरय-समप्पभेसु

लक्खारस-सरसरत्तकिसुय-जासुमण-रत्तबधुजीवग-जातिहिंगुलय-सरसकुकुम-उरब्भ-ससरुहिर-इदगोवगसमप्पभेसु,

बरहिण-नीलगुलिय-सुग-चास-पिच्छ-भिगपत्त-सासग-नीलुप्पलनियर-नवसिरीस-कुसुम-णवसद्दल-समप्पभेसु,

जच्चजण-भिगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-गवल-गुलिय-कज्जल-समप्पभेसु,

फुरतविज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगणचवलपरिसक्किरेसु निम्मलवर-वारिधारापगलिय-पयडमारुयसमाहय-समोत्थरत–उवरि उवरि तुरियवास पवासिएसु, धारापहकरणिवाय-निव्वावियमे-इणितले हरियगणकचुए, पल्लवियपायवगणेसु, वल्लिवियाणेसु पसरिएसु, उन्नएसु सोभग्गमुवागएसु, नगेसु नएसु वा, वेभारगिरिप्पवायतड-कडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहाविय-पलोट्टफेणाउल सकलुस जल वहतीसु गिरिनदीसु, सज्ज-ज्जुण-नीव-कुडय-कदल-सिलिंधकलिएसु उववणेसु, मेह-रसिय-हट्ठतुट्ठ-चिट्ठिय-हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयतेसु बरहिणेसु, उउ-वस-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसुसु, नवसुरभिसिलिंध-कुडयकदल-कलबगधद्धणि मुयतेसु उववणेसु, परहुयरुयरिभितसकुलेसु उद्दायतरत्तइद-गोवयथोवयकारुन्नविलवितेसु ओणयतणमडिएसु दद्दुरपयंपिएसु सपिडिय-दरिय-भमर-महुकरिपहकर-परिलित-मत्तछप्पय-कुसुमा-सवलोलमधुरगुंजतदेसभाएसु उववणेसु, परिसामियचंद-सूर-गहगण-पणट्ठनक्खत्त-तारगपहे इंदाउह-बद्धचिधपट्टसि अबरतले उड्डीणबलागपतिसोभतमेहविंदे, कारंडगचक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे सपत्ते पाउसम्मि काले, ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ताओ, किं ते ?

वरपायपत्त-णेउर-मणिमेहल-हार-रइय-उचिय-कडग-खुड्डय-विचित्तवरवलयथंभिय-भुयाओ, कुंडलउज्जोयियाणणाओ, रयणभूसियंगाओ, नासानीसासवायवोज्झ चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्त हयलाला-पेलवाइरेय धवलकणयखचियन्तकम्म आगासफलिहसरिसप्पभं असुअ पवरपरिहियाओ, दुगुल्ल-सुकुमालउत्तरिज्जाओ, सव्वोउयसुरभिकुसुम-पवर-मल्लसोभितसिराओ, कालागरु-धूवधूवियाओ, सिरिस-माणवेसाओ, सेयणगगंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ, सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चंदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदडसख-कुंद-दगरय-अमयमहिय–फेणपुंजसनिगा-सचउचामर-वालवीजियंगीओ, सेणिए ण रन्ना सद्धिं हत्थिखध-वरगए ण, पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चउरंगिणीए सेणाए, महया हयाणीए ण, गयाणीए ण रहाणीए ण, पायत्ताणीए ण, सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव निग्घोसणादियरवेण रायगिहं नगरं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्तसुचिय-समज्जिओवलित्त जाव पंचवण्ण-सरस-सुरभिमुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलिय कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघत-गधुद्धुयाभिराम सुगंधवरगधियं गधवट्टिभूयं अवलोएमाणीओ, नागरजणेणं अभिणदिज्जमाणीओ, गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-वल्लि-गुच्छ-ओच्छाइयं सुरम्म वेभारगिरि-कडगपायमूल सव्वओ समता आलोएमाणीओ आलोएमाणीओ आहिंडेमाणीओ आहिडेमाणीओ दोहल विणियति। त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि।

सूत्र ३१ धारिणी देवी के मन मे विचार उठे–"वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यवती हैं, कृतार्थ है, उन्होने पूर्व जन्म मे पुण्य कर्म सँजोया है, उनके शुभ लक्षण फलित है, वैभव सफल है, मनुष्य-जीवन सफल है–जो अपने मन मे उठे अकाल-मेघ का दोहद पूर्ण कर पाती हैं। आकाश मे उत्पन्न ऊँचे, गहराते, फैलते, गरजते, छोटी-छोटी बूँदो से भरे, चमकती बिजली से भरे और वरसने को उद्यत मेघो मे विचरण कर अपना दोहद पूर्ण करती माताएँ धन्य हैं।

"आग मे तपाकर शुद्ध किये चॉदी के पतरे, अक-मणि, शंख, चन्द्रमा, कुन्द फूल और चावल के आटे के जैसे सफेद,

'चिकुर, हरताल के टुकडे, चम्पा के फूल, सन के फूल, कोरट के फूल, सरसों के फूल और कमल-केसर के जैसे पीले,

"लाख, गहरे लाल पलाश के फूल, जवाकुसुम, मधुरी फूल, श्रेष्ठ हींगलू, घोली हुई कुकुम, मेंढ और खरगोश के खून तथा बीर-बहूटी जैसे लाल;

"मोर, नीलम, नीली गोली, तोते और नीलकठ के पख, भँवरे के पंख, सासक के पेड़, नील कमल के झुण्ड, शिरीष के नए पौधे के फूल और नई घास के जैसे नीले;

"सौवीर के श्रेष्ठ अंजन, भृंगभेद–भंवरा या कोयले के चूरे, श्याम-रत्न, भँवरो की पंक्ति, भैंस के सींग और काजल के जैसे काले–

"ऐसे पाँच रंग के बादल जिनमे बिजली चमक रही हो, जो गरज रहे हो, पवन के प्रवाह से जो आकाश मे तेजी से चारो दिशाओ मे घूम रहे हो और जो समस्त पृथ्वी को आच्छादित करने वाली प्रचड वायु के झोकों से बौछार बनकर निरन्तर गिरती, धरती को भिगोती निर्मल जलधार बरसा रहे हों, ऐसे मेघो मे विचरण करती हुई अपना दोहद पूरा करती माताएँ धन्य है।

"ऐसे वातावरण मे ऐसी जलधार गिरने से शीतल बनी धरती, जिसने हरियाली के अकुरो की काचली पहन ली हो। जिसके पेडों के झुण्ड पत्तो से हरे-भरे हो गये हो और बेलो के झुण्ड फैल गये हों। जिसके पहाड-पहाडियाँ-टीले आदि ऊँचे भाग धुलकर सुहावने लगने लगे हो, वैभारगिरि के तटो और घाटियों से झरने बहने लगे हो, और पहाडी नदियो में ऊँचाई से गिरते झरनो के उछलते पानी से उत्पन्न फेनिल बहाव वेगवान हो गया हो। बाग-बगीचे सरस, अर्जुन, नीम और कुटज के पेडो के अकुरो से और कुकुरमुत्तो से भर गये हो। बादलो की गरज से प्रफुल्ल हो मोर पूरे उत्साह से कूकने लगे हो, और वर्षा ऋतु के प्रभाव से मदोन्मत्त युवा मोरनियो के साथ नाचने लगे हो। उपवनो मे रहे शिलिंध्र, कुटज, कदल और कदब के पेडो से नव-पल्लवित फूलो की तृप्त करने वाली महक उठ रही हो। कोयलो के मीठे स्वर गूँज रहे हो। हरियाली लाल रग की बीर-बहूटियो से शोभित हो रही हो। पपीहो की करुण पी-पी चारो ओर गूँज रही हो तथा लम्बी और झुकी घास मे शोभा बढ रही हो। मेढक ऊँचे स्वर मे टर्रा रहे हो, फूलो का पराग चूसते चचल मदोन्मत्त भँवरो की गुँजार फैल रही हो। गहरे काले बादलो के घटाटोप अधकार मे सूरज, चॉद और तारो की आभा विलीन हो गई हो, इन्द्र धनुषरूपी ध्वजा आकाश मे फहराने लगी हो, उडते हुए बगुलो की कतार बादलो की सजावट बन गई हो, और कारडक, चक्रवाक तथा राजहस नाम के पक्षी मानस-सरोवर की ओर जाने को तत्पर हो उठे हो। ऐसे वर्षा काल मे जो माताएँ स्नान करके बलिकर्म, कौतुक मगल और प्रायश्चित्त कर्मो का अनुष्ठान कर ऐसे प्रदेशो मे विहार करती है वे धन्य है।

"धन्य है वे माताएँ जो पैरो मे नूपुर, कमर मे करधनी, गले मे हार, हाथो मे कडे-कगन, अगुलियो मे अँगूठियाँ और बाहो मे अद्‌भुत भुजबध पहनती है। जिनके मुखमण्डल पर कुण्डलो की आभा फैल रही हो और जिनका अग-अग रत्न जडे आभूषणो से सजा हुआ हो। जिन्होने ऐसे वस्त्र पहन रखे हो जो नि श्वास से उड जाये इतने महीन हो, आकर्षक हों, सुन्दर रग और स्निग्ध स्पर्श वाले हो, घोडे के मुँह के फेन॰से भी हल्के और कोमल हो, जिनके सुनहरी जरी की स्फटिक-सी सफेद कोर हो। जिनका मस्तक

सर्व-ऋतु फूलो की सुगंधित मालाओ से सजा हो और शरीर उत्तम धूप से सुगन्धित हो। जो साक्षात् लक्ष्मी जैसी लग रही हों। जो सेचनक नाम के गन्धहस्ति पर चढ़ी हो और जिनके सिर पर कोरट फूलो की माला से सजा छत्र हो। जिन पर शंखादि जैसे सफेद बालो वाले और चन्द्रप्रभ, लसनिया और हीरा जडे मूठो वाले चामर ढुलाए जा रहे हो। जो हाथी की पीठ पर राजा श्रेणिक के साथ बैठी हो। जिनके पीछे चतुरगिणी सेना चल रही हो। जिनके साथ छत्रादि राजचिह्नो सहित समस्त वैभव चल रहा हो। जो उत्सव पर सजाये राजगृह नगर को देखती राजमार्ग से गुजर रही हो। जिनका समस्त नागरिक अभिनन्दन कर रहे हों और जो पेड-पौधो, झाडियो बेलो के झुण्डो से भरी वैभारगिरि की तराई मे चारो ओर घूमती अपना दोहद पूर्ण कर रही हो। मै भी इसी प्रकार अपना दोहद पूर्ण करने की कामना रखती हूँ।"

31. Queen Dharini thought, "Blessed, pious and contented are the mothers whose desire of untimely monsoon is fulfilled The pious signs and glory of the good deeds of their past life are proved to be meaningful and their present life is successful Blessed, indeed, are the mothers whose desire of enjoying high, darkening, spreading, and thundering clouds, filled with lightening, saturated with droplets of water, and ready to rain, is fulfilled

"The sky is filled with clouds of five colours—

White—like a fire-refined silver sheet, the white Anka bead, conch-shell, the moon, Kunda flower, and rice flour

Yellow—like Chikur, a piece of Hartal, flowers of Champa, hessian, Korant, and mustard, and pollen of the lotus flower

Red—like shellac, deep red Palash flowers, Javakusum flowers, Madhuri flowers, best quality vermilion, red oxide solution, blood of ram or rabbit, and red beetle

Blue—like peacock, blue sapphire, blue glass bead, feathers of parrot or nightingale, bumble bee, Sasak plant, heap of blue lotus flowers, flowers of a Sirish plant, and grass sprouts

Black—like soot from Sauvir (a state in ancient India), a species of bumble bee, coal dust, black stone, buffalo-horn, and graphite powder

"These clouds are full of lightening and thunder, drifting with great speed in all directions pushed by the maddening force of winds, and

drenching the earth with a forceful and continuous downpour of pure water slanted by the tremendous force of the gale Blessed are the mothers who fulfill their Dohad by enjoying such weather

"In such weather the land becomes cool due to the water pouring from the sky It becomes clad in the green garment of sprouting leaves The clusters of trees become greener with newly sprouting leaves The tangle of creepers starts spreading The higher parts of the land, like hills, hillocks, and dunes, are washed and appear pleasant From the clefts and ravines of the Vaibhar-giri mountain streams start flowing The frothy flow of the mountain rivers gathers speed due to the added water from the high waterfalls

"The gardens and orchards are filled with freshly sprouting trees like Surj, Arjun, Neem, Kutaj, etc and a variety of mushrooms Inspired by the thundering of clouds, the peacocks cuckoo in ecstasy and start their courtship dance to attract peahens In parks the flowering trees like Shilindhra, Kutaj, Kandal and Kadamb start emitting aroma of newly blossoming flowers The unending green expanse, made wavy by long and bending grass, is enchantingly embroidered with crawling red beetles

"The atmosphere is filled with sweet melodious cuckooing of Koyal (Indian cuckoo), touching cry of Papiha, resonant humming of pollen sucking intoxicated bumble-bees, and cacophony of croaking frogs The dark black clouds cover the glowing sun, moon and stars The flag like rainbow flutters in the sky decorated by the rows of cranes flying in formation Migratory birds like Karandak, Charavak, and swan get ready to commence their flight to lake Mansarovar (in the Himalayas)

"Blessed are the mothers who, after taking their bath and performing cleansing and auspicious ritual, wander enjoying such enchanting places during such monsoon season

"Blessed are the mothers who adorn themselves with Nupurs on the toes, girdle on the waist, bracelets on the forearms, rings on the fingers, and armlets on arms Whose faces are resplendent with the glow of earrings and every part of their bodies is embellished with gem studded ornaments Their enchanting and colourful dresses with a

golden brocade border are made of material that is so light and delicate that it is swept away by mere exhalation, and is as soft as the froth from a horses mouth Their bodies are made fragrant with perfumes and hairdo enriched with all season fragrant flowers They look like Laxmi, the goddess of wealth

"Blessed are the mothers who ride the great elephant named Sechanak with king Shrenik and having a canopy made of Korant flowers over their head Who are being fanned with whisks having snow-white fibers and handles studded with gem stones like moonstone, cats-eye, and diamond Who are accompanied by the four pronged army and all the regal signs and grandeur Who pass the decorated streets of Rajagriha filled with greeting and cheering crowds and reach the base of mountain Vaibharagiri Reaching there they roam around the lush green valley and fulfill their pregnancy-desire. I also wish to satisfy my pregnancy desire in this manner"

धारिणी की उदासी

सूत्र ३२ तए ण सा धारिणी देवी तंसि दोहलसि अविणिज्जमाणंसि असपन्नदोहला असपुन्नदोहला असमाणियदोहला सुक्का भुक्खा णिम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलता ओमथियवयण-नयणकमला पडुइयमुही करयलमलिय व्व चपगमाला णित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचियपुप्फ-गध-मल्लालंकार-हार अणभिलसमाणी कीडारमणकिरिय च परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ।

सूत्र ३२ असमय मे ऐसा दोहद उत्पन्न होने पर, उस दोहद के पूरा न होने पर, वर्षा ऋतु न होने से मेघ आदि की सभावना न होने पर धारिणी देवी को मानसिक सताप हुआ। उनका रक्त सूखने लगा, वे कृशकाय हो गई और भूखे व्यक्ति के समान दुर्बल हो गई। शरीर से जीर्ण हो गई। स्नान न करने से मलिन हो गई। भोजन से उन्हें अरुचि हो गई। उनका शरीर और मुखमण्डल कान्तिविहीन हो गया। मसले हुए चम्पा के फूलो की माला के समान वे निस्तेज हो गई। उनका मुख दीन और विवर्ण हो गया। फूल, गध, माला, गहने आदि सभी शृगार साधनो के प्रति उन्हें अरुचि हो गई। खेल, क्रीडा और मनोरजन का भी उन्होंने त्याग कर दिया। दु खी मन से वे धरती की ओर देखती रहती। मन का सारा उत्साह और दृढता विलीन हो गये और वे आर्त्तध्यान मे डूब गई।

WORRIED DHARINI

32. As it was not the monsoon season and there was hardly any chance of rain clouds or any other indications of that season, Queen Dharini was in a state of mental agony because of this impossible Dohad She lost her appetite and became anaemic, emaciated, and weak like a famished person Signs of aging appeared on her body As she stopped taking her bath she had a sloppy look Her face and body lost the natural freshness and glow, like a crushed garland of Champa flowers The healthy pink of her face was replaced by a sick gloom

She became apathetic to any and all sorts of cosmetics and adornments including flowers, perfumes, garlands, and ornaments She abandoned games and all other entertainment activities In this sad state she sat gazing at the earth all the time Loosing all her enthusiasm and determination she plunged into a deep melancholy

सूत्र ३३. तए ण तीसे धारिणीए देवीए अगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडीयाओ धारिणि देवि ओलुग्ग जाव झियायमाणिं पासति, पासित्ता एव वयासी– "कि ण तुमे देवाणुप्पिये ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?"

तए ण सा धारिणी देवी ताहि अगपडियारियाहि अब्भितरियाहि दासचेडियाहिं एव वुत्ता समाणी णो आढाति, णो य परियाणाति, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया सचिट्ठइ।

तए णं ताओ अगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणि देवि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी–"कि ण तुमे देवाणुप्पिये ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?"

तए ण धारिणी देवी ताहि अंगपडियारियाहि अब्भितरियाहि दासचेडियाहि दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ता समाणी णो आढाइ, णो परियाणाइ, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया सचिट्ठइ।

सूत्र ३३ धारिणी देवी के अत पुर की दासियॉ तथा अग परिचारिकाएँ उनके उदास मन और जीर्ण शरीर को देखकर पूछने लगी–"हे देवानुप्रिये ! आप इतनी दुर्बल और उदास क्यो हो रही है ? आर्त्तध्यान मे क्यो डूबी रहती है ?"

धारिणी देवी दासियो की बातो पर ध्यान नही देती, सुना-अनसुना कर कोई उत्तर नही देती।

इस पर वे दासियाँ कई बार यही प्रश्न दोहराती हैं और हर बार धारिणी देवी वैसे ही मौन रहती है।

33. Observing the sad and emaciated appearance of Queen Dharini her personal maids and attendants started inquiring, "O beloved of gods! Why have you become so weak and sad? What is the cause of your gloom?"

Queen Dharini offered no reply, in fact she hardly paid any attention to these questions from her maids The maids inquired again and again but Queen Dharini maintained a continued silence

सूत्र ३४ तए ण ताओ अंगपिडयारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए अणाढाइज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणीओ तहेव संभंताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव कट्टु जए ण विजएण वद्धावेन्ति। वद्धावइत्ता एवं वयासी-"एव खलु सामी ! कि पि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायति।"

सूत्र ३४ धारिणी देवी की उदासीनता व अरुचि देखकर तथा उनके द्वारा अनादर और अवहेलना से दु खी हो वे दासियाँ रानी के महल से निकलकर श्रेणिक राजा के पास गई। दोनो हाथ जोड मस्तक पर ले जाकर जय-जयकार कर राजा का अभिनन्दन किया और वोली-"हे स्वामिन् ! धारिणी देवी आज रुग्ण- जीर्ण शरीर और मन से उदास तथा चिन्तित बैठी है।"

34 Peeved by this gloomy silence and nonchalance of Queen Dharini the maids left the queen's chamber and went to King Shrenik Formally greeting him with hails of victory they said, "Sire! Today Queen Dharini is in an emaciated state of body and a gloomy state of mind"

सूत्र ३५. तए ण से सेणिए राया तासिं अगपिडयारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव सभते समाणे सिग्घ तुरिअ चवल वेइय जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता धारिणिं देविं ओलुग्ग ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणि पासइ। पासित्ता एवं वयासी-"कि ण तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि ?"

तए ण सा धारिणी देवी सेणिए णं रण्णा एव वुत्ता समाणी णो आढाइ, जाव तुसिणीया संचिट्ठति।

तए ण से सेणिए राया धारिणि देवि दोच्च पि तच्च पि एवं वदासी-"किं णं तुम देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियायसि ?"

तए णं सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ता समाणी णो आढाति, णो परिजाणाति, तुसिणीया सचिट्ठइ।

तए ण सेणिए राया धारिणिं देवि सवहसाविय करेइ, करित्ता एव वयासी-"किं ण तुम देवाणुप्पिए ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ? ता ण तुम मम अयमेयारूव मणोमाणसिय दुक्खं रहस्सीकरेसि ?"

सूत्र ३५ दासियो से यह बात सुन-समझकर राजा श्रेणिक बहुत व्याकुल हो उठे। वे बिना देर किये तेज चाल से धारिणी देवी के पास आये और देखा कि वे सच ही उदास और चिन्तित बैठी आर्त्तध्यान कर रही है। राजा श्रेणिक बोले-"देवानुप्रिये ! आप इतनी उदास और शरीर से दुर्बल तथा आर्त्तमन से किस चिन्ता मे डूबी हुई है ?"

धारिणी देवी ने राजा की बात सुनी-अनसुनी कर दी और मौन रही। इस पर राजा श्रेणिक ने दो-तीन बार पुन वही प्रश्न किया परन्तु धारिणी देवी का मौन नही टूटा। वह उसी प्रकार उदास बैठी रही।

इस पर राजा श्रेणिक ने शपथ दिलाते हुए कहा-"देवानुप्रिये ! क्या मै तुम्हारे मन की बात सुनने के योग्य नही हूँ ? क्या इसीलिये तुम मुझसे अपने मन के दु ख को छुपा रही हो ?"

35. Hearing this news from the maids King Shrenik became disturbed and worried He immediately rushed to Queen Dharini and saw that she was, in fact, sad and gloomy The king asked, "O beloved of gods! Why have you become so weak and sad? What is the cause of your gloom?"

Queen Dharini remained silent giving no heed to the inquiry by the king King Shrenik repeated the question again but in vain The queen remained silent and sad Adjuring, the king asked, "O beloved of gods! Am I not fit to be your confidant? Is that why you are not revealing the cause of your sorrow to me?"

दोहद-निवेदन

सूत्र ३६. तए णं सा धारिणी देवी सेणिए णं रण्णा सवहसाविया समाणी सेणियं राय एव वदासी-'एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाण बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए-"धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ दोहल विणिन्ति। त जइ णं अहमवि जाव दोहलं विणिज्जामि। तए णं हं सामी ! अयमेयारूवंसि अकाल-दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि। एएणं अह कारणेण सामी ! ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि।

सूत्र ३६ राजा श्रेणिक द्वारा शपथ दिलाने पर धारिणी देवी बोलीं-"हे स्वामी ! मुझे वह महास्वप्न देखे लगभग तीन महीने बीत चले है। इधर मुझे अकाल-मेघ और वर्षाकाल मे विचरण का दोहद उत्पन्न हुआ है (विस्तृत विवरण पूर्व समान)। मेरे मन मे उठता है कि जो माताएँ यह दोहद पूर्ण करती है वे धन्य है, अत· मेरा भी यह दोहद पूर्ण हो तो मै धन्य हो उठूँ। मेरी उदासी, दुर्बलता, चिन्ता और आर्त्तध्यान का यही कारण है।"

DOHAD REVEALED

36. After being put to an oath by King Shrenik, Queen Dharini said, "My Lord! Almost three months have passed since I saw the great dream Recently I got a Dohad of seeing untimely clouds and roaming around enjoying the monsoon season (details as mentioned above) I have a feeling that those mothers who get such Dohad fulfilled are the blessed ones and, as such, if my Dohad is fulfilled I too will become one of them This is the reason of my sadness, weakness, worry, and gloom "

सूत्र ३७ तए ण से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म धारिणि देवि एव वदासी-"मा ण तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियाहि, अह ण तहा करिस्सामि जहा णं तुब्भ अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु धारिणि देवि इट्ठाहिं कताहि पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहि समासासेइ।

समासासित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने। धारिणीए देवीए एय अकालदोहल बहूहिं आएहिं य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहिं य चउव्विहाहिं

बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे अणुचिंतेमाणे तस्स दोहलस्स आय वा उवाय वा ठिइं वा उप्पत्ति वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ।

सूत्र ३७. धारिणी देवी की यह बात सुन-समझकर राजा श्रेणिक बोले–"देवानुप्रिये ! तुम उदासीनता और चिन्ता यह सब छोडो और शरीर को जीर्ण मत करो। मैं ऐसे उपाय करूँगा जिससे तुम्हारा यह अकाल-मेघ का दोहद पूरा होगा।" उन्होने रानी धारिणी को इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और चित्ताकर्षक वचनो से आश्वस्त किया।

महल से बाहर निकलकर वे अपने सभा मण्डप में गये और पूर्व दिशा की ओर मुख कर अपने श्रेष्ठ सिहासन पर बैठ गये। धारिणी देवी के इस अकाल दोहद को पूरा करने के सम्बन्ध मे वे अनेक प्रकार के उपाय खोजने लगे। उन्होने तरह-तरह की युक्तियो के सम्बन्ध मे औत्पत्तिकी, वैनयिक, कार्मिक तथा पारिणामिक–चारो प्रकार की बुद्धि का उपयोग कर बार-बार विचार किया। बहुत विचार करने पर भी जब उन्हे कोई राह नही सूझी तो वे स्वय भी हतोत्साह हो चिन्ता मे डूब गये।

37. Hearing about and understanding the problem of Queen Dharini, King Shrenik said, "O beloved of gods! Stop worrying and torturing your body I will do something and ensure that you are able to fulfill your Dohad of untimely-clouds " He assured her with his affectionate and encouraging words

Leaving his palace he went into the assembly hall and sat on his throne facing east He started contemplating about the possible ways and means to fulfill this Dohad of untimely-clouds of Queen Dharini He applied his four types of wisdom and considered a variety of ways to achieve the desired When he could not come up with any solution in spite of all his efforts, he became frustrated and worried

अभयकुमार का आगमन

सूत्र ३८. तयाणंतरं अभए कुमारे ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए पायवदए पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ३८ इधर प्रात काल होने पर अभयकुमार ने स्नान आदि कार्यो से निवृत्त होकर, सुन्दर वस्त्र-अलकार धारण किये और अपने पिता राजा श्रेणिक की चरण वन्दना करने चल पडे।

ARRIVAL OF ABHAY KUMAR

38. In the morning Abhay Kumar got ready and donning a beautiful dress and ornaments he proceeded to pay his respect to his father, King Shrenik

सूत्र ३९. तए ण से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सेणिय रायं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाण पासइ। पासइत्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए (पत्थिए) मणोगते सकप्पे समुप्पज्जित्था।

सूत्र ३९ अभय कुमार राजा श्रेणिक के महल मे पहुँचे। वहाँ पर उन्होने राजा श्रेणिक को जब चिन्ताग्रस्त देखा तो उनके मन को चोट पहुँची। उनके मन मे आध्यात्मिक (आन्तरिक) चिन्ता सहित, वाछा सहित और स्वाभाविक रूप से विचार उठे–

39. On reaching the palace of King Shrenik Abhay Kumar was shocked when he saw the king in a state of gloom With genuine anxiety and a desire to do something he immediately thought—

सूत्र ४० अन्नया य मम सेणिए राया एज्जमाण पासति, पासइत्ता आढाति, परिजाणाति, सक्कारेइ, सम्माणेइ, आलवति, सलवति, अद्धासणेणं उवणिमंतेति मत्थयंसि अग्घाति, इयाणि मम सेणिए राया णो आढाति, णो परियाणाइ णो सक्कारेइ, णो समामाणेइ, णो इट्ठाहिं कताहि पियाहि मणुण्णहि ओरालाहिं वग्गूहिं आलवति, संलवति, णो अद्धासणेण उवणिमतेति, णो मत्थयंसि अग्घाति य, किं पि ओहयमणसंकप्पे झियायति। त भवियव्वं ण एत्थ कारणेणं। त सेय खलु मे सेणियं राय एयमट्ठं पुच्छित्तए। एव सपेहेइ, सपेहित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जए ण विजए णं वद्धावेइ, वद्धावइत्ता एव वयासी–

तुब्भे ण ताओ ! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता आढाह, परिजाणह जाव मत्थयंसि अग्घायह, आसणेण उवणिमतेह, इयाणिं ताओ ! तुब्भे मम णो आढाइ जाव णो आसणेण उवणिमतेह। कि पि ओहयमणसकप्पा जाव झियायह। त भवियव्वं ताओ ! एत्थ कारणेण। तओ तुब्भे मम ताओ ! एय कारण अगूहेमाणा असकेमाणा अनिण्हवेमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसदिद्धं एयमट्ठ-माइक्खह। तए ण ह तस्स कारणस्स अतगमण गमिस्सामि।

सूत्र ४० "मामान्यतया राजा श्रेणिक मुझे आता देखकर अभिवादन करते थे, आदर, सत्कार व सम्मान करते थे, बातचीत करते थे और आधे आसन पर बैठने को कहकर

स्नेह से माथा सूँघते थे। पर आज तो यह सब कुछ नही कर रहे हैं। लगता है उनके किसी सकल्प को ठेस पहुँची है और वे चिन्तित है। इसका जो भी कारण हो उसका पता करना मेरा कर्त्तव्य है।'' यह विचार कर अभयकुमार राजा श्रेणिक के पास आये और यथाविधि अभिवादन कर कहा–

''हे तात ! मेरे उपस्थित होने पर आप मेरा अभिवादनादि करते थे किन्तु आज वह सब कुछ नही कर रहे हैं। लगता है आप किसी कारणवश चिन्ताग्रस्त है। अत हे तात ! आप मुझसे वह कारण गोपनीय न रखें, नि सकोच, बिना लाग-लपेट और किसी शका के ज्यो का त्यों स्पष्ट और सत्य बता दीजिये। मै उसे जानकर, उसका निवारण कर आपकी चिन्ता दूर करूँगा।''

40. "Normally, when I arrived King Shrenik used to welcome me, greet me with due respect and regard, talk to me, offer me to share his seat, and kiss my forehead affectionately But today he is doing nothing of that sort It seems that some of his desires has been frustrated and he is worried Whatever be the cause, it is my duty to find out " With these thoughts Abhay Kumar approached King Shrenik and after formal greetings inquired—

"Father ! In past you used to receive me affectionately (etc) but today you are not extending that normal welcome to me It seems that something is worrying you Please father! do not hide anything from me Without any hesitation, doubt, or reservation kindly reveal the truth candidly Once I know about it I will solve the problem and rid you of your anxiety"

सूत्र ४१. तए णं सेणिए राया अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे अभय कुमार एव वयासी–एव खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था– धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव विणिति। तए ण अह पुत्ता ! धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहि आएहि य उवाएहि जाव उप्पत्ति अविदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायामि, तुमं आगय पि न याणामि। त एतेण कारणेण अह पुत्ता ! ओहयमणसकप्पे जाव झियामि।

सूत्र ४१ राजा श्रेणिक ने उत्तर दिया–''पुत्र ! तुम्हारी छोटी माता, धारिणी देवी, को गर्भवती हुए दो माह बीत चुके हैं और तीसरा माह चल रहा है। उन्हे अपने इस दोहद काल

मे अकाल-मेघ के समय विचरण का दोहद उत्पन्न हुआ है (विस्तृत विवरण पूर्व सम)। मुझे उनके इस दोहद को पूर्ण करने के उपाय नहीं सूझ रहे हैं। इसी कारण मेरे मन को ठेस पहुँची है, मै उत्साहहीन और चिन्तातुर हूँ। इस अनमनेपन के कारण ही मुझे तुम्हारे आने का आभास भी नही हुआ। हे पुत्र ! यही मेरी चिन्ता है।''

41. King Shrenik replied, "Son! Your step-mother, Queen Dharini, is in the third month of her pregnancy This is the period of the pregnancy-desire and she has got a Dohad of roaming around and enjoying untimely rain-clouds (details as mentioned earlier) I am unable to think of some way to fulfill her desire This hurts me and makes me disconcerted and anxious As I was absorbed in these thoughts I was not aware of your arrival Son! this is what plagues me "

अभय का आश्वासन

सूत्र ४२ तए णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए सेणिय राय एव वयासी–'मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह। अह ण तहा करिस्सामि, जहा ण मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसपत्ती भविस्सइ'' त्ति कट्टु सेणियं राय ताहिं इट्ठाहि कताहि जाव समासासेइ।

सूत्र ४२ राजा श्रेणिक की बात सुन-समझकर अभयकुमार को सतोष हुआ। पिता उस पर भरोसा करते हैं यह जानकर उन्हे हर्ष हुआ। वे राजा श्रेणिक से बोले–''हे तात ! आप निराश हो चिन्ता न करे। मै ऐसा कुछ करूँगा जिससे मेरी छोटी माता, धारिणी देवी का यह दोहद पूरा होगा।'' यह कह कर उचित शब्दो व वाणी से उन्होने राजा श्रेणिक को आश्वस्त किया।

ASSURANCE BY ABHAY

42. When Abhay Kumar heard about the problem from King Shrenik he became pleased and contented by this expression of confidence in him by the king With all confidence and in forceful words he assured the king, "Father! please get rid of your anxiety and do not loose hope I will do something and ensure that my step-mother, Queen Dharini, is able to fulfill her Dohad "

सूत्र ४३. तए णं सेणिए राया अभएण कुमारेणं एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव अभयकुमारं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जेति।

सूत्र ४३. राजा श्रेणिक अभयकुमार के ये वचन सुनकर प्रसन्न और तुष्ट हुए और सत्कार-सम्मान सहित उन्हे विदा किया।

43. King Shrenik was pleased and satisfied hearing these encouraging words from Abhay Kumar and bid him farewell with due honour

अभय की देवाराधना

सूत्र ४४. तए णं से अभयकुमारे सक्कारिय-सम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रन्नो अतियाओ पडिनिक्खमइ। पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसन्ने।

तए ण तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–नो खलु सक्का माणुस्सएण उवाएण मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसपत्तिं करेत्तए, णन्नत्थ दिव्वेण उवाएण। अत्थि ण मज्झ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसगतिए देवे महिड्ढीए जाव महासोक्खे। त सेय खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बभचारिस्स उम्मुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वन्नग-विलेवणस्स निक्खत्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसथारोवगयस्स अट्ठमभत्त परिगिण्हित्ता पुव्वसगतिय देव मणसि करेमाणस्स विहरित्तए। तते ण पुव्वसगतिए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहल विणिहिइ।

सूत्र ४४ अभयकुमार तब श्रेणिक राजा से विदा ले अपने भवन मे गये और सिहासन पर बैठ कर चिन्तन करने लगे–"ऐसा लगता है कि दैवी उपाय के बिना केवल मानवोचित उपाय से छोटी माता के अकाल-दोहद की पूर्ति होना सभव नही है। ऐसे मे अपने पूर्व भव के मित्र, महान् ऋद्धिधारक सौधर्मकल्प वासी देव का आह्वान करना होगा। अत उचित होगा कि मैं ब्रह्मचर्य धारण कर सोने व रत्नो के आभूषणो का, माला, लेप आदि का तथा शस्त्रो का त्याग करके, एकाकी और सेवकविहीन हो पौषधशाला मे जाकर (सूखी घास के) आसन पर बैठ तेले (अष्टम भक्त) की तपस्या सहित पौषध व्रत ग्रहण करूँ और अपने उस मित्र देव के चिन्तन मे एकाग्र हो जाऊँ। ऐसा करने से वह देव आकर छोटी माता का दोहद पूर्ण कर देगा।"

EVOCATION OF GOD BY ABHAY

44. Taking leave of King Shrenik Abhay Kumar went to his own palace and taking his seat he started thinking, "It appears that without some divine help it would not be possible to fulfill the strange Dohad of my step-mother irrespective of all possible human efforts. Under these circumstances I will need to evoke the great and powerful god from the Saudharma Kalpa (a specific dimension of gods) who happened to be my friend during my earlier birth As such, it is required of me to abandon all gold and ornaments, garlands and other adorations, and weapons After doing this I should go to the Paushadhashala (a community hall for religious activities) leaving my house and servants There, I should take a vow of celibacy, partial asceticism and a three day fast Then, sitting on hay in a suitable posture I should meditate and concentrate on evoking that friendly god This would bring forth the desired result "

सूत्र ४५ एव सपेहेइ, सपेहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जति, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्त परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी जाव पुव्वसंगतियं देव मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ।

सूत्र ४५ इन विचारो के आते ही अभयकुमार बिना किसी विलम्ब के पौषधशाला मे गये और पौषधशाला मे उचित स्थान स्थिर किया। फिर उन्होने मल-मूत्र त्यागने के स्थान का और कुश-आसन का यथाविधि निरीक्षण किया। तब वे अपने चिन्तन के अनुरूप तेले सहित पौषध व्रत ले मित्र देव के चितन मे ध्यानमग्न हो गये।

45. As soon as he conceived this idea Abhay Kumar went to the Paushadhashala without any delay He selected a proper place within it and inspected the coir mattress as well as the area meant for defecation When he was satisfied, as per his planning he took the vows and commenced the invocation of the friendly god

सौधर्म देव का आगमन

सूत्र ४६ तए ण तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसगतिअस्स देवस्स आसण चलति। तते णं पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलिय पासति,

पासित्ता ओहिं पउजति। तते ण तस्स पुव्वसगतियस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–"एव खलु मम पुव्वसंगतिए जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे वासे रायगिहे नयरे पोसहसालाए अभए नाम कुमारे अट्ठमभत्त परिगिण्हित्ता ण मम मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठति।

त सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अतिए पाउब्भवित्तए।" एव सपेहेइ, सपेहित्ता उत्तरपुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति, समोहणित्ता सखेज्जाइं जोयणाइ दंड निसिरति। त जहा–

रयणाण १ वइराण २ वेरुलियाण ३ लोहियक्खाण ४ मसारगल्लाण ५ हसगब्भाण ६ पुलगाणं ७ सोगधियाण ८ जोइरसाण ९ अंकाणं १0 अंजणाण ११ रयणाण १२ जायरूवाण १३ अजणपुलयाण १४ फलिहाण १५ रिट्ठाण १६ अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हति, परिगिण्हइत्ता अभयकुमार-मणुकपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेह-पीइ-बहुमाण-जायसोगे, तओ विमाणवरपुण्डरियाओ रयणुत्तमाओ धरणियल-गमणतुरियसजणित-गयणपयारो वाघुण्णित-विमल-कणग-पयरग-वडिसग-मउडुक्कडाडो-वदंसणिज्जो, अणेगमणि-कणग-रयण-पहकरपरि-मडित-भत्तिचित्त-विणिउत्तमणुगुणजणियहरिसे, पिखोलमाण-वरललित-कुडलुज्जलियवयणगुणजनित-सोमरूवे, उदितो विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरगार-उज्जलियमज्झभागत्थे णयणाणदो, सरयचदो, दिव्वोसहिपज्जलुज्जलिय-दसणाभिरामो उउलच्छिसमत्तजायसोहो पइट्ठगंधुद्धुयाभिरामो मेरुरिव नगवरो, विगुव्वियविचित्तवेसो, दीवसमुद्दाण असंखपरिमाणनामधेज्जाण मज्झकारेण वीइवयमाणो, उज्जोयतो पभाए विमलाए जीवलोग, रायगिहं पुरवर च अभयस्स य पास ओवयति दिव्वरूवधारी।

सूत्र ४६ जब अभयकुमार का तेले का तप पूरा होने को आया तब उनके पूर्व भव के मित्र सौधर्म देव का आसन डोलने लगा। इस पर उस देव ने अवधिज्ञान से सब कुछ जाना और विचार किया–"मेरे पूर्व भव का मित्र अभयकुमार जम्बूद्वीप के भारतवर्ष के दक्षिणार्ध भरत की राजगृह नगरी की पौषधशाला मे तेले का व्रत कर रहा है और बार-बार मुझे स्मरण कर रहा है। उचित होगा कि मै उसके पास जाऊँ।" इस प्रकार विचार कर वह देव ईशानकोण की ओर जाता है और वैक्रिय समुद्घात की क्रिया करता है। उत्तर वैक्रिय शरीर बनाने के लिए अपने आत्म-प्रदेशो को बाहर निकालकर सख्यात योजन का दण्ड बनाता है। फिर उनमे से स्थूल पुद्गलो का त्याग करता है और सारभूत सूक्ष्म पुद्गलो को ग्रहण कर उत्तर वैक्रिय शरीर बनाता है। यह क्रिया उसी प्रकार होती है जैसे निम्न रत्नो
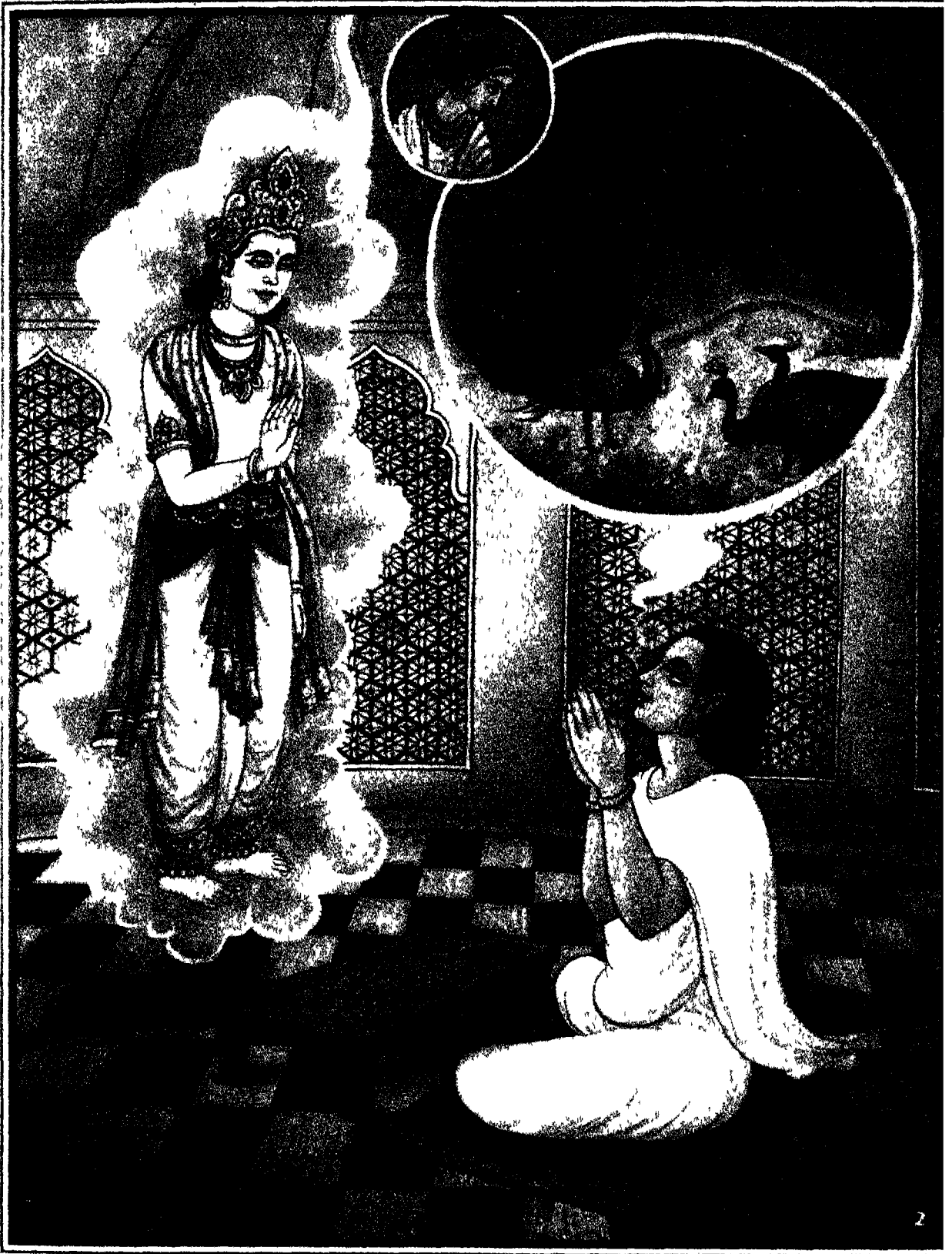
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

वसन्त ऋतु में देव आराधना

चित्र २

गर्भ के तीसरे मास में रानी धारिणी को एक विचित्र दोहद (इच्छा) उत्पन्न हुआ। इस विचित्र [illegible] दोहद की पूर्ति के लिए राजा श्रेणिक चिन्तित हो गये। अभयकुमार ने उसकी पूर्ति के लिए अपने मित्र देव की सहायता लेने का निर्णय किया। उसने तीन दिन का उपवास (अट्ठम तप) करके मित्र देव का आह्वान किया और बताया मेरी छोटी माता को ऐसा दोहद उत्पन्न हुआ है कि आकाश में काली घटाएँ छाई हों, बिजलियाँ चमक रही हों, रिमझिम फुहार बरस रही हो, [illegible] कर रहे हों, [illegible] चारों तरफ हरियाली छाई हो, ऐसे सुहावने मौसम में मैं राजहस्ती पर बैठकर वन विहार के लिए निकलूँ, मेरे पीछे महाराज श्रेणिक [illegible] हों। अभयकुमार ने मित्र देव से प्रार्थना की [illegible] मनोकामना [illegible] देव ने प्रसन्न होकर इस प्रकार का अनुकूल [illegible] का आश्वासन दिया।

(अध्ययन १)

INVOKING THE GOD DURING SPRING SEASON

ILLUSTRATION 2

During the third month of her pregnancy Queen Dharini had a strange Dohad (pregnancy desire). Not being able to fulfill this desire King Shrenik became gloomy. Abhay Kumar decided to seek help from a friendly god. He invoked the god by observing a three day fast and requested him to arrange fulfill his step-mother's Dohad using his divine powers. The desire being--The sky is filled with dark clouds and lightning. Droplets of rain are falling. Peacocks are cooing. Fields all around are lush green with vegetation. In such enchanting weather I go out riding an elephant and enjoy scenic beauty. King Shrenik follows me riding another elephant.

The god is pleased to give assurance to create desired weather conditions.

(CHAPTER-1)

की जाज्वल्यमान मणियाँ बनाने के लिए उनके स्थूल पुद्‌गलो का त्याग कर केवल सारभूत सूक्ष्म पुद्‌गलो का ग्रहण किया जाता है–(१) कर्केतन, (२) हीरा-वज्ररत्न, (३) वैडूर्य-लसनिया, (४) लोहिताक्ष, (५) मसारगल्ल, (६) हंसगर्भ, (७) पुलक, (८) सौगंधिक, (९) ज्योतिरस, (१०) अक, (११) अजन, (१२) रजत, (१३) जातरूप, (१४) अंजन पुलक, (१५) स्फटिक, और (१६) रिष्ट।

वैक्रिय शरीर बनाने पर उसे पुन पूर्व भव की स्मृति से अभयकुमार पर प्रीति, अनुराग और अनुकम्पा जाग उठी और विषाद (वियोग होने के कारण) उत्पन्न हुआ। वह अपने उत्तम रत्न से बने विमान को छोड तीव्र गति से पृथ्वी की ओर चल पड़ा। उसने कानो मे शुद्ध सोने के कर्णफूल पहने हुए थे जो इधर-उधर हिल रहे थे। माथे पर मुकुट पहन रखा था। कमर मे कटिसूत्र पहना हुआ था जिसमें अनेक रत्न जड़े थे। कानों के हिलत कुडलो से उसका मुखमडल आभामय हो रहा था और उसकी मुख मुद्रा प्रसन्नतामय थी। ऐसा लग रहा था मानो पूर्णिमा की रात मे शनि और मगल ग्रहो के बीच शारदीय चन्द्र का उदय हुआ हो। जैसे कोई पर्वत-शृग दिव्य औषधियो के प्रकाश से मनोहर लगता है वैसे ही वह मुकुट आदि की चमक से प्रभासित हो रहा था। समस्त ऋतुओ के वनस्पति भण्डार की वर्द्धमान शोभा और सुगन्ध से मनोहर बने मेरु पर्वत के समान वह देव नयनाभिराम लग रहा था, ऐसी विचित्र थी उसकी वेश-भूषा। अनेकानेक द्वीपों और समुद्रों क बीच मे होता हुआ, अपने दिव्य प्रकाश से भूमण्डल और राजगृह नगर को प्रकाशित करता वह देव अभयकुमार के सामने प्रकट हुआ और बोला–

[अन्य पाठ–तए ण से देवे अतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइ परिहिए–ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए जेणामेव जबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, जेणामेव दाहिणड्ढभरए रायगिहे नगरे पोसहसालाए अभय कुमारे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छिता अतरिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइ सखिंखिणियाइ पवरवत्थाइं परिहिए–अभयं कुमार एवं वयासी–]

[अन्य पाठ इस प्रकार भी है–वह देव उत्कृष्ट, त्वरित, चपल, चण्ड, सिह सम, उद्धत, दुर्धर्ष, निपुण तथा दिव्य गति से राजगृह की पौषधशाला मे अभयकुमार के निकट आ आकाश मे स्थित हो मधुरवाणी मे बोला–]

ARRIVAL OF SAUDHARMA GOD

46. At the end of the three day fast the seat of the friendly god, Saudharma, started trembling The god came to know about all this

through his divine perception and thought, "Abhay Kumar, my friend from the earlier birth, is observing a three day fast in a Paushadhashala in Rajagriha town in the south Bharat area of the Jambu continent and doing invocations for me I should respond and pay him a visit "

With these thoughts the god proceeded toward the North-east direction and commenced the process of Vaikriya Samudghat In order to create an alternate vital-dynamic body (Uttar Vaikriya Sharir) he imparted fluidity to the constituent particles of his body and the micro-sections of the soul and expanding them he transformed his body into an extremely long rod (this process is known as Vaikriya Samudghat) Then separating the subtle vital molecules from the gross physical molecules of his normal body he created the alternate vital-dynamic body (Uttar Vaikriya Sharir)

The process is similar to that of making gems like 1 periidot, 2 diamond, 3 cats-eye, 4 ruby, 5 emerald, 6 pearl, 7 agate, 8 spinal, 9 Jyotiras, 10 Anka, 11 Anjan, 12 silver, 13 Jata-rupa, 14 black agate, 15 crystal-quartz, and 16 Rishtha that are made by slicing and grinding away the gross superficial matter and selecting fine and radiant portion

As soon as he formed the dynamic body feelings of love, attachment, and compassion for Abhay Kumar arose in him because of the memories from the earlier birth The separation from his friend made him sad and leaving his bejeweled space vehicle he launched himself towards the earth with great speed Earrings made of pure gold were dangling from his ears Over his head was placed a crown His waist was adorned with a gem studded girdle His happy and smiling face was glowing in the light reflected from the dangling earrings It appeared as if the winter full-moon was rising between the planets mars and saturn

As the summit of a hill looks enchanting due to the glowing plants of divine herbs, this god appeared scintillating due to the glowing crown and other ornaments on his body He was as strangely and gorgeously attired as the Meru mountain covered with its ever

changing, fragrant and beautiful cover of all season vegetation. Crossing numerous land masses and water bodies and throwing his divine light over the earth and the town of Rajagriha, that god appeared before Abhay Kumar and said—

[Another text With a speed that was superlative, fast, quick, tremendous, lion-like, sharp, over-powering, controlled and divine, that god arrived at the Paushadhashala in Rajagriha and hovering in the sky near Abhay Kumar he uttered sweetly—]

सूत्र ४७ "अह ण देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्ढिए, जं ण तुम पोसहसालाए अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता णं मम मणसि करेमाणे चिट्ठसि, तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए। संदिसाहि ण देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलामि ? कि पयच्छामि ? कि वा ते हिय-इच्छित ?"

सूत्र ४७ "हे देवानुप्रिय ! मै तुम्हारे पूर्व भव का मित्र सौधर्मकल्पवासी महाऋद्धि धारक देव हूँ। तुमने पौषधशाला मे तपस्या कर मेरा आह्वान किया इसलिए मैं तत्काल यहाँ आया हूँ। हे देवानुप्रिय ! बताओ मै तुम्हारा क्या काम करूँ ? तुम्हें अथवा तुम्हारे किसी प्रिय व्यक्ति को क्या दूँ ? क्या हित इच्छित है ? अपनी इच्छा प्रकट करो।"

47. "O beloved of gods! I am the all powerful god from the Saudharma Kalpa, your friend from an earlier birth In response to your ritual invocation I have appeared here without any delay. O beloved of gods! Tell me what can I do for you? What is the benefit that you seek? Please express your desire"

सूत्र ४८ तए ण से अभए कुमारे तं पुव्वसंगतियं देवं अंतलिक्खपडिवन्नं पासइ। पासित्ता हट्ठतुट्ठ पोसह पारेइ, पारित्ता करयल अंजलि कट्टु एवं वयासी–

एव खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूते–धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ ! तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि। त ण तुम देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए अयमेयारूवं अकालदोहल विणेहि।

सूत्र ४८ यह देववाणी सुन, आकाश मे रहे अपने मित्र देव को देख अभयकुमार प्रसन्न हुए और अपना पौषध पूर्ण किया। दोनो हाथ जोडकर बोले–"हे देवानुप्रिय ! मेरी छोटी माता धारिणी देवी को अकाल-मेघ का दोहद (पूर्व वर्णित) उत्पन्न हुआ है। मेरी अभिलाषा है कि आप उस अकाल दोहद को पूरा करें।"

48. Hearing this divine voice of his friend, hovering in the sky, Abhay Kumar was pleased Concluding his ritual practice and joining his palms in greeting he said, "O beloved of gods! My step-mother Queen Dharini is obsessed with the Dohad of untimely-clouds (as described above) It is my wish that you help her fulfill her Dohad "

अकाल-मेघ विक्रिया

सूत्र ४९. तए ण से देवे अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभयकुमार एव वयासी-"तुम णं देवाणुप्पिया ! सुणिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि। अह ण तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव डोहल विणेमीति" कट्टु अभयस्स कुमारस्स अतियायो पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता उत्तरपुरच्छिमे ण वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहण्णइत्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसिरति, जाव दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहण्णित्ता खिप्पामेव सगज्जिय सविज्जुय सफुसिय त पचवण्णमेहणिणाओवसोहिय दिव्व पाउससिरि विउव्वेइ। विउव्वेइत्ता जेणेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभय कुमारं एवं वयासी-

एव खलु देवाणुप्पिया ! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया। त विणेउ ण देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूव अकालडोहलं।

सूत्र ४९ अभयकुमार की बात सुन देव प्रसन्न हुआ और बोला-"देवानुप्रिय ! तुम चिता छोड आश्वस्त हो जाओ, मै तुम्हारी छोटी माता के दोहद के पूर्ण होने का प्रबन्ध कर देता हूँ।" इस प्रकार कहकर वह देव उत्तर-पूर्व दिशा मे वैभारगिरि के ऊपर जाता है और वैक्रिय समुद्घात (पूर्व वर्णित विधि से) करके गरजते हुए, बिजली भरे, पानी की बूँदो से भरे पचरगे बादलों सहित मनोरम वर्षा ऋतु के वातावरण की रचना करता है। तत्पश्चात् अभयकुमार के पास लौटकर कहता है-

"हे देवानुप्रिय ! मैने तुम्हारी प्रसन्नता के लिए सभी वाछित गुणो सहित दिव्य वर्षा ऋतु की रचना कर दी है। अब तुम्हारी छोटी माता अपना दोहद पूर्ण करे।"

CREATION OF UNTIMELY RAIN CLOUDS

49. The god was pleased to hear Abhay Kumar's desire He said, "O beloved of gods! Stop worrying Rest assured, I shall make all arrangements for the fulfillment of your step-mother's Dohad of untimely-clouds " The god, then, proceeded in the north-west direction

He reached over the Vaibharagiri mountain There, with the help of the divine process of Vaikriya Samudghat (as described above), he created an enchanting atmosphere of monsoon with thundering and lightening multi-coloured monsoon clouds He returned to Abhay Kumar and said—

"O beloved of gods! I have created the divine monsoon season with all necessary attributes Your step-mother may fulfill her Dohad now"

दोहद पूर्ति

सूत्र ५० तए ण से अभयकुमारे तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे सयाओ भवणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"एव खलु ताओ ! मम पुव्वसगतिएण सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया पचवन्न-मेहनिनाओवसोहिआ दिव्वा पाउससिरी विउव्विया। तं विणेउ ण मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं।"

सूत्र ५० सौधर्मदेव की यह बात सुनकर अभयकुमार प्रसन्न हुए। अपने महल से निकल व राजा श्रेणिक के पास गये और हाथ जोड़कर बोले–

"हे तात ! मेरे पूर्व भव के मित्र सौधर्मकल्प के निवासी देव ने सभी वांछित गुणों सहित दिव्य वर्षा ऋतु की रचना कर दी है। अत छोटी माता अपना अकाल-दोहद पूर्ण करे।"

DOHAD FULFILLMENT

50. Abhay Kumar was pleased to get this information from the Saudharma-god Leaving his palace he went to King Shrenik and joining his palms he said—

"Father! A friend from my earlier birth, the god from the Saudharma Kalp, has created the divine monsoon season with all necessary attributes As such, my step-mother may fulfill her Dohad now"

सूत्र ५१ तए ण से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो

देवाणुप्पिया ! रायगिह नयर सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगधिय गधवट्टिभूय करेह। करित्ता य मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।" तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणन्ति।

सूत्र ५१ राजा श्रेणिक यह सुनकर अति प्रसन्न हुए और उन्होने अपने सेवको को बुलाकर आज्ञा दी, "देवानुप्रियो ! राजगृह नगर के शृगारकादि (पूर्व सम) सभी स्थानो की सफाई आदि करवाकर गधमय कर दो (पूर्व सम)। यह काम पूरा करके तत्काल मुझे सूचित करो।" सेवकगण शीघ्र ही राजाज्ञा का पालन कर सूचित करते है।

51. King Shrenik was very much pleased to hear this He called his attendants and ordered, "O beloved of gods! Go, arrange for immediate cleaning of all the areas (as detailed earlier) of Rajagriha and fill the town with fragrant aromas, and report back" The attendants completed the assignment quickly and reported back

सूत्र ५२ तए ण से सेणिए राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-जोहपवरकलित चाउरगिणि सेन्न सन्नाहेह, सेयणय च गधहत्थिं परिकप्पेह।"

ते वि तहेव जाव पच्चप्पिणति।

सूत्र ५२ श्रेणिक राजा पुन आज्ञा देते है, "देवानुप्रियो ! जल्दी से घोड़े, हाथी, रथ व सैनिको सहित चतुरगिनी सेना सजाओ और सेचनक नाम के गध-हस्ति को भी तैयार करो।" सेवक राजाज्ञा का पालन कर लौटकर सूचित करते है।

52. King Shrenik further ordered, "O beloved of gods! Go and prepare the four pronged army to march and also the Sechanak elephant for a ride" The attendants completed the assignment quickly and reported back

सूत्र ५३ तए ण से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता धारिणि देविं एव वयासी-"एव खलु देवाणुप्पिए ! सगज्जिया जाव पाउससिरी पाउब्भूता, त ण तुम देवाणुप्पिए। एय अकालदोहल विणेहि।"

सूत्र ५३ तब राजा श्रेणिक धारिणी देवी के पास गये और कहा-"हे देवानुप्रिये ! तुम्हारी अभिलाषा के अनुरूप सभी मनोरम चिह्नो सहित दिव्य वर्षा ऋतु की छटा छा गई है। अत हे देवानुप्रिये ! तुम अपना अकाल-दोहद सम्पन्न करो।"

53. King Shrenik, then, went to Queen Dharini and said, "O beloved of gods! As per your desire the monsoon season has arrived with all its enchanting attributes As such, O beloved of gods! you may now satisfy your Dohad "

सूत्र ५४. तए ण सा धारिणी देवी सेणिए णं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ, जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ। अणुपविसित्ता अतो अंतेउरंसि ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता किं ते वरपायपत्तणेउर जाव आगासफलिहसमप्पभं अंसुयं नियत्था, सेयणय गंधहर्त्थि दुरूढा समाणी अमयमहिय-फेणपुजसण्णिगासाहिं सेयचामरवालवीयणीहिं वीइज्जमाणी वीइज्जमाणी सपत्थिया।

तए ण से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सस्सिरीए हत्थिखंधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण चउचामराहिं वीइज्जमाणे धारिणिं देवि पिट्ठओ अणुगच्छइ।

सूत्र ५४ धारिणी देवी राजा की बात सुनकर प्रफुल्लित हुईं और उन्होने अपने स्नानगृह मे प्रवेश किया। उन्होने यथोचित रूप से स्नानादि नित्यकर्म (पूर्व सम) किया, नख-शिख पर्यन्त विविध आभूषण धारण किये (नूपुर, हार, अँगूठियाँ आदि) और स्फटिक मणि जैसे श्वेत चमकते वस्त्र धारण किये। इस प्रकार तैयार हो सेचनक हस्ती पर चढी और अमृत मथन से उत्पन्न सफेद फेन जैसे सफेद चामर ढुलवाती हुई रवाना हुईं।

राजा श्रेणिक ने भी स्नानादि कर्म से निवृत्त हो वस्त्राभूषण पहने। फिर वे भी कोरंट फूलों की माला वाले छत्र और श्रेष्ठ चामर लिए सेवको सहित एक श्रेष्ठ गध हस्ती पर चढे और धारिणी देवी के हाथी के पीछे-पीछे चले।

54. Pleased to hear this news from King Shrenik, Queen Dharini immediately entered her bathroom She took a proper bath and completed all other daily chores She adorned herself in a white dress as shining as a crystal-quartz bead and embellished every part of her body with a variety of ornaments (listed earlier) When she got ready she set out riding the great elephant, Sechanak, with attendants fanning her with whisks as white as sea-foam

King Shrenik also took his bath and adorned himself with his regalia He also rode a great elephant along with attendants carrying a canopy of Korant flowers and good quality whisks His elephant followed that of Queen Dharini

सूत्र ५५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिए णं रण्णा हत्थिखधवरगए णं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगम्म-माणमग्गा, हय-गय-रह-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-वदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुईए जाव दुदुभिनिग्घोसनादितरवेणं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर जाव महापहपहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणा अभिनदिज्जमाणा जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता वेभारगिरिकडगतडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य, काणणेसु य, वणेसु य, वणसडेसु य, रुक्खेसु य, गुच्छेसु य, गुम्मेसु य, लयासु य, वल्लीसु य, कंदरासु य, दरीसु य, चुढीसु य, दहेसु य, कच्छेसु य, नदीसु य, सगमेस य, विवरएसु य, अच्छमाणी य, पेच्छमाणी य, मज्जमाणी य, पत्ताणि य, पुप्फाणि य, फलाणि य, पल्लवाणि य, गिण्हमाणी य, माणेमाणी य, अग्घायमाणी य, परिभुजमाणी य, परिभाएमाणी य, वेभारगिरिपायमूले दोहल विणेमाणी सव्वओ समता आहिडति। तए ण धारिणी देवी विणीतदोहला संपुन्नदोहला सपन्नदोहला जाया यावि होत्था।

सूत्र ५५ रानी और राजा चारो ओर अश्व, हाथी आदि चतुरगिनी सेना और महान् योद्धाओ के समूह से घिरे हुए थे। वे अपने सम्पूर्ण राजवैभव तथा समृद्धि के साथ राजगृह नगर के शृगारको आदि (पूर्व सम) से होकर राज मार्ग से गुजरे। राजगृह के नागरिको ने उनका बारबार अभिनन्दन किया। अन्त मे उनकी सवारी वैभारगिरि पर्वत के तले आ पहुँची। धारिणी देवी राजा सहित कटक तट मे उतरी और फिर वैभारगिरि की तलहटी-तराई मे रहे विभिन्न क्रीडास्थलो मे, उद्यानो मे, काननो मे, वनो मे, और वनखण्डो मे, वृक्षो, झुरमुटो, झाडियो, लताओ आदि के बीच, गुफाओ, गह्वरो, तालाबो, तलैया, हौद आदि जलाशयो के पास; नदियो, नालो, तटो और सगमो के निकट विचरने लगी। वे इन सबके पास जा खडी होती, दृश्यो को निहारती, स्नान करती, पत्तो, फूलो, फलो, कोपलो आदि को स्नेह से छूती, फूल सूँघती, फल खाती और दूसरो को बॉटती अनेक प्रकार की क्रीडा करती प्रसन्नचित्त हो अपना अकाल-दोहद पूर्ण व सम्पन्न करने लगी।

55. The royal couple was surrounded by elephants, horses and groups of great warriors of the four pronged army With all pomp and show the royal couple passed through various parts of the city of Rajagriha (described earlier) The citizens of Rajagriha greeted them with enthusiasm At last they arrived at the base of the Vaibharagiri mountain

Queen Dharini got down from the elephant and with King Shrenik commenced her sojourn in the beautiful valley She moved about in
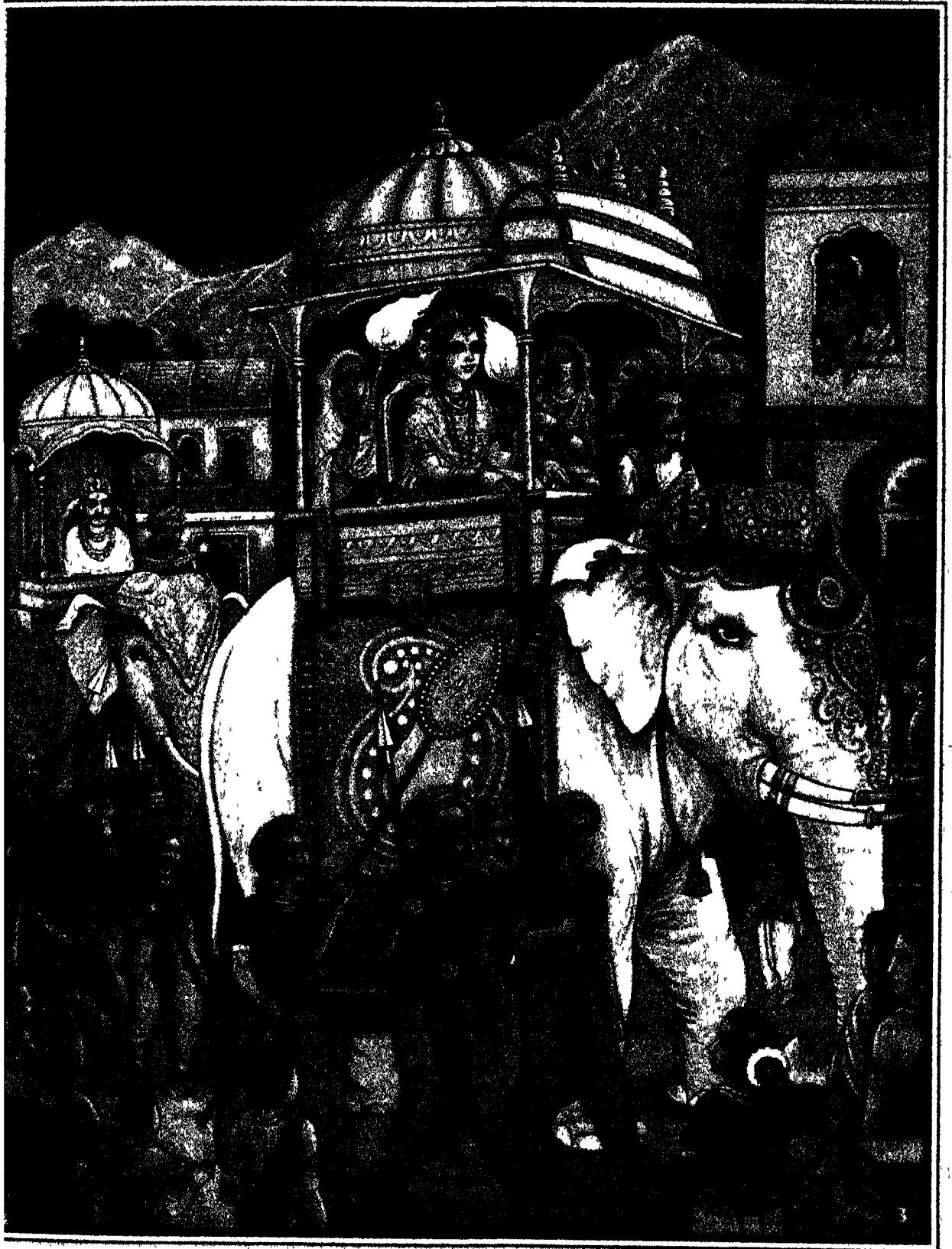
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

वर्षा ऋतु का विहार

चित्र : ३

देव ने विक्रिया करके अपनी दिव्य शक्ति से रानी जैसा चाहती थी वैसा ही वर्षा ऋतु की सुहावनी छटा उपस्थित कर दी। अब रानी धारिणी एक श्वेत हाथी पर बैठी है। दासियाँ चँवर ढुला रही हैं। पास एक हाथी पर महाराजा श्रेणिक की सवारी है। सैनिक साथ चल रहे हैं। नागरिकजन राजा की विशाल शोभा यात्रा देखने आये हैं और राजा-रानी का अभिवादन कर रहे हैं। इस प्रकार देव सहायता से अभयकुमार ने रानी का दोहद पूर्ण किया।

(अध्ययन [illegible])

ENJOYING THE MONSOON SEASON

ILLUSTRATION 3

With his divine power the god has created the conditions of monsoon season exactly as the queen desired. Now queen Dharini is riding a great white elephant. Attendants are plying whisk. King Shrenik is following on another elephant. Soldiers are marching along. Citizens have assembled around to watch the royal procession as well as greet the royal couple. Thus with divine help Abhay Kumar arranged for the fulfillment of the queens Dohad.

(CHAPTER-1)

various entertainment centres, gardens, parks, jungles, forests; amidst trees, shrubs, shrubberies, creepers, etc , and near caves, gorges, lakes, ponds, pools, rivers, streams, banks, junctions, etc She would go and stand at such enchanting spots, take bath, touch leaves, flowers, fruits, and sprouts tenderly, smell the flowers, and eat and distribute fruits Indulging happily in such playful activities she started satisfying her pregnancy desire

सूत्र ५६. तए ण सा धारिणी देवी सेयणगगधहत्थि दुरूढा समाणी सेणिए णं हत्थिखधवरगए ण पिट्ठओ पिट्ठओ समणुगम्ममाणमग्गा हयगय जाव रहेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता रायगिहं नगर मज्झं मज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता विउलाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं जाव विहरति।

सूत्र ५६ दोहद पूर्ण होने के बाद धारिणी देवी पुन अपने सेचनक हाथी पर सवार हुई। राजा श्रेणिक भी अपने हाथी पर सवार हुए और जैसे आये थे वैसे ही सेना व वैभव से राजगृह नगर के बीच होते हुए अपने महलो मे लौटे और सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे।

56. After fulfilling her Dohad Queen Dharini and King Shrenik rode their respective elephants and returned back to Rajagriha with all the usual pomp and show Returning to their palace they resumed their normal happy routine of life

देव का विसर्जन

सूत्र ५७ तए ण से अभयकुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छइत्ता पुव्वसगतिय देव सक्कारेइ, सम्माणेइ। सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेति।

तए ण से देवे सगज्जिय पचवण्णं महोवसोहिय दिव्व पाउससिरि पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।

सूत्र ५७ यह कार्य सम्पन्न हुआ जान अभयकुमार पौषधशाला मे लौटे और उस देव को सत्कार-सम्मान सहित कृतज्ञ भाव से विदा किया।

उस देव ने अभयकुमार से विदा लेने के बाद अपनी दिव्य शक्ति द्वारा प्रकट की वर्षा ऋतु को वापस समेट लिया और अपने स्थान को प्रस्थान किया।

FAREWELL TO THE GOD

57. When this work was concluded, Abhay Kumar returned to the Paushadhashala and bid farewell to the god with due respect, regard, and gratitude

Taking his leave from Abhay Kumar the god withdrew his divine influence and the weather returned to normal He then left for his abode

सूत्र ५८ तए ण सा धारिणी देवी तसि अकालदोहलसि विणीयसि समाणियदोहला तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए जय चिट्ठति, जय आसयति, जय सुवति, आहारं पि य णं आहारेमाणी णाइतित्त णातिकडुयं णातिकसायं णातिअबिल णातिमहुर ज तस्स गब्भस्स हिय मिय पत्थय देसे य काले य आहार आहारेमाणी णाइचिन, णाइसोग, णाइदेण्ण, णाइमोह, णाइभय, णाइपरित्तास, ववगयचिता-सोय-मोह-भय-परित्तासा-उदु-भज्जमाण-सुहेहि भोयण-च्छायण-गध-मल्लालकारेहि त गब्भ सुहसुहेण परिवहति।

तए ण सा धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण राइदियाण विइक्कताणं अद्धरत्तकालसमयसि सुकुमालपाणिपाय जाव सव्वंगसुदरगं दारय पयाया।

सूत्र ५८ उधर धारिणी देवी ने सम्मानित दोहद वाली होने के पश्चात् अपने गर्भ की सुरक्षा की ओर ध्यान दिया। गर्भ को किसी प्रकार का आघात न लगे इसलिए व बड़े यत्न से उठती, बैठती और सोती थी। वे ऐसा आहार करती थी जो अधिक तीखा, कटु, कसैला, खट्टा या मीठा न हो, देश और काल के (वातावरण व ऋतु) अनुसार गर्भ के लिए लाभदायक हो, अल्प मात्रा मे हो, और आरोग्यदायक हो। वे मनोभावनाओं, मानसिक आवेशो पर भी नियन्त्रण रखती थी। चिन्ता, शोक, दीनता, मोह, भय और त्रास आदि से बचकर रहती थी। इस प्रकार सयत हो सभी ऋतुओ मे सुखदायक भोजन, वस्त्र, गध, माला, अलकार आदि भोग करती उस गर्भ का वहन-पालन करने लगी।

नौ महीने और साढ़े सात दिन बीत जाने पर अर्धरात्रि के समय मे उन्होने एक अत्यन्त कोमल और स्वस्थ परिपूर्ण इन्द्रियादि (पूर्व सम) वाले शिशु को जन्म दिया।

58. Once Queen Dharini became the 'blessed mother' with a fulfilled Dohad, she started taking proper care required during pregnancy She would get up, sit down, or sleep carefully so as to avoid any harm to the fetus she carried She stopped eating excessively hot, cold, pungent, bitter, acrid, sour, sweet, greasy, non-greasy, juicy, or dry food She would eat food that suited the place and the conditions and,

was prescribed during pregnancy (limited, nutritious and healthy) She avoided excitement and remained composed by avoiding feelings like anxiety, sorrow, humility, fondness, fear, and horror Thus she started passing the pregnancy period in a disciplined way enjoying food, dresses, perfumes, garlands, ornaments etc that are suitable for all seasons

When nine months and seven and a half days passed since the date of conception, she gave birth to a tender and healthy child (detailed earlier)

पुत्र-जन्म

सूत्र ५९ तए ण ताओ अगपिडयारियाओ धारिणिं देविं नवण्ह मासाणं जाव दारयं पयाय पासति। पासित्ता सिग्घ तुरियं चवल वेइय, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणिय राय जए ण विजए ण वद्धावेंति। वद्धावित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी–

एव खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी णवण्हं मासाणं जाव दारगं पयाया। तं णं अम्हे देवाणुप्पियाण पिय णिवेएमो, पिय ते भवउ।

तए ण से सेणिए राया तासि अगपडियारियाण अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ ताओ अगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विपुलेण य पुप्फगधमल्लालंकारेणं सक्कारेति, सम्माणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता मत्थयधोयाओ करेति, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति, कप्पित्ता पडिविसज्जेति।

सूत्र ५९ पुत्र का जन्म होते ही मन मे हर्ष का आवेग भरे चपल शरीर और शीघ्र गति मे चलती दासियाँ राजा श्रेणिक के पास आईं, दोनो हाथ जोड मस्तक को छुआ, अभिवादन किया, बधाई दी और बोली–

हे देवानुप्रिय ! उचित समयानुसार धारिणी देवी ने पुत्र-रत्न को जन्म दिया है। हम आपको यह प्रिय समाचार देते हुए बधाई देती है।

राजा श्रेणिक यह समाचार सुन हर्ष से अभिभूत हो गए। उन्होने दासियो का फूल, गध, माला और आभूषण तथा मधुर वचनो से भरपूर सत्कार किया। उन्होने दासियो को प्रचुर धन दे कई पीढियो की आजीविका का प्रबन्ध कर (मस्तक धौत) दासता से मुक्त कर दिया।

BIRTH OF THE SON

59. Immediately after the birth of the child the slave girls, driven by the feeling of joy, rushed to King Shrenik and after formal greetings congratulated him—

"O beloved of gods! At the due hour Queen Dharini has given birth to a son We bring this good news to you with our congratulations "

This news filled King Shrenik with joy He thanked them and amply rewarded them with flowers, perfumes, garlands, ornaments and words of encouragement He also gave them their freedom along with wealth enough to last many generations

सूत्र ६०. तए णं से सेणिए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेति। सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिह नगर आसत्ति जाव परिगीय करेह कारवेह य। करित्ता चारगपरिसोहणं करेह। करित्ता माणुम्माण-वद्धण करेह। करित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। जाव पच्चप्पिणति।

सूत्र ६० श्रेणिक राजा ने तब अपने सेवको को बुलाया और आदेश दिया कि राजगृह नगर की धुलाई-सफाई करवा कर उसे मनोरम (पूर्व सम) बनाया जाये। नृत्य, गायन आदि उत्सव किये जाए साथ ही कारागार मे रहे बन्दियो को मुक्त कर दिया जाए और नगर मे तोल-माप को बढ़ा दिया जाये। ये सब कार्य सम्पूर्ण करके उन्हे सूचित किया जाए। सेवको ने शीघ्र ही ये सब काम सम्पन्न कर राजा को सूचित किया।

60. King Shrenik called his attendants and gave them instructions to beautify the town of Rajagriha (as detailed earlier) He also asked them to make arrangements for dance and music festivals, for pardoning the prisoners, and for subsidizing prices of essential goods He ordered them to comply and report, which they soon did

सूत्र ६१ तए ण से सेणिए राया अट्ठारससेणीप्पसेणीओ सद्दावेति। सद्दावित्ता एवं वदासी–"गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भितरबाहिरिए उस्सुक्क उक्कर अभडप्पवेस अदडिमकुडंडिमं अधरिम अधारणिज्ज अणुद्धुयमुइग अमिलायमल्लदाम गणियावरणाडइज्जकलिय अणेगतालायराणुचरित पमुइयपक्कीलियाभिराम जहारिह ठिइवडिय दसदिवसिय करेह कारवेह य। करित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।"

ते वि करेन्ति, करित्ता तहेव पच्चप्पिणति।

सूत्र ६१ फिर राजा श्रेणिक ने सभी अठारह जातियों (कुंभकार आदि) और उपजातियो (उपश्रेणियों) के प्रतिनिधियो को बुलाया और कहा-"हे देवानुप्रियो ! आप सब राजगृह नगर के भीतर-बाहर दस दिनो तक अपनी कुल परपरा के अनुरूप पुत्र-जन्मोत्सव मनाने का ऐसा प्रबन्ध करे- इस शुभ अवसर पर दस दिन के लिए चुंगी तथा कृषि-कर, पशुओ का लगान आदि माफ कर दिया जाय। सभी दुकानों से बिना नापे-तोले और मूल्य चुकाए सभी प्रकार की सामग्री दिये जाने की व्यवस्था हो। कर वसूली आदि के लिए जाने वाले कर्मचारीगण दस दिन के लिए छुट्टी पर चले जायें। अदण्ड और कुदण्ड समाप्त कर दिया जाये। जनता के ऋणो को माफ कर दिया जाये। नगर मे प्रसिद्ध नर्तक-नर्तकियो के नृत्यो और नाटको का आयोजन किया जाए। उत्सव के दिनों मे लगातार मृदग बजते रहें। नगर और देश के सभी वासी प्रसन्नचित्त हो मनोरजनपूर्वक समारोह में भाग लें। दस दिनों तक यह उत्सव निर्बाध चलता रहे। ये सब प्रबन्ध कर मुझे सूचित करे।" वे सब प्रतिनिधि राजाज्ञा शिरोधार्य करके गये और कार्य सपन्न कर राजा को सूचित किया।

61. King Shrenik then summoned representatives from all the eighteen castes and sub-castes and said—

"O beloved of gods! Make all necessary arrangements for a ten day birthday festival to be celebrated in and around Rajagriha according to your respective family traditions During the tenure of these auspicious festivities all municipal and agricultural taxes should be withdrawn All provisions, in whatever quantities needed, should be distributed free from all shops The tax collection staff should be sent on a holiday Minor and major punishments should be discontinued Public loans should be written off Performing artists of fame should be invited to perform dances and dramas During these festivities Mridangs (a specific type of drum) should be played non stop All the people of the city and the country should join the celebrations with joy and enthusiasm For ten days these festivities should continue without a pause Please comply and report back"

The delegates took leave after accepting the king's order After complying with the instructions they soon reported back

सूत्र ६२. तए ण से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने सइएहि य साहिस्सिएहि य सयसाहिस्सिएहि य जाएहिं दाएहिं दलयमाणे दलयमाणे पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे एव च णं विहरति।

सूत्र ६२ राजा श्रेणिक फिर बाहरी सभा भवन मे आये और यथाविधि सिहासन ग्रहण किया। फिर उन्होने सैकडो, हजारो, लाखो मुद्राओ का अनुष्ठानपूर्वक दान दिया। इस शुभ अवसर पर राजा को भेट किये द्रव्यो व उपहारो को स्वीकार किया।

62. King Shrenik then arrived in the outer assembly hall and seated himself on the throne He ceremoniously gave donations of hundreds and thousands and millions of gold coins He also accepted presents and gifts on this happy occasion

जन्म-संस्कार कर्म

सूत्र ६३ तए णं तस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्म करेन्ति, करित्ता बितियदिवसे जागरियं करेन्ति, करित्ता ततियदिवसे चदसूरदसणिय करेन्ति, करित्ता एवामेव निव्वत्ते असुइजातकम्मकरणे सपत्ते बारसाहदिवसे विपुल असण पाण खाइम-साइम उवक्खडावेन्ति, उवक्खडावित्ता मित्त-णाइणियग-सयण-सबधि-परिजण बल च बहवे गणणायग–दडणायग जाव आमतेति।

सूत्र ६३ उसके बाद माता-पिता ने पहले दिन शिशु का जातकर्म किया। दूसरे दिन रात्रि जागरण किया गया। तीसरे दिन शिशु को सूर्य-चन्द्र के दर्शन कराये गये। इस प्रकार विभिन्न अनुष्ठानो मे ग्यारह दिन बीत गये। बारहवे दिन प्रचुर मात्रा मे अशन, पान, खादिम तथा स्वादिष्ट वस्तुएँ तैयार कराई गई। मित्र, स्वजातीय, निकट, स्वजन, सम्बन्धी, परिजन, सेना, सामन्त, राजा, गणनायक, दण्डनायक आदि को निमन्त्रण दिया गया।

RITUAL BIRTH-CEREMONIES

63. On the first day of the celebrations the parents performed ritual ceremonies connected with the birth of a son The second night was spent in chanting and singing devotional songs On the third day they performed the ritual adorational beholding of the Sun and the moon By the time all these ritual ceremonies were concluded eleven days passed On the twelfth day arrangements were made for a great feast and delicious and savory dishes were prepared The king invited all his family members, relatives, friends, kin folk, ministers and other state and army officials

सूत्र ६४ तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्छित्ता सव्वालकार-विभूसिया महइमहालयसि भोयणमडवसि त विपुल असण पाण खाइम साइम मित्त-णाइ
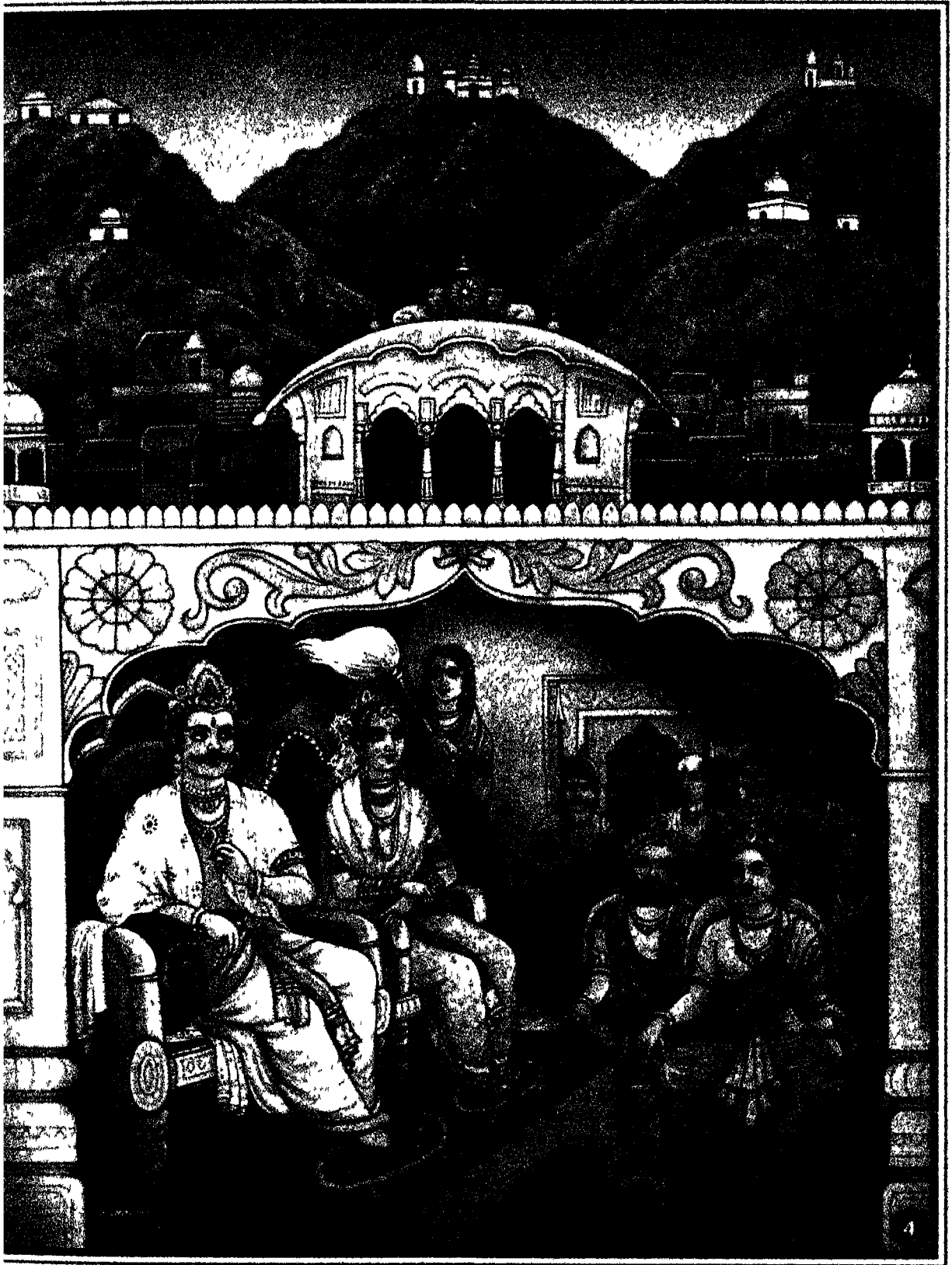
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

महाराज श्रेणिक द्वारा नामकरण

चित्र ४

वैभारगिरि, विपुलगिरि, उदयगिरि, सुवर्णगिरि एवं रत्नगिरि इन पाँच पहाड़ों की तलहटी में बसा हुआ समृद्ध नगर भव्य राजगृह है। राजमहल के विशाल सभागार में राजा श्रेणिक महारानी धारिणी विराजमान हैं। राजमंत्री, सेनापति तथा अनेक स्वजन परिजन समूह के बीच महाराज श्रेणिक पुत्र का जन्मोत्सव मनाकर 'मेघकुमार' नामकरण की घोषणा करते हैं।

(अध्ययन १)

THE NAMING CEREMONY

ILLUSTRATION 4

The grand and prosperous town of Rajagriha is situated in the valley of the five hills named Vaibhargiri, Vipulgiri, Udaigiri, Suvarngiri, and Ratnagiri. In the large assembly hall are sitting king Shrenik and queen Dharini. Ministers, commanders, family members and other prominent citizens are present in the assembly. The king ceremoniously announces the name of the new born as MEGH KUMAR.

(CHAPTER-1)

गणणायग जाव सद्धिं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरइ।

सूत्र ६४ स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त हो वस्त्राभूषण पहन राजा श्रेणिक व देवी धारिणी परिवारजनो सहित विशाल भोजन मंडप मे आये और आमंत्रित अतिथियो के साथ महाभोज मे सम्मिलित हो स्वाद, आनन्द और परस्पर मनुहार के साथ भोजन किया।

64. Following their daily routine including bath and donning ceremonial dresses and regalia King Shrenik and Queen Dharini arrived at the feast pavilion They joined their guests in the feast, joyously greeted them and offered them food with all due courtesy

नामकरण संस्कार

सूत्र ६५ जिमियभुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तनाइनियगसयणसबधिपरिजण गणणायग विपुलेण पुप्फ-गंध-मल्लालकारेण सक्कारेंति, ममाणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी-''जम्हा ण अम्ह इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकाल-मेहेसु डोहले पाउब्भूए, त होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेण मेहकुमारे।'' तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूव गोण्णं गुणनिप्फन्न नामधेज्जं करेन्ति।

सूत्र ६५ भोजन समाप्त होने पर आचमन करने और हाथ-मुँह धोकर स्वच्छ होने के बाद उन्होने आमन्त्रित अतिथियो का विपुल वस्त्रादि (पूर्व सम) से सम्मान-सत्कार किया। इस समस्त औपचारिकता के बाद राजा ने कहा-''हमारा यह पुत्र जब गर्भ मे था तब इसकी माता को अकाल-मेघ का दोहद हुआ था इस कारण इसका नाम मेघकुमार होना चाहिए।'' इस प्रकार माता-पिता ने बालक का गुणानुकूल नाम मेघकुमार रखा।

NAMING CEREMONY

65. When the feast concluded the king and the queen washed their hands and freshened up They offered their guests ample gifts including dresses (as detailed earlier) with due respect and courtesy After all these formalities the king addressed the assemblage—"When this son of ours was in the womb, the mother had a Dohad of untimely-clouds, as such, his name should be Megh (cloud) Kumar" Thus the new-born was formally named Megh Kumar by the parents The name reflected the apparent virtues of the individual

मेघकुमार का लालन-पालन

सूत्र ६६. तए णं से मेहकुमारे पंचधाईपरिग्गहिए। तं जहा-खीरधाईए, मंडणधाईए, मज्जणधाईए, कीलावणधाईए, अंकधाईए। अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणि-वडभि-बब्बरि-वउसि-जोणियाहिं पल्हविय-ईसिणिय-धोरुगिणि-लासिय-लउसिय-दमिलि-सिंहलि-आरबि-पुलिंदि-पक्कणि-बहलि-मुरुंडि-सबरि-पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेस-परिमंडियाहिं इंगित-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइअ-महयरगवंद-परिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे, अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे, परिगिज्जमाणे, चालिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे, रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे परिमिज्जमाणे णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकन्दरमल्लीणे व चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ।

सूत्र ६६. शिशु मेघकुमार का लालन-पालन पाँच धात्रियाँ करने लगी-(१) क्षीर धात्री-दूध पिलाने वाली, (२) **मंडन धात्री**-वस्त्राभूषण पहनाने वाली, (३) **मज्जन धात्री**-स्नान कराने वाली, (४) **क्रीडायन धात्री**-खेल-खिलाने वाली, और (५) अंक धात्री-गोद में रखने वाली। इनके अलावा मेघकुमार अनेक दास-दासियों की भीड़ में घिरा रहता था। वे इस प्रकार है-कुबडी, बौनी, मोटे पेट वाली, किरात, बर्बर, बकुश, योनक, सिंहल, अरब, पुलिंद, पक्कण, पारस, बहल, मुरुंड, शबर आदि अनेक देशों में आई दासियाँ, चेष्टा, इच्छा और मन को समझने वाली, विभिन्न वेशभूषाओं वाली, अति निपुण तथा विनम्र दासियाँ तथा अन्य सेवक। राजकुमार मेघ कभी एक का हाथ पकड़ता तो कभी दूसरी का। कभी एक की गोद में जाता तो कभी दूसरी की गोद में। कभी खेल खिलाकर बहलाया जाता तो कभी गाकर। उसे सुन्दर रत्न-जडित आँगन में चलाया जाता था। वह ऐसे सुखपूर्वक विकसित होने लगा जैसे वायु और व्याघात विहीन चम्पा का वृक्ष किसी पहाड़ की गुफा में विकसित होता है।

BRINGING UP OF MEGH KUMAR

66. Five nurse-maids were appointed to look after infant Megh Kumar They were—1 *Kshir Dhatri or milk-nurse-maid*—the one who took charge of feeding, 2 *Mandan Dhatri or dress-nurse-maid*—the one who took charge of putting on dress and ornaments, 3 *Majjan Dhatri or bath-nurse-maid*—the one who took charge of giving a bath, 4 *Kridayan Dhatri or play-nurse-maid*—the one who took charge of playing with the baby, 5 *Anka Dhatri or lap-nurse-maid*—the one who took charge of keeping the baby in her lap

Besides these, Megh Kumar was always surrounded by numerous other servants and slaves, they are—the hunch-backed, dwarf, big-bellied, slave girls from various countries or geographic areas including Kirat, Barbar, Bakush, Yaunak, Simhal, Arab, Pulind, Pakkan, Paras, Bahal, Murund, and Shabar, those who could understand the gestures and feelings; those with different styles of dresses, and those who were accomplished in their respective fields as well as humble

Prince Megh Kumar would hold hands or climb into the lap of one or the other of these maids depending on his mood They entertained the infant sometimes by playing with him and at others by singing to him He played and walked on a beautiful and gem inlaid floor He grew happily as a Champa tree grows undisturbed by the blowing winds in a mountain cave

सूत्र ६७ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पज्जेमण च एव चकमणग च चोलोवणय च महया महया इड्ढीसक्कारसमुदए ण करिंसु।

सूत्र ६७ इस प्रकार माता-पिता ने समय बीतने के साथ एक के बाद एक सभी सस्कार, नामकरण, पालने मे सुलाना, पैरो से चलाना, चोटी रखना (मुडन) आदि बड़े समारोह और सत्कार सहित स्वजन समुदाय के बीच सम्पन्न किये।

67 As time passed the parents performed various ceremonial rituals connected with the initiation of the growing child into new activities one after the other These were done with a lot of fan fare inviting and honouring friends and relatives The ceremonies included naming, putting into the cradle, toddling, shaving the head, etc

कला-शिक्षण

सूत्र ६८. तए ण त मेहकुमार अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं चेव सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेन्ति। तते ण से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणितप्पहाणाओ सउणरुतपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अ अत्थओ अ करणओ य सेहावेति, सिक्खावेति।

त जहा-(१) लेह (२) गणिय (३) रूव (४) नट्टं (५) गीय (६) वाइयं (७) सरगय (८) पोक्खरगय (९) समताल (१०) जूय (११) जणवाय (१२) पासयं

(१३) अट्ठावय (१४) पोरेकच्च (१५) दगमट्टिय (१६) अन्नविहिं (१७) पाणविहिं (१८) वत्थविहिं (१९) विलेवणविहिं (२०) सयणविहिं (२१) अज्जं (२२) पहेलियं (२३) मागहियं (२४) गाहं (२५) गीइयं (२६) सिलोय (२७) हिरण्णजुत्ति (२८) सुवन्नजुत्ति (२९) चुन्नजुत्ति (३०) आभरणविहि (३१) तरुणीपडिकम्मं (३२) इत्थिलक्खण (३३) पुरिसलक्खण (३४) हयलक्खण (३५) गयलक्खणं (३६) गोणलक्खणं (३७) कुक्कुडलक्खण (३८) छत्तलक्खणं (३९) दडलक्खणं (४०) असिलक्खण (४१) मणिलक्खणं (४२) कागणिलक्खण (४३) वत्थुविज्जं (४४) खंधारमाणं (४५) नगरमाण (४६) बूह (४७) पडिबूह (४८) चार (४९) पडिचार (५०) चक्कवूह (५१) गरुलवूहं (५२) सगडबूह (५३) जुद्ध (५४) निजुद्धं (५५) जुद्धातिजुद्धं (५६) अट्ठिजुद्ध (५७) मुट्ठिजुद्ध (५८) बाहुजुद्ध (५९) लयाजुद्धं (६०) ईसत्थ (६१) छरुप्पवाय (६२) धणुव्वेय (६३) हिरन्नपाग (६४) सुवन्नपाग (६५) सुत्तखेड (६६) वट्टखेड (६७) नालियाखेड (६८) पत्तच्छेज्ज (६९) कडगच्छेज्ज (७०) सज्जीव (७१) निज्जीव (७२) सउणरुयमिति।

सूत्र ६८ मेघकुमार जब आठ वर्ष के हुए तो माता-पिता ने शुभ मुहूर्त मे उन्हे कलाचार्य के पास भेजा। उन्होने मेघकुमार को लेखन से आरभ कर पक्षियो की भाषा तक बहत्तर कलाएँ सूत्र, अर्थ और प्रयोग द्वारा सिखाईं। वे कलाएँ इस प्रकार है–

(१) लेख (उस काल की अठारह विभिन्न लिपियो को पढना और लिखना।)
(२) गणित
(३) रूप
(४) नाट्य
(५) गीत
(६) वाद्य
(७) स्वर जानना
(८) ढोलादि बजाना
(९) ताल ज्ञान
(१०) जुआ
(११) वार्तालाप
(१२) पासा खेलना
(१३) चौपड खेलना
(१४) आशु कविता
(१५) कुभकार कला
(१६) खेती
(१७) जल उत्पत्ति व शुद्धि (पेय पदार्थ का ज्ञान)
(१८) वस्त्र बनाना पहनना आदि (बुनाई, सिलाई)
(१९) विलेपन कला
(२०) शय्या बनाना व शयन विधि
(२१) कविता (आर्या छद)
(२२) पहेलियाँ बनाना व बूझना (गूढार्थ रचना)
(२३) मागधी भाषा व छद

(२४) प्राकृत भाषा व छद
(२५) गीति छद
(२६) श्लोक
(२७) चाँदी बनाना
(२८) सोना बनाना
(२९) चूर्ण निर्माण व उपयोग
(३०) गहने गढना, पहनना
(३१) स्त्री सेवा
(३२) स्त्री लक्षण
(३३) पुरुष लक्षण
(३४) अश्व लक्षण
(३५) हाथी के लक्षण
(३६) गाय लक्षण
(३७) मुर्गो के लक्षण
(३८) छत्र लक्षण
(३९) दड लक्षण
(४०) तलवार के लक्षण
(४१) मणि लक्षण
(४२) रत्न विशेष (काकिणी) लक्षण
(४३) वास्तु कला
(४४) सेना का पडाव प्रमाण
(४५) नगर निर्माण
(४६) व्यूह रचना
(४७) प्रतिव्यूह रचना
(४८) सैन्य सचालन
(४९) प्रतिरक्षा हेतु सैन्य सचालन
(५०) चक्रव्यूह
(५१) गरुडव्यूह
(५२) शकटव्यूह
(५३) युद्ध
(५४) विशेष युद्ध
(५५) अत्यन्त विशेष युद्ध (महा)
(५६) यष्टि युद्ध (अस्थि)
(५७) मुष्टि युद्ध
(५८) बाहु युद्ध
(५९) लता युद्ध
(६०) बढ़ा-चढाकर बताना—विस्तार
(६१) मूठ बनाना
(६२) धनुर्विद्या
(६३) चॉदी का पाक (रसायन)
(६४) सोने का पाक (रसायन)
(६५) सूत के खेल
(६६) वृत्त के खेल
(६७) नाली के खेल
(६८) पत्र छेदन
(६९) वृत्त छेदन (कुडल छेदन)
(७०) सजीवन
(७१) निर्जीवन
(७२) पक्षियो की भाषा (बोली)

EDUCATION

68. When Megh Kumar became eight years old his parents, finding an auspicious moment, sent him to a scholar of a wide range of subjects including various arts and crafts The teacher imparted theoretical education, including texts and meaning, as well as

practical training of the seventy two arts (subjects) beginning with writing and ending at the language of birds The list of these subjects is as follows—

(1) Writing or Script (writing and reading of eighteen different scripts popular at that time)
(2) Mathematics
(3) Decoration
(4) Dramatics
(5) Song
(6) Instrumental music
(7) Musicology / Phonetics
(8) Playing percussion instruments
(9) Knowledge of beats
(10) Gambling
(11) Conversation
(12) Playing dice
(13) Playing board games like Chopar (a type of ludo)
(14) Instant poetry
(15) Pottery
(16) Farming
(17) Water resources management
(18) Making cloth and apparels
(19) Coating
(20) Making bed and art of sleeping
(21) Poetry (Arya Chhand)
(22) Riddles and puzzles
(23) Magadhi language and its poetics
(24) Prakrit language and its poetics
(25) The Giti meter of poetry
(26) Shlok (the couplet style of poetry)
(27) Silver refining and smithy
(28) Gold refining and smithy
(29) Powder technology and its applications
(30) Making ornaments and art of adornment
(31) Taking care of females
(32) Characteristics of the female
(33) Characteristics of the male
(34) Characteristics of the horse
(35) Characteristics of the elephant
(36) Characteristics of the cow
(37) Characteristics of the cock
(38) Characteristics of the canopy
(39) Characteristics of the staff
(40) Characteristics of the sword
(41) Characteristics of the gem
(42) Characteristics of the Kakini (a divine gem)
(43) Architecture
(44) Military camping

(45) Town planning and building
(46) Attack strategy
(47) Defense strategy
(48) Commanding the army
(49) Defense maneuvering
(50) Battle formation - circular
(51) Battle formation - eagle
(52) Battle formation - Shakat
(53) Combat
(54) Battle
(55) War
(56) Combat with the help of bones
(57) Boxing
(58) Arm wrestling
(59) Combat with the help of vines
(60) Elaboration
(61) Making of the handles
(62) Archery
(63) Chemistry of silver
(64) Chemistry of gold
(65) Games of the string
(66) Games of the circle
(67) Games of the canal
(68) Piercing of leaves
(69) Drilling or cutting of holes
(70) Imparting life
(71) Destroying life
(72) Bird language

गृहस्थाश्रम

सूत्र ६९ तए ण से कलायरिए मेहं कुमार लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणिरुअपज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सिहावेति, सिक्खावेति, सिहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊण उवणेति।

तए ण मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो त कलायरियं मधुरेहिं वयणेहिं विपुलेण वत्थ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेति, सम्माणेंति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुल जीवियारिहं पीइदाण दलयति, पीइदाण दलइत्ता पडिविसज्जेन्ति।

सूत्र ६९ इन सब कलाओ की यथाविधि शिक्षा देकर वह कलाचार्य मेघकुमार को उसके माता-पिता के पास ले जाता है। माता-पिता आचार्य का यथाविधि सत्कार, सम्मान करते है और यथोचित प्रीतिदान (सम्मान पूर्वक स्नेह उपहार) देकर विदा करते हैं।

FAMILY LIFE

69. After giving proper education in all these fields the teacher took Megh Kumar to his parents With due respect King Shrenik and Queen Dharini offered glowing tributes and ample gifts to the teacher and bid him farewell

सूत्र ७०. तए ण मेहे कुमारे बावत्तरिकलापडिए णवगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारस-विहिप्पगार-देसीभासा-विसारए गीयरई गधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अल भोगसमत्थे-साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था।

सूत्र ७० मेघकुमार बहत्तर कलाओ मे पारगत हो गया, उसके नौ अग जाग्रत (पूर्ण विकसित) हो गये। वह अट्ठारह प्रकार की देशी भाषाओं का विद्वान् हो गया। गायन-नृत्य-नाट्य आदि मे कुशल हो गया। सब प्रकार के युद्ध मे प्रवीण हो गया, बाहुबली और समस्त भोग भोगने मे समर्थ हो गया। साहसी और विकालचारी (रात मे भी अकेला निर्भय घूमने मे सक्षम) हो गया।

70. Megh Kumar became proficient in all the seventy two arts Every part of his body became fully developed He was now a scholar of all the eighteen indigenous languages, a proficient exponent of music, dance, and drama, a strong warrior, and a skilled commander He had attained the desired maturity to enjoy all the pleasures of life Above all, he had turned into a courageous and fearless mover

सूत्र ७१ तए ण तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार बावत्तरिकलापडित जाव वियालचारी जाय पासति। पासित्ता अट्ठ पासायवडिसए कारेन्ति अब्भुग्गयमूसियपहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते, वाउद्धूतविजयवेजयती-पडागा-छत्ताइच्छत्तकलिए, तुगे, गगणतलमभिलघमाण-सिहरे, जालतररयण-पजरुम्मिल्लियव्व मणिकणगथूभियाए, वियसियसयपत्तपुडरीए, तिलयरयणद्ध-चदच्चिए नाणामणिमय-दामालकिए, अतो बहि च सण्हे तवणिज्जरुइरवालुयापत्थरे, सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए जाव पडिरूवे।

सूत्र ७१ मेघकुमार के माता-पिता ने जब यह देखा–जाना कि वह उक्त प्रकार से सर्व-गुण-सम्पन्न हो गया है तो उन्होंने आठ श्रेष्ठ प्रासाद–भवन बनवाए। ये भवन बहुत ऊँचे थे और उज्ज्वल आभा से दैदीप्यमान थे। उन पर मणि, सुवर्ण और रत्नमय भित्ति चित्र शोभित थे। उनके गगनचुम्बी शिखरो पर छत्रो की श्रेणियाँ थी और वैजयन्ती पताकाएँ हवा मे फहरा रही थी। उनके जाली झरोखो के बीच जड रत्न नेत्रो जैसे लग रहे थे। स्थान-स्थान पर सोने के मणिमय स्तूप थे और उन पर चित्रित शतपत्र और पुण्डरीक कमल खिल रहे थे। तिलकाकार तथा अर्द्धचन्द्राकार सोपान तथा चन्दन के आलेख (हाथ के छापे) उनकी शोभा बढा रहे थे। अनेक प्रकार की मणिमालाओं से सजे वे भवन भीतर-बाहर से चिकने थे। उनके आँगन मे सुनहरी रुचिर बालू बिछी थी। सुखद स्पर्श और शोभन रूप वाले वे भवन अत्यन्त आह्लादकारी और मनोहर थे।

71. When Megh Kumar's parents realized that he had matured in every respect, they got eight beautiful houses constructed for him. These buildings were tall and eye catching Gem and gold inlaid frescoes decorated their walls A series of canopies and fluttering flags made their sky-high roofs very attractive The gem stones embellishing the overhangs and grills appeared like eyes Gem studded and golden domes, with different types of lotus flowers painted over them, were aesthetically placed at various points Diamond shaped and half-moon shaped arches and the supporting pillars with colourful palm impressions enhanced the beauty of these buildings Decorated with a variety of bead strings, both the surfaces of the walls were shining and smooth Glowing golden sand covered the floor of the courtyards Pleasing to touch and look at, these buildings appeared alluring and attractive

सूत्र ७२ एग च ण मह भवणं कारेंति–अणेगखभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालभजियाग अब्भुग्गय-सुकय-वइरवेइया-तोरण-वररइय-सालभंजिया-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सठित-पसत्थ-वेरुलिय-खभ-नाणामणि-कणग-रयणखचितउज्जलं बहुसम-सुविभत्त-निचिय-रमणिज्ज-भूमिभाग ईहा-मिय जाव भत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजुत्त पिव अच्ची-सहस्स-मालणीय रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाण चक्खुल्लोयणलेस सुहफासं सस्सिरीयरूवं कचण-रयणथूभियागं नाणाविहपचवन्नघटा-पडाग-परिमडियग्गसिरं धवलमरीचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहिय जाव गधवट्टिभूय पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूवं।

सूत्र ७२ इन भवनो के अतिरिक्त एक विशाल भवन मेघकुमार के लिए भी बनवाया गया। वह अनेक खभो पर बना हुआ था। जिन पर क्रीडा करती पुतलियाँ बनी हुई थीं। उस भवन मे ऊँची और सुनिर्मित हीरे जडी वेदिका बनी थी। द्वार पर तोरण थे और विशाल व उन्नत वैडूर्य के स्तम्भ थे जिन पर पुतलियाँ बनी थी और जो सोने, रत्न और मणियो से जडे होने के कारण चमक रहे थे। इन स्तम्भो का आकार समतल, विशाल, सुदृढ़ और सुन्दर था। इन पर जगह-जगह ईहामृगादि (पूर्व सम) के मनोहारी चित्र बने हुए थे। हीरे की बिदियो से जडे होने के कारण ये नयनाभिराम लग रहे थे। ऐसा लगता था मानो समान स्तर पर रहे दो विद्याधर (युगल) यत्र से चल रहे हो। यह भवन हजारो किरणो और चित्रो मे सजा होने से जगमगा रहा था। उसे देख दर्शको की आँखे एकटक निहारने लगती थीं। उसका स्पर्श सुखद और रूप चित्ताकर्षक था। सुवर्णादि से जडे स्तूप वाले उस भवन के

शिखर पर कई प्रकार की पचरगी व घटियो सहित पताकाएँ फहरा रही थी। वह धुला, लिपा तथा चंदोलों से युक्त था और सुगध का भडार था। सागशत. वह भवन मनोरम और आह्लादकारक था, दर्शनीय था मन को मोहने वाला था।

72. Besides these, one other large building was constructed specifically for Megh Kumar This building was raised on numerous pillars having figures of dancing damsels engraved There was a raised pedestal with inlaid diamonds The gate was made of large and high pillars of chrysoberyl supporting an arch They too had carvings of human figures, and the inlaid gold and gems gave them a brilliant glow These pillars were shapely, large, strong, and beautiful and were richly decorated with exquisite carvings of Ihamrig (etc as mentioned earlier) A splattered pattern of inlaid diamonds added to their eye-catching beauty It appeared as if a couple of Vidyadhars (a class of gods) were moving mechanically

Decorated with numerous paintings and filled with infinite rays of reflected light, this building provided a scintillating view The onlookers could not shift their eyes from this visual wonder It was pleasent and exciting to touch Five coloured flags with bells fluttered over the gold inlaid dome at the top of this building Its interior was washed, besmeared, fitted with curtains and canopies and filled with incense and perfume All said and done, this building was appealing lovely, exquisite, and alluring to the highest degree

विवाह और प्रीतिदान

सूत्र ७३ तए ण तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि सरिसियाण सरिसव्वयाण सरिसत्तयाण सरिसलावन्न-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाण सरिसए-हिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाण पसाहणट्ठग-अविहवबहु-ओवयणमगल-सुजपियाहि अट्ठहि रायवरकण्णाहि सद्धि एगदिवसेण पाणि गिण्हाविसु।

सूत्र ७३ इस निर्माण कार्य के सम्पन्न हो जाने के बाद मेघकुमार के माता-पिता ने शुभ तिथि, करण, मुहूर्त देखकर उनके समान व उपयुक्त शरीर परिमाण, आयु कान्ति, लावण्य, यौवन और गुण वाली तथा समान कुल की आठ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ एक साथ विवाह करवाया। उस समय आठो अगो मे अलकार धारण करने वाली सुहागिनो ने मगल गान गाये तथा दही, अक्षतादि मागलिक पदार्थों से सब अनुष्ठान करवाये।

MARRIAGE AND GIFTS

73. After this construction work was concluded Megh Kumar's parents found an auspicious date and time and married Megh Kumar to eight princesses These young ladies had suitable and matching physique, age, aura, beauty, youth, and virtues and they belonged to families of matching status Married women, richly adorned with ornaments, sang auspicious and ceremonial songs and performed all the ceremonies using propitious things like curd and rice

सूत्र ७४ तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो इमं एयारूव पीइदाण दलयइ–अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, गाहानुसारेण भाणियव्वं जाव पेसणकारियाओ, अन्न च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मतसाग्गावतेज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुल-वसाओ पकाम भोत्तुं पकामं परिभाएउ।

तए ण से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेग हिरण्णकोडिं दलयति, एगमेगं सुवन्नकोडि दलयति जाव एगमेग पेसणकारिं दलयति, अन्नं च विपुलं धणकणग जाव परिभाएउ दलयति।

सूत्र ७४ मेघकुमार के माता-पिता ने इस अवसर पर जो प्रीतिदान दिया वह इस प्रकार था- आठ करोड चाँदी, आठ करोड सोना आदि गाथाओ के अनुसार (मूल मे ये गाथाएँ नही है)। इसके अलावा आठ-आठ दासियाँ और विपुल धन, सोना, रत्न, मणि, मोती, शख, मूगा, माणक आदि श्रेष्ठ व मूल्यवान वस्तुएँ दी। ये सब इतना था कि सात पीढी तक दान देने, भोगने, उपयोग करने और आपस मे बॉटने के लिए यथेष्ठ था।

मेघकुमार ने यह सारी सामग्री अपनी आठ पत्नियो मे बराबर-बराबर बॉट दी।

74. The marriage gifts given by Megh Kumar's parents on this occasion were—eighty million gold (coins), eighty million silver(coins) and more as mentioned (these details are not available in the text) Besides these, eight maids each for every wife, and great wealth including cash, gold, gems, pearls, conch shells, coral, ruby, and other valuables The extant of gifts was so enormous that it was enough to enjoy, distribute, use, and donate for seven generations

Megh Kumar distributed all these gifts equally among his eight wives

सूत्र ७५. तए णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहि बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति।

सूत्र ७५ अब मेघकुमार अपने मनोरम महल मे नाटक-गान-क्रीडा आदि करता हुआ मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, गध और रूप का उपभोग करता, आनन्द लेता सुखमय जीवन व्यतीत करने लगा।

75. Now, ın hıs palace, Megh Kumar and hıs wıves started enjoyıng all possıble worldly pleasures, tender and lusty, through the façultıes of hearıng, touch, smell, and vısıon

भगवान महावीर का आगमन

सूत्र ७६ तेण कालेणं तेण समए ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए जाव विहरति।

तए ण से रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया बहुजणसद्देति वा जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति। इम च ण मेहे कुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुयगमत्थएहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे रायमग्ग च आलोएमाणे एव च ण विहरति।

सूत्र ७६ उस काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर एक गॉव से दूसरे गॉव विहार करते हुए राजगृह नगर मे पधारे और गुणशील चैत्य मे यथोचित स्थान पर ठहरे।

उस समय राजगृह नगर के मार्गों आदि पर लोगो की भीड का शोर होने लगा। विभिन्न कुल और समूह के लोग नगर के बीच से निकल-निकल एक ही दिशा मे जाने लगे। उस समय मेघकुमार अपने महल मे मृदगादि के मधुर सगीत मे लीन आनन्द करते हुए राजमार्ग की हलचल देख रहे थे।

ARRIVAL OF BHAGAVAN MAHAVIR

76. Durıng that perıod of tıme Shraman Bhagavan Mahavır,

wandering from one village to another, arrived in Rajagriha city and stayed at a proper place in the Gunasheel temple complex

At that time the roads and other areas of Rajagriha city were filled with clamour of groups of excited people Citizens from various clans and groups came out of their houses and all the roads led in one direction only At that moment, enjoying instrumental music in his room, Megh Kumar was looking down at the commotion on the highway

सूत्र ७७ तए ण से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे पासति पासित्ता कचु-इज्जपुरिस सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी-"कि ण भो देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नगरे इदमहेति वा, खदमहेति वा, एव रुद्द-सिव-वेसमण-नाग-जक्ख-भूय-नई-तलाय-रुक्ख-चेतिय-पव्वय-उज्जाण-गिरिजत्ताइ वा ? जओ ण बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसि एगाभिमुहा णिग्गच्छति ?"

सूत्र ७७ मेघकुमार लोगो की भीड को एक ही दिशा मे जाते देखकर अपने सेवक को बुलाकर पूछता है-"हे देवानुप्रिय ! राजगृह नगर मे क्या आज इन्द्रोत्सव मनाया जा रहा है ? कार्त्तिकेय का महोत्सव है ? अथवा रुद्र, शिव, कुबेर, नाग, यक्ष, भूत, नदी, तालाब, वृत्त, चैत्य, पर्वत, उद्यान या गिरि की यात्रा है ? आज सभी लोगो की भीड एक ही दिशा मे क्या जा रही है ?"

77. Looking at the large crowd going in a specific direction, Megh Kumar called a member of his staff and asked, "Beloved of gods! Is the town celebrating the festival of Indra or Kartikeya today? Is there some procession being taken out in honour of Rudra, Shiva, Kuber, Naag, Yaksha, Bhoot, (deities) in the direction of some sacred river, pond, circle, temple, hill, or mountain? Why all the groups of people are moving in the same direction?"

सूत्र ७८ तए ण से कचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए मेह कुमार एव वयासी-"नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नयरे इदमहेति वा जाव गिरिजत्ताओ वा, ज ण एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छति, एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थयरे इहमागते, इह सपत्ते, इह समोसढे, इह चेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडि० जाव विहरति।"

सूत्र ७८ सेवक ने श्रमण भगवान महावीर के आने के समाचार जानकर मेघकुमार को बताया–"देवानुप्रिय ! नगरवासियो के एक दिशा मे जाने का कारण कोई इन्द्रोत्सव आदि नही है। आज तो धर्म-तीर्थ की स्थापना करने वाले श्रमण भगवान महावीर यहाँ पधारे हैं और यथाविधि राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे विहार कर रहे है।"

78. Finding about the arrival of Shraman Bhagavan Mahavir the attendant explained to the prince, "Beloved of gods! It is not because of some religious festival that the crowd is going in one particular direction Today Shraman Bhagavan Mahavir, the founder of the religious ford, has arrived in the town and stayed in the Gunasheel temple"

सूत्र ७९ तए णं से मेहे कचुइज्जपुरिसस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।"

तह त्ति उवणेति।

सूत्र ७९ सेवक की यह बात सुनकर मेघकुमार प्रसन्न हुए और दासो को बुलवाकर कहा–"हे देवानुप्रियो ! जल्दी से चार घटे वाले रथ मे घोडे जोतकर तैयार करो।" सेवको ने तत्काल आज्ञा स्वीकार की और रथ तैयार करके उपस्थित किया।

79. Megh Kumar was pleased to get this information from the attendant He called his staff and said, "Beloved of gods! Prepare a four horse chariot and bring it here immediately" The servants executed the order without delay

भगवान महावीर के दर्शन व देशना

सूत्र ८0 तए ण मेहे ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए चाउग्घट आसरह दुरूढे समाणे सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगर-विद-परियाल-सपरिवुडे रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छति। निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्तातिछत्त पडागातिपडाग विज्जाहरचारणे जभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासति। पासित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति। पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीर पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छति। त जहा–

(१) सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए।

(२) अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए।

(३) एगसाडियउत्तरासगकरणेणं।

(४) चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं।

(५) मणसो एगत्तीकरणेणं। जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति। करित्ता वंदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स णच्चासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पजलियउडे अभिमुहे विणए ण पज्जुवासइ।

सूत्र ८0 मेघकुमार ने तब स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर वस्त्राभूषण पहने। वे रथ पर चढे और अपने वैभव के अनुसार छत्रादि धारण कर सैन्यादि के साथ नगर के बीच से निकल गुणशील चैत्य (उद्यान) मे पहुँचे। वहाॅ उन्होंने श्रमण भगवान महावीर के छत्र पर छत्र, पताकाओं पर पताका आदि अतिशयो को, तथा विद्याधरो, चारणों और जृभक देवो को आकाश से नीचे आते ऊपर जाते देखा। यह सब देख वह रथ से उतरे और पॉच प्रकार के अभिगम (देव-गुरु के सन्मुख जाने की उचित विधि) कर भगवान महावीर की तरफ चले। वे पॉच अभिगम है-(१) सचित्त द्रव्यो का त्याग, (२) अचित्त द्रव्यो का अत्याग, (३) बिना जोड का उत्तरीय धारण करना, (४) भगवान पर दृष्टि पडते ही हाथ जोडना, तथा (५) मन को एकाग्र करना। भगवान महावीर के निकट पहुँच उन्होने दक्षिण दिशा (दाहिनी ओर) से आरम्भ कर तीन बार भगवान की प्रदक्षिणा की और तब वन्दन तथा नमस्कार किया। फिर वह भगवान के सम्मुख उचित स्थान पर बैठ धर्मोपदेश सुनने की इच्छा लिए, दोनो हाथ जोड विनयपूर्वक प्रभु की उपासना करने लगे।

MAHAVIR'S DISCOURSE

80. Megh Kumar got ready after his bath and putting on his royal dress and ornaments He ascended the chariot and with regalia and guards passed through the town and arrived at the Gunasheel temple There he saw the miraculous things like canopy over a canopy, flag over a flag, and ascending and descending of a variety of gods including Vidyadhars, Charans, and Jambhriks around Shraman Bhagavan Mahavir

He got down from his chariot and made five prescribed resolutions before proceeding to greet Bhagavan These resolutions were—1. not to

accept anything with any trace of life, 2 only to accept a thing without any trace of life, 3 to wear a joint-less upper garment, 4 to join palms the moment the lord is seen and 5 to focus thoughts over him

When he reached near Shraman Bhagavan Mahavir, Megh Kumar circum-ambulated him three times in anti-clockwise direction and then bowed in reverence Megh Kumar took an appropriate seat in front of Bhagavan and joining both palms started worshiping him with a desire to listen to his preaching

सूत्र ८१ तए ण समणे भगव महावीरे मेहकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त धम्ममाइक्खइ, जहा जीवा बज्झति, मुच्चति, जहा य संकिलिस्सति। धम्मकहा भाणियव्वा, जाव परिसा पडिगया।

सूत्र ८१ श्रमण भगवान महावीर ने मेघकुमार सहित उस धर्म सभा के बीच बैठकर अद्‌भुत (श्रेष्ठ) श्रुतधर्म और चारित्र धर्म का उद्‌बोधन दिया। उन्होने बताया कि कैसे जीव कर्मो का बधन करता है, कैसे उनके प्रभाव से कष्ट पाता है, और कैसे मुक्त होता है (औपपातिक सूत्र अनुसार)। भगवान की देशना सुनकर जन-समूह वापस लौट गया।

81. Shraman Bhagavan Mahavir gave his revolutionary discourse on the word of the omniscient and the codes of conduct He explained how a being fuses karmas to his soul, how it suffers under the influence of these karmas, and how it gets liberated (Aupapatik Sutra) The assembled people left after the discourse

वैराग्य जागरण

सूत्र ८२ तए ण मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-"सद्दहामि ण भते ! णिग्गथ पावयण, एव पत्तयामि ण, रोएमि णं, अब्भुट्ठेमि ण भते ! णिग्गथ पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भंते ! अवितहमेय भंते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छियपडिच्छियमेय भंते ! से जहेव त तुब्भे वदह। ज नवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि।"

"अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह।"

सूत्र ८२ भगवान की देशना सुनकर मेघकुमार प्रसन्न हुए और दाहिनी ओर से आरभ कर भगवान की तीन बार प्रदक्षिणा की, वन्दना व नमस्कार किया। फिर वह बोले,

"भंते ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ, उसे श्रेष्ठ मानता हूँ, उस पर विश्वास करता हूँ, और उसमे रुचि रखता हूँ। हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन को अंगीकार करना चाहता हूँ। आपका वचन एकान्त सत्य है, नितान्त सत्य है, निर्बाध सत्य है। भगवन् ! मेरे मन मे निर्ग्रन्थ मार्ग की साधना की इच्छा जाग उठी है और बारंबार जागकर वह बलवती हो रही है। आपने जो जैसा कहा है वो वैसा ही है। किन्तु हे देवानुप्रिय ! मैं पहले अपने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त कर लूँ फिर मुंडित हो प्रव्रज्या ग्रहण करूँ।"

भगवान ने उत्तर दिया, "देवानुप्रिय ! जिससे तुम्हे सुख मिले वह निर्विलम्ब करो।"

DETACHMENT

82. Pleased to hear the discourse of the Bhagavan, Megh Kumar stood up, went around him and bowed (as mentioned earlier). He then said—

"Bhante! I have faith in the word of the Nirgranth (one who is free of all knots, inner and outer), I consider it to be the best, I believe in it and have interest in it Bhagavan! I want to embrace the word of the Nirgranth Your word is the only, absolute and ultimate truth Bhagavan! the desire to tread the path of spiritual practices shown by the Nirgranth has dawned in my mind and with every passing moment it is getting stronger What you have said is exactly as you have described However, Beloved of gods! I will first seek permission from my parents and then shave my head and get initiated "

"Beloved of gods! do what pleases you without any delay" replied Bhagavan

सूत्र ८३ तए ण से मेहे कुमारे समण भगव महावीरं वदति, नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जेणामेव चाउग्घटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेण जेणेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ। पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अम्मापिऊण पायवडण करेइ। करित्ता एवं वयासी-"एवं खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे णिसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए।"

सूत्र ८३ तब मेघकुमार ने भगवान महावीर को फिर वन्दनादि की और रथ मे बैठकर वापस लौटे। रथ से उतर वे अपने माता-पिता के पास गये और उनके चरणों मे प्रणाम कर के बोले, "हे माता-पिता ! मैने श्रमण भगवान महावीर की देशना सुनी और मेरे मन मे उनके धर्म-मार्ग की इच्छा जागी और बलवती हो गई है। वह मुझे रुचा है।"

83. Megh Kumar once again bowed before Shraman Bhagavan Mahavır and returned to the palace ın hıs charıot He went straıght to hıs parents and after due courtesy saıd, "Father and mother! I have been to the dıscourse of Shraman Bhagavan Mahavır It has ınspıred me strongly to accept the path shown by hım I have developed an affinıty for ıt "

सूत्र ८४. तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो एव वयासी-"धन्नो सि तुम जाया ! सपुन्नो सि तुम जाया ! कयत्थो सि तुम जाया ! ज ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे णिसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए।"

सूत्र ८४ माता-पिता ने कहा, "हे पुत्र ! तुम धन्य हो ! तुम पुण्यवान और कृतार्थ हो कि तुमने श्रमण भगवान महावीर की देशना सुनी और वह तुम्हे अभीष्ट लगी।"

84. The parents replıed, "Son! You are to be commended You are lucky and blessed that you have heard the sermons from Shraman Bhagavan Mahavır and found the same ınspırıng "

सूत्र ८५ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्च पि तच्च पि एव वयासी-"एव खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते। से वि य ण मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए।

सूत्र ८५ तब मेघकुमार ने आग्रहपूर्वक निवेदन किया-"हे माता-पिता ! मुझे भगवान का धर्म-मार्ग इष्ट लगा है अत मै आपकी आज्ञा प्राप्त कर भगवान महावीर के पास जा, मुडन करवाकर, गृह त्याग कर, प्रव्रज्या ले अनगार बनना चाहता हूँ।"

85. Megh Kumar requested persuasıvely, "Father and mother! I find the path shown by Bhagavan to be beneficıal and as such, I wısh to seek your permıssıon, go to Shraman Bhagavan Mahavır and get ınıtıated ınto hıs ascetıc order after renouncıng the worldly lıfe and gettıng my head shaved "

शोकाकुल माता

सूत्र ८६ तए ण सा धारिणी देवी तमणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं अस्सुयपुव्व फरुस गिरं सोच्चा णिसम्म इमेण एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूता समाणी सेयागय-रोमकूव-पगलंत-विलीणगाया सोयभरपवेवियंगी णित्तेया दीणविमणवयणा करयल-मलिय व्व कमलमाला तक्खण-ओलुग्ग-दुब्बलसरीरा लावन्नसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडतखुम्मिय-सचुन्नियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमालविकिण्णकेसहत्था मुच्छावसणट्ठचेयगरुई परसुनियत्त व्व चपगलया निव्वत्तमहिम व्व इदलट्ठी विमुक्कसंधिबधणा कोट्टिमतलसि सव्वगेहि धसत्ति पडिया।

सूत्र ८६ धारिणी देवी ऐसी अनिष्ट, अप्रिय, अमनोज्ञ, अवाछित, अभूतपूर्व और कठोर बात सुन-समझकर पुत्र वियोग के अकल्पनीय दु ख से अभिभूत हो गईं। वे पसीने से तर हो गई, और उनका अग-अग कॉपने लगा। वे असमय मुरझाई माला के समान अनमनी, दीन, और निस्तेज हो गईं। क्षण मात्र मे ही उनका लावण्य, कान्ति और श्री लुप्त हो गई। दुर्बलता के कारण उनके शरीर पर पहने गहने ढीले हो गए, हाथ के कंगन सरककर जमीन पर गिरे और टूट गए। उनके वस्त्र अस्त-व्यस्त हो गए और बाल बिखर गये। उनके मन पर गहरा आघात लगा और वे बेहोश हो गईं। ऐसा लगता था जैसे फरसे से काटी कोई लता या उत्सव सम्पन्न हो जाने के बाद ध्वजा शोभाविहीन हो गई हो। उनके जोड ढीले पड गये और वे धडाम से धरती पर गिर पडी।

MOTHER'S GRIEF

86. When she heard these ominous, unpleasant, repelling, undesirable, and hard hitting words, queen Dharini was overwhelmed with the unimaginable anguish of separation from her beloved son She became drenched with sweat and her limbs started trembling Like a withered garland of flowers she became gloomy, depressed, and dull. Within a moment she lost all her beauty, radiance, and splendour Her body became so shriveled that all her ornaments became ill fitting; so much so that her bracelets slipped out of her loosely hanging wrists, fell down on the floor and broke Her dress and hairdo became shabby. The deep shock made her unconscious It appeared as if a vine was cut by the blow of an axe or a flag had been unhoisted Her joints became loose and she fell prone on the floor

सूत्र ८७. तए ण सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरिय कचणभिंगार-मुहविणिग्गय-सीयलजल-विमलधाराए परिसिंचमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवण-तालविंट-वीयणग-जणियवाएण सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेण आसासिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपवडंत-अंसुधाराहिं सिचमाणी पओहरे कलुणविमणदीना रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमार एवं वयासी–

सूत्र ८७. अनिष्ट की आशका से तत्काल उनके मुख पर सोने के कलश से शीतल जल की निर्मल धारा डाली गई जिससे उनके अग शीतल हुए। अनेक प्रकार के पखो से उन्हे जल-कण युक्त हवा की गई और अन्त पुर के परिजनो ने उन्हे आश्वस्त किया। इससे उन्हे होश आया और वे रो पडी। उनकी ऑखो से मोती की लडियो की तरह ऑसू वहने लगे और वस्त्र भींग गये। वे अनमनी, दीन और दयनीय हो गईं। शोक से सतप्त धारिणी देवी ने रोते-रोते मेघकुमार से कहा–

87. Apprehensive of some disaster the attendants poured cold water on her face from a golden urn and she calmed down Humid air was blown at her with water soaked fans and her relatives and staff members uttered words of encouragement to console her She regained her consciousness and started crying Tears dripped from her eyes like strings of pearls and wet her cloths Her appearance became pitiable Choked with anguish she said to Megh Kumar —

मेघकुमार का माता–पिता से सवाद

सूत्र ८८ तुम सि ण जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियउस्सासए, हिययाणंदजणणे उबरपुप्फ व दुल्लभे सवणयाए किमग पुण पासणयाए ? णो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहित्तए। त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवए वड्ढिय-कुलवस-तंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि।

सूत्र ८८ "हे पुत्र ! तू हमारा एकमात्र पुत्र है, इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और मनभावन है। तू हमारे धैर्य और शान्ति का आधार है। तू हमारा विश्वासपात्र और कार्यपालक होने से अच्छा ही नही बहुत अच्छा लगता है। तू हमारे लिए आभूषणो की पेटी के समान है, रत्न समान है। तू ही तो हमारे जीवन का आधार है और आनन्द का स्रोत है।

दुर्लभ गूलर के फूल की तरह तेरे जैसे पुत्र को देखना तो क्या तेरे विषय में सुन पाना भी कठिन है। हे पुत्र ! हमें तो क्षण भर के लिए भी तेरा वियोग सहन नहीं होगा। इसलिए हे पुत्र ! जब तक हम जीवित है तब तक तू सभी मानवोचित सुख और आनन्द का भोग कर। फिर जब हम काल गति को प्राप्त हो और तू अधेड़ हो जाये, कुल-वश के विस्तार का कर्तव्य पूरा हो जाये और किसी सासारिक कार्य की अपेक्षा न रहे तब तू श्रमण भगवान महावीर के पास यथाविधि प्रव्रज्या ग्रहण कर लेना।''

DIALOGUE WITH PARENTS

88. "Son! You are our only and cherished, lovely, adored, charming, and beloved son You are the source of our peace and confidence. As you are faithful and obedient we consider you to be excellent, not just good You are like a chest full of ornaments or gems for us You are the hope of our life and source of our joy It is difficult to hear about a son like you, what to talk of seeing one that is as rare as a Gular flower. Darling! We will not be able to tolerate separation from you even for a moment As such, we implore you to enjoy the joys and pleasures of human life as long as we live When we breathe our last and, you get middle aged, fulfill your duty of continuation of the clan, and no desire of any worldly activity is left you may go to Shraman Bhagavan Mahavir and get initiated following the prescribed procedure "

सूत्र ८९ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी-''तहेव ण त अम्मयाओ ! जहेव ण तुम्हे मम एवं वदह-तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते, त चेव जाव निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि-एवं खलु अम्मयाओ माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसणसउवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिन्दुसन्निभे सझब्भराग-सरिसे सुविणदसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए ? के पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए।

सूत्र ८९ मेघकुमार ने उत्तर दिया-''हे माता-पिता ! आपने जो कुछ कहा वह ठीक है परन्तु यह मनुष्य भव अध्रुव है, अनियत है, अशाश्वत है, व्यसनों और उपद्रवों से अभिभूत है, विद्युत् के समान चचल और अनित्य है, पानी के बुलबुले और घास की नोंक

पर रही ओस की बूँद जैसा अस्थिर है, सध्या की लालिमा और स्वप्न के समान अस्थाई है, और सड़ने, गिरने तथा नाश होने वाला है। अत यह तो पहले हो या बाद मे, अवश्य ही त्यागने योग्य है और फिर यह किसने जाना है कि कौन पहले जायेगा और कौन बाद मे ? इसलिए हे माता-पिता मैं आपकी आज्ञा लेकर भगवान महावीर के पास दीक्षा लेना चाहता हूँ।''

89. Megh Kumar replied, "Parents! What you say is correct but know that this human life is mutable, uncertain, and fleeting It is handicapped with vices and plagued by afflictions It is flickering and inconstant like lightening, fleeting like a bubble and a dew drop on the edge of grass, ephemeral like the crimson of the dusk or a dream It is perishable, decayable, and destructible As such, sooner or later it has to be abandoned Moreover, who ever knows who will go earlier and who, later? So, parents! with your permission I want to go to Shraman Bhagavan Mahavir and get initiated "

सूत्र ९०. तए ण त मेह कुमार अम्मापियरो एव वयासी-''इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ सरिसत्तयाओ सरिसव्वयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ सरिसेहिन्तो रायकुलेहिन्तो आणियल्लियाओ भारियाओ, त भुजाहि ण जाया ! एताहि सद्धि विपुले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्सति।''

सूत्र ९० तब माता-पिता ने कहा-''हे पुत्र ! तुम्हारी ये समान गुणो वाली (पूर्व सम) पत्नियाँ है। इनके साथ मनुष्योचित दाम्पत्य जीवन के सुखो और आनन्द का भोग करो और तब सब भोगो से तुष्ट होकर दीक्षा ग्रहण कर लेना।''

90. The parents said, "Son! You have all these beautiful wives (as detailed earlier) Enjoy all the pleasures and joys of your marital life with them and when you are fully contented go and get initiated "

सूत्र ९१. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियर एव वयासी-''तहेव ण अम्मयाओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह-इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स पव्वइस्ससि-एव खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया वतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सासनीसासा दुरुयमुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुन्ना उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणग-वत-पित्त-सुक्क-सोणितसभवा अधुवा अणियया असासया सडण-पडण-विद्धसणधम्मा पच्छा पुरं च ण अवस्सविप्पजहणिज्जा।

से के ण अम्मयाओ ! जाणंति के पुव्विं गमणाए ? के पच्छा गमणाए ! तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! जाव पव्वइत्तए।"

सूत्र ९१ इस पर मेघकुमार ने कहा-"हे माता-पिता ! आपका कथन उचित है किन्तु काम भोग के आधार ये शरीर अशुद्ध हैं, अशाश्वत है। इनमें से वमन, पित्त, कफ, शुक्र और रक्त झरता है। ये अशुद्ध श्वास-निश्वास, मल-मूत्र और पीप के भण्डार हैं और इनमें से इन्ही सब कुत्सित वस्तुओ की उत्पत्ति होती रहती है। ये ध्रुवादि नहीं हैं (कथन का अतिमाश पूर्व सम)। अत हे माता-पिता मै अभी दीक्षा ग्रहण करना चाहता हूँ।

91. Megh Kumar replied, "Parents! What you say is right but the body that is the source of these physical pleasures is impure and transient It discharges vomit, bile, phlegm, semen, and blood It is filled with as well as produces impure things like foul air, excreta, and pus It is mutable (etc) As such, I want to get initiated now only"

सूत्र ९२ तए णं त मेहं कुमार अम्मापियरो एवं वयासी-"इमे ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरन्ने य सुवन्नेय कसे य दूसे य मणिमोत्तिए य मख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावतिज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगाम दाउ, पगाम भोत्तु, पगाम परिभाएउं, त अणुहोहि ताव जाव जाया ! विपुलं माणुस्सग इड्ढिसक्कारसमुदय, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पव्वइस्ससि।

सूत्र ९२ माता-पिता ने पुन मेघकुमार से कहा-"हे पुत्र ! तुम्हारे पितामह, पिता के पितामह और उनके प्रपितामह के समय से आयी प्रचुर समृद्धि-हिरण्यादि (पूर्व सम) विद्यमान है। यह इतना है कि सात पीढ़ियो तक भी समाप्त न हो। तुम इसका खूब दान करो, स्वय भी भोग करो और बॉटो भी। हे पुत्र ! मनुष्योचित जितना ऋद्धि-सत्कार का भण्डार है तुम उसका भोग करो। उसके बाद दीक्षा ले लेना।"

92. The parents persisted, "There is abundant wealth (gold, etc as detailed earlier) inherited from your ancestors It is enough to last seven generation and more You should donate, enjoy, and distribute out of it as much as it pleases you Enjoy this great treasure of wealth and good will and then get initiated"

सूत्र ९३. तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरं एव वयासी-"तहेव णं अम्मयाओ ! जं ण त वदह-इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि एवं खलु अम्मयाओ ! हिरन्ने य सुवण्णे य जाव सावतेज्जे

अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुर च ण अवस्सविप्पजहणिज्जे, से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के जाव गमणाए ? त इच्छामि ण जाव पव्वइत्तए।''

सूत्र ९३ इस पर मेघकुमार ने उत्तर दिया-''हे माता-पिता ! आपका कथन ठीक है किन्तु हे माता-पिता यह हिरण्यादि सभी द्रव्य अग्नि द्वारा जलाये जा सकते है। ये सभी चोरो द्वारा चुराये जा सकते हैं, राजा द्वारा इनका अपहरण किया जा सकता है, भागीदार बँटवारा कर सकता है और मृत्यु के आने पर इनसे बिछोह हो जाता है। अतः इस सारी समृद्धि मे अग्नि, चोर आदि सभी भागीदार है। ये ध्रुवादि नही है (कथन का अतिमाश पूर्व सम)। इसलिए मैं अभी ही दीक्षा लेना चाहता हूँ।''

93. Megh Kumar replied, "Parents! What you say is correct but all these earthly things including gold can be consumed by fire Thieves can take away this wealth, government can confiscate it, a partner can claim a share from it, and death can separate one from it In other words, all these and many others are in fact partners in this wealth Moreover, it is mutable (etc as mentioned before) As such, I want to get initiated immediately"

सूत्र ९४ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो सचाएइ मेह कुमार बहूहि विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य, आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहि सजमभउव्वेयकारियाहिं पन्नवणाहि पन्नवेमाणा एव वयासी-

एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुन्ने णेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख चक्कमियव्वय गरुअं लबेयव्वं, असिधारावय संचरियव्व।

सूत्र ९४ इस प्रकार जब माता-पिता सभी प्रकार के अनुकूल अनुनय-विनय, दीनता प्रदर्शन, आत्मीयता आदि से मेघकुमार को समझाने मे असफल रहे तो उन्होने प्रतिकूल उपायो से सयम के प्रति भय और उद्वेग उत्पन्न करने की चेष्टा से कहा-

''हे पुत्र ! निर्ग्रन्थ का प्रवचन सत्य है, अनुपम है, केवली द्वारा प्रतिपादित है, न्याययुक्त है, विशुद्ध है, शल्यनाशक है (मायादि), सिद्धि और मुक्ति का मार्ग है, स्वर्ग और निर्वाण

का मार्ग है, तथा समस्त दु:खों से निस्तार का मार्ग है। इस मार्ग पर चलने के लिए निर्ग्रन्थ प्रवचन में वैसी ही एकाग्रता रखनी पडती है जैसी सर्प अपने भक्ष्य को ग्रहण करते समय रखता है। यह राह छुरे की धार की तरह एकान्त रूप से तीक्ष्ण धार वाली है। इस पर चलना लोहे के चने चबाने जैसा है। यह रेत के ग्रास के जैसी स्वादहीन है। इस पर चलना गगा जैसी महानदी मे बहाव के विपरीत तैरने जैसा है, महासमुद्र को तैरकर पार करने जैसा है, भाले की नोको पर चलने जैसा है, चट्टान को गले में बाँधने जैसा है, और तलवार की धार पर चलने जैसा है।

94. Thus when all enticing methods including request, show of humility and affection failed to break the resolve of Megh Kumar, his parents resorted to repulsive methods like instilling fear and antipathy for ascetic discipline —

"Son! The word of the Nirgranth is true, unique, and propagated by the omniscient It is just, pure, and an antidote for thorns like illusion. It shows the path of purity, liberation, heaven and Nirvana, and is the means of removal of all sorrows To tread this path it is necessary to have a deep concentration like a snake has when it hunts its prey This path is as sharp as a razors edge To tread this path is like biting iron bits It is as tasteless as a mouthful of sand To move on this path is like swimming against the current in a great river like the Ganges, swimming across an ocean, walking on spear points, suspending a heavy rock from the neck, and walking on the edge of a sword"

सूत्र ९५ णो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गंथाण आहाकम्मिए वा, उद्देसिए वा, कीयगडे वा, ठवियए वा, रइयए वा, दुब्भिक्खभत्ते वा, कतारभत्ते वा, वद्दलियाभत्ते वा, गिलाणभत्ते वा, मूलभोयणे वा, कदभोयणे वा, फलभोयणे वा, बीयभोयणे वा, हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा। तुम च णं जाया ! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए। णाल सीय, णाल उण्ह, णाल खुहं, णालं पिवासं, णालं वाइयपित्तियसिभियसन्निवाइयविविहे रोगायके उच्चावए गामकटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने सम्म अहियासित्तए। भुजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि।

सूत्र ९५ "हे पुत्र ! निर्ग्रन्थ श्रमणो को आधाकर्मी (साधु के निमित्त पकाया), औद्देशिक (साधु के लिए खरीदा), क्रीतकृत (भिक्षा मे देने के लिए संकल्प किया हुआ),

स्थापित (साधु के लिए रखा), रचित (साधु के लिए तैयार किया), दुर्भिक्ष भक्त (अकाल के लिये बनाया), कान्तार भक्त (अरण्य का भोजन), वर्दलिका भक्त (वर्षा के दिन का भोजन), ग्लान भक्त (बीमार का भोजन) आदि आहार ग्रहण करना नही कल्पता। इसी प्रकार मूल, कद, फल, बीज, हरित आदि आहार ग्रहण करना भी नही कल्पता और फिर, हे पुत्र ! तुम्हारा जीवन तो सुख भोगने के लिए है न कि दु ख भोगने के लिए। तू सर्दी, गर्मी सहन नहीं कर सकता। वात, पित्त, कफ और सन्निपात आदि जनित अनेक प्रकार के रोग सहन नही कर सकता। तू अनुकूल-प्रतिकूल बाईस प्रकार के परिषह-उपसर्ग समता सहित सहन नही कर सकता। अत हे पुत्र ! तू मनुष्योचित काम भोगो को भोग और तब भगवान महावीर के पास दीक्षा ले।''

95. "Son! A wide range of eatables is prohibited for an ascetic, it includes— Adhakarmi (food cooked for ascetics), Auddeshik (food cooked for a specific ascetic), Kreetkrit (food purchased for ascetics), Rachit (food prepared or given final shape for an ascetic), Durbhiksha-bhakt (food prepared for eating during drought), Kantar-bhakt (food prepared for jungle travel), Vardalika-bhakt (food prepared for a rainy day), Glan-bhakt (food prepared for a sick person), and also green vegetables including roots, bulbs, and fruits

"Besides this, you are born to enjoy the pleasures of life and not to suffer the pains You are not accustomed to tolerate the extremes of cold and heat, neither can you tolerate numerous ailments caused by disturbed body humours like wind, bile, and phlegm It is beyond the limits of your tolerance to face with equanimity the twenty two types of afflictions As such, son! you should enjoy the pleasures of life fully and then only get initiated into the order of Shraman Bhagavan Mahavir"

सूत्र ९६ तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एव वुत्ते समाणे अम्मापियर एव वयासी-''तहेव णं त अम्मयाओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह--एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे. पुणरवि त चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि। एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गथे पावयणे कीवाण कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाण दुरणुचरे पाययजणस्स, णो चेव ण धीरस्स। निच्छियववसियस्स एत्थ कि दुक्कर करणयाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए।''

सूत्र ९६ मेघकुमार ने उत्तर दिया–"हे माता-पिता ! आपका यह सब कथन ठीक है पर यह निर्ग्रन्थ-मार्ग दुर्बल शरीर वाले, कायर, कापुरुष आदि तथा इस लोक के विषय-सुख की अभिलाषा में लिप्त तथा परलोक के सुख की इच्छारहित सामान्य व्यक्ति के लिए ही दुष्कर है। धीर पुरुष के लिए नहीं। जिसका संकल्प दृढ़ हो उसके लिए यह दुष्कर नही है। अत मैं आपकी आज्ञा ले दीक्षा लेना चाहता हूँ।"

96. Megh Kumar replied, "Parents! What you have said is correct but know that this path of asceticism is difficult only for a weakling, a coward, spineless and other such timorous persons and also for those who are deeply involved only with earthly desires and pleasures having no awareness for the happiness of the other world or the next life But it is not at all difficult for the composed ones who have strong determination As such, seeking your permission I wish to get initiated without any delay"

सूत्र ९७ तए ण त मेह कुमार अम्मापियरो जाहे नो संचाइंति बहूहि विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहाहि य आघवित्तए वा, पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा, ताहे अकामए चेव मेह कुमार एव वयासी–"इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरि पासित्तए।"

तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ९७ जब मेघकुमार के माता-पिता उसे विषयो के अनुकूल तथा प्रतिकूल तरह-तरह के उपायो से मनाने मे सफल नहीं हुए तो अनिच्छा से बोले–"हे पुत्र ! हम तुम्हें कम से कम एक दिन के लिए राज्य लक्ष्मी का भोग करते देखना चाहते हैं।"

मेघकुमार माता-पिता की इच्छा का आदर करते हुए मौन रहा।

97. When Megh Kumar's parents failed to dissuade him in spite of every possible effort, they unwillingly said, "Son! We wish to see you enjoy the kingdom and its wealth at least for one day"

In honour of this insignificant desire of his parents Megh Kumar remained silent to express his acceptance

राज्याभिषेक

सूत्र ९८. तए ण सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थ महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं

उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव (महत्थ महग्घ महरिहं विउलं रायाभिसेयं) उवट्ठवेन्ति।"

सूत्र ९८ श्रेणिक राजा ने तब सेवको को बुलवाया और कहा-"देवानुप्रियो ! मेघकुमार के लिए महान् समृद्धिवान पुरुषों के योग्य राज्याभिषेक का विशाल आयोजन करो।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन किया।

CORONATION

98. King Shrenik now called his staff and said, "Beloved of gods! Make elaborate arrangements for a grand coronation ceremony for Megh Kumar, as is done for highly prosperous individuals" The attendants carried out the order

सूत्र ९९. तए णं सेणिए राया बहूहिं गणणायग-दंडणायगेहि य जाव सपरिवुडे मेह कुमारं अट्ठसए ण सोवन्नियाणं कलसाण, रुप्पमयाण कलसाण, सुवण्ण-रुप्पमयाण कलसाण, मणिमयाण कलसाणं, सुवन्न-मणिमयाण कलसाण, रुप्प-मणिमयाण कलसाण, सुवन्न-रुप्प-मणिमयाणं कलसाण, भोमेज्जाण कलसाण सव्वोदएहि सव्वमट्टियाहि सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिहि य, सिद्धत्थएहि य, सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं जाव दुदुभि-निग्घोस-णादियरवेण महया महया रायाभिसेए ण अभिमिचइ, अभिसिचित्ता करयल जाव परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी-

सूत्र ९९ राजा श्रेणिक ने बहुत से गणनायक, दण्डनायक आदि समम्त वैभव, चमक-दमक और सेना के साथ दुदुभि आदि की प्रतिध्वनियो के बीच अनेक कलशो से मेघकुमार का अभिषेक किया। उन कलशो का वर्णन इस प्रकार है-एक सौ आठ सोने के, एक सौ आठ चॉदी के, एक सौ आठ सोने-चॉदी के, एक सौ आठ मणिजडित, एक सौ आठ सोने और मणि के, एक सौ आठ चॉदी और मणि के, एक सौ आठ सोने-चॉदी और मणि के, और एक सौ आठ मिट्टी के, इस प्रकार आठ सौ चौसठ कलशो को मिट्टी, जल, पुष्प, गंध, माला, औषधि, सरसो आदि विभिन्न मागलिक वस्तुओ से भरकर तैयार किया गया।

अभिषेक के बाद राजा श्रेणिक ने यथाविधि हाथ जोडकर कहा-

99. In presence of a large gathering of chieftains, administrators, (etc) with all grandeur and pomp and show in an atmosphere filled with reverberating sounds of beating drums and other musical

instruments King Shrenik annointed Megh Kumar with the help of numerous urns The details of these urns is—

One hundred and eight each made up of 1 gold, 2 silver, 3 silver and gold, 4 gem studded, 5 gold and gem studded, 5 silver and gem studded, 7 gold, silver, and gem studded, and 8 clay These eight hundred and sixty four urns were filled with a variety of auspicious things including sand, water, perfumes, garlands, herbs, and mustard.

After the annointing King Shrenik joined his palms and said—

सूत्र १०० "जय जय णदा ! जय जय भद्दा ! जय णंदा भद्दं ते, अजियं जिणेहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, अजिय जिणेहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं, जाव इदो इव देवाण, चमरो इव असुराण, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराण, भरहो इव मणुयाण रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसि च बहूण गामागरनगर जाव खेड-कब्बड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-संनिवेसाणं आहेवच्चं जाव पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीत-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहराहि" त्ति कट्टु जयजयसद्द पउजंति।

तए ण से मेहे राया जाए महया जाव विहरइ।

सूत्र १०० "हे नन्द ! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे भद्र ! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे आनन्दमूर्ति ! तुम्हारा कल्याण हो। तुम अजित तथा शत्रुपक्ष पर विजय पाओ और जीते हुए तथा मित्रपक्ष का पालन करो। जो जिन है उनके बीच निवास करो। इन्द्रादि तथा भरत चक्रवर्ती के समान राजगृह तथा अन्य नगर-ग्रामादि, सन्निवेशादि पर आधिपत्यादि करते हुए आनन्द और उत्सव सहित विचरण करो।" यह कहकर राजा ने जय-जयकार किया। इस प्रकार मेघ राजा बन गया और पर्वतो मे महाहिमवन्त की तरह शोभित हुआ।

100. "Victory be to you O source of joy! May you be victorious O noble one! May all go well with you O embodiment of happiness! May you conquer the enemies and those who are yet unvanquished and support the friends and the conquered May you live with the Jinas, who have won over their senses Like Indra and Bharat Chakravarti, may you rule over and protect Rajagriha and other towns and villages with festivities and joy" With these words King Shrenik hailed Megh Kumar Thus Megh Kumar was crowned and became glorious among kings as is the Himalaya among mountains

सूत्र १०१. तए णं तस्स मेहस्स रण्णो अम्मापियरो एवं वयासी-"भण जाया ! किं दलयामो ? कि पयच्छामो ? किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे (मंते) ?"

सूत्र १०१ इसके बाद माता-पिता बोले-"हे पुत्र ! हम तुम्हे क्या देवें ? तुम्हे किस प्रिय वस्तु की इच्छा है ? तुम्हारे मन में क्या इष्ट है ? कहो।"

101. After this, the parents asked, "Son! What should we gift you? Which fond thing you wish to have? What is it that you desire? Tell us "

संयमोपकरण की माँग

सूत्र १०२. तए णं से मेहे राया अम्मापियरं एवं वयासी-"इच्छामि ण अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गह च उवणेह, कासवय च सद्दावेह।"

सूत्र १०२ राजा मेघ ने कहा-"हे माता-पिता ! कुत्रिकापण (जिस दुकान मे तीनो लोको की सभी वस्तुएँ मिलती हो) से रजोहरण और पात्र (श्रमण के उपकरण) मँगवा दीजिये और साथ ही एक नाई को बुलवा दीजिए।"

DEMAND FOR ASCETIC EQUIPMENT

102. King Megh replied, "Parents! Please send someone to a departmental store and get me the ascetic's sweep and utensils and, also call a barber "

सूत्र १०३. तए ण से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ। सद्दावेत्ता एव वयासी-"गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइ गहाय दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गहगं च उवणेह, सयसहस्सेण कासवय सद्दावेह।"

तए ण ते कोडुबियपुरिसा सेणिए ण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइ गहाय कुत्तियावणाओ दोहि सयसहस्सेहि रयहरण पडिग्गहं च उवणेन्ति, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेन्ति।

सूत्र १०३ राजा श्रेणिक ने अपने सेवको को बुलवाकर आज्ञा दी-"देवानुप्रियो ! खजाने से तीन लाख मोहरे ले लो। दो लाख मोहरो मे कुत्रिकापण से रजोहरण और पात्र खरीदो और एक लाख मोहर देकर नाई को बुला लाओ।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन किया।

103. King Shrenik called his staff and said, "Beloved of gods! Collect three hundred thousand gold coins from the treasury Purchase the ascetic's sweep and utensils by paying two hundred thousand coins and also bring a barber paying him the remaining one hundred thousand coins " The attendants carried out the order

दीक्षा की तैयारी

सूत्र १०४. तए ण से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं मंगलाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे जेणेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सेणिय राय करयलमजलि कट्टु एवं वयासी-"संदिसह ण देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्ज।"

तए ण से सेणिए राया कासवय एवं वयासी-"गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गधोदए णं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह। सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि।"

सूत्र १०४ सेवको द्वारा बुलाया गया नाई इस बुलावे से प्रसन्न हुआ। वह स्नानादि कर्मो से निवृत्त होकर राज सभा मे जाने योग्य वस्त्र आभूषण पहनकर राजा श्रेणिक के पास आया। यथाविधि हाथ जोडकर बोला-"देवानुप्रिय ! आज्ञा दीजिये मुझे क्या करना है।" राजा श्रेणिक बोले-"देवानुप्रिय ! तुम जाओ और सुगधित जल से हाथ-पैर अच्छी तरह धो आओ। फिर चार तह वाले कपडे से मुँह बाँधकर मेघकुमार के बालों को दीक्षा योग्य चार अगुल प्रमाण छोडकर बाकी काट दो।"

PREPARATIONS FOR INITIATION

104. The barber felt honoured to receive the invitation from the king After his bath and other daily chores he got ready wearing a dress suitable for the king's assembly and came to king Shrenik After due greetings he joined his palms and asked, "Beloved of gods! Tell me what is expected of me?" King Shrenik replied, "Beloved of gods! Go and wash your hands and feet with perfumed water After this, cover your mouth with a four layered piece of cloth and cut Megh Kumar's hair short to approximately four inch length, as needed for the initiation ceremony"

सूत्र १०५. तए ण से कासवए सेणिए ण रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदए णं हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालित्ता सुद्धवत्थेणं मुहं बधति, बधित्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पइ।

सूत्र १०५ नाई राजा की बात सुन प्रसन्न हुआ और उनके निर्देशानुसार सावधानी से मेघकुमार के बाल काट दिये।

105. The barber felt honoured to get this order from the king and cut Megh Kumar's hair short as per the instructions of the king

सूत्र १०६ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेण पडसाडए णं अग्गकेसे पडिच्छइ। पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदए ण पक्खालेति, पक्खालित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण चच्चाओ दलयति, दलइत्ता सेयाए पोत्तीए बंधेइ, बधित्ता रयणसमुग्गयसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मजूसाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिन्दुवार-छिन्नमुत्तावलि-पगासाइ असूइ विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कदमाणी कदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एव वयासी–"एस ण अम्ह मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ।

सूत्र १०६ मेघकुमार की माता ने उन बालो को हस के चिह्न वाले हस जैसे सफेद कपडे में ले लिया। बालो को सुगधित जल से धोया, सरस गोशीर्ष चन्दन उन पर छिडका और सफेद कपडे मे बाँध लिया। इस पोटली को उसने रत्नजडित डिब्बे मे रखा और डिब्बे को पेटी में। फिर वे जलधारा, निर्गुंडी के फूल, और मोतियो के टूटे हार की तरह ऑसू बहाती रोती कलपती बोली–"मेघकुमार का यह दर्शन भविष्य मे अभ्युदय, उत्सव, जन्मोत्सव, विशिष्ट तिथियो, इन्द्र महोत्सव, नाग पूजा, कार्तिक पूर्णिमा आदि के अवसर पर हमे इन केशो के माध्यम से याद आएगा।' यह कहकर धारिणी देवी ने वह पेटी अपनी शय्या के सिराहने की ओर रख ली।

106. Megh Kumar's mother collected these hair in a swan marked piece of cloth as white as a swan She washed the hair with perfumed water, sprinkled good quality sandal essence over them and tied them into a packet with a piece of cloth She put this packet into a gem studded box which in turn was placed in a chest

Sobbing and shedding tears like a stream of water, Nirgundi flowers, and a broken string of pearls, she uttered, "This bunch of hair

will help us recall this image of Megh Kumar on various festive occasions like days of achievements, ceremonies, birth celebrations, specific dates of festivals, Indra festival, snake worship, Kartik Purnima (full moon of the month of Kartik) and others" Queen Dharini then placed the chest near the head of her bed

सूत्र १०७ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेन्ति। मेह कुमारं दोच्च पि तच्च पि सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेन्ति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेन्ति, लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपंति, अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पडगसाडगं नियंसेन्ति, नियसित्ता हार पिणद्धंति, पिणद्धित्ता अद्धहार पिणद्धंति, पिणद्धित्ता एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलि रयणावलिं पालबं पायपलंब कडगाइं तुडिगाइं केऊराइं अंगयाइं दसमुद्दियाणतयं कडिसुत्तय कुडलाइ चूडामणि रयणुक्कड मउडं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति, पिणद्धित्ता दद्दरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धंति।

तए ण त मेहं कुमार गठिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेण चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलकियविभूसिय करेन्ति।

सूत्र १०७ मेघकुमार के माता-पिता ने तब उत्तर दिशा की ओर सिहासन रखवाया। मेघकुमार को दो-तीन बार सफेद और पीले कलशो से नहलाया। कषाय रग के अत्यन्त कोमल और रोएँदार तौलिये से उसके शरीर को पोछा और गोशीर्ष चन्दन का लेप किया। साँस से उडे ऐसे अत्यन्त महीन और हस के समान सफेद वस्त्र पहनाए और फिर ये सब आभूषण पहनाए–हार, अर्द्धहार, एकावली, मुक्तावली, कनकावली, रत्नावली, प्रालंब, पाद प्रालम्ब, कडे, तुटिक, केयूर, अगद, अगूठियॉ (दस), कदोरा, कुडल, चूड़ामणि और रत्नजडित मुकुट। आभूषणो के बाद फूलो की मालाएँ पहनाईं और तब मिट्टी के बर्तन में तपाकर निकाला हुआ चन्दन का सुगधित तेल शरीर पर लगाया।

इस सबके बाद मेघकुमार को चार तरह की फूल मालाओ से सजाया गया; वे इस प्रकार है–पिरोकर बनाई हुई, लपेटकर बनाई हुई, भरकर बनाई हुई और गूँथकर बनाई हुई।

107. Megh Kumar's parents arranged for a throne and got it placed facing the north Water was poured over Megh Kumar from white and yellow coloured urns two to three times. His body was rubbed dry with gray coloured soft woolly towels and, sandal wood paste was applied

over it. He was dressed in garments as white as a swan and, so light that they could be blown away by a mere exhalation He was then adorned with ornaments such as—

Haar (necklace), Ardha-haar (half-necklace or a pendant with a chain), Ekavali (single string of beads), Muktavali (pearl string), Kanakavali (string of golden beads), Ratnavali (string of gem beads), Pralamb (a long necklace), Paad-pralamb, (a very long necklace dangling near the feet), Kandora, (a type of girdle), Kundal (earrings), Chudamani (an ornament for forehead), and Mukut (crown)

After this, garlands of flowers were put around his neck and fragrant sandal-wood oil, distilled in an earthen pot, was applied on his body

In the end, he was further adorned with flower garlands made by four different processes— strung, wrapped, filled, and inter-woven

सूत्र १०८. तए ण से सेणिए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसयसन्निविट्ठ लीलट्ठियसालभजियागं ईहामिग-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्त घटावलि-महुर-मणहरसर सुभकत-दरिसणिज्ज निउणोचियमिसि-मिसतमणि-रयणघंटियाजाल-परिक्खित्त खभुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिराम विज्जाहर-जमलजतजुत्त पिव अच्चीसहस्समालणीय रूवगसहस्सकलिय भिसमाण भिब्भिसमाण चक्खुल्लोयणलेस्स सुहफास सस्सिरीयरूव सिग्घ तुरिय चवल वेइय पुरिससहस्सवाहिणि सीय उवट्ठवेह।"

सूत्र १०८ श्रेणिक राजा ने फिर सेवको को बुलाकर आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही एक विशाल पालकी तैयार कराओ जिसका विवरण इस प्रकार है–जो अनेक खभो से बनी हो। जिसमे लीला करती पुतलियाँ सजी हो। जिसमे ईहामृग, वृषभ, घोडा, नट, मगर, पक्षी, साँप, किन्नर, रुरु, सरभ, चमरी गाय, हाथी, वनबेल, कमल बेल आदि के चित्र बने हो। जिसमे लगी घटियो के गुच्छों की मीठी आवाज गूँज रही हो। जो इन सबसे शोभित हो शुभ, कान्त और दर्शनीय लग रही हो। जो कुशल कारीगरो की बनाई चमकदार मणिरत्नो की घटियो के गुच्छो से सजी ऊँची वेदी लगी होने से नयनाभिराम लग रही हो। क्रीडारत विद्याधर युगल के चित्र और विविध रत्नो से जडी होने के कारण जो सूर्य की किरणो से भी अधिक प्रकाशवान हो। ऐसे सहस्रों सुन्दर चित्रो से सजी, रत्नो से चमकती, तरह-तरह की शिल्प कलाओ से सुरूप बनी यह पालकी आकर्षक हो, सुखद स्पर्श वाली हो और

अपूर्व शोभा वाली हो तथा एक हजार आदमियों से उठाई जाने वाली हो। आलस त्यागकर, अन्य कोई भी कार्य में व्यस्त हुए बिना, शीघ्रातिशीघ्र और पूर्ण एकाग्रता से ऐसी पालकी ले आओ।"

108. Once all this was done, King Shrenik called his staff and said, "Beloved of gods! Arrange for a large palanquin with the following specification —

It should be raised on numerous pillars It should be decorated with idols of dancing damsels It should have painted motifs such as—Iha Mrig, bull, horse, gymnast, crocodile, bird, snake, Kinnar, Ruru, Sarabh, yak, elephant, wild creepers, lotus, etc It should resonate with the twinkling sound of bunches of small bells dangling in it Decorated thus it should look good, beautiful and attractive It should be eye catching due to a high pedestal made by expert artisans and fitted with bunches of bells made of gems Embellished with the paintings of playful Vidyadhar couples and inlaid with a variety of gems it should appear more brilliant than the sun rays Decorated with thousands of such paintings, made radiant with gems, and exquisite with a variety of crafts this palanquin should be attractive and unique in appearance and pleasant to touch It should be carried by one thousand persons. Quit indolence, avoid all distractions and rush with full concentration to bring such a palanquin "

महाभिनिष्क्रमण

सूत्र १०९. तए ण ते कोडुबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा जाव उवट्ठवेन्ति। तए ण से मेहे कुमारे सीय दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीय दुरूहति। दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणसि निसीयति।

तए ण मेहस्स कुमारस्स अबधाई रयहरण च पडिग्गहं च गहाय सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणसि निसीयति।

सूत्र १०९ वे सेवक प्रसन्नतापूर्वक पालकी ले आए। मेघकुमार पालकी पर चढ़ सिहासन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गये।

स्नानादि कर वस्त्राभूषण पहनकर मेघकुमार की माता उस पालकी पर चढ़कर मेघकुमार के दाहिनी ओर आसन पर आ बैठीं। मेघकुमार की धाय-माता भी तैयार हो रजोहरण, पात्र आदि लेकर उनके बाईं ओर के आसन पर बैठी।

THE GREAT RENUNCIATION

109. The attendants felt honoured to bring this palanquin Megh Kumar ascended the palanquin and sat on a throne facing the east

Getting ready and attired ceremoniously, Megh Kumar's mother too ascended the palanquin and took a seat to the right of Megh Kumar The governess of Megh Kumar also got ready and carrying the ascetics broom and pots took her seat on his left

सूत्र ११०. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तो-वयारकुसला, आमेलग-जमल-जुयल-वट्टिय-अब्भुन्नय-पीण-रइय-सठियपओहरा, हिम-रययकुन्देन्दुपगास सकोरंटमल्लदामधवल आयवत्त गहाय सलील ओहारेमाणी ओहारेमाणी चिट्ठइ।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीय दुरूहंति, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पासं नाणामणि-कणग-रयण-महरिह-तवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालओ संख-कुद-दग-रयअ-महियफेणपुंजसन्निगासाओ चामराओ गहाय सलील ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति।

सूत्र ११० फिर आकण्ठ सजी हुई, सुन्दर वस्त्र, गति, हास्य, वचन, चेष्टा, विकास वाली, बातचीत मे निपुण, और व्यवहार कुशल एक युवती जिसकी देह सुन्दर थी और पयोधर उन्नत थे, अपने हाथ मे हिम, चाँदी, कुद के फूल और चन्द्रमा के समान सफेद आभा वाला कोरट फूलो की मालाओ से सजा छत्र लिए मेघकुमार के पीछे खडी हो गई।

फिर आकण्ठ सजी हुई (पूर्व सम) दो युवतियॉ पालकी पर चढ़ी। वे अपने हाथो मे मणि, सोना और रत्नो से जडी, चमकदार और अद्‌भुत डडी वाले और जगमग करते, श्रेष्ठ पतले और लम्बे, चाँदी तथा मथे हुए अमृत के झाग जैसे सफेद चामर लिए मेघकुमार के दोनो ओर खडी हो गई।

110. After this came a beautiful young maid having perfect figure and firm breasts, attractively dressed and richly embellished with

ornaments; having charming growth, movements, laughter, voice, and gestures, and with graceful speech and behaviour Carrying an umbrella as brilliantly white as snow, silver, Kund flowers, and full-moon and decorated with garlands of Korant flowers, she ascended the palanquin and stood behind Megh Kumar

Then came two more maids (described as before) and ascended the palanquin With a whisk each in their hands they took position on both flanks of Megh Kumar These whisks were made up of long and thin strands of good quality fiber, white and gleaming like silver and ambrosia-froth, mounted on exquisite long handles made radiant with gold and gem inlay

सूत्र १११. तए णं तस्स मेहकुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा जाव कुसला सीय जाव दुरूहइ। दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरतो पुरत्थिमेणं चंदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदड तालविंट गहाय चिट्ठइ।

तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीय दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेण सेय रययामय विमलसलिलपुन्न मत्तगयमहा-मुहाकिइसमाण भिगार गहाय चिट्ठइ।

सूत्र १११ इसके बाद एक अन्य सुन्दर युवती (वर्णन पूर्व सम) पालकी पर आई और मेघकुमार के पास पूर्व दिशा की ओर मुख किये, हाथ मे चन्द्रकान्त मणि, हीरा और लसनिया जडी डडी वाला पखा हाथ मे लिए खडी हो गई।

इसी प्रकार एक अन्य युवती हाथ मे चॉदी की, हाथी के मुख के आकार की, निर्मल जल से भरी झारी लिए मेघकुमार की दक्षिण-पूर्व दिशा मे खडी हो गई।

111. Now another beautiful maid (as described before) ascended the palanquin and stood facing east near Megh Kumar She carried a fan with a moon-stone, diamond and cats-eye studded handle in her hand

Another young maid came and stood on the south-eastern side of Megh Kumar with an elephant-head shaped silver pitcher full of pure water

सूत्र ११२ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाणं सरिसत्तयाण सरिसव्वयाणं एगाभरणगहियनिज्जोयाण कोडुबियवरतरुणाण सहस्स सद्दावेह।" जाव सद्दावेन्ति।

तए णं कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुबियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव' एगाभरणगहियनिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता सेणिय राय एव वयासी–"सदिसह ण देवाणुप्पिया ! जं णं अम्हेहिं करणिज्ज।"

सूत्र ११२ अब मेघकुमार के माता-पिता ने सेवको को बुलवाकर आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही समान कान्ति, वय, वेष-भूषा और आभूषण वाले एक हजार युवा सेवको को बुलाओ।" सेवको ने आज्ञा का पालन किया।

ये एक हजार युवक राजा का बुलावा सुनकर प्रसन्नचित्त हो स्नानादि कर एक समान वस्त्राभूषण पहन राजा के निकट आये और बोले–"हे देवानुप्रिय ! हमे क्या आज्ञा है ?"

112. When all this was done Megh Kumar's parents called the staff and said, "Beloved of gods! Call one thousand young servants of same appearance, age and attire immediately" The attendants carried out the order

These one thousand young men felt honoured at the king's invitation They got ready after taking bath and wearing similar dresses and ornaments They came to the king and said, "Beloved of gods! What do you want us to do?"

सूत्र ११३ तए णं से सेणिए त कोडुबियवरतरुणसहस्स एव वयासी–"गच्छह ण देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणि सीय परिवहेह।

तए ण त कोडुंबियवरतरुणसहस्स सेणिए ण रण्णा एव वुत्त सत हट्ठ तुट्ठ तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणि सीय परिवहति।

सूत्र ११३ श्रेणिक राजा ने उनसे कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और एक हजार पुरुषो से उठने वाली मेघकुमार की पालकी को उठाओ।" प्रसन्नचित्त हो वे सेवक गये और मेघकुमार की पालकी को उठा लिया।

113. King Shrenik said to them, "Beloved of gods! Go and lift the Purisasahassa palanquin of Megh Kumar" The servants proceeded happily and lifted Megh Kumar's palanquin

सूत्र ११४ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिसहस्सवाहिणिं सीय दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमगलया तप्पढमयाए पुरतो अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया। त जहा–(१) सोत्थिय (२) सिरिवच्छ (३) नंदियावत्त (४) वद्धमाणग (५) भद्दासण (६) कलस

(७) मच्छ (८) दप्पणया जाव बहवे अत्थत्थिया जाव कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किब्बिसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया बद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदंता य एवं वयासी–

"जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जय णंदा ! भद्द ते, अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जिय च पालेहि समणधम्मं, जियविग्घोऽवि य वसाहि तं तेव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागद्दोसमल्ले तवेण धिइधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय वितिमिर-मणुत्तरं केवल नाणं, गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयल हता परीसहचमुं णं अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घ भवउ" त्ति कट्टु पुणो पुणो मगल-जयजयसद्द पउजति।

सूत्र ११४ ये सब तैयारियाँ हो जाने के बाद पालकी के आगे सबसे पहले अनुक्रम से आठ मगल द्रव्य चलाये गये। वे इस प्रकार है–१ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स (तीर्थंकरों के वक्ष पर का एक अवयवाकार चिह्न), ३ नदावर्त्त (विशेष स्वास्तिकाकार चिह्न), ४. वर्धमान (पात्र विशेष), ५ भद्रासन, ६ कलश, ७ मत्स्य, और ८ दर्पण। बहुत से याचकादि मघकुमार का इष्टादि वचनो से अभिनन्दन करते हुए कहने लगे–

"हे नन्द ! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे भद्र ! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे जगत् को आनन्द देने वाले ! तुम्हारा कल्याण हो। तुम अजेय इन्द्रियो को जीतो और स्वीकार किये हुए श्रमण धर्म का पालन करो। हे देव ! विघ्नो को जीतकर सिद्धि मे निवास करो। धैर्यपूर्वक कमर कसकर राग-द्वेषरूपी मल्लो का तप के द्वारा नाश करो। प्रमादरहित हो आठो कर्मरूपी शत्रुओ का विशुद्ध शुक्लध्यान से मर्दन करो। अज्ञान के तिमिर से विहीन सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान को प्राप्त करो। परीषहो की सेना का नाश कर, परीषह और उपसर्गों से निश्चिन्त होकर शाश्वत एव अचल परम पद को प्राप्त करो। तुम्हारी धर्मसाधना में कोई विघ्न न हो।" और वे बार-बार मगलमय जय-जयकार करने लगे।

114. After all these preparations were made, first of all eight propitious things were sent ahead of the palanquin They are— 1 Swastik (a specific graphic design resembling the mathematical sign of addition with a perpendicular line added to each of the four arms), 2. Srivatsa (a specific mark found on the chest of all Tirthankars), 3 Nandavarta (a specific graphic design resembling a Swastik but more elaborate), 4 Vardhaman (a specific design of vessel), 5 Bhadrasan (a specific design of a seat), 6 Kalash (an urn), 7 Matsya (a fish), and 8 Darpan (a mirror)

Numerous beggars collected near the palanquin and started uttering greetings addressed to Megh Kumar —

"Victory be to you O source of joy! May you be victorious O noble one! May all go well with you O benefactor of the world! May you conquer the unconquerable senses and follow the path of Shramans that you have accepted O Bhagavan! May you cross all hurdles and embrace achievements With patience and resolve, may you annihilate the adversaries in the form of attachment and aversion by means of penance Rising above inaction, may you subjugate the enemies in the form of eight types of Karmas with the help of pure ultimate meditation May you attain the ultimate state of pure knowledge or omniscience that is free of the darkness of ignorance May you destroy the chain of afflictions and, being free of them you may attain the stable and eternal state of liberation May your spiritual endeavour be free of obstacles" And they repeatedly hailed for the auspicious victory

सूत्र ११५. तए णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ।

सूत्र ११५ मेघकुमार राजगृह नगर के बीच से हो गुणशील चैत्य के निकट आये और पालकी से नीचे उतरे।

115. Passing through the town of Rajagriha, when the procession reached the Gunashil temple, Megh Kumar got down from the palanquin

सूत्र ११६. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेंति। करित्ता वदति, नमसति, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-

"एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्ह एके पुत्ते (इट्ठे कते जाव पिये मणुण्ण मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए) जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उबरपुप्फमिव दुल्लहे सवणयाए किमग पुण दरिसणयाए ? से जहानामए उप्पलेइ वा, पउमेइ वा, कुमुदेइ वा, पंके जाए जले-

सवड्ढिए नोवलिप्पइ पकरए ण, णोवलिप्पइ जलरए णं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु सवुड्ढे, नोवलिप्पइ कामरए णं, नोवलिप्पइ भोगरए णं, एस णं देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गे, भीए जम्मणजरमरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं।

सूत्र ११६ मेघकुमार के माता-पिता उन्हें आगे करके श्रमण भगवान महावीर के निकट आए। भगवान की तीन बार प्रदक्षिणा, वन्दनादि करके बोले–

"हे देवानुप्रिय ! यह मेघकुमार हमारा इकलौता पुत्र है। यह हमें इष्ट-कांत आदि (पूर्व सम) है और हमारे प्राणो जैसा है, हमारे श्वास-निश्वास जैसा है। हमारे मन का आनन्द है। गूलर के फूल के समान इसका नाम सुनना भी दुर्लभ है तो देखने की क्या कहें ? जैसे विभिन्न प्रजाति के कमल कीचड मे पैदा होते हैं और जल में विकसित होते हैं फिर भी कीचड के मैल और पानी की बूँद से लिप्त नहीं होते उसी तरह मेघकुमार वासना में उत्पन्न हुआ और भोग मे विकसित हुआ है परन्तु काम-रज और भोग-रज से लिप्त नहीं हुआ है। हे देवानुप्रिय ! यह मेघकुमार ससार के भय से चिंतित हो गया है और जन्म-जरा-मरण से डर गया है। इसलिए यह मुडित होकर गृह त्यागकर आपके पास आगार से अणगार बनना चाहता है। हम देवानुप्रिय को शिष्य-भिक्षा देना चाहते हैं अत हे देवानुप्रिय आप शिष्य-भिक्षा स्वीकार कीजिए।"

116. Keeping him in the lead, Megh Kumar's parents approached Shraman Bhagavan Mahavir and after due obeisance said—

"Beloved of gods! This is Megh Kumar, our only and cherished, lovely, adored, charming, and beloved son He is the inspiration of our life and purpose of our breathing It is difficult to hear about a son like him, what to talk of seeing one that is as rare as a Gular flower As a lotus sprouts in swamp and grows in water but still remains free from stain of mud or wetness, Megh kumar was born out of lust and grew amidst earthly pleasures but has still remained free from the mud of lust and wetness of indulgence in pleasures Beloved of gods! Megh Kumar has become apprehensive of the cycles of rebirth and the sequence of birth-aging-death As such, renouncing his home and shaving his head he wants to become Anagar (homeless ascetic) from Agar (house-holder) under your auspices We want to effect a disciple-donation and beseech you to accept the same "

सूत्र ११७. तए णं से समणे भगव महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ।

तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागं अवक्कमइ। अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ।

तए ण से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडए ण आभरण-मल्लालंकार पडिच्छइ। पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलिपगासाइं असूणि विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी कदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एवं वयासी–

"जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्व जाया ! अस्सि च ण अट्ठे नो पमाएयव्व। अम्हं पि णं एसेव मग्गे भवउ" त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र ११७ भगवान महावीर ने मेघकुमार के माता-पिता की यह बात सम्यक् रूप से स्वीकार की और तब मेघकुमार ने भगवान से उत्तर-पूर्व की दिशा मे जाकर स्वय ही अपने वस्त्राभूषण उतार दिये।

मेघकुमार की माता ने कोमल श्वेत वस्त्र मे वे वस्त्राभूषण ग्रहण किये और विलाप करती हुई बोली–"हे पुत्र ! तुम यत्न करना, प्रयत्न करना और पराक्रम करना। साधना मे प्रमाद मत करना। हमारी कामना है कि भविष्य मे हमारे लिए भी यही मार्ग प्रशस्त हो।" यह कहकर मेघकुमार के माता-पिता ने भगवान को यथाविधि वन्दन किया और लौट गये।

117. Shraman Bhagavan Mahavır accepted thıs request whole heartedly Megh Kumar then proceeded ın the north-east dırectıon and removed all hıs ornaments and dress

Megh Kumar's mother collected all the cloths and ornaments ın a soft pıece of cloth and uttered ın choked voıce, " Son! put ın dılıgence, effort, and vıgour ınto your practıces and do not be lethargıc I wısh that future may open the same path for us also " After thıs, Megh Kumar's parents bowed before Shraman Bhagavan Mahavır wıth all reverence and left

प्रव्रज्या ग्रहण

सूत्र ११८. तए णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ। करित्ता जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ। करित्ता वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी–

"आलित्ते ण भंते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य। से जहानामए केई गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए, तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ, एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। एवामेव मम वि एगे आयाभडे इट्ठे कते पिए मणुन्ने मणामे, एस मे णित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ। त इच्छामि ण देवाणुप्पियाहि सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडाविय, सेहावियं, सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जाया-मायावत्तियं धम्ममाइक्खिय।"

सूत्र ११८ मेघकुमार ने फिर अपने हाथ से पचमुष्टि लोच किया और भगवान के निकट आए। दाहिनी ओर से आरम्भ कर तीन बार प्रदक्षिणा की और यथाविधि वन्दना करके बोले–

"भगवन् ! यह ससार जरा-मरण की आग से जल रहा है। ऐसे मे कोई गाथापति अपने घर मे आग लग जाने पर सबसे कम भार की और बहुमूल्य वस्तु चुनकर वहाँ से दूर चला जाता है। वह सोचता है कि आग मे जल जाने से बचायी यह वस्तु भविष्य में मेरे हित, सुख, सामर्थ्य और कल्याण के लिए उपयोगी होगी। ठीक उसी प्रकार मेरे लिये एक मात्र यह आत्मारूपी वस्तु है। यह मेरे लिये इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और अत्यन्त मनोहर है। इस आत्मा को यदि मै ज़रा-मरण की आग में भस्म होने से बचा लूँगा तो यह पुनर्जन्म को ममाप्त करने वाला सिद्ध होगा। अत मेरी कामना है कि आप स्वयं मुझे दीक्षा दें, मुडित करे, प्रतिलेखना आदि सिखावे, सूत्र और अर्थ की शिक्षा दे, ज्ञानादि आचार, गोचर (भिक्षाचरी की विधि), विनय (सयम के भेदोपभेद) और उसका फल, चरण, करण, यात्रा और मात्रा (भोजन विधि का ज्ञान) आदि सहित धर्म का प्ररूपण करें।"

INITIATION

118. Megh Kumar pulled out all his hair (formally termed as five-fistful pulling out of hair) and came near Shraman Bhagavan Mahavir He went around Shraman Bhagavan Mahavir three times in anti-clockwise direction, formally bowed and said— .

"Bhagavan! This world is being consumed by the fire of old age and death. In a situation when his house is on fire a rich merchant chooses the most valuable and least cumbersome object and rushes away The thought at the back of his mind is that this valuable thing, saved from the fire, will be of immense use for his future benefits, happiness, power, and welfare In exactly the same way the only thing I found valuable was my soul. This is my only cherished, lovely, adored, charming, and beloved thing If I save it from being consumed by the fire of old age and death it will prove to be the instrument of terminating the cycle of rebirth

"As such, it is my earnest desire that you yourself initiate me, order shaving of my head, instruct me about the essential duties, teach me the text and meaning of the canons, and preach me the basic tenets of religion that include the code of conduct, rules of alms collecting, humility and its benefits, Charan (the observance of vows etc), Karan (rituals of maintaining purity), Yatra (practice of penance and discipline), and Matra (the proportion of things) "

सूत्र ११९ तए ण समणं भगवं महावीरे सयमेव पव्वावेइ, सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ-"एव देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसीयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व भासियव्वं, एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहि सजमेणं सजमियव्व, अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयव्व।"

तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए इम एयारूव धम्मिय उवएसं णिसम्म सम्म पडिवज्जइ। तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहि सजमइ।

सूत्र ११९ यह सुनकर भगवान महावीर ने मेघकुमार को स्वय ही दीक्षा प्रदान की। स्वय ही आचार आदि धर्म का प्ररूपण किया। वह इस प्रकार है-"हे देवानुप्रिय ! श्रमण को इस प्रकार (नियमानुसार) चलना, खडे होना, बैठना, सोना, आहार करना, बोलना आदि कर्म करने चाहिए और इस प्रकार सावधान और अप्रमत्त हो प्राण, भूत, जीव, सत्त्व आदि की रक्षा करके सयम का पालन करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे तनिक भी प्रमाद नही करना चाहिए।" मेघकुमार ने भगवान से यह धर्मोपदेश सुनकर हृदय मे धारण किया और सम्यक् रूप से अगीकार किया। वह भगवान की आज्ञा के अनुरूप ही आचरण करके सयम की आराधना करने लगे।

119. Acceptıng hıs request Shraman Bhagavan Mahavır ınitıated Megh Kumar ınto the order Preachıng the basıc tenets he said, "Beloved of gods! An ascetıc should move, stand, sıt, sleep, eat, speak, and do other thıngs accordıng to the prescrıbed rules (and he stated the rules) He should observe the dıscıplıne takıng all precautıons, beıng alert, and avoıdıng lethargy so as to protect all lıving beıngs (Pran, Bhoot, Jıva, Sattva, etc.) There should be no neglıgence ın thıs " Megh Kumar lıstened to, absorbed, and accepted the preachıng of Shraman Bhagavan Mahavır and commenced hıs practıces of conduct and dıscıplıne accordıngly

सूत्र १२० जं दिवस च ण मेहे कुमारे मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स ण दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए सेज्जासथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जासंथारए जाए यावि होत्था।

तए ण समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणु- जोगचिताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेह कुमारं हत्थेहिं सघट्टति, एवं पाएहिं, सीसे पोट्टे कायंसि, अप्पेगइया ओलडेन्ति, अप्पेगइया पोलडेन्ति, अप्पेगइया पायरयरेणुगुंडिय करेन्ति। एवं महालियं च ण रयणि मेहे कुमारे णो सचाएइ खणमवि अच्छि निमीलित्तए।

सूत्र १२० सन्ध्या के समय श्रमणो के शय्या-स्थान का विभाजन उनके दीक्षा पर्याय के काल क्रमानुसार होने के कारण जिस दिन मेघकुमार ने दीक्षा ली उसी दिन से उनका शयन स्थान (सबके पश्चात्) द्वार के निकट निश्चित हुआ।

रात के पहले और अतिम प्रहर मे अनेक श्रमण वाचना, पृच्छना, परावर्तन, धर्म-चिन्तन, उच्चार (मल त्याग) या प्रस्रवण (मूत्रादि त्याग) के लिए आते-जाते रहे। सोये हुए मेघकुमार से उनमे से किसी श्रमण का हाथ छू गया, किसी का पैर उनके मस्तक से छू गया, कोई उन्हे लॉघ गया, किसी ने तो उन्हे दो-तीन बार लाँघा और किसी के पैरों की धमक से उडी धूल उन पर पडी। उस लम्बी रात मे मेघकुमार क्षण भर को भी पलक नहीं झपका सके।

120. At bed-tıme the allotment of places to sleep was done accordıng to the senıorıty of ascetıcs on the basıs of the perıod of ınıtıatıon As such, Megh kumar was allotted the last place near the gate

During the first and last quarter of the night many ascetics kept going out for studies, inquiries, repetition of the lessons, contemplation, relieving the call of nature, etc and coming back During this perambulation some one touched sleeping Megh Kumar by his hands and some other with his feet, some touched his head with their feet and others crossed over his body, and the dust disturbed by all this commotion settled on his body Consequently, Megh Kumar could not sleep a wink throughout the night

मेघ अनगार का ऊहापोह

सूत्र १२१. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (चिंतिए पत्थिए मणोगते संकप्पे) समुप्पज्जित्था-"एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते, धारिणीए देवीए अत्तए मेहे जाव सवणयाए, त जया ण अह अगारमज्झे वसामि, तया ण मम समणा निग्गथा आढायंति, परिजाणति, सक्कारेति, समाणेति, अट्ठाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइं वागरणाइ आइक्खंति, इट्ठाहि कताहि वग्गूहि आलवेन्ति, सलवेन्ति, जप्पभिइ च ण अहं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, तप्पभिइं च ण मम समणा नो आढायति जाव नो संलवन्ति। अदुत्तर च णं मम समणा निग्गथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए जाव महालिय च ण रत्ति नो सचाएमि अच्छि निमिलावेत्तए। त सेय खलु मज्झ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलते समण भगव महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे वसित्तए" त्ति कट्टु एव संपेहेइ। सपेहित्ता अट्टदुहट्टवसट्ट-माणसगए णिरयपडिरूवियं च ण त रयणि खवेइ, खवित्ता कल्ल पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव तेयसा जलते जेणेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ। करित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ।

सूत्र १२१ मेघकुमार के मन मे ऊहापोह होने लगा-"मै श्रेणिक राज का पुत्र और धारिणी देवी का आत्मज मेघकुमार हूँ और गूलर-पुष्प के समान दुर्लभ। मै जब गृहवासी था तब श्रमण मुझे एक पुण्यात्मा राजकुमार के रूप मे जानते थे और मेरा आदर, सत्कार, सम्मान करते थे। अर्थों, हेतुओं, प्रश्नो, कारणो, उत्तरो आदि को स्पष्ट करते थे और इष्ट, कान्त वाणी मे मुझसे बातचीत करते थे। पर जब से मै आगार से अनगार बना हूँ तब से ये सभी श्रमण न तो मेरा आदरादि करते हैं और न ही बातचीत करते है। इसके अतिरिक्त जब रात को ये वाचना आदि के लिए यहाँ से आते-जाते है तो उनके पीडादायक स्पर्श से मेरी पूरी रात्रि बिना पलक झपकाए बीत जाती है। अत मेरी भलाई इसी मे है कि रात्रि

का अवसान होने पर सूर्योदय के समय भगवान महावीर से आज्ञा लेकर पुन: गृहवास में चला जाऊँ।" इन विचारों से उत्पन्न आर्तध्यान से पीडित, विकल्पों से व्याकुल मन लिए मेघकुमार ने शेष रात्रि जैसे-तैसे बिताई। दूसरे दिन प्रात काल प्रदीप्त सूर्य के उदय होने पर वे भगवान महावीर के पास गये, यथाविधि वन्दन-नमस्कार करके हाथ जोड़ भगवान की पर्युपासना करने लगे।

ASCETIC MEGH'S DILEMMA

121. This disturbance put Ascetic Megh in a dilemma —

"I am the son of King Shrenik and queen Dharini and said to be as rare as a Gular flower When I was a house-holder the ascetics recognized me as a pious prince and used to bestow honour, respect, and greetings on me They used to talk to me in loving and pleasing tone, answered to my questions, and explained meanings, causes, and reasons But since I became an ascetic they have stopped respecting me and talking to me When they go out for some work and return, my sleep is disturbed due to the painful touch they inflict. It becomes impossible to sleep even for a moment It would be good for me if I seek permission from Shraman Bhagavan Mahavir, first thing in the morning, and return back to my mundane life "

Suffering the misery and dilemma caused by these thoughts Ascetic Megh somehow spent the rest of the night As soon as the sun dawned the next morning, he went to Shraman Bhagavan Mahavir and after formal obeisance sat down with joined palms before him in worship.

सूत्र १२२ तए ण 'मेहा' इ समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एव वयासी-"से णूण तुम मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहि निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालिय च ण राइ णो सचाएमि मुहुत्तमवि अच्छि निमीलावेत्तए" तए णं तुब्भं मेहा ! इमे एयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-"जया ण अहं अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा निग्गथा आढायति जाव परियाणति, जप्पभिइं च णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वायामि, तप्पभिइ च णं मम समणा णो आढायंति, जाव नो परियाणंति। अदुत्तर च ण समणा निग्गंथा राओ अप्पेगइया वायणाए जाव पाय-रय-रेणुगुंडियं करेन्ति। त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे आवसित्तए" त्ति कट्टु एव सपेहेसि। सपेहित्ता अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे जाव

णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेसि। खवित्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए। से नूणं मेहा ! एस अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता अट्ठे समट्ठे।"

सूत्र १२२. श्रमण भगवान महावीर ने मेघकुमार से कहा-"हे मेघ ! तुम श्रमणो के आवागमन (उपरोक्त वर्णनानुसार) के कारण पूरी रात थोडी देर के लिए भी पलक नहीं झपका सके। मेघ ! तब तुम्हारे मन में ऊहापोह हुआ (उपरोक्त वर्णनानुसार) और तुमने आर्त्तध्यान (उपरोक्त वर्णनानुसार) मे शेष रात बिताई। भोर होते ही तुम मेरे पास आए हो। हे मेघ ! क्या मेरा कथन सत्य है ?"

मेघकुमार ने उत्तर दिया-"हाँ प्रभु ! आप यथार्थ कह रहे हैं।"

122. Shraman Bhagavan Mahavir said to Ascetic Megh, "Megh! You have not been able to sleep throughout the night due to the continuous perambulation of the ascetics You were put into a quandary and spent the rest of the night in misery Immediately after the dawn you have come to me Megh! am I telling the truth?"

"Yes sire! the absolute truth " affirmed Ascetic Megh

प्रतिबोध : पूर्वभव कथन

सूत्र १२३. एव खलु मेहा ! तुम इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे सेए संखदलउज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीरफेण-रयणियर (दगरय-रययणियर) प्पयासे सत्तुस्सेहे णवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए सोमे समिए सुरूवे पुरतो उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलबलबोदराहरकरे धणुपट्ठागिइ-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुन्न-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-णिरुवहय-विसतिनहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था।

सूत्र १२३. भगवान ने कहा-"मेघ ! इस से पूर्व तीसरे भव मे तुम वैताढ्य पर्वत की तलहटी मे एक गजराज थे। वनचरो ने तुम्हारा नाम सुमेरुप्रभ रखा था। उस गजराज का रग शख के चूरे, दही, गाय के दूध के फेन और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, निर्मल और विमल था। वह सात हाथ ऊँचा, नौ हाथ लम्बा और मध्य में दस हाथ की परिधि वाला था। उसके सातो अंग सुडौल और सुपुष्ट थे। वह सौम्य और आदर्श अनुपात के अगों और रूप वाला था। उसका अग्र भाग ऊँचे मस्तक और शुभ स्कन्ध वाला था और पिछला भाग वराह के समान नीचे झुका हुआ था। उसका उदर बकरी के उदर के जैसा, बिना गड्ढे का

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

भगवान महावीर का उद्बोधन : सुमेरुप्रभ हाथी का भव

चित्र ५

भगवान महावीर मेघ मुनि को उद्बोधन देते हुए पूर्वजन्म की घटना सुनाते है– वैताढ्यगिरि की तलहटी मे छह दाँत वाला विशालकाय श्वेत हाथी अपने सैकडो हाथी हथिनियो के साथ रहता था। एक बार वन मे भीषण आग लगी। पशु-पक्षी आदि सभी वनचर इधर-उधर सुरक्षित स्थान की खोज मे भागने लगे। वह सफेद सुमेरुप्रभ हाथी भी सुरक्षित स्थान की खोज मे भटकने लगा।

(अध्ययन १)

BHAGAVAN MAHAVIR'S DISCOURSE : ELEPHANT SUMERUPRABH

ILLUSTRATION 5

During his discourse before Megh Kumar, Bhagavan Mahavir narrates the story of his earlier births — At the foot of Vaitadhyagiri a giant white six - tusk elephant lives with its herd A forest-fire erupts All the creatures in the jungle run helter-skelter in search of a safe place Sumeruprabh is also searching around for a safe heaven

(CHAPTER-1)

और पुष्ट था। उसका उदर, होंठ और सूँड लम्बे थे। उसकी पीठ धनुषाकार और प्रशस्त थी। उसके अन्य सभी अवयव परस्पर भलीभाँति जुड़े हुए, गोल, पुष्ट और आदर्श अनुपात के थे। पूँछ चिपकी हुई और सानुपात थी। पैर कछुए के जैसे पुष्ट और सुन्दर थे। बीसों नाखून सफेद, निर्मल, स्निग्ध और दोषरहित थे। उसके छह दाँत थे।

ENLIGHTENMENT : REMINDING OF THE EARLIER LIVES

123. Bhagavan said, "Megh! In your third birth before the present one, you were a King elephant in the valley of the Vaitadhya mountain. The foresters had named you Sumeruprabh

"The complexion of that great elephant was white like conch-shell powder, curds, and the froth of cow-milk and bright, pure and soothing like the moon It was seven hands (slightly more then a foot) in height, nine hands in length, and had a girth of ten hands in the middle. All the seven portions of its body were perfectly developed and strong. It had a serene appearance and a perfectly proportioned and beautiful body Seen from the front, it had a high head and graceful flanks Seen from the back, its posterior was slanted like that of a wild boar Its abdomen was not hollow but sleek like that of a goat. It had long torsoe, jaws, and trunk Its hump was bow shaped and prominent. All its limbs and other parts of the body were close jointed, rounded, healthy, and ideally proportioned Its tail was close to its body. Its feet were healthy and beautiful like a turtle All its twenty toes were white, pure, smooth, and faultless It had six tusks.

सूत्र १२४ **तत्थ ण तुमं मेहा ! बहूहिं हत्थीहि य हत्थिणीहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभेहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सणायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वदपरिवड्ढए अन्नेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं जाव पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरसि।**

सूत्र १२४ "हे मेघ ! उस भव में गजराज के रूप में तुम अनेक हाथियों, हथनियों, तरुण और बाल्य अवस्था वाले हाथी-हथनियों से घिरे रहते थे। तुम एक हजार हाथियों के नायक, मार्गदर्शक, अगुवा, नियोजक, यूथपति और यूथवर्धक थे। अपने दल के अतिरिक्त भी तुम अन्य अनेक एकल विहारी हाथियो के बच्चों का आधिपत्य एव उनका पालन-पोषण आदि करते हुए विचरण करते थे।

124. "Megh! In that birth as the king elephant you were always surrounded by a herd of large and small elephants of all ages and sex. You were the leader, guide, commander, organizer, chief, and progenitor of a herd of one thousand elephants You roamed around leading your own herd as well as many other strays and babies

सूत्र १२५. तए णं तुमं मेहा ! णिच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले अवितण्हे कामभोगतिसिए बहूहिं हत्थीहि य जाव संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य, दरीसु य, कुहरेसु य, कंदरासु य, उज्झरेसु य, निज्झरेसु य, वियरएसु य, गड्डासु य, पल्ललेसु य, चिल्ललेसु य, कडएसु य, कडयपल्ललेसु य, तडीसु य, वियडीसु य, टंकेसु य, कूडेसु य, सिहरेसु य, पब्भारेसु य, मंचेसु य, मालेसु य, काणणेसु य, वणेसु य, वणसडेसु य, वणराईसु य, नदीसु य, नदीकच्छेसु य, जूहेसु य, सगमेसु य, बावीसु य, पोक्खरिणीसु य, दीहियासु य, गुजालियासु य, सरेसु य, सरपतियासु य, सरसरपंतियासु य, वणयरेहिं दिन्नवियारे बहूहि हत्थीहि य जाव सद्धि सपरिवुडे बहुविहतरुपल्लव-पउरपाणियतणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहसुहेणं विहरसि।

सूत्र १२५ "हे मेघ ! उस भव मे गजराज के रूप मे तुम मस्त, क्रीडारत, कदर्परति-क्रीडाप्रिय, मैथुन-प्रिय, अतृप्त वासना और कामभोग की तृष्णायुक्त थे। तुम अनेक हाथियो आदि से घिरे वैताढ्य पर्वत की तराई मे, पहाडियो, गुफाओ, दर्रो, कन्दराओ, प्रपातो, झरनो, नहरो, गड्ढो, तलैयो, दलदलो, खोहो, झीलो, तटो, अटवी, टीलो, कूटो, चोटियों, ढलानों, पुलो, काननो, वनो, वनखडो, बीहडो, नदियो, किनारे के जगलो, यूथो, सगमो, वापियो, पुष्करणियो, दीर्घिकाओ, गुजलिकाओ, सरोवरो, सरोवरो की पक्तियो, सयुक्त सरोवरो आदि अनेक प्रकार के स्थानो मे वनचरो की रोक-टोक के बिना विचरण करते थे। इस प्रकार तुम निर्भय, निरुद्वेग हो सुख मे घूमते रहते थे।

125. "Megh! In that life as the king elephant you were wild, playful, lustful, passionate, and lascivious due to insatiable acute libido Surrounded by your herd you moved around unchecked by foresters in the valley of Vaitadhya mountain in and around a variety of spots and places like—hills, caves, ravines, caverns, waterfalls, streams, channels, ditches, ponds, swamps, crags, lakes, banks, forests, knolls, horns, peaks, slopes, bridges, gardens, jungles, woods, dense forests, rivers, mangroves on river banks, thickets, junctions, tanks, rivulets, large rivers, rapids, pools, rows of pools, joint pools, etc Thus you roamed fearless, free and happy

दावानल

सूत्र १२६. तए ण तुमं मेहा ! अन्नया कयाई पाउस-वरिसारत्त-सरय-हेमंत-वसंतेसु कमेण पचसु उउसु समइक्कतेसु, गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासे, पायवघंससमुट्ठिए णं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुत-संजोगदीविए णं महाभयंकरेण हुयवहेणं वणदवजालासंपलित्तेसु वणंतेसु, धूमाउलासु दिसासु, महावायवेगेणं संघट्टिएसु, छिन्नजालेसु आवयमाणेसु, पोल्लरुक्खेसु अतो अंतो झियायमाणेसु, मयकुहियविणिविट्ठ-किमियकद्दमनदीवियरगजिण्णपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारक-दीण-कंदिय-रवेसु, खर-फरुस-अणिट्ठ-रिट्ठवाहित-विद्दुमग्गेसु दुमेसु, तण्हावस-मुक्क-पक्ख-पयडियजिब्भ-तालुयअसपुडिततुंड-पक्खिसंघेसु ससतेसु, गिम्ह-उम्ह-उण्हवाय-खरफरुसचंडमारुय-सुक्कतण-पत्तकयरवाउलि-भमंतदित्त-सभंतसावयाउल-मिग-तण्हाबद्धचिण्हपट्टेसु गिरिवरेसु, सवट्टिएसु तत्थ-मिय-पसव-सिरीसवेसु, अवदा-लिय-वयणविवरणिल्लालियग्गजीहे, महततुबइयपुन्नकन्ने, संकुचियथोर-पीवरकरे, ऊसियलंगूले, पीणाइय-विरसरडियसद्देणं फोडयंतेव अबरतल, पायदद्दरए ण कपयतेव मेइणितलं, विणिम्मुयमाणे य सीयारं, सव्वओ समता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे, रुक्खसहस्साइं तत्थ सुबहूणि णोल्लायत विणट्ठरट्ठे व्व णरवरिन्दे, वायाइद्धे व्व पोए, मंडलवाए व्व परिब्भमंते, अभिक्खणं अभिक्खण लिडणियर पमुचमाणे पमुचमाणे, बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धि दिसोदिसिं विप्पलाइत्था।

मूत्र १२६ "एक बार पावस, वर्षा, शरद्, हेमन्त और वसन्त ऋतुओ के बीत जाने पर जब ग्रीष्म ऋतु का आगमन हुआ तब ज्येष्ठ मास मे, वृक्षो की आपस मे रगड से आग लग गई और हवा के वेग से सूखे घास, पत्ते और कूडे-करकट को पकड वह भीषण दावानल बन गई। उस भयावह अग्नि की प्रदीप्त ज्वालाओं से सारे वन का मध्य भाग सुलग उठा। चारो ओर धुऑ फैल गया। वायु के प्रचण्ड वेग से ज्वालाएँ चारो ओर फैलने लगी। पोले वृक्ष भीतर ही भीतर सुलगने लगे। जगल के नदी-नालो का पानी पशुओ के शवो से सडने लगा। किनारो का पानी सूखने लगा। भृगारक पक्षी दीनतापूर्वक क्रन्दन करने लगे। बडे पेडो की ऊँची डालो पर बैठे कौए कठोर और अनिष्ट स्वर मे कॉव-कॉव करने लगे। पेडो की टहनियो की नोंके अगारो के कारण मूँगे की तरह लाल दिखाई देने लगी। पक्षियो के झुण्ड प्यास से पख ढीले कर जीभ को मुँह से बाहर निकालकर चोच खोलकर सॉस लेने लगे। ग्रीष्म ऋतु की गर्मी, सूर्य का ताप, प्रचड तीव्र पवन और सूखी घास, पत्ते और कचरे से भरे अन्धड के कारण इधर-उधर दौडते भयावह सिह आदि विशालकाय पशुओ से पर्वत प्रदेश अस्त-व्यस्त हो गया। मृग-तृष्णा जैसा दृश्य लिए पर्वतों मे भयभीत सरीसृप जाति के जीव भी इधर-उधर छटपटाने लगे।

"इस भयावह अवसर पर, हे मेघ ! अपने पूर्व भव मे, गजराज रूप मे तुम्हारा मुँह भी फटा-सा रह गया और जीभ बाहर निकल पड़ी। दोनो विशाल कान भय से स्तब्ध हो इधर-उधर से कुछ सुनने को व्याकुल हो उठे। विशाल पुष्ट सूँड सिकुड गई। तब उस विशाल गजराज ने पूँछ ऊँची कर ली। दर्पचूर्ण होने से व्यथित हो वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से चिंघाड़ने लगा मानो आकाश को फोड देगा और फिर चारो और बेलो के झुण्ड को छेदता, अनेक पेड़ों को उखाड़ता, राज्य भ्रष्ट राजा के समान, वायु वेग से डोलते जहाज के समान, और प्रचण्ड बवडर के समान चक्कर काटता, बार-बार मल त्याग करता अनेक हाथियों आदि के साथ इधर से उधर भागने लगा।

FOREST FIRE

126. "Once when monsoon and winter and spring seasons were over and the summer began, in the month of Jyeshtha a fire started due to friction in the dry logs Flamed by the force of wind this small fire spread in the dry twigs, leaves, and other forest waste and turned into a forest-fire. Caught in the fearsome leaping flames almost all the central part of the forest was aflame The smoke spread all around Pieces of flaming tree branches splintered by the tremendous force of the wind started falling all around Hollow trees burned from within The water in the rivers and streams putrefied with the decaying carcasses of animals Moisture evaporated from the banks leaving them dry

"The Bhringarak birds started crying in sad tone Perched on the high branches cravens started crowing ominously The tips of the burnt branches turned coral red Flocks of birds, with their wings made limp due to acute thirst, laboriously breathed with their beaks open and tongues hanging The heat of the summer, scorching rays of the sun, winds with tremendous force, and fearfully running large beasts, like lion, disturbed even the slopes of the nearby mountain Even in the hills beyond, that appeared mirage like, the reptiles became restless with fear

"In this fearsome predicament, Megh! you, as the king elephant, were also adversely effected. Your mouth was open with the tongue hanging out Both the large ears were flapping, trying eagerly to hear some reassuring sound in this fearful conflagration The giant and strong trunk had shriveled

"Suddenly the giant creature lifted its tail. Hurt by the shattered ego, it started trumpeting with all its power as if it would tear the sky apart Like a deported king or a ship caught on a stormy sea or a giant whirlwind, it started running around with its herd piercing the screens of dense vines, uprooting trees, and defecating again and again.

सूत्र १२७. तत्थ णं तुमं मेहा ! जुन्ने जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे वणदवजालापारद्धे उण्हेण य, तण्हाए य, छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च ण महं सरं अप्पोदयं पकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो।

सूत्र १२७. "हे मेघ ! (गजराज के रूप मे) तुम जीर्ण-जर्जरित देह लिए, व्याकुल, भूखे, प्यासे, क्षीण, क्लान्त, बहरे और दिशा भ्रमित हो अपने यूथ से बिछुड़ गये। दावानल की ज्वालाओ से हार, गर्मी, प्यास, भूख की पीड़ा से भयभीत और त्रस्त हो गये। तुम्हारे भीतर का आनन्द का झरना सूख गया। भय से पराभूत हो इधर से उधर दौड़ने लगे। इस दौड भाग मे तुम्हे एक बडा तालाब दिखाई पड़ा जिसमें जल कम और कीचड अधिक था। पानी पीने के लिए तुम बिना किसी घाट के ही उस सरोवर मे उतर गये।

127. "Megh! (In the birth as the king elephant) With your decrepit and withered body and frantic, hungry, thirsty, weak, tired, and deaf condition you were separated from your herd and lost. Overpowered by the flames of forest fire you became fearful and awe-struck with the agony of heat, hunger and thirst The stream of joy within you dried up Consumed by fear you started running around and saw a large pond which had more slime than water In search of water you entered it without looking for a proper landing

सूत्र १२८ तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणिय असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने।

तत्थ णं तुम मेहा ! पाणिय पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि, से वि य ते हत्थे उदग न पावेइ। तए ण तुमं मेहा ! पुणरवि काय पच्चुद्धरिस्सामि त्ति कट्टु बलियतरायं पकसि खुत्ते।

सूत्र १२८. "मेघ ! तुम उस सरोवर मे किनारे से दूर तो चले गये किन्तु पानी तक पहुँचने से पहले ही दलदल मे फँस गये। फिर तुमने किसी तरह पानी पी लूँ इस

विचार से अपनी सूँड को पूरी तरह फैलाया पर वह पानी के निकट नही पहुँच सकी। हताश हो तुमने कीचड से बाहर निकलने की इच्छा से जोर लगाया तो दलदल मे और धँस गये।

128. "Megh! You proceeded away from the bank but before reaching near the water you were caught in the swamp In order to drink a little water somehow, you stretched your trunk but failed to reach it Loosing hope you pushed hard to come out of the swamp achieving the opposite and going deeper

सूत्र १२९. तए णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सयाओ जूहाओ कर-चरण-दतमुसल-प्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे त चेव महद्दह पाणीय पाएउं समोयरेइ।

तए णं से कलभए तुमं पासति, पासित्ता त पुव्ववेरं समरइ। समरित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुम तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तुम तिक्खेहिं दतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठओ उच्छुभइ। उच्छुभित्ता पुव्ववेर निज्जाएइ। निज्जाइत्ता हट्ठतुट्ठे पाणियं पियइ। पिइत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए।

सूत्र १२९ "मेघ ! उसी समय उसी सरोवर मे एक अन्य बलिष्ट युवा हाथी पानी पीने उतरा। किसी समय तुमने इस युवा हाथी को अपनी सूँड, पैर और दाँतो से मारकर अपने यूथ से बाहर निकाल दिया था। उसने जब तुम्हे दलदल मे फँसे देखा तो उसे पुरानी घटना याद हो आई और वैर की भावना जगकर क्रोध मे ढल गई। क्रोध ने जब प्रचण्ड रौद्र रूप धारण कर लिया तो क्रोधाग्नि से जलकर वह तुम्हारे निकट आया और अपने तीखे दाँतो से तीन बार तुम्हारी पीठ को छेद दिया। अपनी वैर-भावना को शात कर प्रसन्न हो उसने पानी पीया और जिस दिशा से आया था उधर ही लौट गया।

129. "Megh! Just at that moment another strong and young elephant stepped in to drink water Sometime in the past you had hit it with your trunk, legs and tusks and pushed it out of the herd When it saw you caught in the swamp it remembered the incident from the past and the feeling of vengeance surfaced to make it angry When the anger grew intense, burning with the desire to take revenge, it approached you and pierced your back with its sharp tusks three times After quenching its inner thirst for vengeance it happily quenched its physical thirst and went away

सूत्र १३०. तए ण तव मेहा ! सरीरगसि वेयणा पाउब्भवित्था उज्जला विउला तिउला कक्खडा जाव (पगाढा चंडा दुक्खा) दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरित्था।

तए णं तुम मेहा ! तं उज्जल जाव (विउलं कक्खड पगाढ चंड दुक्खं) दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयण वेएसि; सवीसं वाससयं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमास काल किच्चा इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महाणदीए दाहिणे कूले विझगिरिपायमूले एगेण मत्तवर-गधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिसि गयकलभए जणिए। तए णं सा गयकलभिया णवण्ह मासाण वसतमासम्मि तुम पयाया।

सूत्र १३० "मेघ ! फिर तुम्हारे शरीर मे वेदना होने लगी। वह तुम्हारे सम्पूर्ण शरीर और मन मे फैल गई थी और तुम्हे तनिक भी चैन नहीं था। उस कठिन दुस्सह पीडा से तुम्हारे शरीर मे पित्त-ज्वर और दाह उत्पन्न हो गया। तुम उस सतप्त करने वाली तीव्र वेदना को सात दिन तक भोगकर, एक सौ बीस वर्ष की आयु मे, आर्त्तध्यानपूर्वक मृत्यु को प्राप्त हुए। इसके पश्चात् तुम्हारा अवतरण दक्षिणार्ध भरत मे महानदी गंगा के दक्षिणी किनारे पर विन्ध्याचल के निकट एक मदोन्मत्त उत्तम गधहस्ती से एक श्रेष्ठ हथिनी की कोख मे हुआ। उस हथिनी ने नौ मास पूरे होने पर वसन्त ऋतु मे तुम्हे जन्म दिया।

130. "Megh! You suffered from intense pain It spread throughout your body and mind and you had not even a moments respite That intolerable agony caused fever and burning sensation in your body. You suffered that excruciating pain for seven days and died suffering at a mature age of one hundred and twenty years From here you descended into the womb of a she-elephant made pregnant by a wild bull elephant of best breed living near the Vindhyachal mountain on the southern banks of the Ganges in the southern half of Bharat After nine months, during the spring season, you were born

यूथपति मेरुप्रभ

सूत्र १३१ तए ण तुम मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तु-प्पलरत्तसूमालए जासुमणा-रत्तपारिजत्तय-लक्खारस-सरसकुंकुम-संझब्भ-रागवन्ने इट्ठे णियस्स जूहवइणो गणियायारकणेरु-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेण विहरसि।

सूत्र १३१ "तुम एक नन्हे और सुकुमार हाथी के रूप मे विकसित होने लगे। तुम्हारा रग लाल कमल, जवा कुसुमादि के समान लाल था और तुम अपने यूथपति के स्नेह भाजन

थे। गणिकाओं जैसी युवती हथनियों के उदर-प्रदेश में अपनी सूँड डालते हुए तुम काम-क्रीड़ा में तत्पर रहने लगे। सैंकड़ों हाथियों के झुण्ड सहित तुम पर्वत के रमणीय काननों में सुखपूर्वक विहार करने लगे।

KING ELEPHANT MERUPRABH

131. "As a tiny and delicate elephant you started growing Your colour was red like lotus and Javakusum flowers (etc.) and you were the darling of the leader of the herd Touching the under bellies of youthful females with your trunk you began the apprenticeship of the love game. With a herd of hundreds of elephants you roamed around with joy in the enchanting woods in the mountain valley.

सूत्र १३२. तए णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि।

तए णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था। तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तंगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे। तत्थ ण तुमं मेहा सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था।

सूत्र १३२ "मेघ ! इसी प्रकार विकसित हो तुम बाल्यावस्था से यौवनावस्था मे पहुँच गये। फिर यूथपति की मृत्यु हो जाने पर तुम स्वय यूथपति बन गये।

"मेघ ! वनचरों ने तुम्हारा नाम मेरुप्रभ रखा। तुम चार दाँतों वाले हस्तिरत्न हुए। तुम्हारे सातों अग परिपुष्ट आदि (पूर्व वर्णित) और सुरूप थे। तुम वहाँ सात सौ हाथियो के यूथपति बनकर अभिरमण करने लगे।

132. "Megh! You slowly developed and crossing the infancy you grew into a young bull elephant When the leader of the herd died you succeeded it.

"Megh! the foresters named you as Meruprabh You had four tusks All the seven parts of your body were fully developed, strong, and beautiful (details as before). You started roaming around in that jungle with a herd of seven hundred elephants

हस्ती-भव में जातिस्मरण

सूत्र १३३. तए णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले वणदव-जालापलित्तेसु वणंतेसु सुधूमाउलासु दिसासु जाव मंडलयाए व्व परिब्भमंते भीए तत्थे

चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED
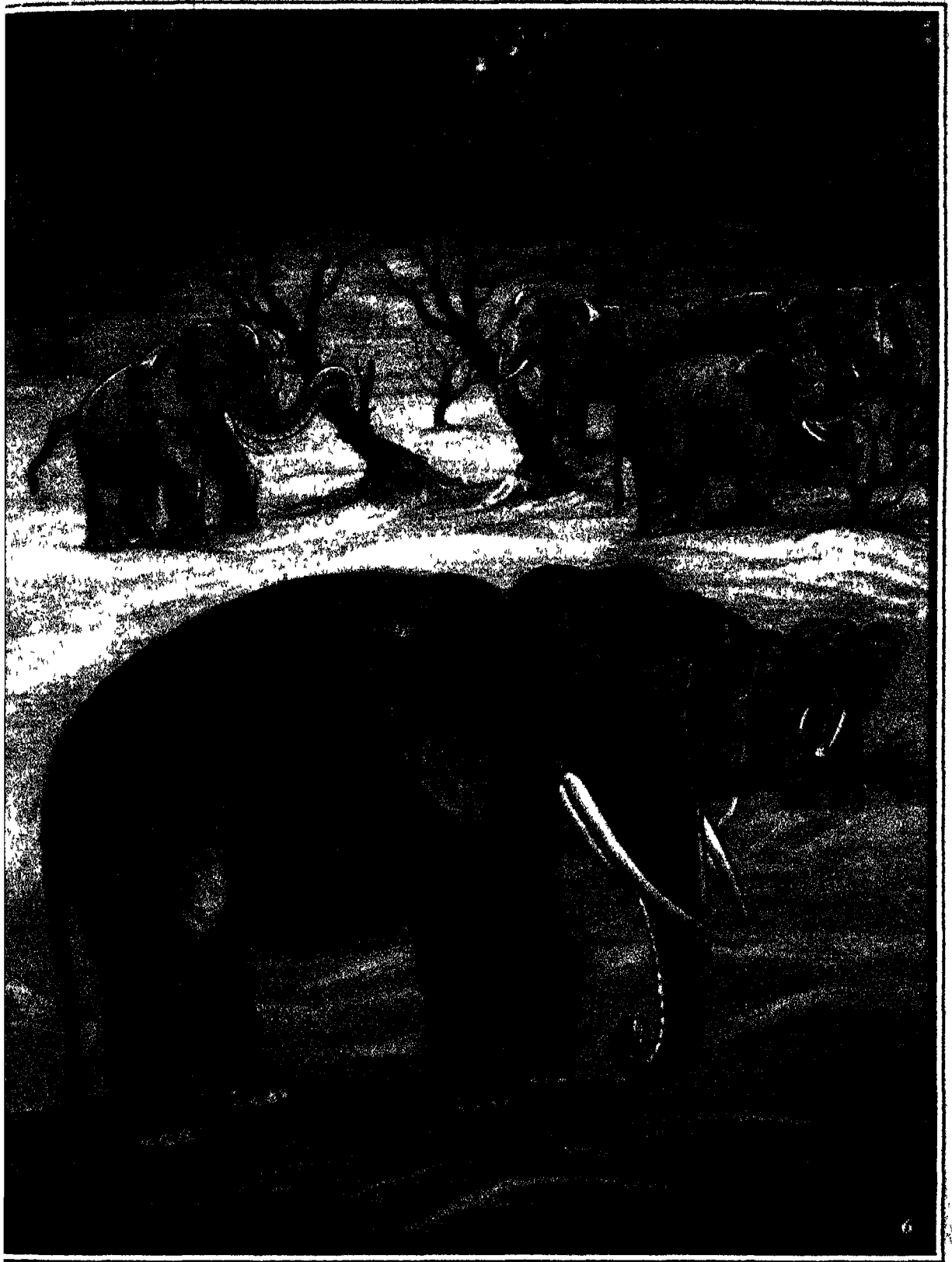
मेरुप्रभ द्वारा सुरक्षित मण्डल-निर्माण

चित्र ६

सुमेरुप्रभ हाथी मरकर विंध्यगिरि के वनों में पुनः हाथी बना। यहाँ उसका रंग लाल था तथा वह चार दाँत वाला यूथपति हुआ। एक बार वन में लगी आग देखकर उसे पूर्व जन्म की स्मृति हो गई। तो बार बार इस विनाश लीला से बचने के लिए उसने एक योजन का मण्डल बनाने का निश्चय किया। सभी हाथियों ने मिलकर छोटे बड़े वृक्ष उखाड़े घास फूस साफ करके एक योजन मण्डल में अग्नि से सर्वथा सुरक्षित आश्रय स्थान बना लिया। चित्र में हाथी मिलकर मण्डल बना रहे हैं।

(अध्ययन १)

MERUPRABH PREPARES A SAFE ARENA

ILLUSTRATION 6

Sumeruprabh dies and is reborn as Meruprabh elephant in jungles of Vindhyagiri. It is red coloured and with four tusks. Seeing a forest-fire it remembers its past life. It decides to create a safe arena of one Yojan. With the help of its herd it pulls out all the vegetation in the marked area and throws it out.

(CHAPTER-1)

जाव संजायभए बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था।

तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था– "कहि णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे।" तए णं तव मेहा ! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं, अज्झवसाणेणं सोहणेण, सुभेणं परिणामेणं, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं, ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाइसरणे समुप्पज्जित्था।

सूत्र १३३ "एक बार ग्रीष्म ऋतु के ज्येष्ठ मास में दावानल की ज्वालाओं में समस्त वनप्रान्त धधक उठा (पूर्व सम) और तुम बवण्डर की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे। भयभीत और व्याकुल हो बहुत से हाथी-हथनियो के साथ चारों ओर भागने लगे।

"उस समय हे मेघ ! दावानल को देख तुम्हारे मन में विचार उठा, 'लगता है ऐसी आग मैने पहले भी कभी अनुभव की है।' विशुद्ध होती लेश्याओं, शुभ अध्यवसाय, शुभ परिणाम के प्रभाव से और मति- ज्ञानावरण कर्मों के क्षयोपशम होने से तुम्हें ईहा, अपोह, मार्गणा और गवेषणा (तर्क-वितर्क युक्त विशेष एकाग्र चिन्तन) करते-करते जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ।

MEMORY OF THE EARLIER BIRTH

133. "Once during the month of Jyeshtha in the summer season a terrible forest fire started and you and your herd ran wild in panic (details as mentioned earlier)

"Looking at this forest fire you thought, 'It seems that I have experienced such holocaust before also' While you were going through the process of thinking, ascertaining, analyzing, and exploring (Iha, Apoh, Margana, and Gayeshana), as a result of gradually purifying inner energies (Leshya), righteous endeavour and attitude, and destruction and suppression (Kshayopasham) of the instinctive-knowledge-veiling Karmas (Mati-Jnanavarniya Karma), you acquired the knowledge about earlier births (Jatismaran Jnana)

सूत्र १३४ तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि–"एवं खलु मया अईए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव तत्थ णं मया अयमेयारूवे अग्गिसभवे समणुभूए।" तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-समयंसि नियए णं जूहेण सद्धिं समन्नागए यावि होत्था। तए णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव सन्निजाइस्सरणे चउद्दंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था।

तए णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"तं सेय खलु मम इयाणिं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंजायकारणट्ठा सए णं जूहेण महालयं मंडलं घाइत्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेसि। सपेहित्ता सुहं सुहेणं विहरसि।

सूत्र १३४ "तुमने यह भलीभाँति जान लिया-'मै पूर्व भव मे इसी भू-भाग के वैताढ्य पर्वत की तराई में विचरता था। जहाँ मैने ऐसे ही दावानल का अनुभव किया था और उसी दिन शत्रु हाथी की मार से देह त्याग मेरुप्रभ के रूप में जन्म लिया था।'

"और तब तुम्हारे मन मे एक चिन्तन और सकल्प उठा-'मेरे लिए श्रेय होगा कि गगा नदी के दक्षिणी किनारे पर विन्ध्याचल की तराई मे दावानल से बचने के लिए अपने यूथ के साथ एक विशाल मडल बनाऊँ।' इस विचार के साथ तुम पुन· सुखपूर्वक विचरने लगे।

134. "You became aware that durıng the earlıer bırth you wandered ın the valley of the Vaıtadhya mountaın ın the same geographıcal area Also that you had experıenced a sımılar predicament of forest fire and had dıed of the wounds ınflıcted by a vengeful elephant, before beıng born as Meruprabh

You then contemplated and decıded—'It would be to my benefit ıf, wıth the help of my herd, I make a large arena on the southern bank of the Ganges ın the valley of Vındhyachal as protectıon agaınst the forest fire ' Arrıvıng at thıs decısıon you resumed your wanderıng

मंडल निर्माण

सूत्र १३५. तए णं तुमं मेहा ! अन्नया पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि सन्निवइयसि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहि जाव कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहि सपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमडलं महइमहालय मंडलं घाएसि। ज तत्थ तण वा पत्तं वा कट्ठ वा कटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा, त सव्व तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय पाएण उट्ठवेसि, हत्थेण गेण्हसि, एगते पाडेसि।

तए ण तुमं मेहा ! तस्सेव मडलस्स अदूरसामते गगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरि-पायमूले गिरिसु य जाव विहरसि।

सूत्र १३५. "हे मेघ ! तब तुमने प्रथम वर्षाकाल मे खूब वर्षा हो जाने पर गगा नदी के निकट अनेक हाथियों को साथ लेकर एक योजन प्रमाण का एक विशाल घेरा बनाया। उस घेरे मे जो भी घास, पत्ते, काठ, काँटे, लता, ठूँठ, वृक्ष या पौधे थे उन्हे हिला कर पैर से

उखाडकर सूँड में उठा एक ओर ले जाकर डाल दिया। फिर तुम उसी घेरे के पास विन्ध्याचल की तराई में पर्वतादि (पूर्व वर्णित) स्थानों में विहार करने लगे।

CLEARING THE JUNGLE

135. "Megh! During the following monsoon season after the first heavy rains you came with your herd to the southern bank of the Ganges There you marked a large area of one Yojan and cleared it of all the grass, leaves, logs, thorns, creepers, stumps, trees, and plants, uprooting them with legs and lifting and carrying them away with trunks Accomplishing this you went into the nearby valley (detailed as earlier) and started wandering with your herd

सूत्र १३६. तए ण मेहा ! अन्नया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सनिवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि। उवागच्छित्ता दोच्चं पि मंडलं घाएसि। एव चरिमे वासारत्तसि महावुट्ठिकायसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्च पि मंडलघाय करेसि। ज तत्थ तण वा जाव सुहंसुहेणं विहरसि।

सूत्र १३६ "हे मेघ! वर्षा ऋतु की मध्य वृष्टि के बाद और अन्तिम वृष्टि के बाद भी तुमने उस घेरे मे जाकर दुबारा उसी प्रकार सफाई कर दी और सुखपूर्वक घूमने लगे।

136. "You repeated this operation after the mid-monsoon and the end-monsoon showers

दावाग्नि

सूत्र १३७ अह मेहा ! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेण नलिणिवण-विहवणगरे हेमते कुद लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइक्कते, अहिणवे गिम्हसमयसि पत्ते, वियट्टमाणो वणेसु वणकरेणुविविह-दिण्ण-कयपसवघाओ तुम उउय-कुसुम कयचामर-कन्नपूर-परिमडियाभिरामो मयवस-विगसत-कड-तडकिलिन्न-गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउ-समत्त-जणियसोभो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसिय-तरुवर-सिहर-भीमतर-दसणिज्जे भिंगाररवंतभेरवरवे णाणाविहपत्त-कट्ठ-तण-कयवरुद्धत-पइमारुयाइद्धनहयल-दुमगणे वाउलियादारुणयरे तण्हावस-दोसदूसिय-भमंत-विविह-सावय-समाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणम्मि गिम्हे मारुयवसपसर-पसरियवियंभिए णं अब्भहिय-भीम-भेरव-रव-प्पगारेणं महुधारा-पडिय-सित्त-उद्धायमाण-धगधगंत-सद्दुद्धुए ण दित्ततरसफुलिंगेण धूममालाउलेण सावय-सयंतकरणेणं अब्भहियवणदवेण

जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोयमहंत-तुंबइयपुन्नकन्नो आकुंचियथोर-पीवरकरो भयवस-भयतदित्तनयणो वेगेण महामेहो व्व पवणोल्लियमहल्लरूवो, जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहिययेणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए। एक्को ताव एस गमो।

सूत्र १३७. "समय बीतता गया और कमल-वनों का नाश करने वाला, कुंद और लोध्र के फूलो से लदा, हिम से भरा हेमन्त ऋतु भी बीत गया। ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ हो गया। उस समय तुम वनों मे विहार कर रहे थे। क्रीड़ा करते समय हथिनियाँ तुम्हारे ऊपर तरह-तरह के कमल और पुष्पों से प्रहार करती थीं। उस ऋतु के फूलों के चामर जैसे कान के आभूषणों से सजे तुम सुन्दर लगते थे। मद के कारण फूले गड-स्थलों को गीला करने वाले और झरते मदजल से तुम गन्ध-हस्ति बन गये थे और हथिनियों से घिरे रहते थे। ऋतु सबधी सौन्दर्य से तुम गमक उठे थे। और तब ग्रीष्मकाल के प्रखर सूर्य की किरणे पड़ने लगी जिन्होने वृक्षो की चोटियो को सुखा दिया। मृगार पक्षी दारुण रव करने लगे। प्रचण्ड वायु से पत्ते, तिनके, काठ आदि सारे आकाश मे छा गये और वृक्षो को ढँक दिया। वेग से चक्कर लगाते भँवरों से वातावरण भयावह दिखाई देने लगा। प्यास जनित पीडा से सिह आदि पशु इधर से उधर भागने लगे। ऐसे भयानक बने जगल मे प्रचण्ड हवा के थपेड़ों से दावानल की ज्वालाएँ भडक उठी और फैलने लगी। उसका भीम रौरव प्रचण्ड था। वृक्षों से झरती मधुधाराओं से सिंचित होने से वह और भी भडकने लगा और जाज्वल्यमान तथा शब्दायमान हो गया। चमचमाती चिगारियाँ और धूम-माला से परिपूर्ण हो गया। सैकडो जीवों का विनाश होने लगा। इस निरन्तर वेगवान होते दावानल से वह ग्रीष्म ऋतु अत्यन्त भयास्पद हो गई।

"हे मेघ ! तुम उस दावानल की ज्वालाओ से घिरकर रुक गये। धुएँ से हुए अधकार से आतंकित हो गए। आग की तपन से स्तब्ध होने से तुम्हारे तूम्बे जैसे विशाल कान स्तम्भित हो गए। तुम्हारी विशाल और पुष्ट सूँड सिकुड गई। तुम्हारी चमकती आँखे भय से इधर-उधर देखने लगीं। जैसे हवा के वेग से घने बादल फैल जाते है वैसे ही भय के आवेग से तुम्हारा आकार भी विस्तार पा गया और तुमने उस दावानल से अपनी रक्षा करने के लिए उस मंडल की ओर जाने का निश्चय किया जिसे तुमने साफ किया था और तिनको रहित बना दिया था।

THE CONFLAGERATION

137. "As time passed, the winter season, with its abundance of Kund and Lodhra blossoms and known as the destroyer of the lotus-

bushes, came to an end. Later when the summer season started you still wandered in the forest. The she elephants playfully threw lotus and other flowers at you. Decorated with seasonal flowers hanging from your ears like whisks you looked beautiful. With your temples swollen and wet and fragrant with the ooze due to mating fever you became an odoriferous elephant. Consequently you remained surrounded with the she elephants. You had become resplendent with the seasonal beauty

"And then the scorching rays of the sun dried the foliage and the Mrigar birds started emitting ominous sounds Blown by the forceful wind the stray and dried straw, leaves and twigs spread all around in the sky and covered the trees The atmosphere became aweful due to the giant and high speed whirlwinds. Driven by the agony of thirst large animals like lions started running around Such fearful forest was filled with sparks caused by the tremendous blows of the forceful wind The sparks turned into flames and a terrible forest fire started. The hissing and howling sound that the wind and fire produced were heart rending The ooze from the trees further fueled this fire and it started emitting oppressing light and sound. The whole area was filled with shining sparks and loops of fumes. The forest creatures started dying in hundreds This growing inferno made that summer all the more awe inspiring

"Megh! Surrounded by the flames of the forest fire you stopped at a spot Enveloped in the darkness caused by the smoke you became panicky Stunned by the heat of the flames your large vessel shaped ears went limp. Your large and heavy trunk shriveled. Your shinning eyes started shifting with fear. As the force of wind scatters the dense clouds, the force of fear made your body loose its shape. You decided to rush to the arena you had cleared for protection against such forest fire

सूत्र १३८. तए णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाइं कमेणं पंचसु उउसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायव-संघंस-समुट्ठिए णं जाव संवट्टिएसु मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवेसु दिसोदिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १३८ "हे मेघ ! किसी समय अन्य पॉच ऋतुओ के बीतने पर आए ग्रीष्मकाल मे जो यह भयावह दावानल फैल गया था (पूर्व सम) उससे बचने के लिए तुम बहुत से हाथियों के साथ अपने बनाये उस साफ किये मंडल की ओर दौड पडे।

138. "To save yourself from this fearsome forest fire that had started in the summer season, the season that comes after the lapse of five seasons, you started running with numerous other elephants towards the arena that you had cleared

सूत्र १३९. तत्थ ण अण्णे बहवे सीहा य, वग्घा य, विगया, दीविया, अच्छा य, रिछतरच्छा य, पारासरा य, सरभा य, सियाला, विराला, सुणहा, कोला, ससा, कोकंतिया, चित्ता, चिल्लला, पुव्वपविट्ठा, अग्गिभयविद्दुया एगयओ बिलधम्मेण चिट्ठंति।

तए णं तुमं मेहा ! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छिसि, उवागच्छित्ता तेहि बहूहि सीहेहिं जाव चिल्ललएहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि।

सूत्र १३९ "उस मैदान मे सिह, बाघ, भेडिया, चीता, भालू, तरक्ष, पारासर, शरभ, सियार, बिल्ली, कुत्ता, सूअर, खरगोश, लोमडी, चित्र और चिल्लल आदि अन्य अनेक पशु आग के डर से घबराकर पहले ही आ गये थे और किसी बिल मे जैसे कीडे-मकोडे ठसाठस भर जाते है वैसे ही वे सब प्राणी जहॉ जगह मिली वही घुस गये थे। हे मेघ ! तुम भी वहाँ पहुँचने पर उन्ही सब प्राणियो के बीच जहाँ जगह मिली वही खडे हो गये।

139 "In that arena numerous animals including lion, tiger, wolf, leopard, bear, Taraksh, Parasar, Sharabh, jackal, cat, dog, boar, rabbit, fox, Chitra and Chillan in large numbers, had already taken refuge Afraid of the forest fire, they had swarmed in and occupied whatever little space they could find The place appeared like a hole jam-packed with insects Megh! When you reached there, you also squeezed in and stood where you found a little space

अपूर्व अनुकम्पा

सूत्र १४० तए ण तुम मेहा ! पाए ण गत्त कडुइस्सामि त्ति कट्टु पाए उक्खित्ते, तसि च ण अतरसि अन्नेहि बलवतेहि सत्तेहि पणोलिज्जमाणे पणोलिज्जमाणे ससए अणुपविट्ठे।

तए ण तुमं मेहा ! गायं कडुइत्ता पुणरवि पाय पडिनिक्खमिस्सामि त्ति कट्टु त ससय अणुपविट्ठ पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए सत्ताणुकपयाए से पाए अतरा चेव सधारिए, नो चेव ण णिक्खित्ते।

तए ण मेहा ! ताए पाणाणुकपयाए जाव सत्ताणुकपयाए ससारे परित्तीकए, माणुस्साउए निबद्धे।

सूत्र १४० "कुछ समय बाद तुमने पैर खुजाने की इच्छा से अपना एक पैर ऊपर उठाया। उसी समय अन्य बडे पशुओ से ठेला हुआ एक नन्हा-सा खरगोश तुम्हारे पैर उठाने से खाली हुए स्थान पर आ दुबका। पैर खुजाने के बाद जैसे ही तुमने अपना पैर वापस धरती पर रखना चाहा तुम क्या देखते हो कि छोटा-सा खरगोश उस स्थान पर बैठा है। तुम्हारे मन मे प्राणियो के प्रति, भूतो के प्रति, जीवो के प्रति, सत्त्वो के प्रति अनुकम्पा जाग उठी और तुम अपना पैर उठाये रहे, नीचे नही रखा। हे मेघ ! अपने मन में उठी प्राणियों आदि के लिए इस निर्मल अनुकम्पा भावना के प्रभाव से तुमने अपने ससार-भ्रमण चक्र को (परित) कम किया और मनुष्य आयु का बन्ध कर लिया।

UNPRECEDENTED COMPASSION

140. 'After some time you lifted one of your legs to scratch some itching part of your body At that instant a small rabbit, pushed by larger animals, crept in and occupied that place After scratching, when you wanted to put back your leg on the ground you found that a tiny rabbit is occupying that space You were overwhelmed with compassion for all living beings and instead of putting your feet back on the ground you kept it lifted Megh! As a result of your pure feeling of compassion you reduced the period of the cycle of rebirths and also earned a human-life-span (the karmas that cause a birth and a specific life-span as a human being)

सूत्र १४१ तए ण से वणदवे अड्ढाइज्जाइ राइदियाइ त वण झामेइ, झामेत्ता निट्ठिए, उवरए, उवसते, विज्झाए यावि होत्था।

तए ण ते बहवे सीहा य जाव चिल्लला य त वणदव निट्ठियं जाव विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमति। पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समता विप्पसरित्था।

सूत्र १४१ "अढाई दिन तक वह दावानल धधकती रही और पूरे जगल को जलाकर कम हुई, शान्त हुई और बुझ गई।

"फिर वे सब सिहादि पशु दावानल बुझी देख अग्नि के भय से मुक्त हो गये। भूख-प्यास की पीडा शान्त करने वे उस मैदान से बाहर निकले और इधर-उधर भाग गये।

141. "The forest fire burned for two and a half days It lost its intensity, calmed down and ended only when it consumed the forest completely

"Seeing the fire extinguished, the animals became free of fear and scattered in search of food and water

सूत्र १४२. तए णं तुमं मेहा ! जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयापिणिद्धगत्ते दुब्बले किलते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अबले अपरक्कमे अचकमणे वा ठाणुखडे वेगेण विद्धसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरिपब्भारे धरणियलंसि सव्वंगेहिं य सन्निवइए।

तए ण तव मेहा ! सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव (विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जरपरिगयसरीरे) दाहवक्कतीए यावि विहरसि। तए ण तुमं मेहा ! त उज्जल जाव दुरहियास तिन्नि राइंदियाइं वेयण वेएमाणे विहरित्ता एग वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए।

सूत्र १४२ "उस समय तुम जीर्ण थे। जरा से जर्जरित हो चुका था तुम्हारा शरीर, तुम्हारी देह पर की चमडी ढीली और सल वाली हो गई थी। तुम दुर्बल, क्लान्त, शक्तिहीन, सामर्थ्यहीन और मनोबलरहित हो ठूँठ जैसे स्तंभित हो गये। उस स्थान से तत्काल पलायन करने की इच्छा से जैसे ही तुमने अपना पैर बढ़ाया तुम धडाम से धरती पर गिर पडे, मानो तडित् के प्रहार से रजत गिरि का शिखर गिर पडा हो।

"तुम्हारे शरीर मे तीव्र वेदना उत्पन्न हुई और सारा शरीर पित्त ज्वर से जलने लगा। तुम उस असहनीय पीडा को तीन दिन तक भोगते रहे और अन्त मे सौ वर्ष की आयु पूर्ण कर इस राजगृह नगर मे धारिणी देवी की कोख में अवतरित हुए।

142. "By then you were completely exhausted Your body had shriveled and aged Your skin had become loose and it developed folds Devoid of all the strength, vigour, energy, prowess, and determination you stood rooted like a stump With the desire to rush away from that place, as soon as you stretched your cramped leg you toppled and fell on the ground, as if struck by lightning a crag of the silver mountain had toppled down

"Acute pain tormented your body and it started burning with high fever You suffered this excruciating agony for three days and died
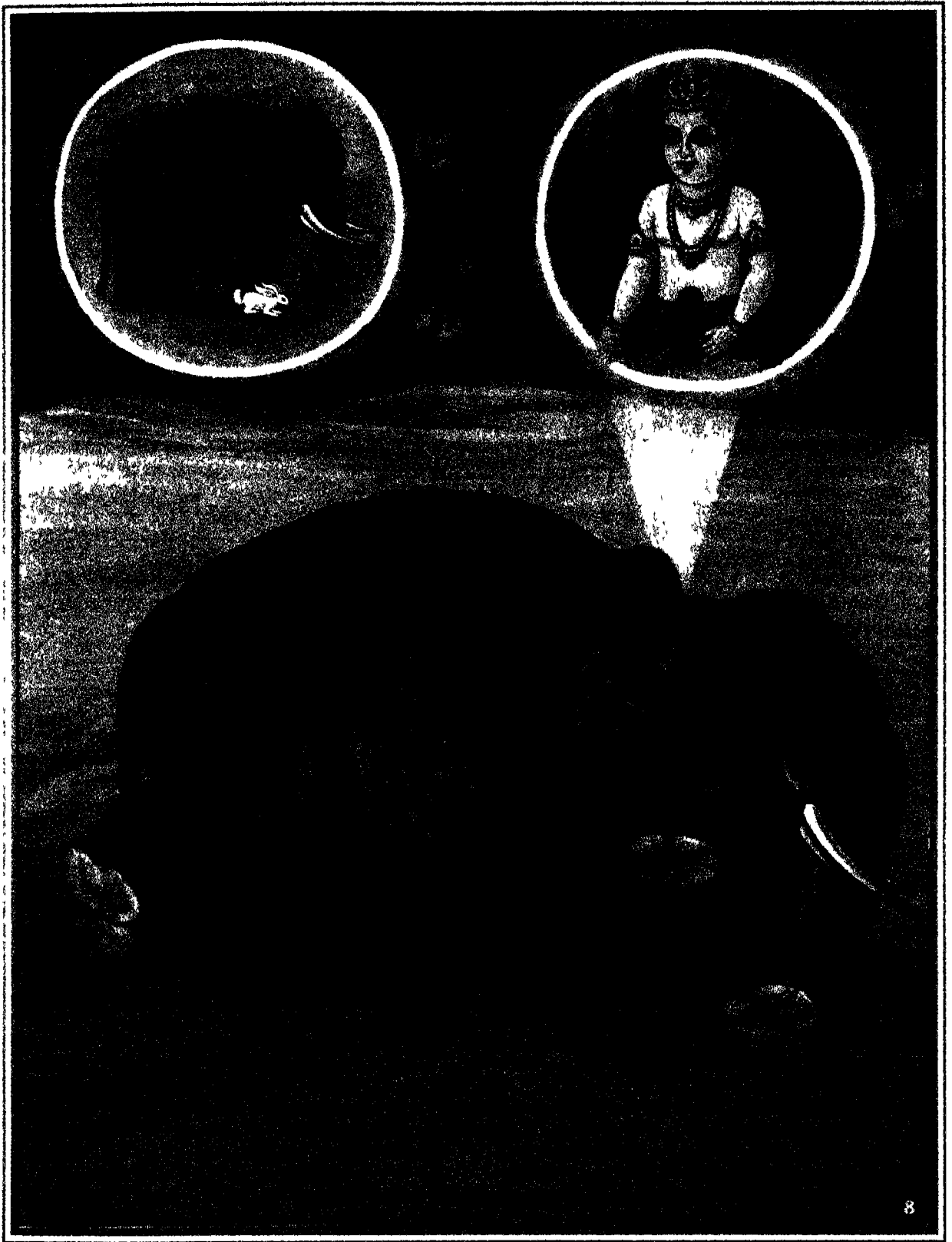
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

हाथी देह त्याग कर राजकुमार के रूप में जन्म

चित्र ८

तीन दिन बाद जब दावानल शान्त हुआ तो सभी वनचर जीव धीरे धीरे अपने-अपने स्थान पर चले गये। खरगोश भी वहाँ से हटा। मेरुप्रभ हाथी ने पाँव भूमि पर रखने के लिए जैसे ही नीचा किया तो उसका सन्तुलन बिगड गया। वह भूमि पर धडाम से गिर गया। भूख-प्यास व पाँव के दर्द के कारण वह तीन दिन तक असह्य पीडा सहता रहा। परन्तु उसके मन मे प्रसन्नता थी अनुकम्पाभाव की आनन्दानुभूति थी। वहाँ से मृत्यु प्राप्त कर वह हाथी मगधपति श्रेणिक की रानी धारिणी का पुत्र मेघकुमार बना।

(अध्ययन १)

DEATH OF THE ELEPHANT, BIRTH OF A PRINCE

ILLUSTRATION 8

The forest fire burned for two and a half days When it ended all the animals including the small rabbit ran away from that arena With the desire to rush away from that place, as soon as Meruprabh stretched its cramped leg it toppled and fell on the ground It suffered excruciating agony for three days and died However, even at the time of death it was filled with a feeling of happiness derived out of its act of compassion It descended into the womb of queen Dharini, the wife of king Shrenik of Magadh and was born as prince Megh Kumar

(CHAPTER-1)

in the end Completing a hundred years long life span as an elephant you descended into the womb of queen Dharini in this town of Rajagriha

मेह के ऊहापोह का अन्त

सूत्र १४३. तए णं तुम मेहा ! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते मम अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। त जइ जाव तुम मेहा! तिरिक्खजोणिय-भावमुवागए णं अप्पडिलद्ध-सम्मत्तरयणलंभेणं से पाए पाणाणुकपयाए जाव अतरा चेव सधारिए, नो चेव ण णिक्खित्ते, किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणि विपुलकुलसमुब्भवे ण निरुवहय-सरीरपत्त-लद्धपचिंदिए णं एव उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसगार-परक्कम-सजुत्ते ण मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे समणाण निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि वायणाए जाव धम्माणुओगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुडणाणि य नो सम्म सहसि खमसि, तितिक्खिसि, अहियासेसि ?

सूत्र १४३ "फिर क्रमश तुम्हारा जन्म हुआ, तुम विकसित हुए, युवा बने और मेरे पास आ मुडित हो अनगार बने। हे मेघ ! विचार करो कि जिस जन्म मे तुम पशु रूप में थे और तुम्हे सम्यक्त्व उत्पन्न नही हुआ था तब भी तुमने जीवो के प्रति अनुकम्पा की भावना मे अपना पैर अधर मे ही रखा, उसे धरती पर टिकाया नही था। इस जन्म में तो तुम उच्च कुल मे जन्मे हो और तुम्हे अक्षत्-अप्रतिहत शरीर प्राप्त हुआ है। तुमने पाँचों इन्द्रियो का दमन किया है, तुम उत्थान, बल, वीर्य, महत्वाकांक्षा और पराक्रम से भरपूर हो मेरे पास आकर अनगार बने हो। और कल पहली ही रात्रि में श्रमणो के आवश्यक कार्यों से बाहर आते-जाते समय छू जाने मात्र से, धूल के कण लग जाने मात्र से तुम क्षुब्ध हो गये। तनिक सी असुविधा को सह नही सके। अदीन भाव से तितीक्षा नहीं कर सके। शरीर को निश्चल रख समतामय नही हो सके।"

END OF THE DILEMMA

143. "With the passage of time you were born, grew up and became a youth After that you came to me and became an ascetic Megh! Just consider this that in the life you spent as an animal and when the desire for spiritual pursuits had not sprouted, you were still inspired by the compassion for living beings Driven by that feeling you kept

your feet lifted instead of putting it back on the ground In this life you were born in a high class family and endowed with a perfect and strong body You disciplined your senses You came to me with the desire for upliftment and having all the strength, potency, ambition, and vigour And the very first night you find yourself disturbed by the touch of the dust and the feet of the ascetics moving about for essentials You failed to tolerate even the slightest of inconveniences You failed to suffer without a feeling of inferiority You failed to keep the body still with equanimity"

सूत्र १४४ तए ण तस्स मेहस्स अणगारस्स, समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सुभेहि परिणामेहि, पसत्थेहि अज्झवसाणहि, लेस्साहि विसुज्झमाणीहि, तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापोह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाइसरणे समुप्पन्ने। एयमट्ठ सम्म अभिसमेइ।

सूत्र १४४ भगवान महावीर मे यह वर्णन सुन-समझकर शुभ परिणामो, प्रशस्त अध्यवसायो, विशुद्ध होती लेश्याओ के कारण जाति-स्मरण को आवृत करने वाले ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम होने मे ईहा आदि करत हुए मेघकुमार को सज्ञावान जीवो को मिलने वाला जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न हुआ। उन्हे अपन पूर्व भव के इस विवरण का प्रत्यक्ष और सम्यक्ज्ञान हो गया।

144. Hearing all this from Shraman Bhagavan Mahavir, Megh Kumar went through the process of thinking, ascertaining, analyzing and exploring (Iha, Apoh, Margana, and Gaveshana) As a result of gradually purifying inner energies (Leshya), righteous endeavour and lofty attitude, his instinctive-knowledge-veiling Karmas (Mati-Jnanavarniya Karma) were partially destroyed and partially suppressed Consequently he acquired the knowledge about earlier births (Jatismaran Jnana) He at once had the direct perception of all these details about his earlier birth

पुन प्रव्रज्या

सूत्र १४५ तए ण से मेहे कुमारे समणेण भगवया महावीरेण सभारियपुव्वभवे दुगुणाणीय-सवेगे आणदसुपुन्नमुहे हरिसवसेण धारारहयकदबक पिव समुस्ससियरोमकूवे समण भगव महावीर वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी–"अज्जप्पभिई ण भते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूण अवसेसे काए समणाण निग्गथाण निसट्ठे" त्ति कट्टु

पुणरवि समण भगव महावीर वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–"इच्छामि णं भते ! इयाणि सयमेव दोच्च पि पव्वाविय, सयमेव मुडाविय जाव सयमेव आयारगोयर जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय।"

सूत्र १४५ भगवान महावीर द्वारा पूर्व जन्म का वर्णन याद करा देने से मेघकुमार की आत्मोन्नति की प्यास दुगुनी हो गई। उनकी आँखो मे आनन्दातिरेक से आँसू भर आये। वर्षा की बूँदे पडने से खिले कदम्ब के फूल की तरह हर्ष से उनका रोम-रोम पुलक उठा। उन्होने भगवान महावीर को यथाविधि वन्दन करके कहा–"भते ! आज से मै अपने दोनो नेत्र छोड शेष समस्त शरीर श्रमणो के लिये अर्पित करता हूँ।" उन्होने पुन वन्दन करके कहा– "भगवन् ! मेरी अभिलाषा है कि अब आप स्वय मुझे पुन यथाविधि प्रव्रज्या प्रदान करे और श्रमण धर्म का उपदेश दे।"

RE-INITIATION

145. When Shraman Bhagavan Mahavir made him recall the details of his earlier births, ascetic Megh's desire for spiritual upliftment redoubled Overwhelmed with joy, his eyes brimmed with tears As a Kadamb flower blossoms at the touch of droplets of rain, every pore of his body was filled with ecstatic joy He formally bowed before Shraman Bhagavan Mahavir and said, "Bhante! Since this moment I commit every part of my body excepting my eyes to the service of the ascetics " He bowed again and requested, "Bhagavan! It is my earnest desire that now you once again initiate me into the order and preach me the religion of Shramans "

सूत्र १४६ तए ण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावित्तय धम्ममाइक्खइ–"एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एव णिसीयव्व, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्व, उट्ठाय उट्ठाय पाणाण भूयाणं जीवाण सत्ताण सजमेण सजमियव्व।"

सूत्र १४६ श्रमण भगवान महावीर ने मेघकुमार की इच्छा का आदर कर उन्हे पुन दीक्षित किया और कहा–"हे देवानुप्रिय ! यत्न से चलना सयम मे यतनापूर्वक प्रवृत्ति करना आदि (पूर्व सम)।"

146. Honouring ascetic Megh's desire Shraman Bhagavan Mahavir once again initiated him and said, "Beloved of gods! Move carefully etc (as detailed earlier) "

सूत्र १४७. तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तह चिट्ठइ जाव संजमेण सजमइ।

तए ण से मेहे अणगारे जाए इरियासमिए, अणगारवन्नओ भाणियव्वो।

सूत्र १४७. श्रमण मेघ ने भगवान का उपदेश सुना तथा सम्यक् रूप से अगीकार कर लिया और वे ईर्या समिति आदि से युक्त अनगार बन गये। अनगार का वर्णन औपपातिक सूत्र के अनुसार है।

147. Ascetic Megh heard and absorbed the preaching of Shraman Bhagavan Mahavir He became an ascetic observing every prescribed discipline The description of an ascetic is as mentioned in Aupapatik Sutra

सूत्र १४८ तए ण से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयारूवाण थेराण सामाइयमाइयाणि एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

सूत्र १४८ फिर मेघ अनगार ने भगवान के निकट रहकर उनके समान स्थविर श्रमणो से सामायिक से आरम्भ कर ग्यारह अग शास्त्रो का अध्ययन किया। फिर वे अनेक उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला, अर्द्धमासखमण एव मासखमण आदि तपस्या से आत्मा को तपाते हुए विहार करने लगे।

148. Living near Shraman Bhagavan Mahavir and under the tutelage of his senior ascetic disciples ascetic Megh studied all the subjects beginning from Samayik and covering all the eleven Angas (canons) He started doing various penances including fasts for a day, two days, three days, four days, five days, a fortnight and a month and followed the ascetic way of life

सूत्र १४९ तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ। पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ।

सूत्र १४९ भगवान महावीर तब गुणशील चैत्य और राजगृह नगर से निकले और बाहर जनपदो मे विहार करने लगे।

149. After some time Shraman Bhagavan Mahavir left the Gunshil Chaitya and coming out of Rajagriha he resumed his itinerant life moving about in various populated areas

मेघ की उत्कट तपस्या

सूत्र १५० तए णं से मेहे अणगारे अन्नया कयाइ समणं भगवं महावीरं वदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह।"

सूत्र १५० कई दिन बाद एक बार मेघ अनगार भगवान के पास आए, वन्दना की और कहा– "भगवन् ! मै आपकी अनुमति पाकर एक मास की मर्यादा वाली भिक्षु प्रतिमा लेने की कामना रखता हूँ।"

भगवान महावीर ने कहा–"देवानुप्रिय ! जिसमे सुख मिले वही करो। उसमे व्यवधान मत दो।"

HARSH PENANCES BY MEGH

150. After some days ascetic Megh came to Shraman Bhagavan *Mahavir, bowed before him and said,* "Bhagavan! *If you permit me* I wish to observe the one month duration Bhikshu Pratima (a specific harsh penance)"

Shraman Bhagavan Mahavir said, "Beloved of gods! Do as it pleases you Do not get distracted"

सूत्र १५१ तए ण से मेहे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुन्नाए समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ। मासियं भिक्खुपडिम अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्गं सम्म काएण फासेइ, पालेइ, सोहेइ, तीरेइ, किट्टेइ, सम्मं काएण फासित्ता पालित्ता सोहेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समण भगव महावीर वंदइ, नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी–

"इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे दोमासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए।"

"अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेह।"

जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइदियाए दोच्चसत्तराइदियाए तइयसत्तराइंदियाए अहोराइंदियाए वि एगराइंदियाए वि।

सूत्र १५१ भगवान महावीर से अनुमति प्राप्त कर मेघ अनगार भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगे। यह तपस्या उन्होंने सूत्र, कल्प, मार्ग के अनुसार सम्यक् रूप से काया द्वारा ग्रहण की, उसका पालन किया, शोभित किया, शोधन किया, तथा विस्तार किया और पूर्ण करके कथन द्वारा कीर्तन किया। तपस्या सम्पन्न कर वे भगवान महावीर के पास गये और बोले–

"भगवन् ! अब मैं आपकी अनुमति प्राप्त कर दो माह की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरना चाहता हूँ।" भगवान ने अनुमति दे दी।

मेघकुमार ने इस प्रकार बारह भिक्षु प्रतिमाओं का सम्यक् रूप में पालन किया। वे इस प्रकार हैं–पहली एक माह की, दूसरी दो की, तीसरी तीन की, चौथी चार की, पाँचवी पाँच की, छठी छह की, सातवी सात की, आठवी, नवी और दसवी सात-सात अहोरात्र की और ग्यारहवी तथा बारहवी एक-एक अहोरात्र की।

151. Getting permission from Shraman Bhagavan Mahavir, ascetic Megh took vow of the Bhikshu Pratima He accepted this penance with proper rules and procedures as prescribed in the scriptures He physically observed this penance, and supplemented the observance with desired attitude, perfected and prolonged it Concluding the penance with verbal praise of its fruits he went to Shraman Bhagavan Mahavir and said, "Bhagavan! Now I seek your permission for observing a two month duration Bhikshu Pratima " Bhagavan granted him permission

Continuing this way ascetic Megh properly observed twelve Bhikshu Pratimas They are—first to seventh for durations of months matching their numbers, eighth to tenth for durations of seven days and nights each and eleventh and twelfth for durations of one day and night each

अथक साधना

सूत्र १५२ तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोहेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी– "इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।"

सूत्र १५२ यह तपस्या पूर्ण करके मेघ अनगार पुन भगवान महावीर के पास गये और वन्दना करके बोले–"भगवन् ! मै आपकी अनुमति लेकर 'गुणरत्न सवत्सर' नामक तपस्या अगीकार करना चाहता हूँ।" भगवान ने अनुमति दे दी।

RELENTLESS PRACTICES

152. After concluding this series of penances ascetic Megh again went to Shraman Bhagavan Mahavir and said after formal bowing, "Bhagavan! With your permission I wish to take vow and observe the Guna Samvatsar penance" Bhagavan granted him permission

सूत्र १५३ तए ण से मेहे अणगारे **पढम मास चउत्थ चउत्थेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं** अवाउडए ण।

दोच्च मास अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडए ण। **तच्च मास अट्ठमअट्ठमेण अणिक्खित्तेण** तवाकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण उवाउडए ण।

चउत्थ मास दसमदसमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुह आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडए ण। पचम मास दुवालसमदुवालसमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडए णं। एव खलु एए णं अभिलावेण छट्ठे चोद्दसम चोद्दसमेण, सत्तमे सोलसमसोलसमेण, अट्ठमे अट्ठारसमं अट्ठारसमेण, नवमे वीसतिमवीसतिमेण, दसमे बावीसइमबावीसइमेण, एक्कारसमं चउवीसइमचउवीसइमेण, बारसमे छव्वीसइमछव्वीसइमेण, तेरसमे अट्ठावीसइम-अट्ठावीसइमेण, चोद्दसमे तीसइमतीसइमेण, पचदसमे बत्तीसइमबत्तीसइमेण, सोलसमे मासे चउत्तीसइमचउत्तीसइमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए ण सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे राइ वीरासणेण य अवाउडएण य।

सूत्र १५३ मेघ अनगार ने तब एक माह तक एकान्तर उपवास (एक दिन उपवास, दूसरे दिन भोजन, तीसरे दिन फिर उपवास) से यह तपस्या आरम्भ की। तपस्या काल मे वे दिन म गोदोहन आसन मे बैठते और सूर्य की ओर मुँह करके आतापना लेते। रात मे निरावरण हो वज्रासन मे बैठते। इसी दिनचर्या से दूसरे महीने बेले-बेले पारणा, तीसरे महीने तेले-तेले पारणा और चौथे महीने चौले-चौले पारणा किया।

इसी प्रकार प्रति माह उपवासो की संख्या मे एक दिन बढ़ाते गये। पाँचवे माह मे पाँच-पाँच दिन उपवास के बाद पारणा, छठे माह छह-छह दिन के बाद पारणा, सातवे माह सात-सात दिन के बाद पारणा, आठवें माह आठ-आठ दिन के बाद, नौवे माह मे नौ-नौ दिन बाद, दसवें माह मे दस-दस दिन बाद, ग्यारहवे माह मे ग्यारह-ग्यारह दिन बाद, बारहवें माह मे बारह-बारह दिन बाद, तेरहवे माह में तेरह-तेरह दिन बाद, चौदहवे माह मे चौदह-चौदह दिन बाद, पन्द्रहवें माह में पन्द्रह-पन्द्रह दिन बाद और अन्तिम सोलहवे माह मे सोलह-सोलह दिन बाद पारणा करते निरन्तर तप करते विचरने लगे। दिन और रात की भी वही पहले दिन वाली चर्या निरन्तर चलती रही।

153. Ascetic Megh commenced this penance with fasting on alternate days for one month (fast on first day, food on second day, fast on third day, and so on) All along the period of penance during the day he would sit in the Godohan pose (as one sits while milking a cow) facing the sun, and during the night he would sit naked in the Vajrasan (a specific yogic posture) Following the same daily routine he observed two day fasts interspersed with a day of food intake (fast for two days, food on third day, fast for two days, and so on) during the second month During the third and fourth months he increased the days of fasting to three and four respectively

This way he went on increasing the number of fasting days by one every month During the fifth month the number of fasting days became five During the sixth month he ate food every seventh day, during the seventh month he ate food every eighth day, during the eighth month he ate food every ninth day, during the ninth month he ate food every tenth day, during the tenth month he ate food every eleventh day, during the eleventh month he ate food every twelfth day, during the twelfth month he ate food every thirteenth day, during the thirteenth month he ate food every fourteenth day, during the fourteenth month he ate food every fifteenth day, during the fifteenth month he ate food every sixteenth day, and during the concluding or sixteenth month he ate food every seventeenth day During this long period of penance his daily routine remained same as he followed during the first month

सूत्र १५४. तए ण से मेहे अणगारे गुणरयणसवच्छरं तवोकम्म अहासुत्त जाव सम्म काएण फासेइ, पालेइ, सोहेइ, तीरेइ, किट्टेइ, अहासुत्त अहाकप्प जाव किट्टेत्ता समणं

भगव महावीर वंदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहि तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

सूत्र १५४ मेघ अनगार ने गुणरत्न सवत्सर नामक तप का यथा सूत्र, कल्प और मार्ग सम्यक् पालन, शोधन तथा कीर्तन किया। फिर वे भगवान महावीर के पास आये और यथाविधि वन्दन करके उनसे अनुमति ले एक के बाद एक अनेक षष्टभक्त, अष्टमभक्त, दशमभक्त, द्वादशभक्त, अर्धमासखमण, मासखमण आदि अनोखी तपस्याएँ करते हुए विहार करने लगे।

154. Ascetic Megh accepted this penance with proper rules and procedures as prescribed in the scriptures He physically observed this penance, and adorned the observance with desired attitude, perfected and prolonged it Concluding the penance with verbal praise of its fruits he went to Shraman Bhagavan Mahavir and seeking permission from Shraman Bhagavan Mahavir he observed a great number of harsh penances including fasts for a day, two days, three days, four days, five days, a fortnight and a month, and followed the ascetic way of life

सूत्र १५५ तए ण से मेहे अणगारे तेण उरालेण विपुलेण सस्सिरीए ण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेणं मगल्लेण उदग्गेण उदारएणं उत्तमेण महाणुभावेणं तवोकम्मेण सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मसे निस्सोणिए किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसतए जाव यावि होत्था।

जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता, गिलायइ, भास भासमाणे गिलायइ, भास भासिस्सामि त्ति गिलायइ।

सूत्र १५५ मेघ अनगार ऐसी उदार, विपुल, श्रीयुक्त, गुरु प्रदत्त, स्वय गृहीत, कल्याणकारी, शिव, धन्य, मगल, उदग्र, वर्द्धमान, उत्तम और महाप्रभावशाली तप साधना के कारण क्षीण, भूखे, रूक्ष और मॉस व रक्तहीन से हो गये और उठते-बैठते उनके हाड़ कडकडाने लगे। उनकी हड्डियॉ मात्र चर्म से मढ़ी दीखने लगी और दुबले शरीर पर नसे दिखाई देने लगी।

वे अपने आत्मबल से ही खडे रहते और चलते थे। बात करते तो थक जाते थे, यहाँ तक कि बोलने का विचार करने मात्र से भी थक जाते थे।

155. As a result of these wide ranging, numerous, gracious, bestowed (by the guru), accepted, beneficent, torment free, commend-

able, pious, vigorous, ever evolving, excellent, and extremely potent penances ascetic Megh became weak, famished, shriveled, lean and anaemic With every movement his joints rattled He appeared like a fleshless skeleton covered by skin only, and bluish veins became visible on his wiry body

He could remain standing and walk only by force of his will He got tired when he spoke, even the effort of speaking was too much for him

सूत्र १५६. से जहानामए इगालसगडियाइ वा, कट्ठसगडियाइ वा, पत्तसगडियाइ वा, तिलसगडियाइ वा, एरडकट्ठसगडियाइ वा, उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मससोणिए ण, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने, तवेण तेए ण तवतेयसिरीए अईव अईव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ।

सूत्र १५६ कोयले, लकडी, सूखे पत्ते, तिनके, डठल अथवा एरड से भरी गाडी को धूप मे और भी सुखाने के बाद चलाने पर वह खडखडाहट के साथ चलती है और खडखडाती आवाज के साथ ही रुकती है। ठीक उसी प्रकार मेघ अनगार भी हड्डियो की खडखडाहट के साथ चलते और रुकते थ। वे मांस और रुधिर से तो क्षीण हो गये थे पर तपस्या के तेज से पुष्ट थे। राख के ढेर मे घिरे अगारे के समान वे तप तेज से देदीप्यमान हो गये थे। तप के तेजरूपी लक्ष्मी से शोभित हो गये थे।

156. As a cart filled with coal, wood, dry leaves, twigs, branches or castor nuts and further dried in sun rattles while moving as well as when stopped, ascetic Megh's bones also rattled while moving or when he stopped Although he was lean and anaemic he glowed with the aura of penance Like embers in a heap of ash he had become radiant with the sheen of penance He had become rich with the wealth of penance

सूत्र १५७ तेण कालेण तेण समए ण समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थयरे जाव पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे, गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे, जेणामेव रायगिहे नगरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

सूत्र १५७ काल के उस भाग मे धर्म के प्रतिपादक, तीर्थ के स्थापक श्रमण भगवान महावीर एक गॉव से दूसरे गॉव मे विहार करते राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे आये और यथाविधि ठहरे।

157. During that period of time moving from one village to another Shraman Bhagavan Mahavir, the propagator of religion and the founder of the religious ford, arrived in Rajagriha and stayed in the Gunashil temple

समाधिमरण का सकल्प

सूत्र १५८ तए ण तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे) समुप्पज्जित्था–"एव खलु अह इमेण उरालेण तहेव जाव भास भासिस्सामि त्ति गिलामि, त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा धिई सवेगे त जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा धिई सवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ताव मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलते सूरे समणं भगवं महावीर वदित्ता नमसित्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुन्नायस्स समाणस्स सयमेव पच महव्वयाइ आरुहित्ता गोयमाइए समणे निग्गथे निग्गथीओ य खामेत्ता तहारूवेहि कडाईहि थेरेहि सद्धि विउल पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगास पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता सलेहणाझूसणाए झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए।"

सूत्र १५८ उस समय मेघ अनगार के मन मे रात को धर्म जागरण करते समय मध्य रात्रि को यह विचार उठा-"मै इस तपस्या के कारण दुर्बल हो गया हूँ (विस्तृत विवरण पूर्व सम)। फिर भी अभी मुझमे उठने की शक्ति, बल, वीर्य, पौरुष, पराक्रम, श्रद्धा, धृति और सवेग है। अत जब तक मुझमे ये सब शेष है और मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक, गधहस्ति के समान जिनेश्वर श्रमण भगवान महावीर विद्यमान है तब तक मुझे जीवन के अन्तिम कर्तव्य पूरे कर लेने चाहिये। इस रात्रि के बीत जाने पर जब सूर्योदय हो तो मै भगवान महावीर को यथाविधि वन्दना कर, उनकी आज्ञा ले, स्वयं ही पाँच महाव्रतो को पुन अगीकार करूँ, गौतम आदि श्रमणो तथा श्रमणियो से क्षमायाचना करूँ, वैसे ही क्रियाओ मे पारगत स्थविर श्रमणो के साथ धीरे-धीरे विपुलाचल पर चढूँ, मेघ के समान काल शिलाखण्ड का प्रतिलेखन करूँ, और अन्तत सलेखना स्वीकार कर, आहार-पानी का त्याग कर पादोपगमन अनशन धारण करूँ और मृत्यु की आकाक्षारहित हो ध्यानमग्न हो जाऊँ।"

RESOLVE OF A PIOUS DEATH

158. One night while ascetic Megh was busy with his religious practices an idea surfaced in his mind, "Due to my penances I have become extremely weak (details as before) However, I am still left with barely enough energy, strength, potency, vigour, valor, confidence, firmness, and will to stand up As such, as long as this capacity is available to me and my religious preceptor and leader, the odoriferous elephant like Jineshwar, Shraman Bhagavan Mahavir, is present I should fulfill the last duties of my life When the night ends and sun dawns I shall seek his permission after due obeisance and retake the five great vows Then I shall seek forgiveness from Gautam and other ascetics, seek company of senior ascetics who are proficient in the rituals, and slowly climb the Vipul mountain Reaching there I shall explore and prepare a large rock, black as monsoon clouds, and in the end take the Sanlekhana vow, stop taking all food and water, accept the vow of fasting till liberation and transcend into meditation without any desire for death "

सूत्र १५९. एव संपेहेइ सपेहित्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणए ण पजलिउडे पज्जुवासइ।

सूत्र १५९ यह विचार उठने और सकल्प कर लेने के बाद दूसरे दिन सूर्योदय होने पर अपने सकल्प के अनुसार मेघ मुनि भगवान महावीर के पास गये और यथाविधि वन्दन कर बैठ गये। हाथ जोड भगवान की उपासना करने लगे।

159. Once he got this idea he resolved to follow it Next morning ascetic Megh went to Shraman Bhagavan Mahavir and formally bowed before him He then joined his palms and sat down worshiping

सूत्र १६० मेहे त्ति समणे भगव महावीरे मेह अणगार एव वयासी–"से णूण तव मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (चिंतिए, पत्थिए मणोगए संकप्पे) समुप्पज्जित्था–एव खलु अह इमेण ओरालेण जाव जेणेव अहं तेणेव हव्वमागए। से णूण मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?"

"हता अत्थि।"

"अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह।"

सूत्र १६० भगवान महावीर ने मेघ अनगार से कहा-"हे मेघ ! रात्रि जागरण के समय मध्य रात्रि को तुम्हारे मन मे विचार उठे (पूर्व सम) और भोर होते ही तुम तत्काल मेरे पास आये। मेघ ! क्या मै ठीक कह रहा हूँ ?"

मेघ मुनि बोले-"हाँ, भगवन् यह सत्य है !"

भगवान ने कहा-"देवानुप्रिय ! जो सुखद लगे वह करो। विलम्ब व बाधा मत करो।"

160. Shraman Bhagavan Mahavır asked ascetic Megh, "Megh! Durıng your nıght practıces you thought of somethıng, around mıdnıght (as stated earlıer), and just as the day dawned you rushed to me Am I rıght, Megh!"

"Absolutely, Bhagavan!"

Shraman Bhagavan Mahavır added, "Do as ıt pleases you, beloved of gods! Do not hesıtate "

सूत्र १६१ तए ण से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भुणुन्नाए समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता सयमेव पंच महव्वयाई आरुहेइ, आरुहित्ता गोयमाइ समणे निग्गथे निग्गथीओ य खामेइ, खामेत्ता य ताहारूवेहिं कडाईहि थेरेहिं सद्धि विपुल पव्वय सणियं सणिय दुरूहइ, दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगास पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारगं सथरइ, सथरित्ता दब्भसथारग दुरूहइ, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु वयासी-

"नमोऽत्थु ण अरिहंताण भगवताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासह मे भगव तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-

सूत्र १६१ भगवान महावीर की आज्ञा पा मेघ अनगार प्रसन्न और प्रफुल्ल हुए। यथाविधि वन्दना कर स्वय ही पाँच व्रतों का उच्चारण किया और गौतम आदि श्रमणो व श्रमणियो से क्षमायाचना की। फिर योग्य स्थविरो के साथ धीरे-धीरे विपुल पर्वत पर चढ़े। वहाँ पहुँच मेघ के समान काले शिलाखण्ड की प्रतिलेखना की और घास का आसन

विछाकर बैठ गये। पूर्व दिशा की ओर मुख कर पद्मासन मे बैठे और दोनो हाथ जोड मस्तक पर लगा कर बोले–

"नमस्कार हो अरिहन्तो को, भगवतो को, (शक्रस्तव के अनुसार)। सिद्धगति को प्राप्त होने वाले मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवान को नमस्कार हो। वहाँ रहे उन भगवान को मै यहाँ से वन्दना करता हूँ। वे मुझे देखे।" इस प्रकार यथाविधि भगवान को वदना करके वे बोले–

161. Ascetic Megh was happy and pleased to get the permission from Shraman Bhagavan Mahavir After due obeisance he uttered the five great vows on his own Then he sought forgiveness from Gautam and other ascetics Taking along some able and senior ascetics he slowly climbed the Vipul mountain Reaching at the top he found and prepared a large rock, black as monsoon clouds, for his practices He spread a grass mattress and sat down in lotus pose facing the east Joining his palms and raising them to his forehead he uttered—

"I bow and convey my reverence to the worthy ones (Arhats) the supreme ones (Bhagavans), (the panegyric by the king of gods or the Shakrastav) My reverence also to my preceptor, Shraman Bhagavan Mahavir, who is destined to attain the Siddha state (the ultimate state of liberation) From here I bow before him, stationed far away, may he see me doing so After following this prescribed procedure of bowing to Bhagavan, he added —

सूत्र १६२ पुव्वि पि य ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने परपरिवाए अरई-रई मायामोसे मिच्छादसणसल्ले पच्चक्खाए।

इयाणि पि य ण अह तस्सेव अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि। सव्व असण-पाण-खाइम-साइम चउव्विह पि आहार पच्चक्खामि जावज्जीवाए। ज पि य इम सरीर इट्ठ कत पिय जाव विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतीति कट्टु एय पि य ण चरमेहिं ऊसास निस्सासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणा झूसणा-झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरइ।

तए ण ते थेरा भगवतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडिय करेति।

सूत्र १६२ "मैने पहले भी भगवान महावीर के निकट समस्त हिसा का त्याग किया है, मिथ्या, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, मिथ्या दोषारोपण, चुगली, पराये दोषो का प्रकाशन, धर्म मे अरति, अधर्म मे रति, मायामृषा (ठगी) और मिथ्यादर्शनशल्य इन सभी अठारह पाप स्थानो का प्रत्याख्यान (त्याग की प्रतिज्ञा) किया है।

"अब मै पुन भगवान के निकट हिसादि इन सभी पाप स्थानो का प्रत्याख्यान करता हूँ और साथ ही अशन, पान, खादिम और स्वादिम चारो तरह के आहार का आजीवन प्रत्याख्यान करता हूँ। जो इष्ट, कान्त और प्रियादि है (पूर्व सम) और जिसकी विविध रोग, आतक, परीषह और उपसर्गों से पूर्ण रक्षा की है उस शरीर का भी मै अतिम साँस तक परित्याग करता हूँ अथवा उसके प्रति उदासीन होने का प्रण करता हूँ।"

यह कहकर सलेखना अगीकार कर, भोजन-पान का त्याग कर, पादोपगमन समाधि-मरण अगीकार कर मेघ अनगार मृत्यु-कामनारहित हो धयानमग्न हो गये।

उनक साथ रहे स्थविर तब उनका वैयावृत्य (सेवा) करने लगे।

162. "Earlier, before Shraman Bhagavan Mahavir, I took an oath to refrain from indulging in all the eighteen sinful activities (Papasthan) including falsehood, grabbing, sex, hoarding, anger, conceit, illusion, greed, attachment, aversion, quarrel, false accusation, backbiting, revealing faults of others, dislike for true religion, liking for false religion, cheating, and pursuing false concepts

"Now I once again take the oath in his name to refrain from indulging in all the eighteen sinful activities and at the same time I also take an oath for life to refrain from eating, drinking, satisfying the hunger and satisfying the taste buds I also abandon this body that has been desired, adored, loved (etc) and fully protected by me from various ailments, terrors, afflictions, and adversities In other words I take an oath to remain detached from my body till my last breath "

Saying thus ascetic Megh took the Sanlekhana vow, stopped taking food and water, accepted the vow of fasting till liberation and transcended into meditation without any desire for death

The ascetics who accompanied him started taking care of him

सूत्र १६३ तए ण से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअगाइ अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइ दुवालसवरिसाइं

सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वेण कालगए।

सूत्र १६३ मेघ अनगार भगवान महावीर से दीक्षा लेने के बाद स्थविरो के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन करके, लगभग बारह वर्षो तक चारित्र का पालन करके, एक माह की सलेखना द्वारा अपने शरीर को क्षीण कर आलोचना प्रतिक्रमण करके, माया, मिथ्यात्व व निदान शल्यो को दूर कर, समाधिस्थ होकर अन्तत कालधर्म को प्राप्त हुए।

163. After getting initiated by Shraman Bhagavan Mahavir, studying all the canons from the senior ascetics, observing the ascetic conduct for almost twelve years, emaciating his body by one month long final fast, reviewing all his actions (Pratikraman), removing all the thorns of illusion, mis-concepts, etc , transcending into final meditation, ascetic Megh finally met his end

सूत्र १६४ तए ण थेरा भगवतो मेह अणगार आणुपुव्वेण कालगय पासेंति। पासित्ता परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग करेति, करित्ता मेहस्स आयारभडय गेण्हति। गेण्हित्ता विउलाओ पव्वयाओ सणिय सणिय पच्चोरुहति। पच्चोरुहित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-

एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी मेहे अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से ण देवाणुप्पिएहि अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गथे निग्गथीओ य खामेत्ता अम्हेहि सद्धि विउल पव्वय सणिय सणिय दुरूहइ। दुरूहित्ता सयमेव मेघघणसन्निगास पुढविसिलापट्टय पडिलेहेइ। पडिलेहित्ता भत्तपाण-पडियाइक्खित्ते आणुपुव्वेण कालगए। एस ण देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभडए।

सूत्र १६४ मेघ अनगार के साथ गये स्थविरो ने जब देखा कि उनका देहावसान हो गया है तो उन्होने परिनिर्वाण निमित्तक (मृत देह को स्पर्श करने के कारण किया जाने वाला) कायोत्सर्ग किया, उनके उपकरण उठाये और पर्वत से धीरे-धीरे नीचे उतर आये। फिर वे गुणशील चैत्य मे भगवान के पास आए और वन्दना करके बोले-

'हे देवानुप्रिय ! आपके शिष्य मेघ अनगार स्वभाव से भद्र और विनीत थे। वे आपसे अनुमति ले, श्रमण-श्रमणियो से क्षमायाचना कर हमारे साथ विपुल पर्वत पर गये थे। उन्होने यथाविधि (पूर्व सम) सलेखना ग्रहण कर अनुक्रम से देह त्याग कर दी। हे देवानुप्रिय ! ये मेघ अनगार के उपकरण है।''

164. When the senior ascetics accompanying ascetic Megh saw that he was dead they performed the ritual meditation prescribed to be done on touching a dead body They picked up his equipments (the things like broom, wooden pots, etc) that an ascetic always carries and came down from the mountain They came to Shraman Bhagavan Mahavir in the Gunashil temple and after paying homage said—

"Beloved of gods! Your disciple, ascetic Megh, was good natured and humble Getting your permission and seeking forgiveness from all the ascetics he had gone to the Vipul mountain with us Following the prescribed procedure he took the ultimate vow and consequently met his end Beloved of gods! these are his equipments "

पुनर्जन्म निरूपण

सूत्र १६५ भंते त्ति 'भगवं' गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अन्तेवासी मेहे णामं अणगारे, से णं मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?"

सूत्र १६५ 'भगवन्' यह सम्बोधन कर गौतम स्वामी ने भगवान महावीर को यथाविधि वन्दन करके कहा-"आपके अन्तेवासी मेघकुमार अनगार मृत्यु के बाद किस गति मे गये और कहाँ उत्पन्न हुए ?"

RE-BIRTH

165. Addressing him as 'Bhagavan !' Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir after offering due homage, "To what form of life has your disciple ascetic Megh has gone after his death and where has he taken birth?"

सूत्र १६६ 'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-"एवं खलु गोयमा ! मम अन्तेवासी मेहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। अहिज्जित्ता बारस भिक्खु-पडिमाओ गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव किट्टेत्ता मए अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ। खामित्ता तहारूवेहिं जाव (कडाईणेहिं) विउलं पव्वयं दुरूहइ। दुरूहित्ता दब्भसंथारगं संथरइ। संथरित्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेइ। बारस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाणं बहूइं जोयणाइं,

बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइ, बहूइं जोयणसयसहस्साइ, बहूइं जोयणकोडीओ, बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारा-णय-पाणया-रण-च्चुए तिन्नि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे।

तत्थ ण अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ ण मेहस्स वि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सूत्र १६६ भगवान महावीर ने उत्तर दिया-"हे गौतम ! मेरा अन्तेवासी मेघ अनगार स्वभाव से भद्र व विनीत था। उसने स्थविरो से ग्यारह अगो का अध्ययन किया। कठोर तपश्चर्या की और सलेखना ग्रहण कर देह त्याग की (सम्पूर्ण विवरण पूर्व सम)। मृत्यु के बाद ऊर्ध्व दिशा मे चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारारूपी ज्योतिष चक्र से और ऊपर अनन्त योजन (सैकडो, हजारो, लाखो, करोडो, कोडाकोडि आदि सख्याये) पार कर सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लातक, महाशक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोको को तथा तीन सौ अठारह नवग्रैवेयक विमानो को लॉघकर वह विजय नामक अनुत्तर महाविमान मे देव रूप मे उत्पन्न हुआ है।

"उस विजय नामक अनुत्तर विमान मे कुछ देवो की आयु तेतीस सागरोपम कही है। मेघ की भी देव भव की आयु तेतीस सागरोपम है।"

166. Shraman Bhagavan Mahavir replied, "Gautam! My disciple ascetic Megh was a good natured and humble person He had studied all the eleven canons under the guidance of senior ascetics He did vigorous penance and met his end after taking the ultimate vow (as described above) After his death his soul has gone in the upward direction Going beyond the moon, sun, planets, constellations and galaxies, crossing infinite Yojans (a measure of distance) and going beyond the Saudharma, Ishan, Sanatkumar, Mahendra, Brahmalok, Lantak, Mahashakra, Sahasrar, Anat, Pranat, Aran, and Achyut dimensions of gods it has taken birth as a god in the Anuttar dimension of gods

"In the Anuttar dimension some of the gods are said to have an age of thirty three Sagaropam (a superlative measure of time) Megh too is to have the same life span "

सूत्र १६७ एस ण भते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खए ण, ठिइक्खए ण, भवक्खए ण अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

सूत्र १६७ गौतम स्वामी ने फिर पूछा–"भगवन् ! वह मेघ देव देवलोक की आयु का, स्थिति का और भव का क्षय करके किस गति मे जायेगा ? कहाँ जन्म लेगा ?"

167. Gautam Swami again asked, "Bhagavan! completing the age, state, and life of the dimension of gods to what form of life will god Megh go and where will he be born?"

अन्त में सिद्धि

सूत्र १६८. गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंत काहिइ।

सूत्र १६८ भगवान बोले–"हे गौतम ! वह महाविदेह मे जायेगा और सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो निर्वाण प्राप्त कर सब दु खो का अन्त करेगा।"

AT LAST, LIBERATION

168. Bhagavan said, "Gautam! He will be born as a human being in the Mahavideh area and achieving purity, enlightenment, and freedom he will terminate all his miseries and attain Nirvana."

सूत्र १६९ एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थयरेणं जाव सपत्तेण अप्पोपालभनिमित्त पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र १६९ सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी से कहा–"हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञाता के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ इस प्रयोजन से कहा है कि हितेच्छु गुरु को अविनीत शिष्य को उपालम्भ देना चाहिए। ऐसा मै कहता हूँ।"

169. Sudharma Swami told Jambu, "Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir narrated this text of the first chapter of the Jnata Sutra in order to convey that a well wishing teacher should not hesitate to reprimand an undisciplined disciple So I state "

॥ पढम अज्झयण समत्त ॥

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE FIRST CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की यह प्रथम कथा आत्मोन्नयन के प्रयत्न और उसके लिए अपनाए सयम साधना मे स्थिर रहने के महत्त्व पर तो बल देती ही है पर साथ ही गुरु के इस कर्त्तव्य पर भी प्रकाश डालती है कि वह शिष्य के मन मे आई चचलता को उपालम्भ तथा प्रेरित प्रसगादि के माध्यम से दूर करे तथा उसे पुन सयम मार्ग मे स्थापित करे। गुरुजनो द्वारा दी गई इस प्रेरणा को आप्तोपालम्भ कहा है।

इसके अतिरिक्त इस कथा मे तत्कालीन सास्कृतिक वातावरण सम्बन्धी सूचनाएँ भी मिलती है। उस काल के रीति-रिवाज, विभिन्न कलाओ, विधि-विधानो, सामाजिक तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओ आदि के विषय मे सक्षिप्त किन्तु स्पष्ट जानकारी यथा स्थान गुंथी मिलती है।

उपनय गाथा

टीकाकार आचार्य ने अध्ययन के उपसहार मे भावार्थ को उपनय मे ढालते हुए एक गाथा का उल्लेख किया है—

महुरेहि णिउणेहि वयणेहि चोययति आयरिया।
सीसे कहि च खलिए, जह मेहमुणि महावीरो॥

किसी कारण, यदि शिष्य का मन सयम से चलित हो जाय तो आचार्य (गुरु) उसे मधुर और हृदय स्पर्शी वचनो से प्रेरणा देकर सयम मे स्थिर कर देते है। जैसे मेघमुनि को भगवान महावीर ने स्थिर कर दिया।

CONCLUSION

This first story of Jnata Dharma Katha lays stress on the importance of endeavour for spiritual upliftment and observance of the required discipline At the same time it also highlights the duty of the teacher to remove any weakness by counseling or rebuke and restore his resolve This inspiration by the elders is known as sagacious-rebuke Besides this, the story contains useful information about the cultural scenario of that period Brief but explicit information about social behaviour, arts, codes of conduct, administration, etc has been skillfully assimilated within the framework of the story

THE MESSAGE

(The commentator gives the central theme of every story in a versified message)

If, for any reason, a disciple wavers from the path of discipline the teacher restores his resolve by inspiring in sweet but effective words as Bhagavan Mahavir did to ascetic Megh

परिशिष्ट

अगदेश–महाभारत के अनुसार बलिराजा के पुत्र अग द्वारा स्थापित राज्य। जैन पुराणो के अनुसार भगवान ऋषभदेव के पुत्र अग का राज्य। शक्तिसगमतत्र के अनुसार वैद्यनाथ से भुवनेश्वर के बीच का भू-भाग। वर्तमान मे अधिकाश उडीसा, दक्षिणी बिहार का कुछ भाग तथा दक्षिण-पश्चिम बंगाल का कुछ हिस्सा मिलन से बना भू-भाग प्राचीन अग देश कहा जा सकता है।

चपा–प्राचीन अग देश की राजधानी। भागवत कथा के अनुसार यह नगरी राजा हरिश्चन्द्र के प्रपौत्र चपा ने बसाई थी। जैन पुराणो के अनुसार यो तो चम्पा नगरी बहुत प्राचीन है, पर वह उजड गई होगी। अपने पिता श्रेणिक की मृत्यु से व्यथित राजा कुणिक का मन राजगृह मे नही लगता था। इस कारण उन्होने चपा के एक सुन्दर वृक्ष के निकट के क्षेत्र मे अपनी नई राजधानी बसाई और उसे चपा नाम दिया। इस नगरी के अन्य नाम हैं–अगपुरी, मालिनी, लोमपादपुरी तथा कर्णपुरी। वैदिक और जैन सप्रदायो के समान ही बौद्ध भी इसे तीर्थ-स्थान मानते है। प्राचीन जैन यात्रा उल्लेखो के अनुसार यह स्थान पटना से पूर्व मे लगभग दो सौ मील दूर है तथा इसके दक्षिण मे लगभग बत्तीस मील पर मदारगिरि नाम का तीर्थ पडता है जो वर्तमान मे मदारहिल नाम के स्टेशन के निकट है। चपा का वर्तमान नाम चपानाला है तथा वह भागलपुर से तीन मील दूर है। उसी के पास नाथ नगर भी है।

राजा कुणिक–मगध के राजा प्रसेनजित का पौत्र तथा स्वनामधन्य सम्राट् बिम्बसार श्रेणिक का पुत्र। माता का नाम चल्लणा या चेलना था जो श्रमण भगवान महावीर के मामा, वैशाली के गणाधिपति महाराज चटक की ज्येष्ट पुत्री थी। कुणिक भारतीय इतिहास तथा बौद्ध साहित्य मे अजातशत्रु के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। जैन साहित्य मे इसका नाम अशोकचन्द्र भी है। भगवान महावीर के प्रति उसके मन मे अगाध श्रद्धा थी। इसके अतिरिक्त कुणिक का उल्लेख वज्जी विदेहपुत्र तथा विदेहपुत्र नामो से भी हुआ है। कुणिक प्रबल योद्धा था। वैशाली गणराज्य सगठन को हराकर वह लगभग सपूर्ण पूर्व भारत का अधिपति बन गया था। (ईसा पूर्व पाँचवी-छठी शताब्दी)।

सुधर्मास्वामी (गणधर)–श्रमण भगवान महावीर के पाँचवे गणधर अग्निवैशायन गोत्रीय स्थविर आर्य सुधर्मा। भगवान महावीर के निर्वाण से पूर्व नौ गणधर केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जा चुके थे। गौतमस्वामी को महावीर-निर्वाण के तत्काल बाद केवलज्ञान प्राप्त हो गया था। सर्वज्ञ कभी धर्म-परम्परा

का वाहक नही होता अत तीर्थंकर महावीर के पश्चात् इस दायित्व का वहन सुधर्मास्वामी ने किया। ये अपने युग के अनुपम विद्वान् व साधक थे। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित त्रिपदी के आधार पर उन्होने द्वादशागी की रचना की जो जैन परम्परा के आधारभूत आगम ग्रन्थ हैं। आज जो भी श्रमण विद्यमान हैं वे सभी आर्य सुधर्मा की परम्परा की शिष्य-सन्तान हैं। बाकी सभी गणधरो की शिष्य परम्परा पृथक रूप मे विकसित न होकर इसी मे विलीन हो गईं। (निर्वाण-५०६ ई पू)

जम्बूस्वामी-श्रमण भगवान महावीर के प्रपट्टधर अथवा सुधर्मास्वामी के पट्टधर काश्यप गोत्रीय स्थविर आर्य जम्बू। महावीर निर्वाण के वर्ष राजगृह के एक समृद्ध वैश्य परिवार मे इनका जन्म हुआ था। सोलह वर्ष की आयु में सुधर्मास्वामी का प्रवचन सुनकर इन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया था। माता-पिता के आग्रह से इन्होने विवाह तो कर लिया किन्तु उसी रात्रि अपनी आठ पत्नियो को धर्मोपदेश दिया। उनके इस उपदेश को उनके यहाँ चोरी करने आया दस्यु प्रभव भी सुन रहा था। उसे भी वैराग्य उत्पन्न हो गया। प्रात काल जम्बू ने प्रभव व उसके साथियो सहित ५२७ व्यक्तियो के साथ सुधर्मास्वामी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। बारह वर्ष तक उन्होने सुधर्मास्वामी के पास समस्त आगमो का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया और उनके निर्वाण के पश्चात् उनके पट्ट पर आसीन हुए। (५२६-४६२ ई पू)

चैत्य-चिता पर बना स्मारक। औपपातिक सूत्र के अनुसार चैत्य के क्षेत्र मे याग तथा आहुतियो के अतिरिक्त अनेक नट, नर्तक आदि कलाकार अपनी कला का अभ्यास, प्रयोग व प्रदर्शन भी किया करते थे। टीकाकारो ने चैत्य को व्यतरायतन भी कहा है। वर्तमान सदर्भो मे देखे तो चैत्य किसी एक भवन विशेष का नाम नही अपितु एक ऐसे अपेक्षाकृत विशाल धार्मिक स्थल का नाम है जिसके आयतन मे मदिर, उपाश्रय आदि, विभिन्न धार्मिक क्रियाओं हेतु निर्मित किये गये निर्माण तथा इनसे जुडी सुविधाये विद्यमान हो।

राजगृह-जैन तथाबौद्ध मतावलम्बियो का महत्त्वपूर्ण तीर्थ नगर जहां भगवान महावीर तथा बुद्ध दोनो ने अनेक चातुर्मास किये थे। जैन ग्रन्थो के अनुसार राजगृह मे भगवान महावीर के दो सौ से अधिक बार समवसरण हुए थे। वे प्राय गुणशील, मण्डिकुच्छि व मुद्गरपाणि उद्यानो मे ठहरते थे। महाभारत के अनुसार जरासंध के समय मे मगध की राजधानी। इस रमणीय नगर के निकट पॉच पहाड है जिनके नाम है-जैन परम्परा मे-वैभार, विपुल, उदय, सुवर्ण तथा रत्न गिरि। वायुपुराण मे-वैभार, विपुल, रत्नकूट, गिरिव्रज तथा रत्नाचल। महाभारत-वैहार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक। इन पहाडो के कारण राजगृह का अन्य नाम गिरिव्रज (पर्वत समूह) भी था। आवश्यकनिर्युक्ति की अवचूर्णि मे उल्लेख है कि इस स्थल पर प्राचीनकाल में क्षितिप्रतिष्ठित नाम का नगर था। इसके जीर्ण हो जाने पर राजा जितशत्रु ने चनकपुर नाम का नगर बसाया था। वह भी जीर्ण हो गया तब ऋषभपुर बसाया गया और उसके बाद कुशाग्रपुर। इन सभी के नष्ट हो जाने पर महाराजा प्रसेनजित (सम्राट् श्रेणिक के पिता) ने राजगृहनगर बसाया। यहाँ के गर्म पानी के झरनो का उल्लेख प्राचीन जैन तथा बौद्ध ग्रन्थो मे ही नही चीनी यात्री फाह्यान तथा ह्युयेनत्साग के यात्रा वर्णनो मे भी मिलता है। वर्तमान मे यह राजगिरि के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ से उत्तर पूर्व में स्थित है प्रसिद्ध नालन्दा विद्यापीठ।

मगध-ऋग्वेद का कीकटदेश। अथर्ववेद में इस देश का नाम मगध लिखा है। पन्नवणासूत्र में आर्यदेशो की सूची में प्रथम नाम मगध का आता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल के सर्वाधिक समृद्धिशाली क्षेत्रो मे था तथा यहाँ की सास्कृतिक तथा राजनैतिक गतिविधियाँ सपूर्ण भारत को प्रभावित करती थीं। जैन तथा बौद्ध परम्परा की कार्य-स्थली रहने के कारण दोनो धर्मावलम्बी इसे पूज्य तथा पवित्र क्षेत्र मानते हैं।

किन्तु वैदिक परम्परा मे तीर्थयात्रा के उद्देश्य को छोड अन्य किसी कारण से इस क्षेत्र मे प्रवेश करने के निषेध की बात मिलती है। यहाँ अधिक समय तक निवास करने से प्रायश्चित्त करने का विधान भी है। समय के साथ अपनी सीमाओं के विस्तार तथा सकोचन के बावजूद वर्तमान के बिहार प्रान्त को प्राचीन मगध देश कहा जा सकता है।

श्रेणिक राजा–शिशुनाग वशीय मगध सम्राट्। राजा प्रसेनजित का पुत्र तथा अजातशत्रु कुणिक का पिता। अन्य नाम–बिम्बिसार, भिभिसार तथा भभासार।

स्वप्न–लगभग सभी प्राचीन भारतीय परम्पराओ मे यह मान्यता है कि जब कोई महापुरुष अपनी माता के गर्भ मे आता है तब उसकी माता श्रेष्ठ स्वप्न देखती है। सभी परम्पराओं मे स्वप्न-फल वेत्ताओं का तथा अष्टागनिमित्त वेत्ताओं का उल्लेख है। स्वप्न-फल अष्टागनिमित्त का एक अंग है। जैन मतानुसार बहत्तर स्वप्न होते है जिनमे बयालीस सामान्य स्वप्न तथा तीस महास्वप्न होते हैं। अरहत तथा चक्रवर्ती की माताएँ इन महास्वप्नो मे से चौदह महास्वप्न-विशेष देखती है। वासुदेव की माताएँ इन चौदह स्वप्नो मे से सात स्वप्न देखती है। इसी प्रकार बलदेव की माता चार तथा माण्डलिक राजा की माता एक स्वप्न देखती है। इस सबध मे अनेक प्राचीन ग्रन्थो मे विस्तार उपलब्ध है, जैसे–सुश्रुतसहिता के शरीर स्थान का तेतीसवाँ अध्याय, ब्रह्मवैवर्त पुराण-जन्मखड–अध्याय-७, भगवतीसूत्र–शतक ६, उद्देशक ६ आदि। प्राचीनकाल मे स्वप्नशास्त्र का विधिवत् अध्ययन किया जाता था तथा इसके फलाफल बताने वाले स्वप्न पाठक कहे जाते थे। स्वप्न के सम्बन्ध मे आधुनिक मनोविज्ञान भी बहुत गहराई से अनुसधान कर रहा है। अनेक पाश्चात्य लेखको ने स्वप्न शास्त्र को पग-मनोविज्ञान की एक स्वतत्र विधा मानकर इस पर कई ग्रन्थ लिखे है।

अष्टागनिमित्त-भविष्य विषयक अनुमान मे सहायक विद्या। इसके आठ अग हैं–(१) भौम (भूकप आदि), (२) उत्पात (प्राकृतिक उत्पात), (३) स्वप्न, (४) अतरिक्ष, (५) आग (शरीर के अगो से सबधित), (६) स्वर (पक्षियो आदि की ध्वनियाँ), (७) लक्षण (स्त्री, पुरुष आदि के लक्षण), (८) व्यजन (शरीर पर के चिन्ह, तिल, मस्से आदि)। इन विषयो की विस्तृत जानकारी वराहमिहिर की वृहत सहिता मे उपलब्ध है।

जाति–मातृ वश, कुल–पितृ वश

कौटुम्बिक पुरुष–निकट के नौकर या विशेष नौकर। वैसे इस शब्द का अर्थ पारिवारिक लोग होता है। किन्तु जिस अर्थ मे इसका प्रयोग हुआ है वह परिवार के कार्यकर्त्ताओं से सबधित है। ऐसा लगता है कि विशेष सेवाओ के लिए दूर-निकट के सबधियो को अथवा राजवशीय लोगो को नियुक्त किया जाता रहा होगा अत यह शब्द इस अर्थ मे प्रयुक्त होने लगा। ये लोग वैतनिक पर स्वतत्र कर्मचारी रहे होगे क्रीतदास नही, जैसे दास चेट होते थे।

दोहद–द्विहद या दो हृदय। गर्भावस्था मे स्त्री दोहृदयवाली होती है, एक अपना, एक गर्भस्थ शिशु का। अत गर्भिणी स्त्री को जो विशेष इच्छाएँ, कामनाएँ उत्पन्न होती हैं उन्हे दोहद (दोहला/डोहला) कहा जाता है। ये इच्छाएं गर्भावस्था के तीसरे माह मे उत्पन्न होती हैं और ऐसी मान्यता है कि इन्हें पूर्ण न करने से स्त्री तथा उसके गर्भ को हानि पहुँचती है। अत परिवार वालो का यह कर्त्तव्य होता है कि दोहद पूरे किये जाय। दोहद से गर्भस्थ शिशु के गुण-स्वभाव का अनुमान भी किया जाता है। प्राचीन धार्मिक साहित्य जैन, बौद्ध, वैदिक ग्रन्थो मे दोहद की अधिक घटनाएँ आती है। (विस्तृत सूचना-सुश्रुत सहिता–शरीर स्थान–अध्याय ३)

वैक्रिय समुद्घात--परिस्थिति विशेष मे विशिष्ट गुण सम्पन्न आत्माएँ अपने आत्म-प्रदेशो का विस्तार करती है और आवश्यक पुद्गलो का चयन कर आत्म-प्रदेशों का पुन सकोचन कर इच्छित शरीर धारण करती है। इस क्रिया को वैक्रिय समुद्घात तथा इस शरीर को उत्तर-वैक्रिय शरीर कहते हैं। योगसूत्र मे इससे मिलती-जुलती क्रिया को निर्माणचित्त तथा निर्माणकाय कहा है। वायुपुराण मे भी इस विषय के उल्लेख मिलते है। इस विषय का विस्तृत विवरण पन्नवणासूत्र के ३६वे पद मे तथा भगवतीसूत्र के दूसरे शतक के दूसरे उद्देशक मे मिलता है। यह देव एव नारको मे जन्मजात तथा मनुष्यो मे तपोलब्धि से प्राप्त होता है।

सेचनक हाथी--श्रेणिक राजा का पट्टहस्ती--मुख्य हाथी। कुणिक ने इसी हाथी को लेने के लिये महाशिला कटक सग्राम लडा था और इस सग्राम मे लिच्छवी तथा मल्ल गणराज्यो को पराजित किया था। जैन साहित्य मे इससे जुडी अनेक घटनाएँ प्रसिद्ध है।

अठारह जाति-प्रजाति--कार्य विशेष मे जुटे समूह का नाम जाति है तथा उनसे जुडे अन्य समूहो के नाम प्रजाति या उपजाति हैं। जबूद्वीप प्रज्ञप्ति मे अठारह जातियो के दो विभाग हैं--नौ नारू तथा नौ कारू। **नारू**--(१) कुम्हार, (२) पट्टहल्ल (पटेल), (३) सुवर्णकार या सोनी, (४) सूपकार या रसोइया, (५) गाधर्व (सगीतज्ञ), (६) काश्यपक (नाई), (७) मालाकार या माली, (८) कच्छकर, तथा (९) तम्बोली। **कारू**--(१) चमार, (२) यत्रपीडक--तेली, (३) गधिअ (गाधी या बास फोड), (४) छिपाय या छीपा, (५) कसकार या कसारो, (६) सीवग--दर्जी, (७) गुआर, (८) मिल्ल तथा (९) धीवर--मछियारा।

उग्र--आरक्षक, रखवाले, दड देने वाले या ऐसे ही अन्य उग्र कार्यो मे पारम्परिक रूप से प्रवृत्त क्षत्रिय।

भोग--पारम्परिक रूप से गुरू स्थान पर रहे क्षत्रिय।

राजन्य--दीर्घ आयु वाले क्षत्रिय।

प्रशस्तार--धर्मशास्त्रों के अध्यापक।

मल्ल अथवा मल्लकी--वश विशेष का नाम। बौद्ध-साहित्य मे इन्हे मल्ल कहा है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र मे मल्लक कहा है। जैन सूत्रो मे काशी के नव-मल्लकी गण राजाओ का उल्लेख मिलता है।

लिच्छियी--वश विशेष का नाम। बौद्ध लिच्छवी, कौटिल्य--लिच्छवीक, जैन लेच्छकी। कौशल के नव-लेच्छकी गणराजा।

इश्वर--युवराज, अणिमा आदि सिद्धियो के धारक।

तलवर--राजा द्वारा भूमि का पट्टा देकर सम्मानित व्यक्ति, जागीरदार।

माडलिक--जिस भू-भाग के निकट बस्ती या गॉव न हो उसे मडल कहते हैं। ऐसे स्थल के मालिक को मांडलिक कहते हैं। इसका पाठ-भेद माडविक है--मडप के मालिक।

इभ्य--जिसके धन के ढेर से हाथी ढका जाय ऐसा समृद्धिवान।

श्रेष्ठी--श्री अथवा लक्ष्मी के पट्ट को सर पर बॉधने वाले अथवा धन की पूजा करने वाले।

कुत्रिकापण--यह शब्द कु + त्रिक् + आपण इन तीन शब्दो से बना है। कु का अर्थ है पृथ्वी, त्रिक् का अर्थ है तीन, आपण का अर्थ है दुकान। अर्थात् जिस दुकान पर तीनो लोको की दुर्लभ वस्तुएँ अथवा सभी वस्तुएँ हो। वर्तमान का डिपार्टमेन्टल स्टोर।

APPENDIX

Anga country—According to the Mahabharat this was a state founded by king Anga, the son of the demon king Bali According to the Jain mythology it was the state ruled by Anga, the son of Bhagavan Rishabh Dev As mentioned in the Shakti-Sangam-Tantra the area between Vaidyanath and Bhuvaneshvar is recognized as Anga country According to the modern political geography most of Orissa, parts of southern Bihar and parts of southern West Bengal put together may be termed as ancient Anga country

Champa city—The capital city of ancient Anga country According to the stories from Bhagavat this city was founded by the great grandson of the famous king Harishchandra According to the Jain mythology this should be a very ancient town but it appears to have been deserted in some remote past Disturbed by the death of his father King Shrenik, king Kunik found Rajagriha a haunted place As such he found a suitable place and founded a new town As this was near a beautiful Champa tree he named it Champa Other names of this city are—Angapuri, Malini, Lomapradpuri and Karnapuri Like the Vedics and the Jains, Buddhists also consider this a place of pilgrimage According to the ancient Jain travelogues this place is approximately two hundred miles east of Patna and thirty two miles south of this place is situated the famous pilgrimage centre Mandargiri, near the present day Mandar Hill railway station Today Champa city is known as Champanala situated three miles away from Bhagalpur Naath Nagar is also nearby

(King) Kunik—Grandson of King Prasenjit of Magadh and son of the famous emperor Bimbasar Shrenik His mother was Chellana or Chelana who was the eldest daughter of the president of the Vaishali republic, king Chetak, the maternal uncle of Bhagavan Mahavir In the Buddhist literature as well as Indian history Kunik is better known as Ajatshatru In the Jain literature he has also been mentioned as Ashoka Chandra Vajji Videhputra and Videhputra He was a deeply devoted follower of Bhagavan Mahavir He was a great warrior He defeated the Vaishali republic and became the undisputed monarch of almost the whole of eastern India (5-6 B C)

Sudharma Swami (Ganadhar or chief-disciple)—Sthavir Arya Sudharma, belonging to the Agnivaishayan clan was the fifth chief-disciple of Bhagavan Mahavir Nine of his Chief-disciples had already attained omniscience and nirvana before the nirvana of Bhagavan Mahavir Gautam Swami became omniscient immediately after the nirvana of Bhagavan Mahavir An omniscient, as a rule, is never a carrier of any tradition as such the responsibility of carrying on the tradition established by Bhagavan Mahavir came to Sudharma Swami He was an exemplary scholar and spiritualist of his times It was he who created the twelve canons (Dwadashangi) on the basis of the tri-facet principle (tripadi) propagated by Bhagavan Mahavir These canons are the source-books of all knowledge for the Jain tradition He became omniscient twelve years after the nirvana of Bhagavan Mahavir (A N M) or 458 B V (Before Vikram calendar), or 514 B C and got liberated in 20 A N M (450 B V 506 B C)

Jambu Swami—The successor of Sudharma Swami as the head of the religious order established by Bhagavan Mahavir was Jambu Swami He was born in a merchant family of Rajagriha in the year of the nirvana of Bhagavan Mahavir When he was sixteen year old he became detached after listening to a discourse of Sudharma Swami Due to intense pressure from his parents although he married but during the first night he gave a spiritual discourse to his eight wives A notorious thief, Prabhav, who had entered Jambu's house, also happened to listen to this discourse This thief also got detached, and the next morning when Jambu got initiated into the order by Sudharma Swami, Prabhav and his fellow thieves, all including 527 persons, joined him and became ascetics For twelve years Jambu thoroughly studied all the canons under the tutelage of Sudharma Swami After Sudharma Swami became omniscient Jambu succeeded him as the head of the order Jambu became omniscient in 20 A N M and got nirvana in 64 A N M (462 B C) Jambu Swami is believed to be the last omniscient of this cycle of time

Chaitya—A monument constructed at the place of cremation As mentioned in Aupapatik Sutra the area of a Chaitya was used for practice, experimentation, and demonstration of various performing arts like acrobatics, dance, etc besides the religious rituals like Yajna, fire-offerings, etc Some commentators have also termed it as Vyantarayatan or abode of lesser gods In modern context Chaitya is not a term denoting a specific building, it denotes a comparatively larger area having temple, place of stay for ascetics, and other such constructions and facilities within it, in other words a religious complex

Rajagriha—An important place of pilgrimage for Jains and Buddhists where Bhagavan Mahavir and the Buddha spent numerous monsoon-stays According to the Jain scriptures there occurred more than 200 Samavasarans (religious assembly) of Bhagavan Mahavir in Rajagriha He usually stayed in Gunasheel, Mandikuccha, and Mudgarpani gardens According to the Mahabharat it was the capital city of Magadh during the reign of Jarasandh There are five hills around this picturesque city There names are—in Jain tradition—Vaibhar, Vipul, Udaya, Suvarna, and Ratnagiri, in Vayupurana (a Vedic scripture)—Vaibhar, Vipul, Ratnakoot, Girivraj, and Ratnachal, and in the Mahabharat—Vaihar, Varaha, Vrishabh, Rishigiri, and Chaityak Because of this proximity with so many hills Rajagriha was also known as Girivraj (cluster of hills) There is a mention in the Avachurni (philological commentary) of the Avashyakaniryukti that in the remote past a town named Kshitipratishthita existed here When it was ravaged by time king Jitshatru founded another town named Chanakpur in the same area Passing centuries saw Rishabhpur and Kushagrapur at that place Lastly king Prasenjit (father of Shrenik) founded Rajagriha Mention of the famous hot-springs of this town can be found in the travelogues of the famous Chinese travelers Fahyan and Huentsang besides the Jain and Buddhist literature Today this town is known as Rajgiri The remains of the famous Nalanda Institute stand a few kilometers north-east of this place

Magadh—The Kikat country of the Rigveda In the Atharvaveda it is mentioned as Magadh In the Pannavana Sutra (a Jain scripture) Magadh comes first in the list of Arya countries This area was among the most prosperous during the ancient times The political and cultural activities of this area influenced the whole country in those

days As it was the area where the Jain and the Buddhist cultures flourished it is considered a pious and revered area by both these traditions However, in the Vedic tradition there are mentions that it is prohibited to enter this area for any purpose other than pilgrimage Mention of procedures of ritual penitence for a forced stay for a longer period can also be found In spite of the contracting and expanding of its boundaries with the passage of time the present state of Bihar roughly covers the area that was known as Magadh in the remote past

(King) Shrenik—Emperor of ancient Magadh, belonging to the Shishunaag family Son of king Prasenjit and father of Ajatshatru Kunik Other names—Bimbisar, Bhimbhisar, and Bhambhasar

Dreams—In almost all ancient Indian traditions there was a belief that whenever a great soul descends into the womb, the mother has auspicious dreams In almost all traditions there are mentions of dream-diviners and augurs Dream divining is a part of the Ashtanga Nimitta or the eight pronged science of augury In the Jain tradition there are seventy two types of dreams, out of which forty two are known as common dreams and the remaining thirty as great dreams When an Arihant or a Chakravarti is conceived, his mother sees fourteen of the thirty great dreams When a Vasudev is conceived his mother sees any seven out of these fourteen dreams When it is a Baldev in the womb the mother sees any four of these fourteen dreams When it is a Mandalik Raja (regional sovereign) in the womb the mother sees any one of these fourteen dreams Details on this subject can be found in many ancient works, some of which are—Sushrut Samhita thirty third chapter of the section Sharirasthan, Brahmavaivarta Purana - chapter seven of the Janma section, and Bhagavati Sutra-Shatak 6 of Uddeshak 6 During those days this subject was properly and thoroughly studied Those who practiced this were known as dream-diviners The modern discipline of psychology is also indulging in profound study and research on this subject Many western scholars have written books on the subject of dreams establishing it as an independent area in the field of para-psychology

Ashtanga Nimitta—The field of study that deals with prediction of future It has eight sections—1 Bhaum (relating to the earth, like earth-quake), 2 Utpat (natural calamities), 3 Swapna (dreams), 4 Antariksh (sky or space), 5 Aanga (parts of the human body), 6 Swara (sound, sounds emitted by birds etc), 7 Lakshan (attributes of man, woman, animals, etc), 8 Vyanjan (marks on the body, like warts, birth marks, etc) Detailed information on these subjects is available in the Vrihat Samhita of Varah Mihir

Kautumbik Purush—Personal aides or servants The literal meaning of this term is family members or relatives But here it has been used to represent family workers It seems that for special, important, confidential, and personal duties it must have been a norm to appoint relatives Thus this term acquired this particular meaning These people must have been salaried employees but otherwise independent and not slaves or bonded labours

Dohad—The literal meaning of this term is 'having two hearts' When a woman is pregnant she is in this state She has two hearts, one her own and the other that of the fetus A pregnant woman gets some cravings during the second or third month of her pregnancy, these pregnancy desires are known as Dohad or Dohala It is believed

that if these desires are not fulfilled it is damaging to the fetus. As such it is the duty of the family members to help the pregnant woman fulfill these desires. The Dohad also helps to know the attributes and qualities of the child to be born. Stories about Dohad are very common in the religious literature of Jain, Buddhist, as well as the Vedic traditions (detailed information is available in Sushrut Samhita, Chapter 3 of the Sharirasthan section).

Vaikriya Samudghat—Under specific circumstances some accomplished souls expand the constituent sections of their soul (Atma-pradesh) in relation to the matter particles. They then choose some potent and required class of matter particles and contract the soul sections to attain a desired form or body. This process is known as Vaikriya-Samudghat and the body thus formed is known as the Uttar-Vaikriya body. A similar phenomenon or process is also mentioned in Yogasutra where the process is called Nirmanachitta and the body Nirmanakaya. Vayupurana has also discussed this subject. Detailed information is available in the 36th chapter of Pannavana Sutra and the second chapter of the second Shatak of Bhagavati Sutra. This capacity is natural for the gods and the hell beings but acquired in case of the human beings.

Sechanak Elephant—The best among the elephants owned by king Shrenik. Ajatshatru Kunik fought the famous Mahashila-Kantak war for this elephant. This was the war that saw the end of the republics of Licchivi and Malla. Jain literature contains many a tales connected with this elephant.

Castes and sub-castes (eighteen)—Group name of people occupied in specific trades and professions is termed as caste, and the group name of people affiliated with a particular caste is termed as sub-caste. In Jambudveep Prajnapti there are two groups of the then recognized eighteen castes. One group is Naru having nine castes and the other is Karu having the remaining nine. The complete list is - NARU—1 Kumhar (potter), 2 Pattahal or Patel (farmer), 3 Suvarnakar or Soni (goldsmith), 4 Soopkar (cook), 5 Gandharva (musician), 6 Kashvapak or Nai (barber), 7 Malakar or Mali (gardener), 8 Kacchakar and 9 Tamboli (beetle leaf vendor). KARU - 1 Chamar (cobbler), 2 Yantrapeedak or Teli (oil extractor), 3 Gandhi or Baansphod (perfume maker), 4 Chhimpaya or Chheepa (textile printer), 5 Kanskaar or Kansaro (maker of metal utensils), 6 Seevang or Darji (tailor), 7 Guar, 8 Milla and 9 Dheevar (fisherman).

Kutrikapan—A place where everything from everywhere is sold, a departmental store.

Licchivi—A clan name of Kshatriyas. In the Buddhist literature the name is Licchivi. In the Arthashastra of Kautilya they are mentioned as Licchavik. In Jain literature there are mentions of the Nava-Lecchaki republic kings (head of the republic) of the Kaushal country.

Malla or Mallaki—A clan name of Kshatriyas. In the Buddhist literature the name is Malla. In the Arthashastra of Kautilya they are mentioned as Mallak. In Jain literature there are mentions of the Nava-Mallaki republic-kings (head of the republic) of the Kashi country.

■■

द्वितीय अध्ययन : संघाट : आमुख

शीर्षक–सघाडे–सघाट–बाँधा हुआ या जोडा हुआ। एक परिस्थिति विशेष और उस परिस्थिति से जुडे सभी कर्त्तव्य कार्यों को इस कथानक मे समझाया है। आत्मा और शरीर का बधन एक नैसर्गिक बधन है इस पर किसी का जोर नही चलता। आत्मा जब इस बधन से मुक्त होने के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है तब उसे इस जुडाव का आभास होता है। इस भेद दृष्टि (भेदविज्ञान) की समझ आने पर वह देख पाता है कि शरीर के लिये किये सभी कार्यो मे प्रवृत्त होना उसका आपद् कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य को यदि वह आसक्त भाव से करता है तो कर्मबधन को प्रेरित करता है और यदि आपाद् धर्म समझ निरासक्त भाव से करता है तो मुक्ति की ओर गति करता है। इस महत्त्वपूर्ण बात को धन्य सार्थवाह और विजय चोर के रोचक कथानक द्वारा समझाया गया है।

कथासार-राजगृह नगर मे धन्य सार्थवाह निवास करता था। उसकी भार्या का नाम भद्रा था। अनेक वर्षो के विवाहित जीवन के पश्चात् भी वह निस्सन्तान थे। भद्रा ने पुत्र-प्राप्ति हेतु एक बार नगर के बाहर स्थित अनेक देवालयो मे जाकर यथाविधि पूजा की और मन्नत मानी। उसकी कामना पूरी हुई और कुछ दिनो बाद वह गर्भवती हो गई। यथा समय पुत्र-जन्म हुआ और उसका नाम देवदत्त रखा गया। देवदत्त की सार-सँभाल व उसे खिलाने–रखने के लिए एक दास-पुत्र रखा गया जिसका नाम पंथक था।

राजगृह नगर मे ही विजय नाम का एक क्रूर और लालची चोर रहता था। एक दिन पथक बालक देवदत्त को गोद मे लेकर घर से बाहर गया और उसे एक स्थान पर बैठा वह स्वय अन्य बालको के साथ खेलने लगा। तभी विजय चोर उधर आ निकला। उसने आभूषणो से लदे बालक देवदत्त को देखा तो लालच से भर गया। इधर-उधर देखने पर उसने पाया कि पथक का ध्यान खेलने मे है, देवदत्त की ओर नही। विजय ने झट से बालक को गोद मे उठाया और अपनी चादर से ढक लिया। तेजी से वहाँ से भाग गया और नगर से बाहर निकल गया।

नगर के बाहर एक जीर्ण उद्यान मे रहे एक पुराने कुएँ के पास जा उसने बालक के शरीर से गहने-कपडे उतारे और उसकी हत्या कर उसे कुएँ मे डाल दिया। इसके बाद वह पास ही एक घनी काली-तुलसी की झाडी मे छुपकर बैठ गया।

उधर पथक ने धन्य को बच्चे के खो जाने की सूचना दी। धन्य चिन्तित हो नगर-रक्षको के पास गया। बालक की खोज करते नगर-रक्षक नगर के बाहर उस उद्यान मे आये। कुएँ मे झाँकने पर बालक का शव दिखाई दिया। उसे कुएँ से निकाल धन्य को सौपा गया। चोर के पद-चिन्हो पर चलते नगर-रक्षको ने झाडी मे घुस उसे माल सहित पकड लिया। गले से बाँध मारते-पीटते उसे सारे शहर में घुमा कारागार मे बद कर दिया। दुःखी धन्य ने देवदत्त का दाह-सस्कार कर दिया।

कालान्तर मे शत्रुओ की शिकायत पर किसी राजदोष के कारण एक बार धन्य को बन्दी बनाया गया और कारागार मे लाकर उसे विजय चोर के साथ एक ही बेडी (खोडा) से बाँध दिया गया। भद्रा

द्वारा भेजा गया भोजन लेकर जब पथक कारागार मे आया और धन्य भोजन करने लगा तो विजय ने उससे भोजन मॉगा। धन्य ने उसे फटकार दिया और भोजन देने से मना कर दिया।

कुछ देर बाद धन्य को शौचादि की शका हुई तो उसने विजय से एकान्त मे चलने को कहा। विजय ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया। पुन आग्रह करने पर उसने कहा कि धन्य यदि अपने भोजन मे से हिस्सा देने का वादा करे तो वह साथ चल सकता है। विवश धन्य ने वादा कर दिया और तब विजय उसे शका मुक्त होने साथ ले गया।

दूसरे दिन जब पथक भोजन लेकर आया तो धन्य ने अपने भोजन मे से विजय को भोजन कराया। पथक ने घर लौट भद्रा से बताया तो वह धन्य से नाराज हो गई।

कुछ दिनो बाद धन्य ने दण्ड स्वरूप राजकोष मे धन दिया और कारागार मे मुक्त होकर घर लौटा। सभी ने उसका स्वागत किया किन्तु उसकी पत्नी उससे रुष्ट रही। भद्रा ने जब उससे बात भी नहीं की तो उसने कारण पूछा। भद्रा ने कहा कि उसने अपने भोजन मे से अपने पुत्रहन्ता को भाग दिया इस कारण वह रुष्ट थी। धन्य ने उसे समझाया कि विजय को भोजन देने के पीछे धन्य की अपनी शारीरिक आवश्यकता थी–मजबूरी, अन्य कोई कारण नही। भद्रा ने यह बात समझी कि शरीर की आवश्यकता हेतु आपाद् धर्म निभाना दोषपूर्ण नही है। कालान्तर मे धन्य सार्थवाह ने दीक्षा ली और अपनी आराधना के फलस्वरूप सौधर्म देवलोक मे जन्म लिया। वहॉ से महाविदेह क्षेत्र मे जन्म ले मोक्ष मे जायेगा।

SECOND CHAPTER SANGHAT · INTRODUCTION

Title—Sanghade or Sanghat means tied together or joined together This story deals with a particular situation and the duties and activities connected with it The connection between body and soul is a natural one and no outer force can intervene When the soul steps on the path of freedom it becomes aware of this tie When this sense of discrimination dawns, it becomes aware of the fact that all the essential activities connected with the body are guided by the natural and imperative needs If it discharges its duty with an indulgent attitude the soul is doomed to attract Karmas, however, if it does the same considering it to be an imperative need or with a detached attitude the soul progresses toward liberation This important principle has been explained with the help of this interesting tale

Gist of the Story—In Rajagriha lived a merchant named Dhanya and his wife Bhadra Even after a long and happy married life they had no offspring To be blessed with a child Bhadra once went to some temples outside the town to worship various deities After some days her wish was fulfilled and Bhadra became pregnant At the proper time she gave birth to a male child who was named Devdutt A slave boy named Panthak was appointed to look after the child

One day Panthak took Devdutt in his arms and went out of the house He came to the highway, placed Devdutt carefully on one side and got absorbed in playing with other children In the city of Rajagriha lived a greedy and cruel thief named

Vijaya This thief arrived there and saw child Devdutt richly adorned with ornaments He became mad with greed Furtively he looked around and found that slave Panthak was inattentive towards the child He quickly picked up the infant in his arm and covered it with his shawl

He rushed away from that spot, came out of the city and arrived near a broken well in a ruined garden There he killed the infant and took all its cloths and ornaments He threw the dead body of the infant in that broken well Then he went and hid himself into a nearby thicket

Panthak returned and informed Dhanya merchant that the boy was lost Getting this information Dhanya merchant was shocked He approached the police force Immediately on getting the report the police force launched a search When they came near the broken well inside that ruined garden and looked down into the well they saw the limp dead body of Devdutt The body was taken out from the well and handed over to Dhanya merchant Overwhelmed with sorrow, Dhanya merchant cremated the dead body

Trekking the foot-prints left by the absconding thief the policemen reached that dense thicket and caught Vijaya red handed with the stolen goods They tied his neck with a rope, paraded him in the town thrashing him with whips and canes and imprisoned him

Once, accused by some adversaries Dhanya was apprehended and imprisoned He was put in the same prison and shackled jointly with Vijaya thief Bhadra sent food in the prison with Panthak When Dhanya started eating Vijaya asked for something to eat Dhanya refused angrily

After some time Dhanya wanted to relieve himself He requested Vijaya to accompany him to a secluded spot to enable him to relieve himself Vijaya refused After sometime Dhanya repeated his request This time Vijaya said that if Dhanya agreed to share the food he would accompany Dhanya was forced to agree Vijaya now accompanied him to a secluded spot and Dhanya relieved himself

Next morning when Panthak served the food Dhanya merchant shared it with Vijaya Panthak informed of this to Bhadra when he returned home Bhadra became displeased with Dhanya merchant

Later Dhanya paid the fine and got himself released from the prison When he returned home all but his wife greeted him with joy When Dhanya asked for the reason of her reticence Bhadra informed that she was angry because he had shared the food she sent with the killer of her son Dhanya explained that he shared the food with the killer for no other purpose but to satisfy the needs of his body Bhadra was pleased and satisfied with this explanation

In the later part of his life Dhanya got initiated and earnestly followed the ascetic discipline Finally he accepted the ultimate vow and after a one month fast he breathed his last and was reborn as a god in the Saudharma dimension He shall be reborn as a human being in the Mahavideh area and shall attain liberation ending all the sorrows during the same birth ■■

बीयं अज्झयणं : संघाडे
द्वितीय अध्ययन : संघाट
SECOND CHAPTER : SANGHAT : THE UNION

सूत्र १. जइ णं भंते ! समणेण भगवया महावीरेण पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, बिइयस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?

सूत्र १. जम्बू स्वामी पूछते हैं–"भते ! श्रमण भगवान महावीर द्वारा बताये गए प्रथम ज्ञाताध्ययन के इस अर्थ के पश्चात् कृपया बतावें कि उन्होने दूसरे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante ! What is the meaning of the second chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समए ण रायगिहे णाम नयरे होत्था, वन्नओ। तत्थ ण रायगिहे णयरे सेणिए राया होत्था महया वण्णओ। तस्स ण रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नाम चेइए होत्था, वन्नओ।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी कहने लगे–हे जम्बू ! ऐसा वर्णन है कि काल के उस भाग मे राजगृह नामक एक नगर था और उसके बाहर गुणशील नामक चैत्य। राजगृह पर राजा श्रेणिक राज्य करते थे। (विस्तृत वर्णन पूर्व सम)।

2. Sudharma Swami replied—Jambu ! It is said that during that period of time there was a town named Rajagriha Outside this town was a temple named Gunashil Chaitya King Shrenik was the king of Rajagriha (details as before)

उजाड़ उद्यान

सूत्र ३. तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामते एत्थ णं महं एगे पडिय-जिण्णुज्जाणे यावि होत्था, विणट्ठदेवकुले परिसाडिय तोरण-घरे नाणाविह-गुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छ-च्छाइए अणेगवालसयसकणिज्जे यावि होत्था।

तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं मह एगे भग्गकूवए यावि होत्था।

तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होभासे जाव रम्मे महामेहनिउरंबभूए बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि य खाणुएहि य संछन्ने पलिच्छन्ने अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेग-वालसयसकणिज्जे यावि होत्था।

सूत्र ३ उस चैत्य के आसपास एक अन्य अति विशाल, जीर्ण टूटा-फूटा उद्यान था। उस उद्यान मे रहा देवगृह कभी का खडहर हो चुका था। उसके द्वार तथा तोरण व गृहादि ढह गये थे। उसमें अनेक झुरमुट, झाडियाँ, लताएँ, वल्लियाँ, वृक्ष आदि जहाँ-तहाँ उग आये थे और सैंकडो सॉप आदि जीव रहने लगे थे। बड़ा भयानक था वह स्थान।

उस उद्यान के बीचोंबीच एक टूटा-फूटा पुराना कुआँ भी था।

उस कुएँ के पास एक स्थान पर मालुका (काली तुलसी) के पौधों का एक झुरमुट था जो काला रग और कृष्ण आभा लिये था और महामेघों के समूह जैसा सुरम्य लगता था। वह झुरमुट बहुत से पेड, झाडियों, पौधों, लताओं, घास और ठूँठ आदि से भरा और सघन था। उसके भीतर खाली स्थान था पर बाहर से वह घना दिखाई देता था। उसके भीतर अनेक सर्पादि हिंस्र जीवो के रहने से वह और भी भयावह और आशंकाजनक हो गया था।

DESOLATE GARDEN

3. Near the temple there was a large, desolate and ruined garden. The temple in that garden was in ruins since long The gates, arches, and rooms of that temple had collapsed Bushes, shrubs, vines, creepers, and wild trees had grown here and there and hundreds of creatures like snakes had made it their abode The place had an ominous look

There was an old and broken well at the centre of the garden

Near that well there was a thicket of black Tulsi plants It had a beautiful black colour and hue and it looked as attractive as a cluster of black clouds That thicket was dense and filled with numerous bushes, shrubs, vines, creepers, and wild trees as well as grass and stumps Although it had open space in the middle, from outside it looked impenetrable As numerous dangerous creatures like snakes lived within, it was fearsome and awe-inspiring.

धन्य व भद्रा

सूत्र ४. तत्थ ण रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्तपाणे। तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स भद्दा नाम भारिया होत्था, सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पचिंदियसरीरा लक्खण-वंजणगुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुदरगी ससिसोमागारा कंता पियदसणा सुरूवा करयलपरिमिय-तिवलियमज्झा कुडलुल्लिहिय-गडलेहा कोमुइरयणियरपडिपुण्णसोमवयणा सिगारागार-चारुवेसा जाव पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था।

सूत्र ४ राजगृह नगर मे धन्य नामक एक सार्थवाह रहता था। वह बहुत धनवान और तेजस्वी था तथा उसके घर मे विपुल भोजन बनता था। उसकी पत्नी का नाम भद्रा था। वह सुकुमार शरीरा तथा पचेन्द्रिय परिपूर्ण थी। उसकी देह मान, उन्मान और प्रमाण से सुगठित व सर्वाग सौन्दर्यवान थी। चन्द्रमा जैसी सौम्य कान्ति लिए वह सुदर्शना और रूपवती थी। मुट्ठी मे समा जाय ऐसी क्षीण थी उसकी कटि और उस पर तीन सल पडते थे। उसके कुडल कधो को छूते थे और मुखमण्डल पूर्णिमा के चॉद जैसा खिला हुआ और स्निग्ध था। वह चारु वसना और शृगार का आगार थी। ऐसी त्रिपुर सुन्दरी होने पर भी वह सन्तानहीन वध्या थी। उसके अपने जानु और कोहनियॉ ही उसके पयोधरो का स्पर्श करने वाली सन्ताने थी।

DHANYA AND BHADRA

4. In Rajagriha lived a merchant named Dhanya He was very rich and influential Large quantity of food was cooked in his kitchen The name of his wife was Bhadra Her body was fully developed, perfectly proportioned, delicate, and beautiful With a moon like glow she was attractive and charming There were three line-like folds on her abdomen and her slim waist could be held in a fist Her dangling earrings touched her shoulders Her face was fresh and smooth like moon She was enchantingly dressed and richly embellished Although an exquisite beauty, she was barren having no offspring The only child like touch to her breasts was provided by her own thighs and arms

सूत्र ५. तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पथए नाम दासचेडे होत्था, सव्वगसुदरगे मसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था।

तए ण से धण्णे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूण नगर-निगम-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मतेसु य जाव चक्खुभूए यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु जाव चक्खुभूए यावि होत्था।

सूत्र ५ धन्य सार्थवाह के यहाँ पथक नामका एक दास-पुत्र था। वह सर्वांग सुन्दर और पुष्ट देह वाला था तथा बच्चों को खिलाने मे कुशल था।

धन्य सार्थवाह राजगृह नगर में रहने वाले अनेक व्यापारियो, सेठों, सार्थवाहो तथा अठारह जातियो तथा उनकी उपजातियो के विविध कर्मों मे, पारिवारिक समस्याओं व मत्रणाओ मे उसी प्रकार मार्गदर्शक के रूप मे आदर पाता था जैसे अपने कुटुब के ऐसे ही कार्यों मे।

5. Dhanya merchant had a boy-slave named Panthak He was well proportioned and healthy and was expert in child care

As he did in such matters in the family, Dhanya merchant also enjoyed a high reputation as a trouble shooter and counselor for social and other matters and problems in the trading community as well as all the eighteen castes and sub-castes

विजय चोर

सूत्र ६. तत्थ ण रायगिहे नगरे विजए नाम तक्करे होत्था, पावे चडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्त-नयणे खर-फरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असपुडियउट्ठे उद्धय-पइन्न-लबंत-मुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निससइए निरणुकपे अहिव्वएगतदिट्ठिए, खुरे व एगंतधाराए, गिद्धे व आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी, जलमिव सव्वगाही, उक्कंचण-वंचणमाया-नियडि-कूडकवड-साइ-सपओगबहुले, चिरनगरविणट्ठ-दुट्ठसीलायारचरित्ते, जूयपसगी, मज्जपसगी भोज्जपसगी, मसपसगी, दारुणे, हिययदारए, साहसिए, सधिच्छेयए, उवहिए, विस्सभघाई, आलीयगतित्थभेय-लहुहत्थसपउत्ते, परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे, तिव्ववेरे,

रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिडिओ य खडिओ य नगरनिद्धमणाणि य सवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तद्दारट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिघाडगाणि य तियाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य

जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पाणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स सदुक्खियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्ग च छिद्द च विरह च अन्तर च मग्गमाणे गवेसमाणे एव च ण विहरइ।

बहिया वि य ण रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य, उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरिणी-दीहिया-गुजालिया-सरेसु य सरपतिसु य सरसरपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवएसु य मालुया कच्छएसु य सुसाणेसु य गिरिकन्दर-लेण-उवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव अन्तरं मग्गमाणे गवेसमाणे एव च ण विहरइ।

सूत्र ६ राजगृह नगर मे विजय नाम का एक चोर था। वह बडा पापी, चाण्डाल जैसा और जघन्य क्रूर कर्म करने वाला था। उसकी आँखे क्रोधी व्यक्ति की आँखो जैसी लाल थी। उसकी दाढ़े अतिशय कठोर, विशाल, विकृत और वीभत्स थी। उसके दॉत बडे-बडे थे जिसके कारण दोनो होठ आपस मे मिलते नही थे। उसके सिर के बाल लम्बे और हवा से उडने के कारण बिखरे रहते थे। वह भॅवरे और राहु के समान काला था और दया तथा पश्चात्ताप मे परे। इतना रौद्ररूपी था वह कि देखते ही भय उत्पन्न हो। वह नृशस और दयाहीन था। सर्प के समान एक-दृष्टि वाला अर्थात् क्रूर कर्म मे दृढ निश्चय वाला था। अन्य की वस्तु चोरी करने की उसकी प्रवृत्ति छुरे की धार के समान तीक्ष्ण थी। गिद्ध जैसा मॉस लोलुप तो था ही, वह अग्नि के समान सर्वभक्षी और जल के समान सर्वग्राही भी था। वह उत्कचन (मिथ्या-प्रशसा), वचन (ठगी), माया, पाखण्ड और क्रूर-कपट मे पटु था। वह मिलावट और धोखाधडी मे सिद्धहस्त था। एक लम्बे समय से वह नगर को आतकित किये हुए था। उसका शील, आचार और चरित्र–सभी गर्हित थे। वह जुआ खेलने, मदिरा पीने, भोजन करने और मॉस भक्षण का लोलुप था। वह कठोर, अन्य लोगो को दु ख प्रदान करने वाला, उद्दण्ड, सेध लगाने वाला, मायाचारी, विश्वासघाती और आग लगाने मे बेहिचक था। देवस्थान को नष्ट करने मे नि सकोच और देवद्रव्य हरण करने मे चतुर था। वह पराया धन छीन लेने को सदा तत्पर रहता था और वैर-भावना से भरपूर था।

विजय नाम का यह चोर राजगृह नगर के अधिकतर प्रवेश करने व निकलने के मार्गो, दरवाजो, छोटे व गुप्त द्वार, छिद्र, खिडकियॉ, मोरियाँ, नालियाँ, नये मार्ग आदि स्थानो की खोज लेता रहता था। वह जुए के अड्डे, मदिरालय, वेश्यालयो और उनके प्रवेश स्थलो, चोरो के घर आदि स्थलो की खबर लेता रहता था। चौराहे, तिगहे, चौक तथा अन्य मार्गो

के संधि स्थल, साँप, भूत, यक्षादि के आवास, सभास्थल, प्याऊ, दुकान, सूने मकान आदि स्थानों की गवेषणा करता रहता था, उनके सम्बन्ध में विविध सूचनायें एकत्र करता रहता था। जनसामान्य के सम्बन्ध मे प्रकट और गुप्त सभी सूचनाएँ एकत्र करता रहता था; जैसे—परिवार के सम्बन्ध, रोग, वियोग, व्यसन, राज्य-सकट, लाभ वृद्धि, उत्सव, प्रसव, भोज, यज्ञ, तिथि, पर्व, यात्रा, आवागमन आदि अवसर, जिन पर लोगो के मद्यपान से मत्त, प्रमत्त, व्यस्त, आकुल-व्याकुल, सुख-दु ख में व्यग्र आदि हो जाने की सम्भावना होती है। ऐसी सूचनाओ के आधार पर वह लोगो की छिद्र, एकान्त आदि कमजोरियों का अनुमान लगाता और उचित अवसर का विचार करता रहता था।

विजय राजगृह नगर के बाहर स्थित बाग-बगीचे, उद्यान, विभिन्न प्रकार के बावडे, तालाब, सरोवर, एकाकी उपवन, पुराने कुएँ, झाड़ी-झुरमुट, स्मशान, गुफा, लयन (पाषाण-मण्डप) आदि लोगो के क्रीडास्थलो आदि पर भी नजर रखता था।

THIEF VIJAYA

6. In the city of Rajagriha there was a thief named Vijaya He was a sinful and lowly person indulging in despicable and cruel deeds His eyes were red shot like an angry individual His molars were extremely hard, large, irregular-shaped and ugly He also had large front teeth that did not allow his lips to come together His hair were long and disheveled His complexion was as dark as a bumble-bee or ebonite He was extremely horrifying to look at

He was beyond pity and repentance. He was cruel and without compassion Like a snake he was single minded in his cruel activities His attitude to steal was as sharp as a honed knife Like a vulture he was greedy for flesh Not only that, he was also all-consuming like fire and all- enveloping like water He was an expert of exaggeration, cheating, fraud, hypocrisy, and cruel treachery He was also a crafty adulterer and a vile cheat

The city was under his terror since long His attitude, conduct, and character were despicable He was a compulsive gambler, and a glutton He was callous, oppressive, rude, treacherous, crafty, cheat, and destructive He had no scruples even in destroying or stealing religious property Filled with the venom of vengeance, he was always ready to steal property belonging to others

Vijaya regularly examined various new and old paths and ways of entry and exit, gates, small and concealed doors, holes, windows, sewers, tunnels, etc He frequented places like gambling houses, bars, whore-houses and their approaches as well as the hiding places of thieves He also used to explore as well as collect all possible information about places like road junctions, squares, abodes of snakes, ghosts, lower gods, etc , halls and other places of assembly, water huts, shops, forlorn houses, etc

Besides this, he kept abreast of all activities going on in the town, open or secret, like—family equations, ailments, separations, habits, problems created by state administration, economic windfalls, festivities, child births, feasts, religious ceremonies, festivals, travels and other movements In other words, he was well informed about all such situations when people tend to get drunk, mad, agitated, disturbed, miserable or otherwise abnormal On the basis of such information he would asses the weakness and vulnerability of individuals and look for an opportune moment to take advantage

Vijaya also kept an eye on various picnic spots outside Rajagriha, like parks, gardens, water tanks, ponds, pools, remote woods, old wells, bushes and thickets, cremation grounds, caves, monuments etc

भद्रा की पीडा

सूत्र ७ तए ण तीसे भद्दाए भारियाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि कुडुंबजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–

"अह धन्नेण सत्थवाहेण सद्धिं बहूणि वासाणि सद्द-फरिस-रस-गध-रूवाणि माणुस्सयाइ कामभोगाइ पच्चणुभवमाणी विहरामि। नो चेव ण अह दारग वा दारिय वा पयायामि। त धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे ण माणुस्सए जम्मजीवियफले तासि अम्मयाण, जासि मन्ने णियगकुच्छि-संभूयाइ थणदुद्धलुद्धयाइ महुरसमुल्लावगाइ मम्मणपयंपियाइ थणमूला कक्खदेसभाग अभिसरमाणाइ मुद्धयाइ थणय पिबति। तओ य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छगे निवेसियाइ देन्ति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो पुणो मजुलप्पभणिए। त अह ण अधन्ना अपुन्ना अलक्खणा अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता।"

"तं सेयं मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धण्णेण सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहु विउलं असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता सुबहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधी-परिजण-महिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया णागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जाणुपायपडियाए एव वइत्तए-"जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारिग वा पायायामि, तो णं अहं तुब्भ जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुबड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइयं उवाइत्तए।"

सूत्र ७ धन्य सार्थवाह की पत्नी भद्रा एक बार लगभग- आधी रात के समय कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता मे मग्न थी। उसके मन मे विचार उठे–

"अनेक वर्ष हुए, मै धन्य सार्थवाह के साथ शब्द, स्पर्श, रस, गन्ध और रूप, पाँचों इन्द्रियो द्वारा मनवाछित कामभोग का आनन्द लेती जीवन व्यतीत कर रही हूँ किन्तु मैंने एक भी पुत्र-पुत्री को जन्म नही दिया है। वे माताएँ धन्यादि (पूर्व सम) है और मै समझती हूँ कि उनका मानव-जीवन सफल हुआ है जो अपनी कोख से जन्मे, स्तनपान करने को आतुर, मीठे और तोतली बोली बोलने वाले, स्तन मूल से कॉख की ओर सरकते मुग्ध शिशु को स्तनपान कराती है और फिर कमल जैसे कोमल हाथो से उठा गोद में बिठा उससे मीठे स्वर मे बतियाती है। मै तो अधन्य हूँ, पुण्यहीन हूँ, अलक्षणा हूँ, अकृतपुण्या हूँ कि इनमे से एक सुख भी नही पा सकी।

"अत मेरे लिये यह श्रेयस्कर होगा कि सूर्योदय होने पर मै धन्य सार्थवाह से अनुमति लेकर देव पूजा की तैयारी करूँ। उसके लिए बहुत से आहार-व्यजनादि तैयार कराऊँ, यथेष्ट पुष्प, वस्त्र, गधमाला और अलकार आदि मॅगवाऊँ, अनेक मित्र, सजातीय, पारिवारिक, स्वजन, सम्बन्धी और परिजनो की महिलाओं को निमन्त्रण दूँ। इन सबको साथ लेकर राजगृह नगर के बाहर स्थित नाग, भूत, यक्ष, इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, शिव और वैश्रमण आदि देवो के आयतन मे प्रतिष्ठित प्रतिमाओ के निकट जाकर उनकी बहुमूल्य पुष्पादि वस्तुओ से पूजा करूँ और उन्हे यथाविधि वन्दन करके प्रार्थना कर वर माँगूं–'हे देवानुप्रिय ! यदि मै एक भी पुत्र या पुत्री को जन्म दूँगी तो तुम्हारी पूजा करूँगी, दान करूँगी, तुम्हारे चढ़वा चढाऊँगी और तुम्हारी अक्षय निधि की वृद्धि करूँगी।' "

BHADRA'S DISTRESS

7. One day while Dhanya merchant's wife, Bhadra, was brooding about family matters, she thought —

"Since many years I have been enjoying my married life with Dhanya merchant satisfying all sexual desires through all the five sense organs of hearing, touch, taste, smell, and vision However, I have not given birth even to a single child In my opinion, those mothers are the blessed ones and their life is fulfilled who breast-feed their own child who is eager to suckle, who sweetly stutters, and who in stupor shifts from the base of the breasts toward the armpit After feeding they lift the baby with their tender and loving hands, put it in the lap and speak to it in their sweet voice I am the wretched one, the cursed, unqualified, and ill-fated one that has been deprived of any of these pleasures

"As such it would be good for me to seek permission from Dhanya merchant and prepare for the worship of gods the first thing in the morning For that I should first get a lot of food and delicacies cooked, arrange for enough flowers, dresses, fragrant flower-garlands, and ornaments, and invite many ladies from families of friends, relatives, prominent citizens and other close acquaintances Taking them along I should go out of the town and visit temples and other such abodes of various deities including Naag, Bhoot, Yaksha, Indra, Skand, Rudra, Shiva and Vaishraman and worship them with all prescribed rituals offering them valuable things like garlands (etc) After this I should pay them homage and seek their blessings —'Beloved of gods ! If I give birth to even one child, male or female, I shall worship you, give charity in your name, and enhance your unlimited wealth by rich offerings ' "

सूत्र ८. एव संपेहेइ, सपेहित्ता कल्ल जाव जलते जेणामेव धण्णे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता एव वयासी-"एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि सद्धि बहूइ वासाइ जाव देन्ति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मजुलप्पभणिए। त ण अहं अहन्ना अपुन्ना अकयलक्खणा, एत्तो एगमवि न पत्ता। त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी विउलं असण पाण ४ जाव अणुवड्ढेमि, उवाइय करेत्तए।"

सूत्र ८ दूसरे दिन प्रात भद्रा धन्य सार्थवाह के पास गई और बोली-"देवानुप्रिय ! मैने आपके साथ अनेक वर्षो का दाम्पत्य जीवन बिताया है पर एक भी सन्तान को जन्म नही दे पाई। अन्य स्त्रियॉ अपने बच्चो को मीठी लोरियॉ सुनाती है पर मै अधन्य, पुण्यहीन

और लक्षणहीन हूँ कि यह सब कुछ नहीं कर पाती। अत. हे देवानुप्रिय ! मैं चाहती हूँ कि आपकी अनुमति से अशन-पान आदि यथेष्ट सामग्री ले जाकर नागादि देवों की यथाविधि पूजा-अर्चना करके मन्नत मानूँ (पूर्वसम)।"

8. Next morning Bhadra went to Dhanya merchant and said, "Beloved of gods ! Since many years I have been enjoying my married life with you but I have not been able to give birth even to a single child Other women sing lullabies to their children but I am the wretched, cursed, unqualified, and ill-fated one that has been deprived of any of the pleasures of motherhood As such, beloved of gods ! I want to have your permission and go for the worship of gods and seek their blessings (details as before) "

सूत्र ९. तए णं धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारिय एवं वयासी-"मम पि य णं खलु देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे-कहं ण तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ? भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणाइ।

सूत्र ९ धन्य सार्थवाह ने उत्तर दिया-"हे देवानुप्रिये ! अवश्य करो ! मेरी भी यह मनोकामना है कि जैसे भी हो तुम सन्तानवती होओ।" ऐसा कहकर धन्य सार्थवाह ने भद्रा को पूजा कर मन्नत मानने की अनुमति दी।

9. Dhanya merchant replied, "Beloved of gods ! Go ahead I also earnestly desire that you bear a child somehow." With these words Dhanya merchant gave his permission to Bhadra to worship deities and seek their blessings

सन्तान के लिए मन्नत

सूत्र १० तए ण सा भद्दा सत्थवाही धण्णेण सत्थवाहेण अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ। उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-गध-वत्थ-मल्लालकार गेण्हइ। गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता रायगिह नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ जाव मल्लालकारं ठवेइ। ठवित्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ। ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ, जलकीड करेइ, करित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइ तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ। गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ। पच्चोरुहित्ता त सुबहु पुप्फगधमल्ल गेण्हइ। गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य जाव वेसमणघरए य तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तत्थ ण नागपडिमाण

य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसि पच्चुन्नमइ। पच्चुन्नमित्ता लोमहत्थग परामुसइ। परामुसित्ता नागपडिमो य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेण पमज्जइ, उदगधाराए अब्भुक्खेइ। अब्भुक्खित्ता पम्हलसुकुमालाए गधकासाईए गायाइं लूहेइ। लूहित्ता महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहण च गधारुहण च चुन्नारुहण च वन्नारुहण च करेइ। करित्ता धूवं डहइ, डहित्ता जाणुपायवडिया पजलिउडा एव वयासी–"जइ णं अहं दारगं वा दारिग वा पयायामि तो णं अहं जायं य जाव अणुवुड्ढेमि" त्ति कट्टु उवाइय करेइ, करित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता विपुल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणी जाव विहरइ। जिमिया जाव सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया।

सूत्र १० अनुमति प्राप्त कर भद्रा प्रसन्न हुई और प्रचुर सामग्री तैयार करवाकर वस्त्रालंकार आदि लेकर घर से बाहर निकली। नगर के बीच से होती वह नदी के किनारे पहुँची और समस्त सामग्री किनारे रखकर नदी मे उतर गई। नदी के जल मे क्रीडादि कर स्नान किया। फिर शुभ अनुष्ठान कर गीले वस्त्र धारण किये नदी मे रहे अनेक प्रकार के कमल लिये और नदी से बाहर निकल आई। अपने साथ लाई सारी सामग्री पुन एकत्र कर देवालयो मे गई, प्रतिमाओं को नमस्कार किया, हाथ मे मोर पख लेकर नीचे झुकी और प्रतिमाओ को साफ किया, जल की धारा से अभिषेक किया, रोएँदार और कोमल कषाय रग के कपड़े से प्रतिमाओं के अग पोछे, वस्त्र पहनाये, पुष्पमाला पहनाई, गध का लेप किया, चूर्ण चढाया, रग चढ़ाया और धूप जलाई। यह सब अनुष्ठान कर घुटने टिकाकर दोनों हाथ जोडकर प्रणाम किया और मन्नत माँगी–"अगर मै सन्तानवती हुई तो आपकी यज्ञ-पूजा आदि करूँगी (पूर्व सम)।" यह मन्नत मॉगने के बाद भद्रा वापस नदी किनारे आई और आहारादि प्रसाद ग्रहण कर हाथ-मुँह धो घर लौटी।

WORSHIP FOR OFFSPRING

10. Bhadra was pleased to get the permission She arranged for all the things needed including dresses and ornaments in large quantities and came out of her house Passing through the town she went to the river bank, placed her belongings at the bank and dived into the river After a playful bath and still in wet dress she picked a variety of lotus flowers and came out of the river She collected all her belongings from the river bank and proceeded to the temples

Entering each temple she paid homage before the idols, bent down and cleaned the idols with peacock-feather broom, anointed them by

pourıng water, wıped them dry wıth soft and tufted gray towels, adorned them wıth cloths and garlands, rubbed perfumes and sprınkled fragrant and coloured powders over them, and ın the end burnt ıncense After all these rıtuals she touched her knees to the ground, joıned her palms and bowıng she prayed, "If I gıve bırth to a chıld I wıll do your worshıp wıth all prescrıbed rıtuals (etc)."

Now Bhadra returned to the rıver bank, had her food and share of the auspıcıous offerıngs, washed her mouth and hands, and returned home

सूत्र ११ अदुत्तर च ण भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेइ, उवक्खडित्ता बहवे नागा य जाव वेसमणा य उवायमाणी नमसमाणी जाव एव च ण विहरइ।

तए ण सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ केणइ कालतरेण आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था।

सूत्र ११ इसके बाद भद्रा प्रत्येक चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा के दिन प्रचुर मात्रा मे अशनादि आहार सामग्री तैयार करती और इसी प्रकार पूजादि कर भोग चढाती और मन्नत मानती।

कुछ समय बीतने पर भद्रा गर्भवती हो गई।

11. On eıghth, fourteenth and fifteenth day of every fortnıght of the lunar calendar, Bhadra repeated the above detaıled rıtuals of worshıp and prayer

After some days Bhadra became pregnant

दोहद

सूत्र १२ तए णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-"धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ ताओ अम्मयाओ, जाओ ण विउल असण-पाण-खाइम-साइम सुबहुय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकार गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण-पहिलियाहि य सद्धिं सपरिवुडाओ रायगिह नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छंति। निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहिंति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकारविभूसियाओ विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणीओ जाव पडिभुजेमाणीओ दोहल विणेन्ति।"

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तस्स गब्भस्स जाव दोहलं विणेन्ति; तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी जाव विहरित्तए।

"अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह।"

सूत्र १२. जब भद्रा को गर्भवती हुए दो महीने बीत गये और तीसरा चलने लगा तो उसे एक दोहद उत्पन्न हुआ-"वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशालिनी आदि है जो खूब अशनादि, पुष्पादि वस्त्रालकार लेकर मित्रादि की स्त्रियो के साथ नगर के बीच से हो नदी के किनारे आती हैं। नदी में स्नान आदि कर वस्त्रालंकार पहन आनन्द से आहार ग्रहण करती है, स्वाद से खाती और खिलाती हैं और इस सबमें सतोष प्राप्त कर अपना दोहद पूर्ण करती हैं।" इस विचार के उठने के पश्चात् दूसरे दिन प्रातःकाल वह धन्य सार्थवाह के पास गई और बोली-"देवानुप्रिय ! मुझे गर्भ के प्रभाव से एक दोहद उत्पन्न हुआ है।" दोहद का वर्णन कर उसने धन्य से दोहद पूर्ण करने की इच्छा प्रकट की।

धन्य ने कहा-"हे देवानुप्रिये ! तुम्हे जिसमे सुख मिले वह कार्य निर्विलम्ब करो।"

PREGNANCY-DESIRE

12. During the third month of pregnancy Bhadra had a Dohad (pregnancy-desire)—"Blessed, pious, and contented are those mothers who, accompanied by other women, carrying plenty of gourmet food, flowers, cloths and ornaments (etc) go to the river bank passing through the town After arriving there they bathe (etc) in the river, adorn themselves with cloths and ornaments, and enjoy as well as offer the food to others Deriving happiness in these activities they fulfill their Dohad "

Next morning she went to Dhanya merchant with these thoughts and said, "Beloved of gods ! Due to my pregnant condition I had a Dohad " She explained her desire to Dhanya merchant and asked him to make necessary arrangements

Dhanya said, "Beloved of gods ! do as you please without any delay"

सूत्र १३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेण सत्थवाहेण अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठा जाव विउलं असण-पाण-खाइम-साइम जाव उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ण्हाया

जाव (कयबलिकम्मा) उल्लपडसाडगा जेणेव णागघरए जाव धूवं दहइ। दहित्ता पणामं करेइ, पणाम करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ। तए णं ताओ मित्त-नाइ जाव नगरमहिलाओ भद्द सत्थवाहिं सव्वालंकार-विभूसियं करेइ।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबंधि-परिजण-णगरमहिलियाहिं सद्धिं त विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं जाव परिभुंजेमाणी य दोहलं विणेइ। विणित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया।

सूत्र १३ धन्य सार्थवाह से अनुमति पा भद्रा प्रसन्न हुई और प्रचुर सामग्री के साथ नदी के किनारे जा, स्नानादि करके देवकुलो मे जा वह यथाविधि उपासना पूर्ण कर वापस नदी के किनारे आई। वहाँ उसके साथ आई महिलाओं ने उसे वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया। फिर उसने अपने साथ आई स्त्रियो के साथ आहारादि ग्रहण करके आनन्द से अपना दोहद पूर्ण किया और घर को लौट आई।

13. Bhadra was pleased to get the permission She went to the river bank with plenty of things she needed, took her bath (etc.), went into the temples, performed the ritual worship and returned to the river bank There the ladies accompanying her adorned her with the cloths and ornaments Enjoying the food with her friends she fulfilled her Dohad and returned home

पुत्र-प्रसव

सूत्र १४ तए ण सा भद्दा सत्थवाही सपुन्नडोहला जाव त गब्भ सुहंसुहेणं परिवहइ।

तए ण सा भद्दा सत्थवाही णवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं सुकुमाल-पाणि-पाय जाव सव्वगसुदरंगं दारग पयाया।

सूत्र १४ दोहद पूर्ति के बाद भद्रा सभी कार्य पूरी सावधानी से करती हुई और उचित पथ्य ग्रहण करती हुई गर्भ को सुखपूर्वक वहन करने लगी। नौ महीने और साढ़े सात दिन बीतने पर उसने एक सुकुमार अगो वाले बालक को जन्म दिया।

BIRTH OF A SON

14. After her Dohad was fulfilled Bhadra started taking due care in all her movements and activities She ate nutritious food and spent the pregnancy period taking due precautions When nine months and seven and a half days passed she gave birth to a male child having a delicate body

सूत्र १५. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्म करेन्ति, करित्ता तहेव जाव विउल असण पाण खाइम साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता तहेव मित्तनाइ. भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेंति-"जम्हा णं अम्ह इमे दारए बहूण नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे ण त होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ननामेण।"

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जाय च दाय च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेन्ति।

सूत्र १५ जन्म के बाद पहले दिन माता-पिता ने बालक का जातकर्म सस्कार किया और तब एक के बाद एक ग्यारह दिन तक सभी पारम्परिक सस्कार अनुष्ठान पूरे किये। बारहवे दिन आहारादि की भरपूर तैयारी कर मित्रादि स्वजनो-परिजनो को आमत्रित किया। भोज सम्पन्न होने के बाद गुणानुसार नाम रखने हेतु कहा-"हमारा यह पुत्र नागादि देवो की प्रतिमाओ के सम्मुख मनौती करने के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है अत इसका नाम देवदत्त रखा जाता है।"

फिर बालक के माता-पिता ने मनौती के सकल्प के अनुसार सभी दानादि अनुष्ठान सम्पन्न किये।

15. After the birth of the child, on the first day the parents performed the ritual ceremonies connected with the birth of a son After that, one by one they performed all traditional ceremonies and rituals for eleven days On the twelfth day arrangements were made for a great feast and friends and relatives were invited When the feast concluded the formal naming ceremony was performed Dhanya merchant said, "As we have been blessed with this son by the grace of deities like Naag, (etc) we formally give him the name Devdutt (given by the gods) "

After this the parents indulged in other activities like charity (etc) as they had vowed

देवदत्त का अपहरण

सूत्र १६ तए ण से पथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए। देवदिन्न दारय कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं डिभएहि य डिंभयाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य सद्धि संपरिवुडे अभिरमइ।

सूत्र १६ पथक नाम का एक दास-पुत्र बालक देवदत्त की देखरेख के लिये नियुक्त हुआ। वह देवदत्त को गोद मे उठाकर अनेक विविध आयु के बालक-बालिकाओ के साथ खेलता रहता था।

KIDNAPPING OF DEVDUTT

16. The slave boy Panthak was appointed to look after child Devdutt He used to carry Devdutt and play around with children of various ages

सूत्र १७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ देवदिन्न दारय ण्हाय कयबलिकम्म कयकोउय-मगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसिय करेइ। पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयसि दलयइ।

तए ण पथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्न दारय कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ। पडिणिक्खमित्ता बहूहिं डिभएहि य डिंभियाहि य जाव (दारएहि दारियाहिं कुमारेहि) कुमारियाहि य सद्धिं सपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग एगते ठावेइ। ठावित्ता बहूहिं डिभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था विहरइ।

सूत्र १७ एक बार भद्रा ने देवदत्त को स्नानादि सभी नित्य कर्म से निवृत्त करा वस्त्र-आभूषणा मे सजा पथक के हाथ मे दिया।

पथक ने देवदत्त को गोद मे लिया और घर से बाहर निकला। अन्य बहुत से बच्चो को साथ लेकर वह राजमार्ग पर आया। उसने देवदत्त को एक ओर बैठा दिया और स्वय उन बच्चो के साथ खेलने मे मगन हो गया।

17. One day Bhadra got Devdutt ready after giving him a bath and dressing him and adorning him with ornaments She then handed him over to Panthak

Panthak lifted Devdutt in his arms and went out of the house Taking some more children along he came to the highway He placed Devdutt carefully on one side and got fully absorbed in playing with the other children

बालक की हत्या

सूत्र १८ इम च ण विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि बाराणि य अवदाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसेमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ।

उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग सव्वालकारविभूसिय पासइ। पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पथय दासचेड पमत्तं पासइ। पासित्ता दिसालोय करेइ। केरत्ता देवदिन्न दारय गेण्हइ। गेण्हित्ता कक्खंसि अल्लियावेइ। अल्लियावित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ। पिहेत्ता सिग्घ तुरिय चवल वेइय रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे, जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता देवदिन्न दारय जीवियाओ ववरोवेइ। ववरोवित्ता आभरणालकारं गेण्हइ। गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरयं निप्पाण निच्चेट्ठ जीवियविप्पजढ भग्गकूवए पक्खिवइ। पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता मालुयाकच्छय अणुपविसइ। अणुपविसित्ता निच्चले निप्फदे तुसिणीए दिवस खिवेमाणे चिट्ठइ।

सूत्र १८. तभी विजय नाम का चोर राजगृह नगर के विभिन्न गुह्य-एकान्त स्थलो का निरीक्षण-परीक्षण करता (पूर्व वर्णन के अनुसार) वहाँ आ पहुँचा। उसने गहनो से लदे-फटे देवदत्त को देखा। गहने देखते ही वह लोभ से पागल हो गया और उसके मन मे विवेकहीन आकाक्षा जाग उठी। उसने इधर-उधर देखा और पाया कि दास पथक बालक की ओर से बेखबर है। उसने झट से बालक को उठाया और अपनी कॉख मे दबाकर ऊपर से चदरा ढक लिया। फिर वह शीघ्र, त्वरित, चपल और तेज चाल से चलता नगर-द्वार मे बाहर निकला और उस उजाड उद्यान मे टूटे कुएँ के पास पहुँचा। वहाँ उसने बालक देवदत्त की हत्या कर दी और उसके सारे वस्त्रालकार उतार कर ले लिये। बालक की प्राणहीन, चेष्टाहीन और निर्जीव देह को उसने टूटे कुएँ मे डाल दिया। वह स्वय कुएँ के पास के उस घने झुरमुट मे घुस गया और निश्चल, निस्पन्द तथा मौन होकर छुप बैठा और दिवस के अन्त होने की राह देखने लगा।

KILL THE CHILD

18. Just than, while exploring unfrequented and secluded spots (details as before), Vijaya thief arrived there He saw child Devdutt richly adorned with ornaments The moment he saw the costly ornaments he became mad with greed and distorted ambition Furtively he looked around and found that slave Panthak was not watching the child He quickly picked up the infant in his arm and covered it with his shawl

He rushed away from that spot, came out of the city gate and arrived near the broken well in the ruined garden There he killed the
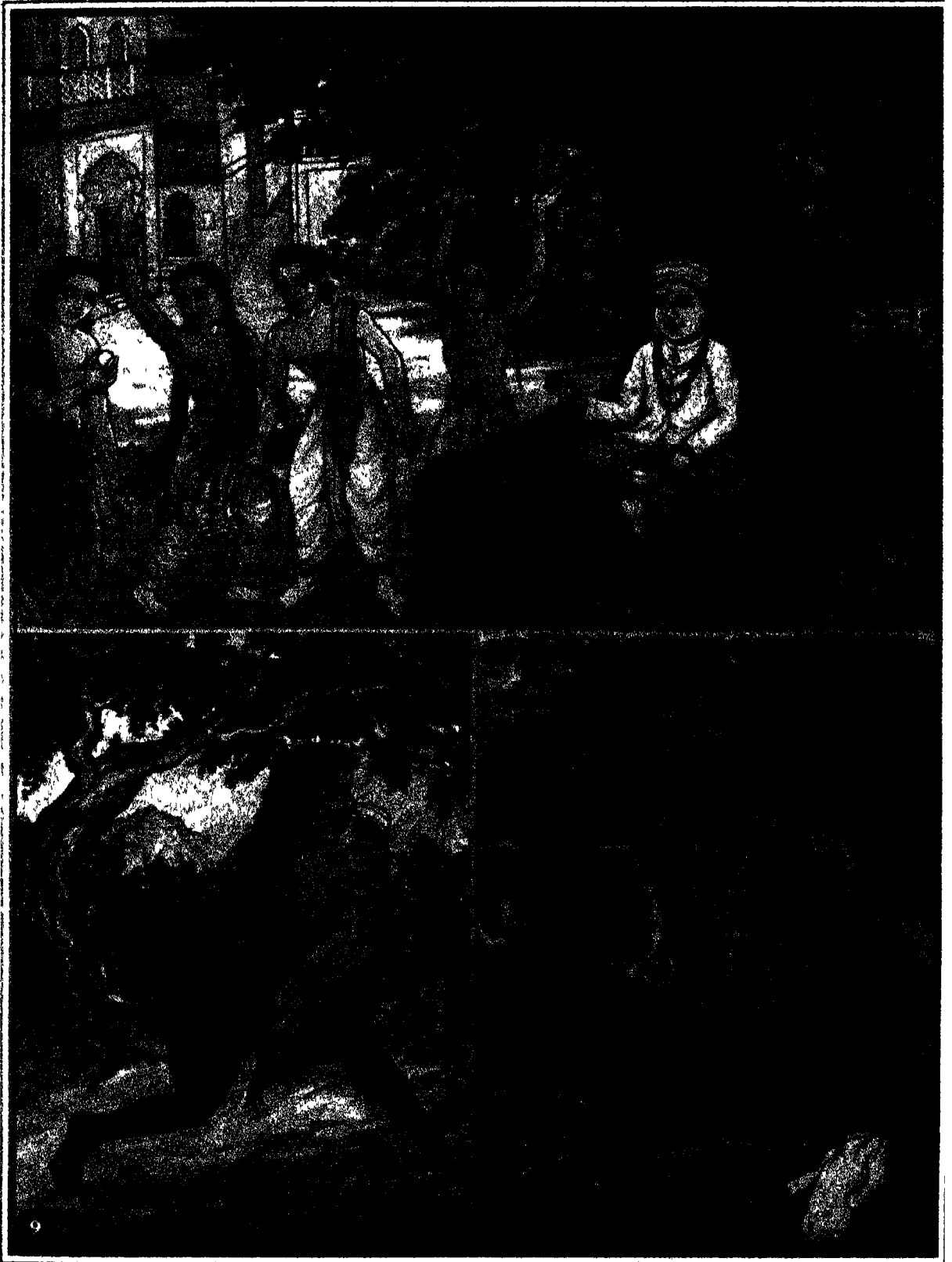
infant and took all its cloths and ornaments He threw the dead, inactive and lifeless body of the infant in that broken well Then he went into that nearby thicket He sat down motionless, unstirring, silent, and concealed, waiting for the day to end

सूत्र १९. तए ण से पथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता देवदिन्न दारयं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ। करित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइ वा खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे, जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाहं एव वयासी-"एव खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्न दारय ण्हायं जाव मम हत्थसि दलयइ। तए ण अह देवदिन्न दारय कडीए गिण्हामि। गिण्हित्ता जाव मग्गणगवेसण करेमि, त न णज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ णीए वा अवहिए वा अवखित्ते वा।" पायवडिए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ निवेदेइ।

तए ण से धण्णे सत्थवाहे पंथयदासचेडगस्स एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसुणियत्ते व चपगपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए।

सूत्र १९ उधर दास-पुत्र पथक कुछ देर बाद वहाँ पहुँचा जहाँ उसने बालक को बिठाया था। बालक को वहाँ नही पा वह रोता-चिल्लाता इधर-उधर सब जगह उसे ढूँढ़ने लगा। पर उसे देवदत्त का न तो स्वर सुनाई दिया, न उसकी छीक आदि की कोई ध्वनि और न ही वह स्वय कही दिखाई दिया। निराश हो वह अपने मालिक के घर लौटा और धन्य सार्थवाह से बोला-"हे स्वामी ! मालकिन भद्रा ने स्नानादि करवाकर वस्त्राभूषण पहनाकर बालक को मुझे दिया था। मै उसे लेकर बाहर गया और एक जगह बैठा दिया। कुछ देर बाद वह मुझे दिखाई नही दिया। मैने सब जगह ढूँढ़ लिया। स्वामी ! पता नही देवदत्त को कोई मित्र अपने साथ ले गया, किसी चोर ने अपहरण कर लिया अथवा किसी ने कही फेक दिया।" उस दास-पुत्र ने धन्ना के पैरो मे पडकर यह सब बताया।

पथक की बात सुनकर धन्य सार्थवाह पुत्र शोक से व्याकुल हो उठा और कुल्हाडी से कटे चम्पा के पेड के समान धडाम से धरती पर गिरकर मूर्च्छित हो गया।

19. After sometime slave-boy Panthak came to the spot where he had left Devdutt Not finding the child he started crying and, shouting the boy's name started searching all around But he could neither locate Devdutt nor hear the voice or any other sound, like sneezing, emitted by the child

Dejected, he returned to his master's house and informed Dhanya merchant, "Master ! Mistress Bhadra got Devdutt ready after giving him a bath and adorning him with dress and ornaments. She then handed him over to me. I took him and went out of the house and placed Devdutt carefully at a safe spot. After some time I could not see the child there. I searched him all around but could not find him. Master ! I do not know if some of his friends has taken him along, or some thief has kidnaped him or thrown him away." That slave boy narrated the incident and fell at the feet of Dhanya.

Getting this information from slave-boy Panthak, Dhanya merchant was deeply moved by the tragedy of loosing his son. He fell on the floor, like a Champa tree struck by an axe, and fainted.

बालक की खोज

सूत्र २० : तए णं से धण्णे सत्थवाहे तओ मुहुत्ततरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ। देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता महत्थं पाहुडं गेण्हइ। गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणेइ, उवणइत्ता एवं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नामं दारए इट्ठे जाव उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ?"

तए णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलयइ, जाव पायवडिए तं मम निवेदेइ-"तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं।

सूत्र २० : कुछ देर बाद जब उसे होश आया मानो प्राण लौट आये हो, तो उसने सब जगह बालक की खोज की। किन्तु बालक की कोई खोज-खबर नहीं मिली। वह निराश हो घर लौटा, बहुमूल्य भेंट सामग्री ली और नगर-रक्षक के पास गया। नगर-रक्षक-दल के सामने वह भेंट रखी और बोला-"हे देवानुप्रियो ! मै और मेरी पत्नी भद्रा के देवदत्त नाम का एक पुत्र है, जो हमे प्राणो से भी अधिक प्यारा है।"

धन्ना सार्थवाह ने बालक के खो जाने का पूरा विवरण विस्तार से नगर-रक्षकों को बताया और कहा-"अतः हे देवानुप्रियो ! मै चाहता हूँ कि आप बालक देवदत्त की सभी स्थानो पर तलाश करें, खोज करें।"

SEARCH FOR THE CHILD

20. After some time when he regained consciousness, as if he had been resurrected, he searched for the child everywhere but could not find any trace He returned home crestfallen He then collected valuable gifts and went to the chief of the police He placed the gifts before the policemen and said, "Beloved of gods ! I and my wife have a son named Devdutt who is more precious to us than our own lives " And Dhanya merchant gave detailed report of the child's disappearance He then asked, "I want that you conduct a thorough search for the lost child "

सूत्र २१ तए ण ते नगरगोत्तिया धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा सन्नद्धबद्ध-वम्मियकवया उप्पीलिय-सरासणवट्टिया जाव गहियाउह-पहरणा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धि रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य जाव पवासु य मग्गण-गवेसण करेमाणा रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमति। पडिणिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठ जीवविप्पजढ पासति। पासित्ता हा हा अहो अकज्जमिति कट्टु देवदिन्न दारयं भग्गकूवाओ उत्तारेति। उत्तारित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे ण दलयति।

सूत्र २१ नगर-रक्षको ने धन्य की बात सुनकर कवच तैयार कर उन्हे पहनकर कसो स बॉधा, अस्त्र-शस्त्र उठाये और धन्य सार्थवाह के साथ हो लिये। उन्होने राजगृह नगर के मार्ग दरवाजे आदि (पूर्व वर्णन सम) सभी गुप्त-प्रकट स्थलो पर खोज की और तब नगर से बाहर निकले। खोज करते वे लोग उसी उजाड उद्यान मे टूटे कुएँ के पास आये। उन्होने जब कुएँ मे झॉका तो देवदत्त का निष्प्राण, निश्चेष्ट और निर्जीव शरीर दिखाई पडा। उनके मुँह से अनायास ही-"हाय ! हाय ! अहो अकार्य।" आदि स्वर फूट पडे। देवदत्त की देह को कुएँ से निकाल धन्य सार्थवाह को सौप दिया गया।

21. Immediately on getting the report the police-force put on and tied their shields, picked up their weapons, and moved out with Dhanya merchant They first searched all the streets, gates (etc, details as before), and then came out of the town During their search they came near the broken well inside that ruined garden When they looked down into the well they saw the limp dead body of Devdutt They involuntarily uttered, "Oh ! god ! what cruelty?" Devdutt's body was taken out from the well and handed over to Dhanya merchant

विजय चोर का निग्रह

सूत्र २२. तए ण ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मालुयाकच्छयं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता विजय तक्करं ससक्ख सहोड सगेवेज्ज जीवग्गाहं गिण्हंति। गिण्हित्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभग्गमहियगत्त करेन्ति। करित्ता अवाउडबधण करेन्ति। करित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरण गेण्हंति। गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बधति, बंधित्ता मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति। पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता रायगिहं नगर अणुपविसंति। अणुपविसित्ता रायगिहे नगरे सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-पहेसु कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य निवाएमाणा निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवर च उवरि पक्किरमाणा पक्किरमाणा महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा एवं वदति–

"एस ण देवाणुप्पिया ! विजए नाम तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए, बालमारए, त नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ राया वा रायपुत्ते वा रायमच्चे वा अवरज्झइ। एत्थट्ठे अप्पणो सयाइं कम्माइ अवरज्झति" त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता हडिबधण करेन्ति, करित्ता भत्तपाणनिरोह करेति, करित्ता तिसझ कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा निवाएमाणा विहरंति।

सूत्र २२ इसके बाद वे नगर-रक्षक विजय चोर के पद-चिन्हो का अनुसरण करते हुए उस घने झुरमुट के पास पहुँच गये। झुरमुट मे घुसकर विजय चोर को चोरी के माल सहित पकड लिया। पचो की साक्षी करवाकर उसे गर्दन से बॉध लिया। फिर हड्डी के डडे, मुक्के आदि से घुटने, कोहनियो आदि पर मार-मार कर उसका शरीर ढीला कर दिया। दोनो हाथो को पीठ के पीछे बॉध दिया और बालक के आभूषण कब्जे मे कर लिये। यह सब कार्यवाही करके वे झुरमुट से बाहर निकले और राजगृह नगर मे प्रवेश किया। नगर के विभिन्न मार्गों पर वे चोर को कोडो, बेत और चाबुक से मारते और उसके ऊपर राख, धूल, कचरा आदि डालते हुए चलने लगे। इस बीच वे ऊँचे स्वर मे यह घोषणा भी करते जा रहे थे–"हे देवानुप्रियो ! यह विजय नाम का चोर है। यह गिद्ध के समान मॉसभक्षी है, बाल-घातक है, बच्चो का हत्यारा है। हे देवानुप्रियो ! इसे यह मार किसी राजा, राजपुत्र अथवा अमात्य के कहने से नही पड रही है। यह तो स्वय अपने किये कुकर्म का दण्ड भोग रहा है।" चलते-चलते वे कारागार मे पहुँचे और उसे बेडियो से जकड दिया। उसका भोजन-पानी बद कर दिया और सुबह, दोपहर, शाम उस पर कोडे आदि की मार बरसाने लगे।

PUNISHMENT TO VIJAYA

22. Trekking the foot-prints left by the absconding thief the policemen reached that dense thicket They entered the thicket and caught Vijaya red handed with the stolen goods After getting the legal formalities of evidence, they tied the thief's neck with a rope They hit him on his joints with fists and sticks made of bone and turned his body limp The stolen ornaments were recovered from him and his fists were tied behind his back

After doing all this they brought him out of the thicket and entered the town They paraded him in the streets of the town thrashing him with whips and canes and throwing ash, dust and garbage over him They also announced loudly, "Beloved of gods ! this is Vijaya, the thief He is a meat eater like a vulture, he is a kidnaper and killer of children He is not being beaten by orders of the king, prince or a minister He is suffering this punishment because of his own misdeeds " When they reached the prison the thief was shackled and imprisoned He was not given anything to eat or drink and was whipped every morning, afternoon, and evening

सूत्र २३ तए ण से धण्णे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणेणं सद्धि रोयमाणे कदमाणे जाव देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएण नीहरण करेति। करित्ता बहूइ लोइयाइ मयगकिच्चाइ करेति, करित्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था।

सूत्र २३ धन्य सार्थवाह अपने अनेक मित्र, स्वजनादि के साथ क्रदन-विलाप करते हुए बालक देवदत्त के शरीर को महती ऋद्धि सत्कार के साथ दाह-सस्कार के लिये स्मशान मे ले गया। वहाँ मृत्यु सम्बन्धी सभी लोकाचार आदि सम्पन्न कर दाह-सस्कार कर दिया। समय के अन्तराल के साथ वह पुत्र-शोक से उबर गया।

23. Accompanied by friends and relatives and overwhelmed with sorrow, Dhanya merchant took the dead body of Devdutt to the cremation ground The funeral procession had all the pomp and show befitting his status With all the traditional formalities and rituals the last rites were performed and the body cremated With the passage of time he overcame the pangs of the pain of loosing his son

धन्य सार्थवाह का निग्रह

सूत्र २४. तए णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइ लहुसयंसि रायावराहंसि सपलत्ते जाए यावि होत्था। तए ण ते नगरगुत्तिया धण्ण सत्थवाह गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चारग तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता चारग अणुपवेसंति, अणुपवेसित्ता विजए ण तक्करेण सद्धिं एगयओ हडिबंधण करेंति।

सूत्र २४ एक बार कुछ चुगलखोरो ने धन्य सार्थवाह पर किसी सामान्य छोटे-मोटे राज्यापराध का आरोप लगा दिया। नगर-रक्षको ने उसे बदी बना लिया और कारागार मे ले जाकर विजय चोर के साथ एक ही बेडी से बॉध दिया।

DHANYA IN PRISON

24. Once some adversaries framed Dhanya merchant and accused him of some minor offense against the state He was apprehended and imprisoned He was put in the same prison and shackled jointly with Vijaya thief

सूत्र २५ तए ण सा भद्दा भारिया कल्ल जाव जलते विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेइ, उवक्खडित्ता भोयणपिडयं करेइ, करित्ता भायणाइ पक्खिवइ, पक्खिवित्ता लछियमुद्दियं करेइ। करित्ता एग च सुरभिवारिपडिपुण्णं दगवारय करेइ। करित्ता पथय दासचेड सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया ! इम विपुल असण-पाण-खाइम-साइम गहाय चारगसालाए धन्नस्स सत्थवाहस्स उवणेहि।"

सूत्र २५ अगले दिन सुबह होने पर भद्रा ने बहुत-सी आहार सामग्री तैयार की और एक छबडी मे उस सामग्री सहित आवश्यक पात्र आदि रख दिये। इस छवडी को वद कर उस पर अपने चिह्न की मोहर लगा दी। सुगधित जल मे भरा एक छोटा घडा भी तैयार किया। पथक नामक दास-पुत्र को बुलाकर भद्रा ने कहा–"हे देवानुप्रिय ! यह सब खाने-पीने का सामान कारागार मे धन्य सार्थवाह के पास ले जाओ।"

25. Next morning Bhadra cooked a lot of food and put it in a basket along with the necessary utensils She covered and sealed this basket A small pitcher was filled with perfumed water She now called slave-boy Panthak and instructed him, "Beloved of gods ! take all this food and water to Dhanya merchant in the prison "

सूत्र २६ तए ण से पथए भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे त भोयणपिडय त च सुरभि-वरवारिपडिपुण्ण दगवारय गेण्हइ। गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ।

पडिनिक्खमित्ता रायगिहे नगरे मज्झमज्झेण जेणेव चारगसाला, जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता भोयणपिडय ठावेइ, ठावेत्ता उल्लंछइ, उल्लंछित्ता भायणाइ गेण्हइ। गेण्हित्ता भायणाइ धोवेइ, धोवित्ता हत्थसोयं दलयइ, दलइत्ता धण्ण सत्थवाह तेण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण परिवेसेइ।

सूत्र २६ पथक ने प्रसन्नचित्त हो उस छवडी तथा घडे को उठा लिया और घर से निकल राजमार्ग पर होता हुआ कारागार मे धन्य सार्थवाह के पास गया। वहाँ पहुँचकर उसने वह छबडी नीचे रखी, उस पर से मोहर हटाई, भोजन के पात्रो को धोया, धन्य सार्थवाह के हाथ धुलाये और भोजन परोस दिया।

26. Panthak happily picked up the basket and the pitcher and walking on the highway went to Dhanya merchant in the prison He put down the basket on the floor, broke the seal, washed the utensils, helped Dhanya merchant wash his hands, and served the food

विजय की क्षुधा

सूत्र २७ तए ण से विजए तक्करे धण्ण सत्थवाहं एव वयासी-"तुम ण देवाणुप्पिया ! मम एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करेहि।"

तए ण से धण्णे सत्थवाहे विजय तक्करं एव वयासी-"अवियाइं अह विजया ! एय विपुल असण-पाण-खाइम-साइम कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुरुडियाए वा ण छड्डेज्जा, नो चेव ण तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडिणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करेज्जामि।"

सूत्र २७ यह सब देख विजय चोर ने धन्य से कहा-"हे देवानुप्रिय ! मुझे भी इस ढेर स भोजन मे से कुछ दो।"

धन्य सार्थवाह ने उत्तर दिया-"हे विजय ! भले ही इतनी सारी भोजन सामग्री मुझे कौवो और कुत्तो को दनी पडे या फिर कूडे मे फेकनी पडे पर तेरे जैसे पुत्रघातक, शत्रु, अनाचारी और प्रतिकूल व्यक्ति को इसमे से हिस्सा नही दूँगा।"

VIJAYA'S DESIRE FOR FOOD

27. Seeing all this, Vijaya thief said to Dhanya merchant, "Beloved of gods! Out of this large quantity of food please give a little to me as well " Dhanya merchant replied, "Vijaya ! I would prefer to feed cravens and dogs or throw all the extra food in a dustbin rather then

share it with the killer of my son, an enemy, a rogue, and a despicable person like you "

सूत्र २८. तए ण धण्णे सत्थवाहे त विउल असण-पाण-खाइम-साइम आहारेइ। आहारित्ता तं पथयं पडिविसज्जेइ। तए ण से पंथए दासचेडे त भोयणपिडग गिण्हइ, गिण्हित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए।

सूत्र २८ धन्य सार्थवाह ने वह भोजन किया और पथक को छबडी सहित वापस भेज दिया।

28. Dhanya merchant ate the food and sent the basket back with slave-boy Panthak

सूत्र २९ तए ण तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणेण उव्वाहित्था।

तए ण से धण्णे सत्थवाहे विजय तक्कर एव वयासी–एहि ताव विजया ! एगतमवक्कमामो, जेण अह उच्चारपासवण परिट्ठवेमि।

तए ण से विजए तक्करे धण्ण सत्थवाह एव वयासी–"तुब्भ देवाणुप्पिया ! विपुल असण-पाण-खाइम-साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा, मम ण देवाणुप्पिया ! इमेहि बहूहि कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स णत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा, त छंदेण तुम देवाणुप्पिया ! एगत अवक्कमित्ता उच्चारपासवण परिट्ठवेहि।"

सूत्र २९ पेट भर भोजन करने के बाद धन्य को मल-मूत्र त्यागने की शका हुई तो उसने विजय से कहा–"विजय ! चलो एकान्त मे चले जिससे मै मल-मूत्र त्याग कर सकूँ।"

विजय ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! तुमने तो पेट भर भोजन-पान किया है अत तुम्हे मल-मूत्र की शका हुई है। पर मै तो बहुत से कोडो आदि की मार से तथा भूख-प्यास से पीडित हूँ। मुझे तो कोई ऐसी शका नही हो रही। हे देवानुप्रिय ! तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्ही जाओ।"

29. Once his stomach was filled Dhanya merchant had the desire to relieve himself He requested Vijaya, "Vijaya ! come, let us go to a secluded spot so that I may relieve myself of the nature's call "

Vijaya replied, "Beloved of gods ! You have eaten a stomach full of food and water and so you have this urge But I am suffering the pain

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

सहयोग की मजबूरी

चित्र : १०

[illegible]

[illegible]

(अध्ययन २)

FORCED TO COMPROMISE

ILLUSTRATION : 10

After a lot of search Vijaya was apprehended and imprisoned. Once accused by some adversaries Dhanya was also apprehended and put in the same prison shackled jointly with Vijaya thief. Bhadra sent food in the prison with Panthak. When Dhanya started eating, Vijaya asked for something to eat. Dhanya refused angrily. After some time Dhanya wanted to relieve himself. He requested Vijaya to accompany him to a secluded spot. Vijaya refused. Driven by the need of his body Dhanya was forced to submit to the demand of the thief. Vijaya now accompanied him to a secluded spot and Dhanya relieved himself. Next morning when Panthak served the food Dhanya merchant shared it with Vijaya. Panthak saw this and felt very bad.

(CHAPTER-2)

of whipping as well as hunger and thirst. I have no such urge like you Beloved of gods ! you may go if you like "

विजय चोर को भोजन में हिस्सा

सूत्र ३०. तए ण धण्णे सत्थवाहे विजए णं तक्करेणं एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ। तए ण से धण्णे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उब्बाहिज्जमाणे विजयं तक्कर एव वयासी–"एहि ताव विजया ! जाव अवक्कमामो।"

तए णं से विजए धण्णं सत्थवाह एवं वयासी–"जइ णं तुम देवाणुप्पिया ! तओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करेहि, ततो हं तुम्हेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि।"

सूत्र ३० विजय की यह उक्ति सुन धन्य सार्थवाह चुप रह गया। कुछ देर मे उसकी शका तीव्र हो गई तो उसने फिर विजय से कहा–"विजय ! चलो एकान्त मे चलें।"

विजय ने इस बार कहा–"देवानुप्रिय ! यदि तुम अपने भोजन में से मुझे हिस्सा देना स्वीकार करो तो मै तुम्हारे साथ एकान्त मे चल सकता हूँ।"

SHARING THE FOOD TO VIJAYA

30. This reply from Vijaya silenced Dhanya merchant After some time when his urge intensified he again asked Vijaya, "Come Vijaya ! let us go to some secluded spot "

This time Vijaya said, "Beloved of gods ! If you agree to share your food with me I am ready to go to a secluded spot with you "

सूत्र ३१ तए ण से धण्णे सत्थवाहे विजय एव वयासी–"अह ण तुब्भ तओ विउलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करिस्सामि।"

तए ण से विजए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं से विजए धण्णेण सद्धिं एगते अवक्कमेइ, उच्चारपासवण परिट्ठवेइ, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसकमित्ता ण विहरइ।

सूत्र ३१ धन्य सार्थवाह ने भोजन मे से हिस्सा देना स्वीकार कर लिया। विजय ने उसकी बात मान ली और उसके साथ एकान्त स्थल पर चला गया। धन्य सार्थवाह शकामुक्त हो हाथ-मुँह धोकर स्वच्छ हुआ और दोनो वापस अपने स्थान पर लौट आये।

31. Dhanya merchant agreed to share his food Vijaya thief now accepted Dhanya merchant's request and accompanied him to a

secluded spot Dhanya merchant relieved himself and washed his hands and face Both of them returned to their cell

सूत्र ३२ तए ण सा भद्दा कल्लं जाव जलते विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं जाव परिवेसेइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स तओ विउलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेइ। तए ण से धण्णे सत्थवाहे पथय दासचेड विसज्जेइ।

सूत्र ३२ भद्रा ने दूसरे दिन भी सुबह होने पर उसी प्रकार पथक के साथ भोजन सामग्री भेजी। पथक ने वहाँ आकर धन्य को भोजन परोसा तो धन्य ने विजय को भी उस भोजन मे से कुछ भाग दिया। भोजन कर चुकने के बाद पात्रादि के साथ उसने पथक को वापस भेज दिया।

32. Next morning Bhadra again sent the food basket with slave-boy Panthak In the prison Panthak served the food and Dhanya merchant shared it with Vijaya After eating, the basket with utensils was returned with Panthak

सूत्र ३३ तए ण से पथए भोयणपिडय गहाय चारगाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता रायगिह नगर मज्झमज्झेण जेणेव सए गेहे, जेणेव भद्दा भारिया, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता भद्द सत्थवाहि एव वयासी-"एव खलु देवाणुप्पिए ! धण्णे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विउलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेइ।"

तए ण सा भद्दा सत्थवाही पथयस्स दासचेडयस्स अतिए एटमट्ठ सोच्चा आसुरत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा धण्णस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ।

सूत्र ३३ पथक ने घर लौटकर भद्रा से कहा-"देवानुप्रिये ! धन्य सार्थवाह ने आपके पुत्र के हत्यारे शत्रु को अपनी भोजन सामग्री मे से हिस्सा दिया है।"

भद्रा पथक से यह बात सुनकर क्रोध से लाल हो गई और कुढती हुई धन्य सार्थवाह से रूठ गई।

33. When slave-boy Panthak returned home he said to Bhadra, "Beloved of gods ! Today Dhanya merchant shared his food with the killer of your son "

Getting this information from slave-boy Panthak Bhadra turned red with anger She fretted in irritation and became displeased with Dhanya merchant

धन्य का छुटकारा

सूत्र ३४ तए ण धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइ मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजणेण सएण य अत्थसारेण रायकज्जाओ अप्पाण मोयावेइ। मोयावित्ता चारगसालाओ पडिनिक्खमइ। पडिनिक्खमित्ता जेणेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अलकारियकम्मं करेइ। करित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहधोयमट्टियं गेण्हइ। गेण्हित्ता पोक्खरिणि ओगाहेइ। ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ। करित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव रायगिह नगरं अणुपविसइ। अणुपविसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ३४ उधर धन्य सार्थवाह को उसके किसी स्वजन ने अर्थदण्ड चुकाकर मुक्त करा लिया। वह कारागार मे निकलकर आलकारिक सभा (सौन्दर्य प्रसाधन केन्द्र) मे गया। वहाँ पहुँचकर बाल कटवाए तथा अन्य आलकारिक सेवा करवाई। फिर वह नदी के किनारे गया और किनारे की मिट्टी लेकर नदी मे उतरा। भली प्रकार शरीर को रगडकर स्नानादि कर्मों मे निवृत्त हो राजगृह नगर मे प्रवेश किया और अपने निवास की ओर चला।

DHANYA RELEASED

34. One of Dhanya merchant's friends paid the fine and got him released from the prison From the prison Dhanya merchant immediately went to a beauty parlour There he got a haircut and other such services performed From there he went to the river bank and taking clean sand in his hands entered the river He immaculately rubbed and washed his body clean After putting on his dress he entered the town and proceeded towards his house

सूत्र ३५ तए ण धण्ण सत्थवाह एज्जमाण पासित्ता रायगिहे नगरे बहवे नियग-सेट्ठि-सत्थवाह-पभइओ आढति, परिजाणति, सक्कारेति, सम्माणेति, अब्भुट्ठेति, सरीरकुसल पुच्छति।

तए ण से धण्णे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, त जहा–दासाइ, वा, पेस्साइ वा, भियगाइ वा, भाइल्लगाइ वा, से वि य ण धण्ण सत्थवाह एज्जत पासइ, पासित्ता पायवडियाए खेमकुसल पुच्छति।

जावि य से तत्थ अब्भतरिया परिसा भवइ, त जहा–मायाइ वा, पियाइ वा, भायाइ वा, भगिणीइ वा, सावि य ण धण्ण सत्थवाह एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ। अब्भुट्ठेत्ता कठाकठिय अवयासिय बाहप्पमोक्खण करेइ।

सूत्र ३५ धन्य सर्थवाह को आता देखकर नगर के अनेक आत्मीय, श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि जनो ने उसका आदर किया, स्वागत-सत्कार किया, सम्मान किया और खडे होकर क्षेम-कुशल पूछी।

धन्य सार्थवाह फिर अपने घर पहुँचा। बाहरी आँगन मे खडे दास, नौकर-चाकर, भृत्य, पालती आदि ने उन्हे आया देख पैरो मे गिरकर क्षेम-कुशल पूछी।

भीतरी ऑगन मे माता, पिता, भाई, बहन आदि परिवार-जन धन्य को आया देख आसन से उठे और उन्हे गले से लगा हर्ष के आँसू बहाये।

35. When they saw Dhanya merchant coming, many of his friends, other merchants, etc greeted him with respect and enthusiasm They stood up and asked about his welfare

Dhanya merchant then reached home In the courtyard slaves, servants, and other workers touched his feet and asked his wellbeing

In the living area his parents, brothers, sisters and other family members got up from their seats, embraced him and shed tears of joy

भद्रा के कोप का उपशमन

सूत्र ३६ तए ण से धण्णे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ। तए ण सा भद्दा सत्थवाही धण्ण सत्थवाह एज्जमाण पासइ, पासित्ता णो आढाइ, नो परियाणाइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही सचिट्ठइ।

तए णं से धण्णे सत्थवाहे भद्द भारियं एव वयासी–"किं ण तुब्भ देवाणुप्पिए, न तुट्ठी वा, न हरिसे वा, नाणदे वा ? ज मए सए ण अत्थसारेण रायकज्जाओ अप्पाण विमोइए।"

सूत्र ३६ अन्त मे धन्य सार्थवाह अपनी पत्नी भद्रा के पास गया। उसे आता देख भद्रा ने अभिवादन ही नही किया मानो अपरिचित हो। वह मौन रही और मुँह घुमाकर बैठ गई। यह देख धन्य सार्थवाह बोला–"देवानुप्रिये ! मेरे आने से तुम्हे न सतोष हुआ, न हर्ष और न आनन्द। क्या बात है ? मै तो अर्थदण्ड देकर राज कोप से छूटकर आया हूँ।"

APPEASEMENT OF BHADRA

36. In the end Dhanya merchant went to his wife Seeing him approach, Bhadra gave a cold shoulder as if she did not recognize him She remained silent and turned away from him Surprised, Dhanya

merchant said, "Beloved of gods ! You are neither pleased, happy, nor contented to see me, what is the matter? I have paid the fine and saved myself from the wrath of the king "

सूत्र ३७. तए ण भद्दा धण्ण सत्थवाहं एवं वयासी-"कह णं देवाणुप्पिया ! मम तुट्ठी वा जाव आणदे वा भविस्सइ, जेण तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स तओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभाग करेसि ?"

सूत्र ३७ भद्रा ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! मुझे सन्तोष, हर्ष और आनन्द कैसे होगा जबकि आपने मेरे पुत्र के हत्यारे को मेरे भेजे हुए आहार-पानी में से हिस्सा दिया।"

37. Bhadra replied, "Beloved of gods ! How can I be pleased, happy or contented when I know that you shared the food I sent for you with the killer of my son?"

सूत्र ३८ तए ण से भद्द एव वयासी-"नो खलु देवाणुप्पिए ! धम्मो त्ति वा, तवो त्ति वा, कयपडिकयाइ वा, लोगजत्ता इ वा, नायए ति वा, घाडियए ति वा, सहाए त्ति वा, सुहि त्ति वा, तओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नन्नत्थ सरीरचिन्ताए।"

तए ण सा भद्दा धण्णेण सत्थवाहेणं एव वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा-जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, कठाकठि अवयासेइ, खेमकुसल पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया जाव पायच्छित्ता विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ।

सूत्र ३८ धन्य सार्थवाह बोला-"देवानुप्रिये ! मैने यह कार्य न तो धर्म या तप समझकर किया है, न उपकार का बदला, लोक दिखावा अथवा न्याय सम्मत समझकर किया है और न ही उसे अपना नायक, सहचर, सहायक अथवा मित्र समझकर किया है। अपने शरीर की चिता छोड (विवशता के कारण) अन्य किसी प्रयोजन से मैने उसे अपने आहार-पानी मे से हिस्सा नही दिया है।"

धन्य के इस स्पष्टीकारण से भद्रा प्रसन्न और सतुष्ट हुई। वह अपने आसन से उठी और अपने पति के गले से लग उसकी कुशल-क्षेम पूछी। फिर स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त हो सुख-भोग करती जीवन व्यतीत करने लगी।

38. Dhanya merchant replied, "Beloved of gods ! I did not do this thing taking it to be a religious act or with the misconception that it was some penance I was not inspired to return some favour I also did not consider it to be some social obligation or a legal duty Nor did I

share the food with the killer of my son considering him to be my leader, associate, or friend I did that with no other purpose but to satisfy the needs of my body"

Bhadra was pleased and satisfied with this explanation from Dhanya merchant She at once got up from her seat, embraced him and asked about his welbeing After this, she went for her bath, got ready and resumed her normal marital and family life

विजय चोर की अधम गति

सूत्र ३९. तए णं से विजय तक्करे चारगसालाए तेहिं बधेहिं वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य छुहाए य परज्झवमाणे कालमासे काल किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से ण तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे जाव वेयण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

से ण तओ उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत-संसारकतार अणुपरियट्टिस्सइ।

सूत्र ३९ उधर विजय चोर बन्ध से, वध की धमकी से, कोडो की मार से, और भूख-प्यास से पीडा पाता हुआ मृत्यु के बाद नारक जीव के रूप मे नरक मे पैदा हुआ। वहाँ वह हर प्रकार से काला दिखाई देता था और दु ख भोग रहा था। नरक से निकलकर वह अनन्त काल तक चार गति वाले ससार का भ्रमण करेगा।

END OF VIJAYA

39. In the prison Vijaya thief continued to be tormented by his shackles, threats of death, whipping and agony of hunger and thirst In the end he died and was born as a hell being enveloped in the hellish darkness and suffering intolerable tortures When he leaves the hell he will be caught in the unending cycles of rebirth for an indefinite period

सूत्र ४०. एवामेव जबू ! जे ण अम्ह निग्गथो वा निग्गन्थी वा आयरिय-उवज्झायाण अन्तिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे विपुलमणि-मुत्तिय-धण-कणग-रयण-सारे ण लुब्भइ से वि य एव चेव।

सूत्र ४० हे जबू ! इसी प्रकार हमारा जो भी साधु या साध्वी गृह त्यागकर, मुंडित होकर आचार्य या उपाध्याय के पास दीक्षा लेने के बाद विपुल मणि, मोती, धन, सोना और बहुमूल्य रत्नो मे लुब्ध होता है उसकी भी यही गति होती है।

40. Jambu ! If any of our ascetics, who has renounced the world, shaved and has been initiated by an Acharya or Upadhyaya, is still allured by plenty of beads, pearls, cash, gold or precious gems, he faces the same consequences

सूत्र ४१. तेण कालेणं तेणं समए णं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसपन्ना जाव पुव्वानुपुव्वि चरमाणा जाव गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहंसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव अहापिडरूव उग्गहं उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति। परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ।

सूत्र ४१ काल के उस भाग में धर्मघोष नाम के स्थविर भगवन्त जो उच्च मातृपक्ष और पितृपक्ष तथा बल आदि गुणो वाले थे, गॉव-गाँव विहार करते हुए राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे आकर यथाविधि ठहरे। उनके आने पर नगर मे परिषद निकाली गई और उन्होने धर्म देशना दी।

41. During that period of time a senior ascetic named Dharmaghosh, who was a high born (meaning both father and mother belonging to upper caste), strong (etc) and virtuous, wandering from one village to another, arrived in Rajagriha and stayed in the Gunashil Chaitya A delegation of citizens came to him and he gave a discourse

धन्य की दीक्षा व देवलोक गमन

सूत्र ४२ तए ण तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"एव खलु भगवतो जाइसंपन्ना इहमागया, इह सपत्ता, त गच्छामि ण थेरे भगवते वदामि नमसामि।"

एव सपेहेइ, सपेहित्ता ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं मगल्लाइं वत्थाइ पवरपरिहिए पायविहार-चारेण जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ। तए ण थेरा धण्णस्स विचित्त धम्ममाइक्खंति।

सूत्र ४२ धन्य सार्थवाह ने कई लोगो से यह समाचार जाना। उसके मन मे विचार उठा—"उत्तम गुण वाले स्थविर भगवन्त यहाँ पधारे हैं। मुझे भी जाकर उनको नमन-नमस्कार करना चाहिये। यह सोचकर वह स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त हुआ और धर्म सभा मे जाने योग्य स्वच्छ और मागलिक वस्त्र पहने। फिर वह पैदल चलकर गुणशील चैत्य मे गया और स्थविर भगवन्त के पास पहुँच उन्हे यथाविधि वन्दना की। उन्होने उसे अपना विशिष्ट धर्मोपदेश दिया।

DHANYA TURNS ASCETIC

42. Dhanya merchant got this news from a number of sources He thought, "A highly virtuous senior ascetic has arrived in town I should also go and pay my homage to him " He got ready after a bath and put on a dress suitable for a religious assembly He arrived at the Gunashil Chaitya walking, went near the ascetic and formally bowed before him The senior ascetic gave a special discourse for him

सूत्र ४३. तए ण से धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा एव वयासी-"सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयणं।" जाव पव्वइए। जाव बहूणि वासाणि सामण्ण-परियाग पाउणित्ता, भत्त पच्चक्खाइत्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने।

तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। तत्थ ण धण्णस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता।

से ण धण्णे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खए ण ठिइक्खए ण भवक्खए ण अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमत करिहिइ।

सूत्र ४३ धर्मोपदेश सुनकर धन्य सार्थवाह बोला-"भते ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ।" यह कहकर उसने पूरी श्रद्धा के साथ प्रव्रज्या लेने की इच्छा प्रकट की (अ १, सू ११५ के समान)। फिर उसने प्रव्रज्या ग्रहण कर ली। अनेक वर्षो तक उसने श्रमण जीवन का पालन किया। अन्त मे आहार त्यागकर एक महीने की सलेखना ग्रहण की, साठ-भक्त का त्याग किया और देह त्यागकर सौधर्म देवलोक मे देव रूप मे जन्म लिया।

सौधर्म देवलोक मे कतिपय देवो की चार पल्योपम की आयुष्य होती है। धन्य नामक देव भी उन्ही मे से है। वह अपने आयुष्यकर्म की प्रकृति, स्थिति और भव का क्षय कर महाविदेह क्षेत्र मे मनुष्य रूप मे जन्म लेगा और उसी भव मे सब दु खो का अन्त कर सिद्धि प्राप्त करेगा।

43. After listening to the discourse Dhanya merchant said, "Bhante ! I have faith on the sermon of the Nirgranth " And he expressed his earnest desire to get initiated (same as Ch 1, para 115) Consequently he was initiated For many years he earnestly followed the ascetic discipline Finally he accepted the ultimate vow and after a one month fast he breathed his last and was reborn as a god in the Saudharma dimension

Some of the gods in the Saudharma dimension have a life span of four Palyopams (a superlative count of time) Dhanya too was one of them After completing his age, form, state, and life as a god he shall be reborn as a human being in the Mahavideh area and shall attain liberation, ending all the sorrows, during the same birth.

उपसहार

सूत्र ४४. जहा ण जबू ! धण्णेण सत्थवाहेणं नो धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स तओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए, एवामेव जंबू ! जे ण अम्हं निग्गंथे वा निग्गंथी वा जाव पव्वईए समाणे ववगयण्हाणुम्मद्दण-पुप्फ-गध-मल्लालंकार-विभूसे इमस्स ओरालियसरीरस्स नो वण्णहेउ वा, रूवहेउ वा, विसयहेउ वा असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारेइ, नन्नत्थ णाण-दसण-चरित्ताण वहणयाए। से ण इह लोए चेव बहूण समणाण समणीणं सावगाण य साविगाण य अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवइ। परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कन्नच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एव हिययउप्पाडणाणि य वसणुप्पाडणाणि य उल्लबणाणि य पाविहिइ। अणाईय च ण अणवदग्गं दीह जाव वीइवइस्सइ, जहा से धण्णे सत्थवाहे।

सूत्र ४४ हे जम्बू ! जैसे धन्य सार्थवाह ने विजय चोर को अपने भोजन में से हिस्सा देने का कार्य न तो धर्म या तप समझकर किया, न उपकार का बदला आदि समझकर किया और न ही उसे अपना मित्रादि मानकर किया। उसने यह कार्य केवल अपने शरीर की रक्षा के लिये किया। उसी प्रकार, हे जम्बू ! हमारे जो साधु-साध्वी दीक्षित होने के पश्चात् स्नान, मर्दन, पुष्प, गन्ध, माला, अलकार आदि का परित्याग कर इस औदारिक शरीर की काति के निमित्त अथवा विषय भोगो को भोगने के निमित्त आहार नही करते, अपितु ज्ञान, दर्शन और चारित्र का पालन करने के लिए करते हैं वे साधु-साध्वियों तथा श्रावक-श्राविकाओ के वन्दनीय और हर तरह से उपासनीय होते है। परलोक में भी वे हाथ, कान, नाक, हृदय, वृषण आदि अगो के छेदने, उखाडने, ऊँचा लटकाने आदि कष्टों से पीडित नही होते। वे पुनर्जन्म के अनादि-अनन्त दीर्घ मार्ग को पार करते हैं, जैसे धन्य सार्थवाह ने किया।

CONCLUSION

44. Jambu ! Dhanya merchant did not do the act of sharing of his food with Vijaya thief considering it to be a religious act or with the misconception that it was some penance He was not inspired to do this

as a return of some personal favour He also did not consider it to be some social obligation or a legal duty Nor did he do it considering Vijaya to be his friend (etc) He did that with no other purpose but to satisfy the needs of his body Similarly, Jambu ! when those of our ascetics who refrain from taking bath, massage, as well as any use of flowers, perfumes, garlands, ornaments, etc , do not eat food for improving the appearance of this earthly body or enjoying the earthly pleasures but do that only as essentials on the path of right knowledge, perception, and conduct, become objects of reverence and worship for ascetics as well as house-holders They also do not suffer the agony of amputation and other hellish tortures They transcend the eternal cycle of rebirth as Dhanya merchant did

सूत्र ४५. एव खलु जबू ! समणेण जाव दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ४५ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने दूसरे ज्ञाताध्ययन का यही अर्थ कहा है, ऐसा मैं कहता हूँ।

45. Jambu ! This is the text and the meaning of the second chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I confirm

॥ द्वितीय अज्झयण समत्त ॥

॥ दूसरा अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE SECOND CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की यह दूसरी कथा साधना पथ पर निर्लिप्त सासारिक क्रिया के महत्त्व को दर्शाती है। जब तक आत्मा शरीर के रथ पर सवार है उसे अपनी यात्रा के लिये रथ को चलने योग्य सक्रिय तथा सुचारु रूप मे रखना आवश्यक है। वैसा बनाये रखने के लिए जो उचित कर्म भी करना पडे वह उसका आवश्यक कर्त्तव्य है अतः उसमें संकोच या दुविधा को स्थान नही है किन्तु वैसा कोई भी कार्य रुचि, भय, अभ्यास या आसक्ति से प्रेरित नहीं होकर निस्पृह भाव से होना चाहिये।

इस कथा का सयोजन रूपक या उपमा शैली में किया गया है। यथा–

राजगृह नगर है मनुष्य क्षेत्र। धन्य है उसमे रहा साधु अथवा आत्मोन्नति के मार्ग पर अग्रसर साधक। विजय चोर उस साधु का शरीर है। धन्य का पुत्र देवदत्त है चरम आनन्द के लक्ष्य की प्राप्ति का आधार–सयम। पथक है प्रमादरूपी अशुभ प्रवृत्ति। देवदत्त के आभूषण है इद्रियो के विषय। प्रमाद के प्रभाव और इन्द्रियो की आसक्ति से प्रेरित शरीर सयम का हनन कर देता है। बेडी का बंधन है आत्मा और शरीर का अवश्यम्भावी सयोग। गजा है कर्मफल और दडनायक आदि राजपुरुष हैं कर्म प्रकृतियाँ। अपराध है आयुष्य बंध का हेतु। धन्य की शौच-शका है शरीर की नैसर्गिक आवश्यकताएँ जिनकी पूर्ति के बिना शरीर आत्मोन्नति की साधना के लिए अक्षम हो जाता है–उसमें बाधा बन जाता है। भद्रा है– आचार्य, जो साधु के अकल्पित कार्य के लिए उपालम्भ देता है किन्तु उस कार्य का औचित्य जान लेने पर सतुष्ट होता है। साधु यहॉ यह स्पष्ट करता है कि शरीर को पोषण देना उसका आपाद् धर्म मे प्रेरित निस्पृह कार्य था, अन्य किसी कारण से प्रेरित आसक्ति रूप कार्य नही।

उपनय गाथा

इस अध्ययन की अन्त प्रेरणा को स्पष्ट करने वाली यह उपनय गाथा है–

सिव साहणेसु आहार–विरहिओ जं न वट्टए देहो।

तम्हा धणोव्व विजय साहु त तेण पोसेज्जा॥

–मोक्ष के साधना मार्ग पर बढते हुए यह देह एक साधन है, आहार के बिना यह साधना करने मे समर्थ नही रहता। अत साधक इसी भावना से भरण पोषण करे जैसे धन्य सार्थवाह ने विजय चोर को भोजन दिया।

CONCLUSION

This second story of the Jnata Dharma Katha highlights the importance of detached mundane activities on the spiritual path As long as the soul rides the chariot of body it is imperative for the travel to maintain the chariot in running condition Whatever activity is needed for this maintenance is its imperative duty As such there is no scope of ambiguity or a second thought But all such activity has to be done with a detached attitude and not because of liking, fear, habit, or fondness

This story has been written in metaphoric style—

The city of Rajagriha is the abode of human beings Dhanya is an ascetic or a practicer on the spiritual path Vijay thief is the body of that ascetic Devdutt is the discipline, the means of achieving the ultimate pleasure of liberation Panthak is the harming attitude of lethargy or apathy The ornaments of Devdutt are the subjects of the five senses Under the influence of lethargy and infatuation with sensual pleasures the body annihilates the discipline The bond of shackles is the inevitable interdependence of soul and the body The king is the fruit of karma and his forces the various categories of karmas Crime is the cause of the bondage of life-span The nature's call of Dhanya is the natural needs of the human body without heeding to which the body becomes incapable of progressing on the spiritual path Bhadra is the teacher who rebukes the practicer but is satisfied when a proper reason is given for the specific deed The practicer explains that he has indulged in the act for the sole purpose of performing an essential duty and not because of any vested interest

THE MESSAGE

Without food this body is not capable of observing the disciplines like meditation, self-analysis, and other practices needed on the path of liberation As such an ascetic should nurture the body with the same attitude as Dhanya merchant did Vijaya thief

■■

तृतीय अध्ययन : अंडे : आमुख

शीर्षक–अडे–अडक–यहाँ सामान्य अर्थ मे ही प्रयुक्त हुआ है यह शब्द। किन्तु एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्रतीक रूप दिया गया है इसे। आस्था का प्रतीक। अडे के भीतर जो जीवन विकास की क्रिया होती है वह सामान्यतया अदृष्ट होती है और उसको सेने वाले पक्षी के मन में उस अदृष्ट क्रिया व उसके प्रति गहरी और निश्शक आस्था रहती है। शका उत्पन्न हुई कि असंयमित व्यवहार आरंभ हुआ और जीवन का विकास अवरुद्ध। इस कथा मे इसी आस्था-अनाम्था के फल को दर्शाया है।

कथासार–चपा नगरी के बाहर सुभूमिभाग नामक एक मनोरम उद्यान था। इस उद्यान की एक झाडी मे एक मोरनी ने सुदर अडे दिये थे। दो सार्थवाह पुत्र गणिका देवदत्ता के साथ उद्यान-रमण के लिये आए और उन्होने वे अडे देखे। अपने चाकरो से उन्होने एक-एक अडा अपने-अपने घर भिजवा दिया जिससे वहॉ रही मुर्गियाँ उन्हें सेकर मयूर-शावक उत्पन्न करे जिनसे उनका मनोरंजन हो। सागरदत्त-पुत्र के मन मे अडे को देख शका उत्पन्न हो गई और वह उस अडे को बार-बार हिलाता-डुलाता और जॉच करता रहा। अतत वह अडा सड गया। जिनदत्त-पुत्र के मन मे कोई शंका उत्पन्न नहीं हुई। उसकी आस्था अटूट बनी रही। समय पाकर उस अडे मे से एक नन्हा मयूर निकला। उसे मयूर-पालको के पास भेजा और यथोचित विकास तथा कला सिखाने की व्यवस्था की गई। मयूर बडा हुआ तो उसके करतब देख जिनदत्त-पुत्र का मनोरजन तो हुआ ही साथ ही उसके स्पर्धा मे जीतने के कारण लाभ भी हुआ।

THIRD CHAPTER : ANDAK : INTRODUCTION

Title—Andak means eggs Although the term has been used in its literal sense only, it provides an important symbol, that of faith The life process continuing within an egg is apparently invisible The bird that hatches it still has a deep and unwavering faith in that invisible activity The moment a shadow of doubt appears it gives rise to unruly behaviour and results in choking the evolution of life This story highlights the result of such faith and skepticism

Gist of the Story—There was a beautiful garden named Subhumibhag outside the town of Champa A wild pea-hen had laid two eggs in a thicket in this garden Two merchant boys took along Devdutta courtesan and came to Subhumibhag garden for entertainment They saw those two large and healthy eggs They arranged to send one egg to each one's house with servants so that domestic hens could hatch and produce peacock chickens for their entertainment

Son-of-Sagardatta became doubtful if the egg would hatch or not? Nervously he disturbed the egg time and again All this movement made the egg lifeless

Son-of-Jinadatta had no such apprehension He was confident A few days later a tiny chick broke the shell and came out It was given under the care of peacock trainers The chick slowly grew into a beautiful and intelligent peacock Son-of-Jinadatta not only entertained himself but also took this peacock along to various competitions in the town and won high wagers

■■

तच्चं अज्झयणं : अंडे
तृतीय अध्ययन : अंडक
THIRD CHAPTER : ANDAK - THE EGGS

सूत्र १. जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण दोच्चस्स अज्झयणस्स णायाधम्मकहाण अयमट्ठे पन्नत्ते, तइअस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से प्रश्न किया-"भते ! श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञाता धर्मकथा के दूसरे अध्ययन का यह (पूर्वोक्त) अर्थ कहा है, तो तीसरे अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante ! What is the meaning of the third chapter of Jnata Dharmakatha according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेणं समए णं चंपा नामं नयरी होत्था, वन्नओ। तीसे ण चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे सुरम्मे नदणवणे इव सुह-सुरभि-सीयल-च्छायाए समणुबद्धे।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया-"हे जम्बू ! ऐसा वर्णन है कि काल के उस भाग मे चम्पा नाम की एक नगरी थी। जिसके बाहर उत्तर-पूर्व दिशा मे सुभूमिभाग नामक एक रमणीय उद्यान था। वह सभी ऋतुओ मे फूलो-फलो से लदा बड़ा सुरम्य लगता था। वह नन्दनवन के जैसा शुभ, सुरभित और शीतल छाया से भरा था।"

2. Sudharma Swami narrated—Jambu ! There are mentions that during that period of time there existed a town named Champa There was a beautiful garden named Subhumibhag outside the town With abundance of flowers and fruits that garden appeared inviting during every season It was attractive, fragrant, and full of cool shade just like Nandanvana (the garden of gods)

मयूरी के अंडे

सूत्र ३ तस्स ण सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसम्मि मालुयाकच्छए होत्था, वण्णओ। तत्थ णं एगा वणमऊरी दो पुट्ठे परियागए पिट्ठुंडी पंडुरे निव्वणे निरुवहए

भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवइ। पसवित्ता सए ण पक्खवाए णं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संविट्ठेमाणी विहरइ।

सूत्र ३ उस उद्यान के उत्तर मे एक जगह मालुका झाडियो अर्थात् तुलसी की झाडियो का झुरमुट था (पूर्व सम)। इस झुरमुट मे एक वनमयूरी ने, एक के बाद एक, दो अडे दिये। ये दोनों अडे पोली मुट्ठी जितने बडे और चावलों के ढेर जैसे सफेद (उज्ज्वल) थे, किसी भी विकार या दोष से रहित थे। अडे देने के बाद वह मयूरी अपने पंखो की हवा से अडो की रक्षा करती, सार-सँभाल करती, पोषण करती वहाँ रहती थी।

PEA-HEN EGGS

3. At the north end of that garden was a thicket of black Tulsi plants (details as before) In this, a wild pea-hen had laid two eggs one after the other These eggs were of the size of a loose fist, brilliant white like a heap of rice, and faultless After laying the eggs the pea-hen blew air over them with its wings and protected, nurtured and hatched them

सूत्र ४ तत्थ ण चपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसति, त जहा–जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य सहजायया सहवड्ढियया सहपसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्नमणुरत्तया अन्नमन्नमणुव्वयया अन्नमन्नच्छदाणुवत्तया अन्नमन्नहियइच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु किच्चाइ करणिज्जाइ पच्चणुभवमाणा विहरति।

सूत्र ४ चम्पा नगरी मे दो सार्थवाहपुत्र रहते थे। एक था जिनदत्त का पुत्र और दूसरा सागरदत्त का पुत्र। वे दोनो एक साथ जन्मे, खेले, और बडे हुए थे। दोनो का विवाह भी एक साथ ही हुआ था। दोनो मे आपस मे परम स्नेह था। जहाँ एक जाता वही दूसरा भी जाता था। सभी काम एक-दूसरे की सलाह से करते थे, एक-दूसरे की इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम नही करते थे। यहाँ तक कि परस्पर एक-दूसरे के घर-परिवार के कार्य भी कर दिया करते थे।

4. In Champa lived two sons of two merchants One was Son-of-Jinadatta and the other Son-of-Sagardatta Both were born, had played around and were brought up together They were married also around the same time They both loved each other very much Where one went, the other followed Whatever they did was with mutual consent and none of them ever went against the other's wish They were so close that they would even look after each other's family affairs

सूत्र ५. तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-"जण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं।" ति कट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेन्ति। पडिसुणेत्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था।

सूत्र ५ एक बार जब दोनों एक के घर में साथ-साथ बैठे थे तो आपस में बातचीत हुई-"हे देवानुप्रिय ! हमें जो भी सुख, दुःख, विदेश-यात्रा अथवा प्रव्रज्या प्राप्त हो उस सभी में हमें एक-दूसरे का साथ देना चाहिये।" दोनो ने यही प्रतिज्ञा ले ली और यथावत् अपने कार्यो मे लग गये।

5. One day, while they were sitting together at the residence of one of them, they discussed, "Beloved of gods ! Whatever pleasure or pain, chance of travel, or decision of renunciation we come across, we shall give each other company" They promised each other and resumed there normal life

गणिका देवदत्ता

सूत्र ६ तत्थ ण चपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ, अड्ढा जाव भत्तपाणा चउसट्ठिकलापडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीस-रइगुणप्पहाणा बत्तीसपुरिसोवयार-कुसला णवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारस-देसीभासाविसारया सिगारागारचारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-विहियविलास-ललियसलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला ऊसियज्झया सहस्सलंभा विइन्नछत्त-चामर-बालवियणिया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था, बहूणं गणिया-सहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ।

सूत्र ६ चम्पा नगरी में देवदत्ता नाम की एक गणिका भी रहती थी। वह शक्ति-सम्पन्न और समृद्ध थी, अनेको सेवक उसके आश्रित थे। चौंसठ कलाओ की पडित, गणिका के चौसठ गुणो से परिपूर्ण, उनतीस प्रकार की क्रीडाओं की अभ्यासी, इक्कीस रति गुणों की पारगत और बत्तीस पुरुषोपचारो (पुरुषों के साथ व्यवहार गुण) में कुशल थी वह। उसे नौ अगो के परिपूर्ण हो जाने का भान था अर्थात् नव विकसित यौवना थी। अठारह देशी भाषाओ की विशारद थी व शृगार का मूर्त्त रूप और चारु वेषधारी थी। वह संगति, गति आदि व्यवहार मे कुशल थी। उसके घर पर ध्वजा फहराती थी और उसका एक दिन का शुल्क एक हजार मुद्रा था। राजा ने उसे छत्र, चामर और बाल व्यंजनक (मोर पंख से बना

चामर/पंखा) देकर सम्मानित किया था। वह कर्णीरथ नाम की पालकी पर बैठकर आवागमन करती थी। यह देवदत्ता गणिका एक हजार गणिकाओ पर आधिपत्य करती सुखमय जीवन व्यतीत करती थी।

DEVDATTA, THE COURTESAN

6. In Champa, there also lived a courtesan named Devdatta She was powerful and wealthy She had numerous servants in her house She was proficient in sixty four arts, endowed with the sixty four qualities of a courtesan, an exponent of all the thirty nine types of entertainments, an expert of twenty one styles of sex plays, and accomplished in thirty one styles of interactions with males She was youthful and full of vigour and, had good command over eighteen indigenous languages She dressed in style, was the embodiment of adornment and an artful mover in the social and physical dimensions A flag hoisted on her residence and her charges for a day's entertainment were one thousand coins The king had honoured her with an umbrella, whisks and fans The palanquin she used for commuting was named Karnirath Having one thousand courtesans under her command she lived happily

उद्यान भ्रमण की तैयारी

सूत्र ७. तए ण तेसिं सत्थवाहदारगाण अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकाल-समयंसि जिमियभुत्तुत्तरा-गयाण समाणाण आयताण चोक्खाण परमसुइभूयाण सुहासणवरगयाण इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-"त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! कल्ल जाव जलते विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाण विहरित्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेन्ति, पडिसुणित्ता कल्लं पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेन्ति, सद्दावित्ता एव वयासी-

"गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेह। उवक्खडित्ता त विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम धूव-पुप्फ गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे, जेणेव णदा पुक्खरिणी, तेणामेव उवागच्छह। उवागच्छित्ता णदापुक्खरिणीओ अदूरसामते थूणामडवं आहणह। आहणित्ता आसित्त-संमज्जिओवलित्तं सुगध जाव कलिय करेह, करित्ता अम्हे पडिवालेमाणार चिट्ठह" जाव चिट्ठंति।

सूत्र ७. एक दिन दोपहर के भोजन के बाद वे सार्थवाहपुत्र आचमन कर, स्वच्छ-पवित्र होकर सुखासनों पर बैठे और परस्पर बातें करने लगे–"हे देवानुप्रिय ! क्या ही अच्छा हो कि कल प्रातःकाल विपुल अशनादि आहार सामग्री तथा धूप, पुष्प, गंध, वस्त्र साथ लेकर देवदत्ता गणिका के साथ सुभूमिभाग उद्यान की छटा का आनन्द लेते हुए विहार करे।" दोनो इस प्रस्ताव से सहमत हो गये और अगले दिन सुबह सेवको को बुलाकर कहा–

"देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और विपुल अशनादि खाद्य सामग्री तैयार करो। फिर वह सामग्री और धूप, गध पुष्पादि लेकर सुभूमिभाग उद्यान में नन्दा पुष्करिणी के निकट जाओ। वहाँ नदी के तट पर शामियाने से एक मण्डप तैयार करो। पानी छिडककर, साफ कर, लीप-पोतकर सुगधादि से उसे रम्य बनाओ। यह काम पूरा कर तुम वहीं पर हमारी राह देखना।" इस प्रकार सेवक आज्ञानुसार कार्य सम्पन्न कर वहीं ठहर गये।

PREPARATIONS FOR AN OUTING

7. After lunch, one day, both the merchant boys washed their hands and sat down to chat, "Beloved of gods ! How nice it would be if tomorrow morning we collect ample food stuff, incense, flowers, perfumes, dresses, etc , take along Devdatta courtesan and go to Subhumibhag garden to enjoy its beauty and entertain ourselves "

They both agreed and next morning called their staff and said, "Beloved of gods ! Go and cook a lot of food and other delicacies Pack the food, collect incense, flowers, (etc) and go near the Nanda stream in the Subhumibhag garden There, on the river bank raise a tent Properly clean the inner area with water, and make it habitable by applying plaster, white wash, perfumes, etc Wait there for us after you complete this work " The servants did as ordered

सूत्र ८ तए ण सत्थवाहदारगा दोच्चपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोइय समखुर-वालिहाण-समलिहियतिक्खग्गसिंगएहिं रययामय-सुत्तरज्जुय-पवरकचण-खचिय-णत्थपग्गहोवग्गहिएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणि-रयण-कंचण-घंटियाजालपरिक्खित्त पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव पवहणं उवणेह।" ते वि तहेव उवणेन्ति।

सूत्र ८ सार्थवाहपुत्रो ने तब अन्य सेवकों को बुलाकर आज्ञा दी–"एक समान खुर और पूँछ वाले, एक ही तरह के रग से रंगी चोटी के सींग वाले, चाँदी की घंटियाँ

लटकाये, जरी वाली डोरी की नाथ से बँधे और नीलकमल की कलगी से सजे उत्तम जवान बैल जिसमें जुते हों ऐसा रत्नों और सोने की घंटियों से सजा श्रेष्ठ लक्षणों वाला रथ ले आओ।'' सेवको ने तत्काल आज्ञा के अनुरूप रथ ला उपस्थित किया।

8. Now the merchant boys called other servants and said, "Arrange to get a beautiful chariot decorated with gem studded bells made of gold and drawn by young bullocks of good breed, having resembling hoofs, tails, and horns These bullocks should be adorned with same colour on horn-tips, silver bells on the neck and brocade straps and bridles with blue lotuses fixed at the top " The servants carried out the order and brought the chariot at the gate

उद्यान-भ्रमण

सूत्र ९. तए ण ते सत्थवाहदारगा ण्हाया जाव सरीरा पवहण दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहं तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुपविसेन्ति।

तए ण सा देवदत्ता गणिया सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ते सत्थवाहदारए एवं वयासी-''संदिसंतु ण देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्पओयणं ? ''

सूत्र ९ दोनो सार्थवाहपुत्र स्नानादि कर्म से निवृत्त हो रथ मे बैठ देवदत्ता गणिका के आवास के सामने आये। रथ से उतरकर उन्होने गणिका के घर मे प्रवेश किया।

उन्हे आता देख देवदत्ता प्रसन्न हो अपने आसन से उठी और सात-आठ कदम आगे बढ़ी। उसने आगे बढ़कर सार्थवाहपुत्रो का स्वागत करते हुए कहा-''देवानुप्रियो ! कहिये किस प्रयोजन से आना हुआ ?''

THE OUTING

9. Both the merchant boys got ready and riding in the chariot arrived at Devdatta's residence They got down from the chariot and entered the premises

When Devdatta saw them coming she got up and advanced a few steps She greeted the merchant-boys and said, "Beloved of gods ! Please tell me what brings you to me?"

सूत्र १०. तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणिय एवं वयासी–"इच्छामो णं देवाणुप्पिए ! तुम्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए।"

तए ण सा देवदत्ता तेसि सत्थवाहदारगाणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव समागया।

सूत्र १० सार्थवाहपुत्रो ने कहा–"हम तुम्हारे साथ-साथ सुभूमिभाग उद्यान की उद्यानश्री छटा का आनन्द लेना चाहते है, देवानुप्रिये !"

देवदत्ता ने सार्थवाहपुत्रो का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने स्नानादि कर लक्ष्मी के ममान उत्तम वस्त्र पहने और सार्थवाहपुत्रों के पास पहुँच गई।

10. The merchant-boys replied, "Beloved of gods ! We want to enjoy the beauty of Subhumibhag garden in your company"

Devdatta accepted the proposal of the merchant-boys She got ready after her bath (etc), dressed like Laxmi, the goddess of wealth, and came back to the merchant-boys

सूत्र ११ तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धि जाण दुरूहंति, दुरूहित्ता चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे, जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता णंदापोक्खरिणि ओगाहिति। ओगाहित्ता जलमज्जणं करेति, जलकीडं करेंति, ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरति। जेणेव थूणामडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थूणामडव अणुपविसित्ता सव्वालकारविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम धूवपुप्फगधवत्थ आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा एव च ण विहरति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा देवदत्ताए सद्धि विपुलाइ माणुस्सगाइ कामभोगाइ भुजमाणा विहरंति।

सूत्र ११ सार्थवाहपुत्र देवदत्ता को साथ ले रथ पर चढ़े और चम्पा नगरी के बीचोबीच होकर सुभूमिभाग उद्यान मे नन्दा पुष्करिणी के पास पहुँचे। रथ से उतरकर नदी मे गये। स्नान व जल-क्रीडा आदि करके वे देवदत्ता के साथ बाहर निकले और शामियाने मे गये। वहाँ वस्त्राभूषण पहन स्वस्थ चित्त व शान्त चित्त हो उत्तम आसन पर बैठ गये। देवदत्ता के साथ भर पेट भोजन करते कराते, गध-वस्त्रादि का उपभोग करते-कराते और भोजनोपरान्त देवदत्ता के साथ मन भरकर मनुष्योचित कामभोग का आनन्द लेते हुए समय विताने लगे।

11. With Devdatta the merchant-boys ascended the chariot and passing through the town arrived near the Nanda stream in the Subhumibhag garden Getting down from the chariot they entered the stream After an entertaining and refreshing bath in the company of Devdatta, they came out and went into the tent Dressing up and putting on the ornaments they sat down comfortably and quietly After a sumptuous lunch they spent their time enjoying all earthly and bodily pleasures with Devdatta in a richly decorated and perfumed interior within the tent

मयूरी का उद्वेग

सूत्र १२. तए णं सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिणिक्खमंति। पडिणिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहुसु आलिघरएसु य कयलीघरएसु य लयाघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति।

सूत्र १२ दिन के अंतिम प्रहर मे वे सार्थवाहपुत्र देवदत्ता को साथ लिये शामियाने से बाहर निकले और हाथ मे हाथ डालकर सुभूमिभाग उद्यान के वृक्ष काननो तथा पुष्प काननों आदि रमणीय स्थलो की छटा निहारते हुए घूमने लगे।

DISTURBED PEA-HEN

12. During the last quarter of the day they came out of the tent and holding Devdatta's hands started sauntering around enjoying the coulourful flowers, greenery and other enchanting spots in the Subhumibhag garden

सूत्र १३. तए ण ते सत्थवाहदारगा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ। पासित्ता भीया तत्था महया महया सद्देण केकारव विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ। पडिणिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छय च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी चिट्ठइ।

सूत्र १३ घूमते-घूमते जब वे उस तुलसी के झुरमुट की ओर जाने लगे तो उस वनमयूरी ने उन्हे आते देखा। वह भय से घबरा गई और जोर से कूकती हुई झुरमुट से

बाहर निकल उड़कर एक पेड की डाल पर बैठ गई। वहाँ से वह उस झुरमुट और आते हुए सार्थवाहपुत्रो को अपलक देखने लगी।

13. During this walk when they approached that Tulsi thicket the wild pea-hen saw them Squeaking with fear she came out of the thicket and flew to a branch of a nearby tree Perched there she watched the approaching merchant-boys and the thicket without blinking

अडों का अपहरण

सूत्र १४ तए ण सत्थवाहदारगा अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी–' जह ण देवाणुप्पिया ! एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमाणा पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया महया सद्देण जाव अम्हे मालुयाकच्छय च पेच्छमाणी पेच्छमाणी चिट्ठइ, त भवियव्वमेत्थ कारणेण'' ति कट्टु मालुयाकच्छयं अतो अणुपविसति। अणुपविसित्ता तत्थ ण दो पुट्ठे परियागए जाव पासित्ता अन्नमन्न सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी–

''मेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमे वणमऊरीअडए साणं जाइमताणं कुक्कुडियाण अडएसु य पक्खिवावित्तए। तए ण ताओ जातिमताओ कुक्कुडियाओ एए अडए सए य अडए सए ण पक्खवाए ण सारक्खमाणीओ सगोवेमाणीओ विहरिस्सति। तए णं अम्हे एत्थ दो कीलावणगा मऊरी-पोयगा भविस्सति।'' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सए सए दासचेडे सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी–''गच्छह ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! इमे अडए गहाय सयाण जाइमताण कुक्कुडीण अडएसु पक्खिवह।'' जाव ते वि पक्खिवेति।

सूत्र १४ सार्थवाहपुत्रो ने एक-दूसरे को निकट बुलाकर कहा–''देवानुप्रिय ! यह वनमयूरी हम आता देख भय से स्तब्ध हो गई और आशका से उद्विग्न होकर उड गई और जोर-जोर से आवाज करके हमे और झुरमुट को बार-बार देख रही है। इसका कोई कारण होना चाहिए।'' इस प्रकार बाते कर वे दोनो झुरमुट मे घुस पडे। वहॉ उन्होने क्रमश बडे हुए मयूरी के दो पुष्ट अडे देखे और परस्पर बात की।

''हे देवानुप्रिय ! हमारे लिये इन अडो को ले जाकर अपनी उत्तम जाति की मुर्गी के अडो के साथ डाल देना श्रेष्ठ होगा। इससे वे मुर्गियॉ अपने अडो के साथ इनकी भी अपने पखो की हवा से रक्षा करेगी और सेती रहेगी। यथा समय हमे अपनी क्रीडा के लिये दो मोर के बच्चे प्राप्त हो जायेगे।'' दोनो इस बात पर एकमत हो गये और अपने दास-पुत्रो

को बुलाकर कहा–"हे देवानुप्रियो ! इन अंडो को उठाकर ले जाओ और अपनी मुर्गियों के अडों के साथ रख दो।" दास-पुत्रो ने वैसा ही किया।

PICKING UP THE EGGS

14. The merchant-boys came together and consulted, "Beloved of gods ! Seeing us approach, this wild pea-hen was stunned and flew away in panic It is squeaking loudly and looking at us and the thicket in turn There must be some reason for this " And they entered the thicket They saw those two large and healthy eggs and consulted each other.

"Beloved of gods ! Would it not be good if we take these eggs and put them with eggs of our good breed hen at home? Along with their own eggs our hens will protect and hatch these eggs also At the proper time we shall have two peacock chickens for our entertainment " Both of them agreed to this and called their slave-boys and instructed, "Beloved of gods ! Pick up these eggs, take them home and put them with the eggs of our hen " The slave boys carried out the order

सूत्र १५. तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाण दुरूढा समाणा जेणेव चपानयरी देणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिहं अणुपविसति। अणुपविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउल जीवियारिहं पीइदाण दलयति। दलइत्ता सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सयाइं सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था।

सूत्र १५ सार्थवाहपुत्र तब गणिका देवदत्ता के साथ उद्यान की शोभा का आनन्द लेते हुए घूम-घामकर रथ मे बैठ नगर मे होते हुए गणिका के निवास पर आये। वहाँ आकर उन्होंने देवदत्ता को यथेष्ट प्रीतिदान देकर सत्कार-सम्मान किया और अपने-अपने घरो को लौट अपनी चर्या में जुट गये।

15. The merchant-boys and Devdatta continued their walk enjoying the beautiful garden and finally returned back to the courtesan's house riding the chariot and passing through the town They amply rewarded Devdatta, honoured her and returned to their houses

शंकाशील सागरदत्त पुत्र

सूत्र १६. तए णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि संकिए कंखिए विइगिच्छासमावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने-"किं णं ममं एत्थ कीलावणमऊरीपोयए भविस्सइ, उदाहु णो भविस्सइ?" त्ति कट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तेइ, परियत्तेइ, आसारेइ, संसारेइ, चालेइ, फंदेइ, घट्टेइ, खोभेइ, अभिक्खणं अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ। तए णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था।

सूत्र १६. दूसरे दिन सुबह होने पर सागरदत्त का पुत्र मुर्गी के दडबे पर आया। वहाँ पहुँचकर उसके मन मे मयूरी के अडे के विषय में शंका उत्पन्न होने लगी कि यह अंडा पकेगा या नहीं ? काक्षा उत्पन्न होने लगी कि इसमें से बच्चा निकलेगा कि नहीं ? विचिकित्सा हुई कि वह उसके साथ क्रीडा कर पायेगा या नहीं ? भेद भावना जाग उठी कि वह बच्चा जीवित भी बचेगा या नहीं ? इन सब बातों से उसके मन में दुविधा उत्पन्न हो गई और उसने मन ही मन कहा कि उसके इस अडे से क्रीड़ा के लिये मोर का बच्चा पैदा होगा कि नही ?

इस दुविधास्पद मन·स्थिति में वह बार-बार उस अंडे पर हाथ फेरने लगा, घुमाने लगा, कभी यहॉ तो कभी वहॉ रखने लगा, हिलाने-डुलाने लगा, मिट्टी खोदकर उसमें रखने निकालने लगा और कान के पास ले जाकर बजाने लगा। इस उठा-पटक मे वह अंडा पोचा हो गया।

SKEPTIC SON OF SAGARDATTA

16. Next morning Son of Sagardatta went near the roost Looking at the pea-hen egg he became doubtful if it would hatch or not? He thought if a chick would come out of it or not? He was caught in a suspense if he would be able to play with the chick or not? He was filled with the apprehension that the chick would remain alive or not? This stream of thoughts made him skeptic and he said to himself—"Would this egg provide me with a little peacock for my entertainment?"

In this doubtful mental condition he repeatedly brushed the egg with his palm, turned it around, moved it from one spot to another, shook it, and dug a hole in the ground and put it in He also picked it

up and bringing it near his ear, struck it to hear some sound All this movement made the egg lifeless

सूत्र १७. तए ण से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता त मऊरीअडय पोच्चडमेव पासइ। पासित्ता "अहो ण मम एस कीलावणए ण जाए" त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए।

सूत्र १७ कुछ दिनो बाद सागरदत्त का पुत्र फिर उस दडबे के निकट आया और देखा कि वह मयूरी का अडा तो पोचा पड गया है। यह देख वह खिन्न चित्त होकर अवसाद मे डूब गया–"अहो ! मुझे क्रीडा के लिये यह मयूरी का बच्चा नही मिल सका।"

17. After some days Son-of-Sagardatta again went near the roost and saw that the egg had rotted He became sad and disconcerted thinking that now he would not get a little peacock to play with

दुविधा का फल

सूत्र १८. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अंतिए पव्वइए समाणे पचमहव्वएसु, छज्जीवनिकाएसु, निग्गथे पावयणे सकिए जाव कलुससमावन्ने से ण इह भवे चेव बहूण समणाण समणीण बहूण सावगाण साविगाण हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरिहणिज्जे, परिभवणिज्जे, परलोए वि य ण आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य जाव

सूत्र १८ आयुष्मान् श्रमणो ! इस प्रकार हमारा जो साधु या साध्वी दीक्षा ग्रहण करने के बाद पॉच महाव्रतो, षट्जीवनिकाय या निर्ग्रन्थ प्रवचन के विषय मे शकादि कर मन मे दुविधा को जन्म देता है वह इस भव मे अनेक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा सघ मे निकाल देने योग्य, निन्दनीय, लोक निन्दा के योग्य, गर्हणीय तथा अनादर करने के योग्य होता है। वह तो पर भव मे भी बहुत कष्ट पाता है और ससार परिभ्रमण करता रहता है।

CONSEQUENCE OF DOUBT

18. Long-lived Shramans ! The same way those of our ascetics who after getting initiated carry doubt about the five great vows, six classes of beings, and teachings of the Nirgranth and become skeptic are liable to be thrown out of the order They become the objects of criticism, public contempt, hatred and disrespect in this life Besides this, they

also suffer misery in the next life and are caught in the cycle of rebirth indefinitely

सूत्र १९. तए णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि निस्संकिए, "सुवत्तए ण मम एत्थ कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सइ" त्ति कट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खण नो उव्वत्तेइ जाव नो टिट्टियावेइ। तए ण से मऊरीअडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टियाविज्जमाण कालेण समए ण उब्भिन्ने मऊरीपोयए एत्थ जाए।

सूत्र १९ उधर जिनदत्त का पुत्र भी मुर्गी के दडबे पर आया। किन्तु वह मयूरी के अंडे के विषय मे नि शक रहा। उसके मन मे यह विश्वास था कि मेरे इस अडे से क्रीड़ा हेतु मोर का एक सुन्दर गोलमटोल बच्चा निकलेगा। इस कारण उसने अडे को किसी भी प्रकार छेडा-छूया नही। यथा समय वह अडा फूटा और उसमें से मोर का बच्चा निकला।

19. On the other side, Son-of-Jinadatta also went near the roost at his house However, he had no apprehension about the egg He was confident that the egg would produce a plump little peacock for his entertainment Thus he did not disturb the egg in any way At the proper time a tiny chick broke the shell and came out

नाचता मोर

सूत्र २० तए ण से जिणदत्तपुत्ते त मऊरीपोयय पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे मऊरपोसए सद्दावेइ। सद्दावित्ता एव वयासी-"तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! इम मऊरपोयय बहूहि मऊरपोसणपाउग्गेहि दव्वेहि अणुपुव्वेण सारक्खमाणा सगोवेमाणा सवड्ढेह, नट्टुल्लगं च सिक्खावेह।

तए ण ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता त मऊरपोयय गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता त मऊरपोयग जाव नट्टुल्लग सिक्खावेति।

सूत्र २० जिनदत्त-पुत्र उस बच्चे को देख प्रसन्न हुआ और मयूरो की देखरेख करने वालो को बुलाकर कहा-"देवानुप्रियो ! तुम इस मोर के बच्चे को इसके खाने योग्य पदार्थ दो और भलीभॉति सरक्षण सगोपन करते हुए बडा करो और नाचना सिखाओ।"

मयूर पोषको ने जिनदत्त के पुत्र की आज्ञा स्वीकार कर उस बच्चे को उठाया और अपने घर ले जाकर उसका पोषण करने लगे।

DANCING PEACOCK

20. Son-of-Jinadatta was pleased to see the chick and calling the peacock trainers he said, "Take this chick under your care, give it the best feed, protect it, train it to dance at command, and let it grow undisturbed "

The peacock trainers accepted the order and took the chick home to do the needful

सूत्र २१. तए णं से मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वंजणगुणोववेए माणुम्माण-पमाणपडिपुण्ण-पक्ख-पेहुण-कलावे विचित्तपिच्छे सयचंदए नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइं नट्टुल्लगसयाइं केकारवसयाणि य करेमाणे विहरइ।

तए णं ते मऊरपोसगा त मऊरपोयय उम्मुक्कबालभाव जाव करेमाणं पासित्ता तं मऊरपोयग गेण्हंति। गेण्हित्ता जिणदत्तस्स पुत्तस्स उवणेन्ति। तए ण से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मऊरपोयगं उम्मुक्कबालभाव जाव करेमाण पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसि विउल जीवियारिहं पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ।

सूत्र २१ मयूरी का बच्चा धीरे-धीरे बडा हुआ। उसका ज्ञान विकसित हुआ। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ तो वह मयूर सम्बन्धी सभी गुणो, व्यजनो और लक्षणो से युक्त हो गया। वह पुष्ट, विशाल और भरे पखो और पूँछ वाला सुन्दर मोर बन गया। उसके पख रग-बिरंगे और सैंकड़ो चाँद वाले हो गये। वह नीलकठ और नृत्य-स्वभावी बन गया। वह एक चुटकी बजाते ही बारबार कूदने लगता था।

तब मयूर पालको ने अपना कार्य सपन्न हुआ जान उसे जिनदत्त पुत्र के पास पहुँचा दिया। जिनदत्त पुत्र उसे बडा हुआ और गुण सम्पन्न देख बहुत हर्षित हुआ। उसने मयूर पालकों को आजीविका के लिये यथेष्ट प्रतिदान देकर विदा किया।

21. The chick slowly grew into a beautiful and intelligent peacock. When it reached maturity it displayed all the attributes, qualities and signs of the best breed of peacocks It turned into a healthy, giant, thickly plumed, and long tailed beautiful peacock Its colourful feathers displayed hundreds of moons. This instinctively dancing peacock had a deep blue neck It danced and cooed at command

When the peacock trainers were satisfied with their work they took the peacock to Son-of-Jinadatta When Son-of-Jinadatta set his eyes on this enchantingly beautiful and trained peacock he became very happy He generously rewarded the trainers and bid them good-bye

चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

शंका से नाश : विश्वास से विकास

चित्र १२

सागरदत्तपुत्र के मन में संशय हुआ कि इस अण्डे में से मयूरी-पोत (मोर का बच्चा) पैदा होगा या नहीं? अतः वह बार-बार उस अण्डे को उठाता, हिलाता और आवाज सुनता। इस प्रकार करने से वह अण्डा पोला (निर्जीव) हो गया।

जिनदत्तपुत्र निःशंक भाव से उसका पालन-पोषण करवाता रहा। समय पर मोर का बच्चा निकला। उसे शिक्षित कर वह नगर के प्रमुख स्थान-स्थान पर सुन्दर नृत्य दिखाता हुआ जनता का मनोरंजन करता रहता। जिनदत्तपुत्र के मोर को नाचता हुआ देखकर सागरदत्तपुत्र अपनी शंकालु वृत्ति के लिए सिर पर हाथ रखकर पश्चात्ताप करने लगा।

(अध्ययन ३)

DOUBT LEADS TO DESTRUCTION : FAITH LEADS TO CREATION

ILLUSTRATION 12

Son of Sagardatta became doubtful if the egg would hatch or not? Nervously he disturbed the egg time and again. All this movement made the egg lifeless. Son-of-Jinadatta had no such apprehension. A few days later a tiny chick broke the shell and came out. It was given proper training. Son-of-Jinadatta entertained himself and also took this peacock along to various public places and entertained masses. Son-of-Sagardatta watched all this and repented for his skeptic mentality resting his head in his palms.

(CHAPTER-3)

सूत्र २२. तए णं से मऊरपोयए जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णगोलाभंगसिरोधरे सेयावंगे अवयारियपइन्नपक्खे उक्खित्तचंदकाइयकलावे केक्काइयसयाणि विमुच्चमाणे णच्चइ।

तए ण से जिणदत्तपुत्ते तेणं मऊरपोयए णं चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सइएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहि य जयं करेमाणे विहरइ।

सूत्र २२. जिनदत्त पुत्र के एक इशारे पर वह मोर क्रीडा करते हुए अपनी गर्दन को सिह की पूँछ के समान गोलाकार बना लेता था। उसके नेत्र के कोर सफेद हो जाते थे। वह अपने पंखो को फैला लेता था और चदोवे युक्त पूँछ को ऊपर उठा लेता था। और तब वह बारबार कूकता हुआ नाचने लगता था।

जिनदत्त-पुत्र चम्पा नगरी के विभिन्न भागों मे होने वाली अनेकों मयूर-प्रतिस्पर्धाओं में उस मोर को ले जाता और हजारों, लाखो के दाँव जीतकर लाता।

22. At the command of Son-of-Jınadatta the peacock playfully bent ıts neck back gıvıng ıt a shape as cırcular as the taıl of a lıon The edges of ıts eyes turned whıte It stretched ıts wıngs and lıfted ıts taıl hıgh, dısplayıng ıts moons And then ıt started cooıng and dancıng

Son-of-Jınadatta used to take thıs peacock along to varıous competıtıons ın the town and wın hıgh wagers

उपसहार

सूत्र २३ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा निग्गंथो वा पव्वइए समाणे पचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कंखिए निव्विइगिच्छे से ण इह भवे चेव बहूण समणाण समणीण जाव वीइवइस्सइ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं णायाण तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र २३ हे आयुष्मान् श्रमणो ! इसी प्रकार हमारा जो साधु-साध्वी दीक्षित होकर पाँच महाव्रतों, षट्जीव निकाय तथा निर्ग्रन्थ प्रवचन में शंकादिरहित होता है वह इस भव मे अनेक श्रमण-श्रमणियो से मान-सम्मान प्राप्त करता है और अन्त में संसार सागर को पार कर लेता है।

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञाता सूत्र के तीसरे अध्ययन का यह अर्थ कहा है। ऐसा मै कहता हूँ।

CONCLUSION

23. Long-lived Shramans ! The same way those of our ascetics who after getting initiated have no doubts about the five great vows, six classes of beings, and teachings of the Nirgranth become objects of reverence for all the ascetics in this life and finally cross the ocean of rebirth

Jambu ! This is the text and the meaning of the third chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I confirm

॥ तच्च अज्झयण समत्त ॥

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE THIRD CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की यह तीसरी कथा आप्त (सर्वज्ञ) वचन मे अनास्था के दुष्प्रभाव तथा आस्था के सुफल को प्रकट करती है। प्रत्येक व्यक्ति मे प्रत्येक क्रिया को देखने, जानने, समझने की सामर्थ्य नही होती। इसलिये उस क्रिया मे होने वाले हित-अहित को विवेक बुद्धि पर परखकर मार्ग स्थिर करना प्रत्यक के लिए सभव नही होता। ऐसी स्थिति मे जिनके पास अनुभव व ज्ञान है ऐसे आप्त पुरुषो द्वारा स्थिर मार्ग पर नि शक होकर चलना ही विकास का साधन है। शका, काक्षा एव विचिकत्सा सम्यकृत्व के दोष है। इन मानसिक शिथिलताओ से साधक का मन साधना पथ से डगमगा जाता है। अत नि शक आस्थापूर्ण जीवन जीने की दृष्टि/प्रेरणा इस अध्ययन से मिलती है।

उपनय गाथा

जिणवर-भासिय भावेसु भाव सच्चेसु भावओ मइम।
नो कुज्जा सदेह सदेहोऽणत्थ हेउ त्ति॥

सदेह अनर्थ का कारण है, अत बुद्धिमान पुरुष वीतराग सर्वज्ञ कथित वाणी पर किसी प्रकार सदेह नही करे। क्योकि सदेह साधना मे चचलता पैदा करके अनर्थ का कारण बनता है। वीतराग वाणी पर शका, काक्षा, विचिकित्सा आदि करना अध पतन की ओर ले जाता है। अण्डे को सेने से उसमे से बच्चा निकलेगा इस सामान्य व स्थापित यथार्थ पर शका उत्पन्न होने और उसके फलस्वरूप अण्डे के पोला हो जाने के सटीक उदाहरण मे इस बात को पुष्ट किया गया है।

CONCLUSION

This third story of Jnata Dharma Katha reveals the consequences of belief and dis-belief in the word of the all knowing or the omniscient Every individual hardly has the capacity to see, know, and understand each and every activity in nature As such it is not possible for him to take decisions based on judgment of the good and bad consequences As such, in this complex state of affairs the best way to progress is to faithfully follow the path shown by those sagacious individuals who have the knowledge bolstered by experience Doubt, disbelief and skepticism are impediments on the right path These inner weaknesses or infirmities disturb the practicer on the path of spiritual practices This story inspires to adopt the way of life that is founded on righteous faith

THE MESSAGE

Doubt leads to debasement So the wise should not have any doubt in the word of the omniscient This is because doubt disturbs spiritual practices and consequently becomes the cause of downfall

परिशिष्ट

मयूर-पोषक-मोर की देखरेख करने वाले तथा उसे कलाओ का अभ्यास कराने वाले। यह एक विशेष वर्ग के लोग हुआ करते थे जिनकी आजीविका पशु-पक्षियो को मनुष्य के मनोरजन तथा अन्य कार्यो के लिए अभ्यास कराने प्रशिक्षण देने के व्यवसाय पर निर्भर करती थी।

आलिकागृह (आदि)-उद्यान मे रमण व सुविधा के लिये वृक्षो, लताओ, फूलो आदि से बनाए गये अनेक प्रकार के विश्राम स्थल।

APPENDIX

Peacock-trainer—A person engaged in breeding and training of peacocks This was a class or group of families who had taken up animal and bird breeding and training for entertainment and other services

Aalikagriha (etc)—Small rooms resting places, and other such covered and secluded areas, for human use in a garden, that are prepared with help of trees, vines flowers etc

■■

चतुर्थ अध्ययन : कूर्म : आमुख

शीर्षक–कुम्मे–कूर्म–कछुए/कछुआ एक अनोखी शारीरिक संरचना वाला प्राणी है। आपदाओं से प्रतिरक्षा के लिए इसके शरीर का अधिकाश खुला भाग चमडे की एक कठोर पर्त से ढका होता है। इसे हम ढाल के रूप मे जानते हैं। कछुए के चारो पैर तथा गर्दन इस प्रकार बने होते हैं कि वह उन्हें अपने इस ढालरूपी शरीर से इच्छानुसार बाहर-भीतर कर सकता है और इस प्रकार अपनी रक्षा करता है। आत्म-साधना के पथ पर विकाररूपी शत्रुओं से रक्षा हेतु इन्द्रिय-गोपन के महत्त्व को समझाने के लिए प्रतीक रूप मे कछुए का उपयोग किया गया है इस कथा मे। साथ ही चित्त चचलता और कौतूहल का दुष्प्रभाव प्रकट किया गया है। अध्यात्म दृष्टि से कछुए का यह प्रतीक जैन आगमो के अतिरिक्त गीता आदि मे भी वर्णित है।

कथासार–वाराणसी नगरी के बाहर गगा नदी के एक तट पर मयग तीर नामक एक द्रह था। उसमे कछुओं सहित अनेक जलचर प्राणी रहते थे। उस द्रह के एक तट पर एक विशाल झाड़ी मे दो दुष्ट सियार रहते थे। एक बार सध्या के बाद दो कछुए उस तट पर भोजन की खोज मे आए और इधर-उधर घूमने लगे। दोनो सियारो ने उन्हें देखा और उनका भक्षण करने आगे बढ़े। दोनो कछुओ ने अपने पैरो तथा गर्दन को शरीर मे समेट लिया और एक स्थान पर गेद की तरह स्थिर हो गये। सियारो ने बहुत चेष्टा की पर उनके कठोर कवच को भेद नही सके। निराश हो वे उस झाडी मे छुप गये और कछुओ को देखने लगे। उनमें से एक कछुए ने यह समझा कि सियार चले गये हैं। कौतूहलवश उसने अपनी एक टाँग को कवच के बाहर निकाला। ताक मे बैठे सियार उस पर झपट पडे और उसकी बाहर निकली टाँग को क्षत-विक्षत कर खा गये। वह कछुआ थोडी-थोडी देर मे कौतूहलवश अपना एक अग बाहर निकालता और सियार उसे नोंच खाते। इस प्रकार कुछ देर मे वे उस कछुए को मारकर खा गये। तब दूसरे कछुए को खाने की चेष्टा की पर वह स्थिर ही रहा। थककर सियार लौट गये। वह कछुआ बहुत देर तक वैसे ही स्थिर रहा। फिर जब उसे पूरा विश्वास हो गया कि सियार दूर चले गये हैं तो उसने सावधानी से गर्दन बाहर निकालकर चारो ओर देखा। आश्वस्त होने पर उसने झट मे चारो पैर बाहर निकाले और दौडकर पानी मे जा घुसा।

FOURTH CHAPTER : KURMA : INTRODUCTION

Title—Kurma means turtle This amphibian has a unique constitution Nature has provided it with an extremely hard and large outer shell for the protection of its body This outer shell is so hard that humans use it as shield The structure of the rest of its body is such that it can extend and pull back its neck and limbs out and in from this natural shield This creature has been presented as a symbol to emphasize the importance of shielding the senses from foes like distortions and perversions The story also reveals the bad effects of irrational curiosity and wavering attitude In spiritual context this metaphor has also been used in the Gita besides other Jain canons

Gist of the Story—Outside the town named Varanasi, on the north-eastern side of the river Ganges was a lake named Mritgangateerhrid Flocks of a variety of aquatic animals including turtles abounded it Near that lake was a large thicket in which lived two evil jackals One day late in the evening two turtles came out of the lake and started moving around at the bank in search of food Those two evil jackals saw the turtles and moved in their direction

When the turtles saw the jackals they withdrew their limbs and neck into the shell In this state they stopped where they were, absolutely immobile and still like a ball at rest The jackals tried their best but failed to cause any damage or pain to the hard outer shell of the turtles Dejected they returned to their lonely den and waited quietly without moving or stirring

When one of the turtles observed that sometime had passed since the jackals had left the place, it slowly pushed out one of its limbs The waiting jackals at once pounced on the turtle with great speed and force They tore at the exposed limb of the turtle with their paws, broke it apart with their jaws, consumed the flesh and licked the bones clean The turtle brought out all its limbs one after the other out of curiosity and the jackals consumed all the four limbs and the neck Once the turtle was dead the jackals devoured all its flesh and blood

Both those evil jackals then went near the other turtle and once again tried to kill it But this turtle did not push out any of its limbs and so the jackals failed to do any damage Tired and defeated they returned into their den dejected

After some time, when the turtle realized that the jackals had gone far away, it slowly stretched its neck out and carefully watched all around Finding no danger lurking nearby, it at once pushed out all its four limbs, ran with all its power and speed and entered the lake

■■

चउत्थ अज्झयणं : कुम्मे
चतुर्थ अध्ययन : कूर्म
FOURTH CHAPTER : KURMA - THE TURTLES

सूत्र १ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं नायाण तच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स ण णायाण के अट्ठे पन्नत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा-"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञाता सूत्र के चौथे अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante ! What is the meaning of the fourth chapter of the Jnata Sutra according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २. एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समए ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, वन्नओ। तीसे ण वाणारसीए नयरीए बहिया उत्तर-पुरच्छिमे दिसिभागे गगाए महानदीए मयगतीरद्दहे नाम दहे होत्था, अणुपुव्व-सुजाय-वप्प-गभीर-सीयल-जले अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छन्ने सछन्नपत्त-पुप्फ-पलासे बहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिस-सुभग-सोगधिय-पुडरीय-महापुडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-केसर-पुप्फोवचिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

तत्थ ण बहूण मच्छाण य कच्छपाण य गाहाण य मगराण य सुसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाहस्सियाण य जूहाइ निब्भयाइ निरुव्विग्गाइ सुहसुहेण अभिरममाणाइ अभिरममाणाइ विहरति।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने कहा-"हे जम्बू ! काल के उस भाग म वाराणसी नामक एक नगरी थी, ऐसा वर्णन है। गगा नदी के ईशाणकोण मे मृतगगातीरह्रद नाम की एक झील थी। उसके एक के बाद एक कई नैसर्गिक तट थे। उसका जल शीतल, गहरा, स्वच्छ और निर्मल था। उसकी सतह कमल-पुष्प, कुमुद-दल तथा पुष्प-पलाशो से ढकी हुई थी। वह विभिन्न जाति के अनेक कमल-पुष्पो और उनकी केसर से परिपूर्ण था। इस प्रकार वह झील अत्यन्त शोभन और दर्शनीय थी।

उस झील मे अनेक मत्स्य, कछुवे, ग्राह, मगर, सुसुमार आदि जलचरो के झुड निर्भय और निरुद्विग्न होकर आनन्द से विचरते रहते थे।

2. Sudhama Swami narrated—Jambu ! It is said that during that period of time there existed a town named Varanasi On the north-eastern side of the river Ganges was a lake named Mritgangateerhrid It had a number of natural banks Its water was cold, deep, pure and clear Its surface was covered with lotus flowers, lily flowers and dense green foliage It was filled with a wide variety of lotus flowers and the yellow of their pollen Thus the lake was very beautiful and attractive

Flocks of a variety of aquatic animals including fish, turtle, alligator, crocodile, Sunsumar, etc abounded it and played around fearlessly

सूत्र ३ तस्स ण मयगतीरद्दहस्स अदूरसामते एत्थ ण महं एगे मालुयाकच्छए होत्था, वन्नओ। तत्थ ण दुवे पावसियालगा परिवसंति पावा चडा रोद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्ति वियालचारिणो दिया पच्छन्न चावि चिट्ठति।

सूत्र ३ उस झील के पास एक बडा-सा तुलसी-वन था (पूर्व सम)। जिसमे दो पापी सियार रहते थे। वे पापी बडे क्रोधी, रौद्र, साहसी और इच्छित वस्तु को पाने मे दत्तचित्त थे। उनके अगले पैर खून मे सने रहते थे। वे मासार्थी, मॉसाहारी और मॉसप्रिय ही नही मॉस लोलुप भी थ। मास की तलाश मे वे सॉझ और रात को घूमते-फिरते और दिन मे छिपे रहते थे।

3. Near that lake was a large thicket of basil (Tulsi) shrubs (details as before), in which lived two evil jackals They were cunning, ferocious, bold, and greedy Their front paws were always bloody They not only consumed, liked, and loved meat but were also ravenous for it During the evening and night they roamed around in search of a prey and remained concealed during the day

कछुओ का आगमन

सूत्र ४ तए ण ताओ मयगतीरद्दहाओ अन्नया कयाइ सूरियसि चिरत्थमियसि लुलियाए सझाए पविरलमाणुससि णिसतपडिणिसतंसि समाणसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहार गवेसमाणा सणिय सणिय उत्तरति। तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वओ समता परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्ति कप्पेमाणा विहरंति।

सूत्र ४. एक बार सूर्यास्त के बाद और संध्या के भी बीत जाने के बाद जब लोग अपने-अपने घरो में विश्राम कर रहे होते हैं, कोई बिरले ही घूमते-फिरते दिखाई देते है, उस समय उस झील में से आहार की इच्छा से दो कछुए बाहर निकले। वे झील के आसपास अपने आहार की खोज में इधर-उधर घूमने लगे।

THE TURTLES

4. One day late ın the evenıng when most of the people rest at home, only rarely some one ıs seen movıng around, two turtles emerged out of the lake wıth a desıre to eat. They started movıng around at the bank ın search of food

सूत्र ५. तयाणतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिणिक्खमंति। पडिणिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता तस्सेव मयगतीरद्दहस्स परिपेरंतेण परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

तए णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ५ उधर भोजन की तलाश मे वे दोनो पापी सियार भी झुरमुट से निकले और झील के किनारे आकर चारो तरफ आहार की खोज करने लगे। सियारो को वे कछुए दिखाई दिये तो वे उनकी तरफ आने को तत्पर हुए।

5. Those two evıl ȷackals also came out of the thıcket ın search of a prey and started lookıng around When these ȷackals saw the turtles they turned and moved ın theır dırectıon

सूत्र ६. तए णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासति। पासित्ता भीता तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहि सएहि काएहिं साहरंति, साहरित्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया संचिट्ठंति।

सूत्र ६. उन कछुओं ने जब सियारो को आते देखा तो वे डर गये। त्रास से उद्विग्न होकर तथा अत्यन्त भयभीत होकर उन्होने अपने पैरो और गर्दन को शरीर के भीतर समेट लिया। ऐसी स्थिति में वे निश्चल, निस्पन्द और शांत हो ठहर गये।

6. When the turtles saw the ȷackals they were afraıd They became so acutely fearful that ın panıc they wıthdrew theır lımbs and neck
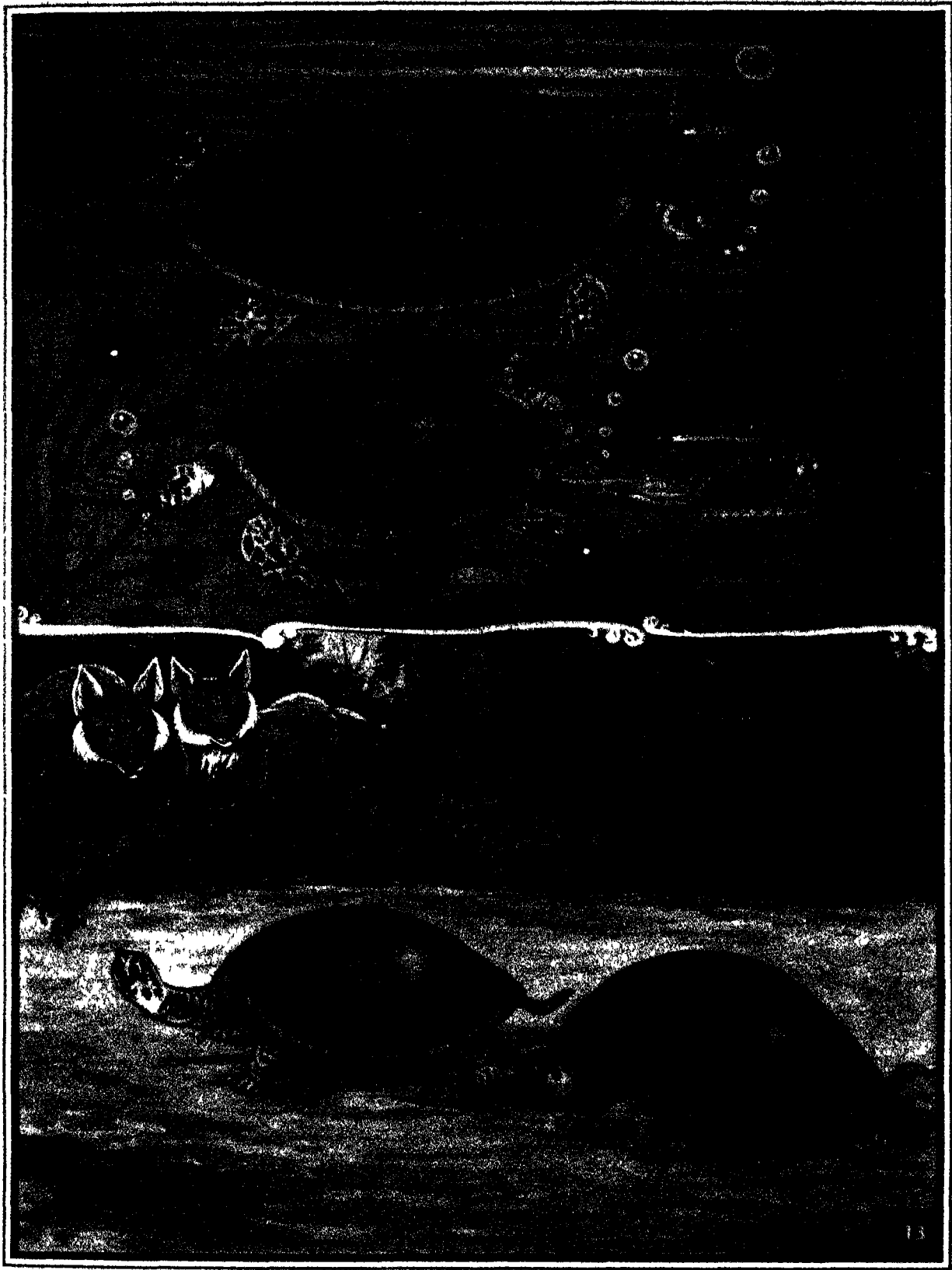
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

भोले कछुए : धूर्त शृगाल

चित्र १३

गंगा नदी के तट पर मृतगंगा तीर नामक एक द्रह था। जहां पर अनेक प्रकार के मच्छ, कच्छ, कछुए और जलचर प्राणी रहते थे। एक बार सन्ध्या के समय दो कछुए भोजन की तलाश में द्रह से बाहर निकलकर रेतीले तट पर घूमने लगे। उसी तीर के पास एक घनी झाड़ियों वाला मालुयाकच्छ था। वहां दो धूर्त शृगाल (सियार) रहते थे। सियारों ने कछुओं को घूमते देखा तो उन्हें अपना भक्ष्य बनाने के लिए घात लगाकर वहां आकर छुप गये।

(अध्ययन ४)

INNOCENT TURTLES : CUNNING JACKALS

ILLUSTRATION 13

On the banks of the river Ganges was a lake named Mritgangateerhrid. Flocks of aquatic animals including turtles abounded it. On the river-bank, two evil jackals lived in a large thicket. One evening two turtles came out of the lake and started moving around on the sandy bank in search of food. The jackals saw the turtles and hid within the thicket ready to pounce for a kill.

(CHAPTER-4)

into the shell. In this state they stopped where they were; absolutely immobile and unstirring

शृंगालों की चालाकी

सूत्र ७. तए णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता ते कुम्मगा सव्वओ समता उव्वत्तेन्ति, परियत्तेन्ति, आसारेन्ति, संसारेन्ति, चालेन्ति, घट्टेन्ति, फंदेन्ति, खोभेन्ति, नहेहिं आलुपति, दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा, पबाहं वा, वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए।

तए ण ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चं पि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति, जाव नो चेव ण संचाएंति करेत्तए। ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा सणियं सणिय पच्चोसक्कंति, एगतमवक्कमंति, निच्चला निप्फदा तुसिणीया संचिट्ठंति।

सूत्र ७ दोनो सियार कछुओं के पास पहुँचे और उन्हें उलटा-पलटा, आगे-पीछे सरकाया, घसीटा, हिलाया और अन्त में नाखून और दाँत गडाकर नोंचने-फाड़ने की चेष्टा की। किन्तु वे उन कछुओ के शरीर को न्यूनाधिक किसी भी प्रकार पीडा पहुँचाने में अथवा चमडी को भेदने मे सफल नही हो सके। ये सब चेष्टाएँ उन्होने बार-बार कीं और हर बार असफल होने पर वे रुक गये। शरीर और मन दोनों की थकान से उन्हे ग्लानि और खेद हुआ। फिर वे धीरे-धीरे वापस लौटे और एकान्त में जा निश्चल, निस्पंद और मूक हो ठहर गये।

CUNNING JACKALS

7. The jackals reached near them, turned and over-turned them, pulled and pushed them, shifted and shook them, and in the end tried to pierce and tear them with claws and canines But they failed to cause any damage or pain to the hard outer shell of the turtles They tried these tricks again and again but in vain, and stopped Extremely tired in body and spirit they felt dejected and ashamed Slowly they returned to their lonely den and waited quietly without moving or stirring

चपल स्वभाव का फल

सूत्र ८ तत्थ णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं सणिय एगं पाय निच्छुभइ। तए णं ते पावसियालया तेणं कुम्मए णं सणियं सणियं एगं पायं

नीणियं पासंति। पासित्ता ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घ चवल तुरिय चड जइण वेगिइ जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता तस्स ण कुम्मगस्स त पाय नखेहि आलुपति दतेहि अक्खोडेति, तओ पच्छा मस च सोणिय च आहारेंति, आहारित्ता त कुम्मग सव्वओ समंता उव्वत्तेति जाव नो चेव ण सचाइति करेत्तए, ताहे दोच्च पि अवक्कमति, एव चत्तारि वि पाया जाव सणियं सणिय गीव णीणेइ। तए ण ते पावसियालया तेण कुम्मए ण गीव णीणिय पासंति, पासित्ता सिग्घ चवल तुरिय चड नहेहि दतहिं कवाल विहाडेंति, विहाडित्ता तं कुम्मग जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवित्ता मस च सोणिय च आहारेति।

सूत्र ८ दोनो मे से एक कछुए ने जव देखा कि सियारो को गये कुछ देर हो चुकी है तो उसने धीरे-धीरे अपना एक पैर शरीर के बाहर निकाला। दुष्ट सियार यह सब देख रहे थे। वे तत्काल तीव्र, शीघ्र, चपल और त्वरित गति से, प्रखरता और वेग से उस कछुए पर झपट पडे। नाखूनो से उसके पैर को फाडा और दॉतो मे तोड लिया। उस पैर का रक्त-मॉस खा लेने के बाद उन्होने फिर कछुए के शरीर को पहले की भॉति चीरने-फाडने की चेष्टा की, पर वे फिर असफल रहे। इस पर वे फिर पहले की तरह जा छिपे। कछुए ने कुछ देर बाद दूसरा पैर निकाला और सियारो ने वह भी पहले की तरह ही खा डाला। इसी प्रकार एक के बाद एक वे उसके चारो पैर खा गये और अन्त मे उसकी गर्दन तोडकर कपाल को शरीर से अलग कर दिया। कछुए के मृत हो जाने पर उन्होंने उसके पूरे मॉस व रक्त का भक्षण कर लिया।

THE RASH TURTLE

8. When one of the turtles observed that sometime had passed since the jackals had left the place, it slowly pushed out one of its limbs The evil jackals were furtively observing all this They at once pounced on the turtle with great speed and force They tore at the exposed limb of the turtle with their paws and broke it apart with their jaws After eating the flesh and licking the bones clean they again attacked the body of the turtle but failed to do anything They returned to their hiding place and started their watch again The turtle brought out another of its limbs after some time and the jackals pounced again This way, one after the other, they consumed all the four limbs of the turtle and at last tore apart its neck Once the turtle was dead the jackals devoured all its flesh and blood

निष्कर्ष उपनय

सूत्र ९. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाण अतिए पव्वइए समाणे पच य से इंदियाइं अगुत्ताइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूण समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे, परलोए वि य ण आगच्छइ बहूणि दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ, जहा कुम्मए अगुत्तिदिए।

सूत्र ९ हे आयुष्मान श्रमणो ! इसी प्रकार हमारे जो साधु-साध्वी दीक्षित होने के बाद पॉचो इन्द्रियो का गोपन नही करते, वे इसी भव मे अनेक साधुओ आदि द्वारा निन्दनीय आदि (पूर्व सम) होते है, परलोक मे भी दड भोगते हैं और अनन्त ससार मे परिभ्रमण करते है।

THE LESSON

9. Long-lived Shramans ! The same way those of our ascetics who, after getting initiated, do not keep their five sense organs disciplined become the objects of criticism, public contempt, hatred and disrespect in this life Besides this they also suffer misery in the next life and are caught in the cycle of rebirth indefinitely

शात स्वभाव का फल

सूत्र १० तए ण ते पावसियालया जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता त कुम्मय सव्वओ समता उव्वत्तेति जाव दतेहि अक्खुडति जाव करित्तए।

तए ण ते पावसियालया दोच्च पि तच्च पि जाव नो संचाएति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाह वा पबाह वा विबाह वा जाव छविच्छेय वा करित्तए, ताहे सता तता परितता निव्विन्ना समाणा जामेव दिसि पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र १० दोनो दुष्ट सियार फिर दूसरे कछुए के पास पहुँचे और उसे फिर पहले की तरह चीरने-फाडने की चेष्टा करने लगे। असफल होने पर वे फिर एकान्त मे जाते और फिर कुछ देर मे वही चेष्टा करते। पर इस कछुए ने अपने अग बाहर नही निकाले इस कारण सियार उसे कोई हानि नही पहुँचा सके। अन्त मे वे थक-हारकर खिन्न हो अपने स्थान को लौट गए।

THE PATIENT TURTLE

10. Both those evil jackals then went near the other turtle and once again tried to tear it apart and kill it When they failed they returned

to their hiding place and after some time resumed their efforts . But this turtle did not push out any of its limbs and so the jackals failed to do any damage. Tired and defeated they returned into their den dejected

सूत्र ११. तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं गीवं नेणेइ, नेणित्ता दिसावलोय करेइ, करित्ता जमगसमगं चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीइवयमाणे वीइवयमाणे जेणेव मयगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छिता मित्त-नाइनियग-सयण-संबंध-परियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था।

सूत्र ११ कछुए ने बहुत देर बाद, यह जानकर कि वे सियार बहुत दूर चले गये है, धीरे-धीरे अपनी गर्दन निकालकर सावधानी से चारो ओर देखा। फिर चारो पैर एक साथ बाहर निकाले और अपनी सामर्थ्य के अनुसार उत्कृष्टतम गति से दौडता-दौडता झील मे जा उतरा और अपने स्वजनों से जा मिला।

11. After some time, when the turtle realized that the jackals had gone far away, it slowly stretched its neck out and carefully watched all around Finding no danger lurking nearby, it at once pushed out all its four limbs, ran with all its power and the speed it could gather, entered the lake and reached its kin-folk safe

उपसंहार

सूत्र १२. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाण अंतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पच य से इंदियाइ गुत्ताइं भवंति, जाव–जहा से कुम्मए गुत्तिंदिए।

सूत्र १२. हे आयुष्मान् श्रमणो ! इसी प्रकार हमारा जो साधु-साध्वी दीक्षित होने के बाद अपनी पाँचों इन्द्रियो को उस दूसरे कछुए के समान गोपन रखता है वह इसी भव मे अनेक श्रमणों आदि द्वारा अर्चनीय आदि होता है और ससार के भव-बधन से मुक्त हो जाता है (विस्तार पूर्व सम)।

CONCLUSION

12. Long-lived Shramans ! The same way those of our ascetics who after getting initiated keep their five sense organs disciplined like the second turtle, become objects of reverence for all the ascetics in this life and finally cross the ocean of rebirth

सूत्र १३. एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र १३ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने चौथे ज्ञाताध्ययन का यही अर्थ कहा है ऐसा मै कहता हूँ।

13. Jambu ! This is the text and the meaning of the fourth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir. So I confirm

॥ चउत्थ अज्झयणं समत्त ॥

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE FOURTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञातासूत्र की इस चौथी कथा मे इन्द्रिय-सयम के महत्त्व को एक सटीक उदाहरण से समझाया है। जो साधक इन्द्रियो की प्रवृत्तियों को सयम के कवच मे समेटे रखता है वह आत्मोन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहकर ध्येय को प्राप्त करने मे सक्षम होता है। इसके विपरीत जो साधक इन्द्रियो की चचल प्रवृत्तियो को सयम के कवच से बाहर निकाल देता है वह विकारो से ग्रसित हो वीभत्स अन्त को प्राप्त होता है। अत चचलता, कौतूहल और अस्थिरता का त्याग कर स्थिरता, एकाग्रता और सयम को अपनाना ही साधक के लिए श्रय है।

उपनय गाथा

विसयेसु इदियाइ रुभता राग-दोस निम्मुक्का।
पावति निव्वुइ सुह कुम्मुव्व मयगदहसोक्खं॥
अवरे उ अणरत्थ परंपराउ पावति पाव कम्मवसा।
ससार सागर गया गोमाउग्गसिय-कुम्मोव्व॥

इन्द्रिय विषयो मे आसक्ति नही रखते हुए राग-द्वेष से रहित साधक संयम द्वारा अपनी आत्मा को रक्षित करते हुए मोक्षसुख की प्राप्ति करते हैं। जैसे कछुए ने इन्द्रिय-गोपन करके मृतगगा तीर पर पहुचकर सुख प्राप्त किया।

इसके विपरीत जो इन्द्रिय सुखो में आसक्त होकर सयम नही रख सकता, वह ससार सागर मे गोतेखाते हुए श्रृगालों (पापो) द्वारा ग्रस्त होकर कछुए की तरह दुखी होते हैं।

CONCLUSION

This fourth story of Jnata Dharma Katha explains the importance of the discipline of the sense organs with the help of an appropriate example Those practicers who keep their five sense organs withdrawn within the shield of discipline progress on the spiritual path and attain their goal But those who bring the ever indulgent senses out of the shield of discipline are trapped by perversions and meet a horrible end As such it is to the benefit of a practicer to abandon the tendencies of wavering, curiosity, and instability and acquire stability, concentration, and discipline

THE MESSAGE

Saving the soul from sensual pleasures as well as attachment and aversion with the help of discipline a practicer attains the ultimate pleasure of liberation Just as the tortoise reached its abode in the Mayangteer-drah after saving itself by withdrawing within its protective shell On the other hand he who does not discipline its senses is consumed by miseries of the eternal cycle of rebirth Just as the other tortoise was consumed by the jackals

परिशिष्ट

मयगतीर द्रह–टीकाकारो ने मयग शब्द की उत्पत्ति मृतगगा से की है और उसका अर्थ किया है–वह स्थान जहाँ गगा का पानी खूब गहरा व अधिक हो। आवश्यकचूर्णि मे मृतगगा के विषय मे कहा है–गगा जहाँ समुद्र मे मिलती है वहाँ प्रत्येक वर्ष अपना पाट बदलती है। यहाँ गगा का जो मुहाना सबसे प्राचीन है उसे मृतगगा कहते हैं। वाराणसी समुद्र के निकट नही है और फिर मयग शब्द की मृतगगा शब्द से उत्पत्ति भी किसी पद्धति से पुष्ट नही होती। ऐसा प्रतीत होता है कि उस तट विशेष पर किसी समय मयग या मतग नामक कोई ऋषि रहते होगे। उन्हीं के नाम से इस स्थान का नाम मतग तीर अथवा मयग तीर पड गया होगा।

वाराणसी–भारत की उन प्राचीन नगरियो मे सभवत सर्व प्रसिद्ध है, जो उस काल से आज तक सदा जीवन्त रही हैं। सास्कृतिक तथा राजनैतिक गतिविधियों के अतिरिक्त यह नगरी आध्यात्मिक तथा दार्शनिक गतिविधियों का भी महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। जैन, बौद्ध तथा वैदिक सभी परम्पराओं में इसे श्रेष्ठ और पावन तीर्थ-स्थल माना है। पन्नवणासूत्र तथा भगवतीसूत्र मे वर्णित साढ़े पच्चीस आर्य देशों तथा सोलह महा जनपदो मे काशी का उल्लेख है। यह भारत की दस प्रमुख राजधानियो मे से एक है। यह काशी जनपद की राजधानी थी वरुणा तथा असी इन दो नदियो के बीच अवस्थित होने के कारण इसका नाम वाराणसी पडा।

APPENDIX

Mayangteer-drah—The commentators have interpreted that the term Mayang has its origin in the Sanskrit word Mrit-ganga With this interpretation the meaning of the term is the place where the Ganges is very deep and voluminous In the Avashyak-churni it is mentioned that the Ganges shifts its bed every year near its delta Around that area the oldest mouth is called Mrit-ganga However, Varanasi is nowhere near the sea and as such this interpretation does not hold good Moreover, there is hardly any etymological or grammatical support for the derivation of Mayang from Mritganga As such the only other possible explanation is that at some point of time some sage with the name Mayang or Matang must have lived at that particular spot Consequently the place must have taken the name

Varanasi—The most famous of the ancient cities in India that have had in uninterrupted habitation since the remote past It has been an important centre of philosophical and spiritual activities besides cultural and political activities In all the three important religious schools it has been accepted as foremost among the pious centres of pilgrimage In Pannavana Sutra and Bhagavati Sutra Kashi (name of the republic state whose capital was Varanasi, at present more popular as another name of Varanasi) is included in the list of twenty five and a half Arya countries and sixteen great republics This is also one of the ten prominent capital cities of ancient India As it was situated between two rivers named Varuna and Asi it got the name Varanasi

■■

पंचम अध्ययन : शैलक : आमुख

शीर्षक–सेलए–शैलक–नाम विशेष। शैलकपुर नाम के नगर का राजा जो वैराग्य से प्रेरित हो थावच्चा पुत्र का शिष्य बना। उनके श्रमण जीवन मे भौतिक सुविधाओ के कारण शैथिल्य आ गया था। शिथिलाचार से पुन सयम की ओर मुड़ने के महत्त्व को इस कथा से समझाया गया है।

कथासार–द्वारका नगरी में कृष्ण वासुदेव का राज्य था। वहाँ थावच्चा नाम की धनाढ्य महिला पुत्र सहित रहती थी। भगवान नेमिनाथ के एकदा द्वारका आने पर थावच्चा-पुत्र उनकी देशना से प्रभावित हुआ और उनके पास दीक्षा लेने का निश्चय किया। माता तथा कृष्ण वासुदेव के समझाने पर भी वह अपने निश्चय से डिगा नही और भगवान नेमिनाथ से दीक्षा ग्रहण कर ली।

थावच्चा-पुत्र द्वारका से निकल अनेक स्थानो पर विहार करते शैलकपुर नगर मे आये। वहाँ का राजा शैलक तथा उसके मंत्री सभी थावच्चा-पुत्र के उद्‌बोधन से प्रभावित हो व्रतधारी श्रावक बन गये।

उसी काल मे सौगंधिका नाम की नगरी में सुदर्शन नामक एक सेठ रहता था। साख्य दर्शन मे निष्णात शुक नाम के एक परिव्राजक का उपदेश सुन सुदर्शन ने शुक परिव्राजक का शौच मूलक मत अंगीकार कर लिया। इसके बाद उस नगरी में थावच्चा-पुत्र भी विहार करते-करते पधारे। उनके उपदेश सुनकर तथा उनसे चर्चा करके सुदर्शन सेठ ने अपना मत त्याग विनयमूलक श्रमण धर्म स्वीकार कर लिया।

कालक्रम से शुक परिव्राजक पुन सौगधिका आया और उसने जब जाना कि सुदर्शन ने श्रमण धर्म स्वीकार कर लिया है, वह उसे साथ ले थावच्चा-पुत्र के पास गया। उनसे प्रश्न पूछे। जिज्ञासा शात होने पर वह थावच्चा-पुत्र के पास दीक्षित हो गया। शुक परिव्राजक ने अपने गुरु के पास शिक्षा प्राप्त कर परम ज्ञान प्राप्त कर लिया। थावच्चा-पुत्र समाधिमरणपूर्वक मोक्ष गये।

शुक अपने शिष्यो सहित शैलकपुर आया और उसकी देशना सुन शैलक राजा को वैराग्य हो आया। उन्होने अपने पाँच सौ मत्रियो सहित शुक के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। शुक मुनि अपने एक हजार साधु शिष्यो सहित अन्तिम समाधि के लिए शत्रुजय पर्वत पर चले गये।

शैलक मुनि को श्रमणो का कठोर जीवन रास नही आया और वे क्षीण तथा रोगी हो गये। एक बार जब वे शैलकपुर आये तो उनके पुत्र ने उनकी दशा देख उन्हें अपनी वाहनशाला में आ ठहरने का आग्रह किया और वहाँ आने पर उनके उपचार की व्यवस्था तथा अन्य सभी सुविधाये जुटा दी। यहाँ शैलक मुनि का स्वास्थ्य तो सुधरा पर उनकी उन सभी उपलब्ध सुविधाओं पर आसक्ति हो गई। वे प्रमादी बन गये और वहाँ से विहार करने की सोचना भी बन्द कर दिया। इस पर उनके शिष्य साधुओ ने पथक मुनि को उनकी सेवा में छोड वहाँ से प्रस्थान कर दिया।

एक बार कार्तिक पूर्णिमा के दिन संध्या के समय जब शैलक मुनि सो रहे थे तब पथक ने प्रतिक्रमण के पश्चात् उनसे क्षमा याचना हेतु उनके चरणो का अपने सिर से स्पर्श किया। शैलक मुनि

क्रोधित हो उठे तो पंथक ने चातुर्मासिक क्षमापना का कारण बताया। पंथक की बात सुन शैलक को बहुत पश्चात्ताप हुआ। वे तत्काल पुनः संयमी जीवन में जुट गये और वहाँ से विहार किया। उनके शेष शिष्य भी उनसे आ मिले और अंततः वे भी विशुद्ध श्रमण आचार का पालन करके मोक्षगामी हुए।

FIFTH CHAPTER : SHAILAK : INTRODUCTION

Title—Shailak is the name of the king of a town named Shailakpur Inspired by the feeling of detachment he became a disciple of Thavacchaputra He became lax in his ascetic conduct due to the mundane comforts This story highlights the importance of returning back to discipline from a life of lax conduct

Gist of the Story—Krishna Vasudev ruled over the city of Dwarka In the town of Dwarka lived a prosperous lady, Thavaccha, with her son Once Arhat Arishtanemi arrived there Inspired by his discourse Thavacchaputra decided to get initiated His mother and Krishna Vasudev failed to stop him and he took Diksha from Arhat Arishtanemi

During his wanderings Thavacchaputra once arrived at Shailakpur Impressed by Thavacchaputra's sermons King Shailak and his ministers took the required vows and became Shravaks (followers of Shramans)

During that period of time Sudarshan merchant lived in Saugandhika town In that town Shuk Parivrajak preached about the ideals of the Sankhya school Impressed with his discourse Sudarshan embraced the cleansing based religion of Shuk Thavacchaputra also arrived in Saugandhika city Sudarshan also went to his discourse The preaching of Thavacchaputra influenced Sudarshan Leaving the cleansing based religion he joined the discipline based religion of the Shramans and became a Shravak

When Shuk came to know about this incident he took Sudarshan with him, came to Thavacchaputra and asked some questions When his doubts were removed he became a disciple of Thavacchaputra He studied the complete canonical text and became a great scholar Thavacchaputra went to the Shatrunjaya hills and after a month long fast got liberated

Ascetic Shuk once arrived in Shailakpur with his disciples On listening to his discourse King Shailak renounced the world and took Diksha along with his five hundred ministers Ascetic Shuk and one thousand of his disciples went to Shatrunjaya hills and attained liberation after taking the ultimate vow

The harsh ascetic life did not suit ascetic Shailak and he became sick and anaemic Ascetic Shailak once arrived in Shailakpur town When his son, king

Manduk, saw ailing Shailak he requested the ascetic to come to stay in his garage There the king arranged for all the required facilities for his treatment The treatment cured Ascetic Shailak but he became lethargic and habituated to an easy way of life He was unable to resume his itinerant way of life Under these circumstances all the five hundred disciples gave the responsibility of his care to ascetic Panthak and left the place to resume their itinerant life

One evening during the month of Kartic, after a heavy dinner and a doze of sedative, Ascetic Shailak was sleeping in all comfort At that time ascetic Panthak arrived there after finishing his Pratikraman and touched the feet of Ascetic Shailak with his forehead in order to seek the formal forgiveness This disturbed Shailak and he angrily shouted Panthak explained him the reason for touching his feet Ascetic Shailak was forced to a sincere introspection He repented for his gross neglect and resumed his harsh itinerant life Other disciples of Ascetic Shailak also joined back Later they all went to The Shatrunjaya Hills and attained liberation after taking the ultimate vow like Thavacchaputra

■■

पचम अज्झयणं : सेलए
पचम अध्ययन : शैलक
FIFTH CHAPTER : SHAILAK

सूत्र १ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने पूछा–"भते ! श्रमण भगवान महावीर ने पॉचवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the fifth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समए ण बारवती नाम नयरी होत्था, पाईण-पडीणायया उदीण-दाहिणवित्थिन्ना नवजोयणवित्थिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइ-मइ-निम्मिया चामीयर-पवर-पायारणाणामणि-पचवण्ण-कविसीसगसोहिया अलका-पुरिसकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्ख देवलोयभूया।

सूत्र २ हे जम्बू ! काल के उस भाग मे द्वारवती (द्वारका) नाम की एक नगरी थी। वह पूर्व से पश्चिम में बारह योजन लम्बाई मे और उत्तर से दक्षिण मे नौ योजन चौडाई मे फैली थी। उसे कुबेर की अभिकल्पना के अनुरूप बनाया गया था। सोने के उत्तम परकोटे और पचरगी मणियो से सजे कगूरो से शोभित थी और इन्द्र की अलकापुरी जैसी सुन्दर लगती थी। उसके निवासी प्रफुल्ल और उत्साही थे। वह साक्षात् देवलोक जैसी थी।

2. Sudharma Swami narrated—Jambu! During that period of time there existed a town named Dwaravati (Dwarka) It was spread in an area measuring twelve yojan (an ancient measure of distance) east-west and nine yojan north-south It was constructed according to the concept of Kuber, the god of wealth Its parapet wall was golden and gem studded In beauty it matched Alkapuri, the city of Indra, the king of gods Its inhabitants were charming and energetic All this made it look like a heavenly town

सूत्र ३. तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था; तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे णाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-परिगए हंस-एस-मिग-मयूर-कोच-सारस-चक्कवाय-मयणसार-कोइलकुलोववेए अणेगतडाग-वियर-उज्झरय-पवाय-पब्भार-सिहरपउरे अच्छरगण-देव-संघ-चारण-विज्जाहर-मिहुणसंविचिन्ने निच्चच्छणए दसार-वरवीर-पुरिसतेलोक्क-बलवगाणं सोमे सुभगे पियदसणे सुरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

सूत्र ३ नगरी के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा मे रैवतक नाम का गगनचुम्बी पर्वत था। वह तरह-तरह के झाडी, झुरमुट, लता, बेल आदि से भरा पडा था। उसमे हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चकवा, मैना, कोयल आदि पशु-पक्षी झुण्ड बनाकर रहते थे। उसमे बहुत से तालाब, खोह, झरने, प्रपात, नीची-ऊँची चोटियाँ थीं। वहाँ अप्सराये, देव, चारण, विद्याधर युगल आदि के समूह निरन्तर उत्सवरत रहते थे। वहाँ दशारवंशी वीर त्रिलोक का बल लिये विचरते थे। वह पर्वत सौम्य, सुभग, प्रियदर्शन और सुरूप था तथा दर्शनीय आदि था।

3. There was a high mountain range outside the town in the north-east direction Its lush greenery included a variety of shrubs, bushes, vines, creepers, etc Animals and birds including swans, deer, peacocks, cranes, cuckoos, starlings, etc inhabited this valley and moved around in flocks There were numerous ponds, gorges, streams, water-falls, peaks and summits in that area A variety of divine couples lead by Apsaras, Charans, and Vidyadhars always indulged in group festivities there That mountain range was tranquil, serene, beautiful, enchanting, and attractive

सूत्र ४. तस्स ण रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं णदणवणे नाम उज्जाणे होत्था सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे नदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झभागे सुरप्पिए नाम जक्खाययणे होत्था दिव्वे, वन्नओ।

सूत्र ४ रैवतक पर्वत के आसपास नन्दनवन नाम का एक उद्यान था। वह सर्व-ऋतु फल-फूलो से भरा पडा था और नन्दनकानन जैसा दर्शनीय आदि था। उद्यान के बीचोबीच सुरप्रिय नाम का एक दिव्य यक्षायतन था, ऐसा वर्णन मिलता है (औपपातिक सूत्र)।

4. Near the Raivatak mountain was a garden named Nandanvan It was filled with all-season flowering trees and was as beautiful as Nandan Kanan (the divine garden) At the centre of this garden was a divine temple. (All this is detailed in the Aupapatik Sutra)

कृष्ण वासुदेव

सूत्र ५. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ। से णं तत्थ समुद्दविजय-पामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाण सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीण, महासेणपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूण ईसर-तलवर जाव सत्थवाहपभिईण वेयड्ढ-गिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स बारवईए य नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाण विहरइ।

सूत्र ५ द्वारका नगरी मे कृष्ण नामक वासुदेव राजा निवास करते थे। कृष्ण वासुदेव अपनी अपार ममृद्धि और सामर्थ्य सहित उत्तर दिशा मे वैताढ्य पर्वत और अन्य तीन दिशाओ मे लवण समुद्र पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र का आधिपत्य आदि करते हुए और पालन करते हुए विचरते थे। उनके आधीन लोगों का वर्णन इस प्रकार है—समुद्रविजय आदि दस दशार, बलदेव आदि पॉच महावीर, उग्रसेन आदि सोलह हजार राजा, प्रद्युम्न आदि साढ़े तीन करोड राजकुमार, शाम्ब आदि साठ हजार दुर्दान्त योद्धा, वीरसेन आदि इक्कीस हजार महापुरुषार्थी, महासेन आदि छप्पन हजार महाबली, रुक्मिणी आदि बत्तीस हजार रानियॉ, अनगसेना आदि हजारों गणिकाएँ और अन्य अनेक श्रेष्ठी, तलवर, सार्थवाह आदि जन।

KRISHNA VASUDEV

5. The city of Dwarka was ruled by king Krishna Vasudev whose empire extended from the Vaitadhya mountain in the north to the Lavana sea in the three remaining directions He ruled this large land mass known as Dakshinardha Bharat ably with all his power and grandeur The details of the people under his reign are—the ten Dashar kings lead by Samudravijaya, five great warriors lead by Baldev, sixteen thousand kings lead by Ugrasen, thirty five million princes lead by Pradyumna, sixty thousand fiery warriors lead by Shamb, twenty one thousand great achievers lead by Virsen, fifty six thousand great warriors lead by Mahasen, thirty two thousand queens lead by Rukmini, thousands of courtesans lead by Anangasena and a multitude of merchants, traders, etc

सूत्र ६ तत्थ ण बारवईए नयरीए थावच्चा णाम गाहावइणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया। तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चा-पुत्ते णाम सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे।

तए णं सा थावच्चा गाहावइणी त दारयं साइरेगअट्ठवासजायय जाणित्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेण पाणि गेण्हावेइ, बत्तीसओ दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विउले सद्द-फरिस-रस-रूव-वन्न-गधे जाव भुंजमाणे विहरइ।

सूत्र ६ द्वारका नगरी मे थावच्चा नाम की एक समृद्धिशाली और सामर्थ्यवान गृहस्थ महिला रहती थी। उसके थावच्चापुत्र नाम का एक बेटा था जो सुकुमार अगो वाला और रूपवान था। जब वह बालक आठ वर्ष से अधिक आयु का हुआ तो थावच्चा गाथापत्नी ने उसे शुभ मुहूर्त्त देख कलाचार्य के पास भेजा। कालान्तर मे युवा हो जाने पर उसका विवाह एक साथ बत्तीस कुलीन कुमारियो से करा दिया और बत्तीस सुसज्जित सभी सुविधायुक्त महल उसे दे दिये। थावच्चापुत्र अपनी बत्तीस पत्नियो के साथ मानवोचित सभी भोग-उपभोगो का आनन्द लेता हुआ जीवन व्यतीत करने लगा।

6. In the town of Dwarka there lived a prosperous and resourceful lady named Thavaccha She had a son named Thavacchaputra who was handsome and delicate When this boy became eight years old Thavaccha sent him to a teacher at the opportune moment Later, when he grew to be a young man he was married to thirty two young girls belonging to good families and, was given thirty two well furnished palaces Thavacchaputra spent his time enjoying all earthly pleasures along with his thirty two wives

अर्हत् अरिष्टनेमि का आगमन

सूत्र ७. तेणं कालेणं तेण समए ण अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ, दसधणुस्सेहे, नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पयासे, अट्ठारसहि समणसाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे, चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुह सुहेणं विहरमाणे जेणेव बारवई नयरी, जेणेव रेवयगपव्वए, जेणेव नदणवणे उज्जाणे, जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे, जेणेव असोगवरपायवे, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ।

सूत्र ७ काल के उस भाग मे अरिहन्त अरिष्टनेमि वहाँ पधारे (विस्तृत वर्णन पूर्व सम)। वे दस धनुष ऊँचे थे और नील-कमल, भैस के सीग, नीली गोली और अलसी के फूल जैसी नीली काति वाले थे। उनके साथ अठारह हजार साधु तथा चालीस हजार साध्वियॉ थी। वे एक के बाद एक अनेक स्थानो पर विहार करते हुए द्वारका नगरी के बाहर गिरनार पर्वत के पास नन्दनवन उद्यान में सुरप्रिय यक्षायतन के निकट अशोक वृक्ष के पास पधारे। वहॉ वे सयम और तप की साधना करते हुए रहने लगे। जनसमूह मडलीवद्ध हो उनके पास आया और उन्होने धर्मोपदेश दिया।

ARRIVAL OF ARHAT ARISHTANEMI

7. During that period of time Arhat Arishtanemi arrived there (details as mentioned earlier) He was ten Dhanush (an ancient linear measure) tall and his complexion was blue like blue-lotus, buffalo horn, blue bead, or Alsi flower (linseed/Linum usitatissimum) He was accompanied by eighteen thousand male and forty thousand female ascetic disciples Visiting many places one after another he arrived and stayed under an Ashoka tree near the Surpriya temple in the Nandanavan garden near Girnar mountain He started his spiritual practices of discipline and penance People came to him in groups and he preached to them

कृष्ण की उपासना

सूत्र ८ तए ण से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसिय गभीर महुरसद्द कोमुदिय भेरि तालेह।"

तए ण ते कोडुबियपुरिसा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए अजलि कट्टु 'एव सामी ! तह' त्ति जाव पडिसुणेंति। पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिणिक्खमंति। पडिणिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त मेघोघरसियं गभीरं महुरसद्द भेरिं तालेंति।

तओ निद्ध-महुर-गभीरपडिसुए ण पिव सारइए ण बलाहए णं अणुरसियं भेरीए।

तए ण तीसे कोमुइयाए भेरियाए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नवजोयण-वित्थिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-कंदर-दरी-विवर-कुहर-

गिरिसिहर-नगर-गोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिसुयासयसहस्ससंकुलं सद्दं करेमाणे बारवइं नगरिं सब्भितर-बाहिरियं सव्वओ समंता से सद्दे विप्पसरित्था।

सूत्र ८. कृष्ण वासुदेव ने यह समाचार सुना तो सेवको को बुलाकर कहा- "देवानुप्रियो ! जल्दी से सुधर्मा सभा मे जाकर मेघ गर्जन जैसी गम्भीर और मधुर ध्वनि वाली कौमुदी नाम की भेरी बजाओ।" सेवक आज्ञा सुनकर प्रसन्न हुए और वहाँ से निकलकर सुधर्मा सभा मे कौमुदी भेरी के निकट आये। वहाँ आकर उन्होंने वह भेरी बजाई।

उस भेरी से कोमल, मधुर पर शरद ऋतु के मेघ जैसी गम्भीर ध्वनि निकली और नौ योजन चौडी, बारह योजन लम्बी द्वारका नगरी के शृगाटक आदि (पूर्व सम) सभी स्थानो में असख्य प्रतिध्वनियॉ करती भीतर-बाहर सभी भागो मे गूँजती वह ध्वनि चारो और फैल गई।

WORSHIP OF KRISHNA

8. When Krishna Vasudev heard this news he called his attendants and said, "Beloved of gods! Rush to the Sudharma assembly hall and blow the Kaumudi trumpet that emits booming but melodious sound like thunder of clouds" The attendants happily went and did as ordered

The trumpet emitted a soft and melodious sound but as booming as the thunder of winter clouds With innumerable echoes the sound spread all around in each and every part of the one hundred and nine square Yojan expanse of the city of Dwarka and beyond

सूत्र ९ तए ण बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुईयाए भेरीए सद्द सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव ण्हाया आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा अहतवत्थ-चदणोक्कित्र-गायसरीरा अप्पेगइया हयगया एव गयगया रह-सीया-संदमाणीगया, अप्पेगइया पायविहारचारेण पुरिसवग्गुरापरिखित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतिय पाउब्भवित्था।

सूत्र ९ द्वारका नगरी में समुद्रविजय आदि सभी महत् गौण नागरिको ने वह भेरी की गूँज सुनी और प्रसन्न हुए। सबने स्नानादि कर्म किये, नवीन वस्त्र धारण किये, चन्दनादि सुगन्धित द्रव्य लगाये और लम्बी मालाएँ पहनकर तैयार हुए। फिर कोई घोडे पर, कोई हाथी पर, तो कोई रथ और पालकी पर सवार हुए और कृष्ण वासुदेव के पास गये। बहुत से लोग तो समूह बनाकर पैदल ही वहाँ पहुँचे।

9. All the citizens of Dwarka, important or ordinary, includin Samudravijaya, heard this echo and were filled with joy. They all took their bath and got ready adorning themselves with new dresses perfumes like sandal wood paste, and long garlands They came t Krishna Vasudev riding elephant, horse, chariot or palanquin Many o them formed groups and arrived walking

सूत्र १०. तए ण कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव अंतिय पाउब्भवमाणे पासइ। पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता ए वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरंगिणिं सेणं सज्जेह, विजयं च गंधहत्थि उवट्ठवेह।" ते वि तह त्ति उवट्ठवेंति, जाव पज्जुवासंति।

सूत्र १० इन सबको देख कृष्ण वासुदेव प्रसन्न हुए और अपने सेवको को बुलाक आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! जल्दी से चतुरगिनी सेना सजाओ और विजय नामक गंधहस्ती को ले आओ।" सेवको ने उनकी आज्ञा का पालन किया। कृष्ण वासुदेव तैयार हुए औ गधहस्ती पर सवार हो अपने वैभव सहित अर्हत् अरिष्टनेमि के पास पहुँचे। वहाँ उन्हो तीर्थकर के अष्ट-प्रातिहार्य आदि देखे। वे गधहस्ती से नीचे उतरे और पाँच अभिग्रह पूर्वक भगवान अरिष्टनेमि के निकट पहुँच यथाविधि वन्दना करके उपासना करने लगे।

10. Krishna Vasudev was pleased to see them. He called his servants and ordered—"Beloved of gods! Prepare the armed forces to march and bring my great elephant Vijay immediately" The servants followed the orders Krishna Vasudev got ready and came to Arhat Arishtanemi riding his elephant and with all his glory and grandeur There he witnessed the eight divine insignia of the Tirthankar He got down from the elephant Taking five ritual vows he approached Arhat Arishtanemi and after performing formal obeisance worshipped the Tirthankar

थावच्चापुत्र का वैराग्य

सूत्र ११. थावच्चापुत्ते वि निग्गए, जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पायग्गहणं करेइ। जहा मेहस्स तह चेव णिवेयणा। जाहे नो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा, ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तदारगस्स निक्खमण-मणुमन्नित्था। नवरं निक्खमणाभिसेयं पासामो। तए णं से थावच्चापुत्ते तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ११ थावच्चापुत्र भी भगवान की वन्दना के लिये गया। उसे वैराग्य हो आया और वह अपनी माता से आज्ञा लेने गया। माता के बहुत समझाने पर भी जब वह अपने निश्चय से नहीं डिगा तो माता ने आज्ञा दे दी। (यह समस्त घटना उसी प्रकार समझे जैसे मेघकुमार की कथा मे वर्णित है।) थावच्चा ने आज्ञा देने के बाद कहा कि वह दीक्षा महोत्सव देखना चाहती है। थावच्चापुत्र ने मौन रहकर माँ की बात मान ली।

DETACHMENT OF THAVACCHAPUTRA

11. Thavacchaputra also came for obeisance of the Tirthankar Filled with the feeling of detachment he went to his mother to seek her permission for renunciation When all her efforts to dissuade him failed to penetrate his resolve, the mother gave him permission (the details of this incident are same as those in the story of Megh Kumar) She then expressed her desire to be a witness to the Diksha ceremony In acceptance Thavacchaputra remained silent

सूत्र १२. तए ण सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्त जाव सद्धि सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-पडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पडिहारदेसिए ण मग्गेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल वद्धावेइ, वद्धावित्ता त महत्थ महग्घ महरिह रायरिहं पाहुड उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी–

एव खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम दारए इट्ठे जाव से ण ससारभयउव्विग्गे इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए। अह ण निक्खमणसक्कारं करेमि। इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्त-मउड-चामराओ य विदिन्नाओ।

सूत्र १२ गाथापत्नी थावच्चा अपने आसन से उठी और महापुरुषो तथा राजाओ को भेट करने के योग्य उत्तम और बहुमूल्य भेट साथ मे ली। अपने स्वजनो के साथ वह कृष्ण वासुदेव के महल के मुख्य द्वार के सामने आई। फिर प्रतिहारो के द्वारा दिखाये मार्ग से कृष्ण वासुदेव के पास गई, हाथ जोड 'जय हो, विजय हो' बोलकर उन्हे बधाई दी और अपने साथ लाई भेट उनके सामने रखकर बोली–

"हे देवानुप्रिय ! मेरा थावच्चापुत्र नाम का एक ही पुत्र है। वह मुझे इष्ट, कान्त आदि है। वह ससार के भय से उद्विग्न होकर अरिहन्त अरिष्टनेमि के पास दीक्षा लेकर अनगार होना चाहता है। मै उसके अभिनिष्क्रमण पर उसका सत्कार करना चाहती हूँ। अत हे देवानुप्रिय आप उसके लिये छत्र, मुकुट और चामर प्रदान करे यह मेरी अभिलाषा है।"

12. Thavaccha got up from her seat and collected good and costly gifts meant for important people like kings Accompanied by friends and some members of her family she arrived at the gate of the palace of Krishna Vasudev Guided by the gate keepers she reached Krishna Vasudev and greeted him with hails of victory She placed the gifts she had brought before him and said—

"Beloved of gods! I have a son named Thavacchaputra He is very dear (etc) to me Disturbed by the worldly life, he desires to accept Diksha (get initiated as an ascetic) from Arhat Arishtanemi and renounce the world I want to felicitate him at the time of his renunciation As such, I beseech you, O Beloved of gods! to give me your crown, canopy, and whisks for him "

सूत्र १३ तए ण कण्हे वासुदेवे थावच्चागाहावइणि एव वयासी-"अच्छाहि णं तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अह णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमण-सक्कार करिस्सामि।"

सूत्र १३ कृष्ण वासुदेव ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिये ! तुम निश्चिन्त रहो और आश्वस्त होओ। मै स्वय थावच्चापुत्र का दीक्षा सत्कार करूँगा।"

13. Krishna Vasudev replied, "Beloved of gods! Don't worry Rest assured that I shall felicitate Thavacchaputra myself at the time of his renunciation "

कृष्ण-थावच्चापुत्र संवाद

सूत्र १४. तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयण दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी-"मा ण तुमे देवाणुप्पिया ! मुडे भवित्ता पव्वयाहि, भुजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवल देवाणुप्पियस्स अह णो सचाएमि वाउकाय उवरिमेण निवारित्तए। अण्णे ण देवाणुप्पियस्स ज किचि वि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएइ त सव्व निवारेमि।"

सूत्र १४ कृष्ण वासुदेव विजयहस्ती पर सवार हो अपनी चतुरगिनी सेना साथ ले थावच्चा गाथा पत्नी के भवन पर आये और थावच्चापुत्र से बोले-"हे देवानुप्रिय ! तुम मुडित होकर प्रव्रज्या मत ग्रहण करो। मेरी भुजाओं की छाया मे मानवोचित सभी कामभोगो

का भोग करो। मैं वायुकाय को तुम्हारे ऊपर से जाने से नही रोक सकता शेष जो भी कष्ट या पीडा तुम्हें होगी उस सबका मैं निवारण करूँगा।"

TEST BY KRISHNA-THAVACCHAPUTRA

14. Rıdıng hıs great elephant Vıjay and accompanıed by hıs guards Krıshna Vasudev arrıved at the house of Thavaccha and asked Thavacchaputra, "Beloved of gods! Please don't shave your head and become an ascetıc Come under my protectıon and enjoy all the pleasures of worldly lıfe I cannot stop the movement of aır around you, except thıs I wıll ensure that you are not plagued by any paın or mısery"

सूत्र १५. तए ण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेवं एवं वयासी-"जइ ण तुम देवाणुप्पिया ! मम जीवियतकरणं मच्चु एज्जमाण निवारेसि, चरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं अइवयमाणि निवारेसि, तए ण अहं तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि।"

सूत्र १५ थावच्चापुत्र ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! आप मेरे जीवन का अन्त करने वाली मृत्यु से मेरी रक्षा कर सके और शरीर को जर्जर कर उसके सौन्दर्य का नाश करने वाले बुढ़ापे से मुझे दूर रख सके तो अवश्य ही आपके सरक्षण मे रहकर मानवोचित आनन्द का भोग करने को तैयार हूँ।"

15. Thavacchaputra saıd, "Beloved of gods! If ıt ıs possıble for you to protect me from death that termınates lıfe and keep me untouched by old age that turns the body fraıl and destroys ıts beauty, I am certaınly prepared to come under your protectıon and enjoy all the pleasures of worldly lıfe"

सूत्र १६ तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे थावच्चापुत्त एव वयासी-"एए ण देवाणुप्पिया ! दुरइक्कमणिज्जा, णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खए ण।"

सूत्र १६ इस पर कृष्ण वासुदेव ने कहा-"हे देवानुप्रिय ! जरा और मरण का उल्लंघन महान् बलशाली देव अथवा दानव भी नही कर सकते। स्वय अपने द्वारा उपार्जित पूर्व-कर्मों का क्षय ही इन्हें बाधित कर सकता है।"

16. At thıs, Krıshna Vasudev saıd, "Beloved of gods! Even the most powerful gods or demons cannot overcome agıng and death They can only be countered by sheddıng the acquıred Karmas"

चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

जरा-मृत्यु से कौन रक्षा करेगा ?

चित्र १५

गाथापत्नी थावच्चा वासुदेव श्रीकृष्ण की [illegible] करने लगी महाराज ! भगवान अरिष्टनेमि से प्रतिबोध [illegible] भव्य दीक्षा महोत्सव करना चाहती [illegible] प्रदान करने का अनुग्रह करें।

श्रीकृष्ण ने कहा [illegible] थावच्चा पुत्र से मिलने आये और [illegible] किन्तु, [illegible]

थावच्चा पुत्र ने निवेदन किया [illegible] आपकी छत्रछाया में सुखों का निर्विघ्न [illegible]

थावच्चा पुत्र का कथन सुनकर [illegible] देव दानव आदि किसी के भी सामर्थ्य [illegible] मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। [illegible]

WHO CAN PROTECT FROM DEATH AND AGING ?

ILLUSTRATION 15

In Dwarka wealthy Thavaccha [illegible] Vasudev and requested - "Maharaj! my only son desires to [illegible] as an ascetic in the order of Arhat Arishtanemi. I want to [illegible] him on the occasion of his renunciation. As such I request you to give me your crown, canopy, and whisks for him." Krishna Vasudev replied "Rest assured that I shall [illegible] Thavacchaputra myself on that auspicious occasion." Krishna Vasudev went to meet Thavacchaputra and said "Please continue to enjoy pleasures of worldly life. I will ensure that you are not plagued by any pain or misery."

Thavacchaputra said, 'Beloved of gods! If you can protect me from death and keep me untouched by old age I shall come under your protection and enjoy pleasures of worldly life." Krishna said "Beloved of gods! Even the most powerful gods or demons cannot overcome aging and death. These two can only be countered by shedding the acquired Karmas."

(CHAPTER-5)

सूत्र १७. तए णं से थावच्चे पुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जइ णं एते णं दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव णन्नत्थ अप्पणा कम्मक्खएणं। "तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! अन्नाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए।"

सूत्र १७. तब थावच्चापुत्र ने श्रीकृष्ण वासुदेव को इस प्रकार उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! यदि जरा और मृत्यु का उल्लंघन नही किया जा सकता है, और वैसा स्वयं अपने द्वारा कर्म क्षय करने पर ही हो सकता है तो हे देवानुप्रिय ! मैं भी अज्ञान, मिथ्यात्व, अविरति और कषाय द्वारा सचित अपने कर्मों का क्षय करना चाहता हूँ।"

17. Thavacchaputra replied, "Beloved of gods ! You have rightly said that death and aging can be transgressed by no other means but shedding the acquired Karmas through ones own efforts; and that is the reason I want to shed the Karmas I have accumulated through ignorance, misconceptions, indulgence, and passions."

सूत्र १८. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा उग्घोसण करेह–एव खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे, भीए जम्मणमरणाण, इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए। तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा, जुवराया वा, देवी वा, कुमारे वा, ईसरे वा, तलवरे वा, कोडुंबिय-माडबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयतमणुपव्वयइ, तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणाइ पच्छातुरस्स वि य से मित्त-नाइ-नियग-संबंधि-परिजणस्स जोगक्खेम वट्टमाणीं पडिवहइ त्ति कट्टु घोसणं घोसेह।" जाव घोसंति।

सूत्र १८ इस पर कृष्ण वासुदेव ने सेवकों को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! उत्तम हाथी पर सवार होकर जाओ और द्वारका नगरी के श्रृंगाटक आदि सभी स्थलों पर ऊँची ध्वनि मे यह घोषणा करो–'हे देवानुप्रियो ! ससार के भय से उद्विग्न हो, जन्म-मरण से भयभीत हो थावच्चापुत्र अर्हत् अरिष्टनेमि के पास मुंडित हो दीक्षा लेना चाहता है। इस अवसर पर राजा-रानी आदि द्वारका के सभी नागरिकों में से जो भी थावच्चापुत्र के साथ दीक्षा ग्रहण करना चाहे उन्हें कृष्ण वासुदेव की अनुमति है। उनके पीछे रहे परिवारादि स्वजनो के वर्तमान जीवन के क्षेम-कुशल का उत्तरदायित्व कृष्ण वासुदेव लेंगे।" सेवकों ने उनकी आज्ञा का पालन किया।

18. Now, Krishna Vasudev called his attendants and said, "Beloved of gods! ride a good elephant and going to every nook and corner of

Dwarka make this announcement in loud voice—'O Beloved of gods! Disturbed by the worldly life and fearful of the cycle of rebirths, Thavacchaputra desires to get his head shaved and accept Diksha from Arhat Arishtanemi At this opportune moment Krishna Vasudev extends a general permission to all those citizens of Dwarka, including the ruling class, who wish to renounce the world and accept Diksha along with Thavacchaputra Krishna Vasudev will take care of all the members of their family left behind " The attendants followed the order and made the announcement

सूत्र १९ तए णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्स णिक्खमणाभिमुह ण्हाय सव्वालकार-विभूसियं पत्तेयं पत्तेय पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समाण मित्त-णाइ-परिवूड थावच्चापुत्तस्स अतियं पाउब्भूयं।

तए ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ, पासित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि कलसेहि ण्हावेइ।

तए ण से थावच्चापुत्ते सहस्सपुरिसेहि सद्धिं सिवियाए दुरूढे समाणे जाव रवेण बारवइणयरिं मज्झमज्झेण जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्त पडागाइपडागं विज्जाहरचारणे जभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहति।

सूत्र १९ थावच्चापुत्र पर अनुराग से प्रेरित एक हजार पुरुष निष्क्रमण के लिये तत्पर हो गये। वे स्नानादि आवश्यक कर्मों से निवृत्त हो वस्त्रालकार धारण कर, पुरिसहस्स वाहन पर चढ, पुत्रादि स्वजनो से घिरे, थावच्चापुत्र के यहाँ आये। उन्हे देख कृष्ण वासुदेव ने सेवको को बुलाकर थावच्चापुत्र को अभिनिष्क्रमण के लिये तैयार करने की आज्ञा दी। थावच्चापुत्र यथाविधि तैयार होकर द्वारका नगरी के बीच होता हुआ उन एक हजार पुरुषो के साथ जहाँ भगवान अरिष्टनेमि विराजमान थे उधर बढा। भगवान के छत्र पर छत्र, पताका पर पताका लहराती आदि अतिशयो को देखा। विद्याधरो, चारण मुनियो एव देवताओ को आते-जाते देखा तथा वह पालकी से नीचे उतरा (विस्तृत वर्णन मेघकुमार के अभिनिष्क्रमण के समान)।

19. Inspired by their affection for Thavacchaputra one thousand individuals became ready to renounce the world They dressed up after taking their bath and surrounded by friends and relatives they arrived at Thavacchaputra's house riding Purisasahassa palanquins Seeing
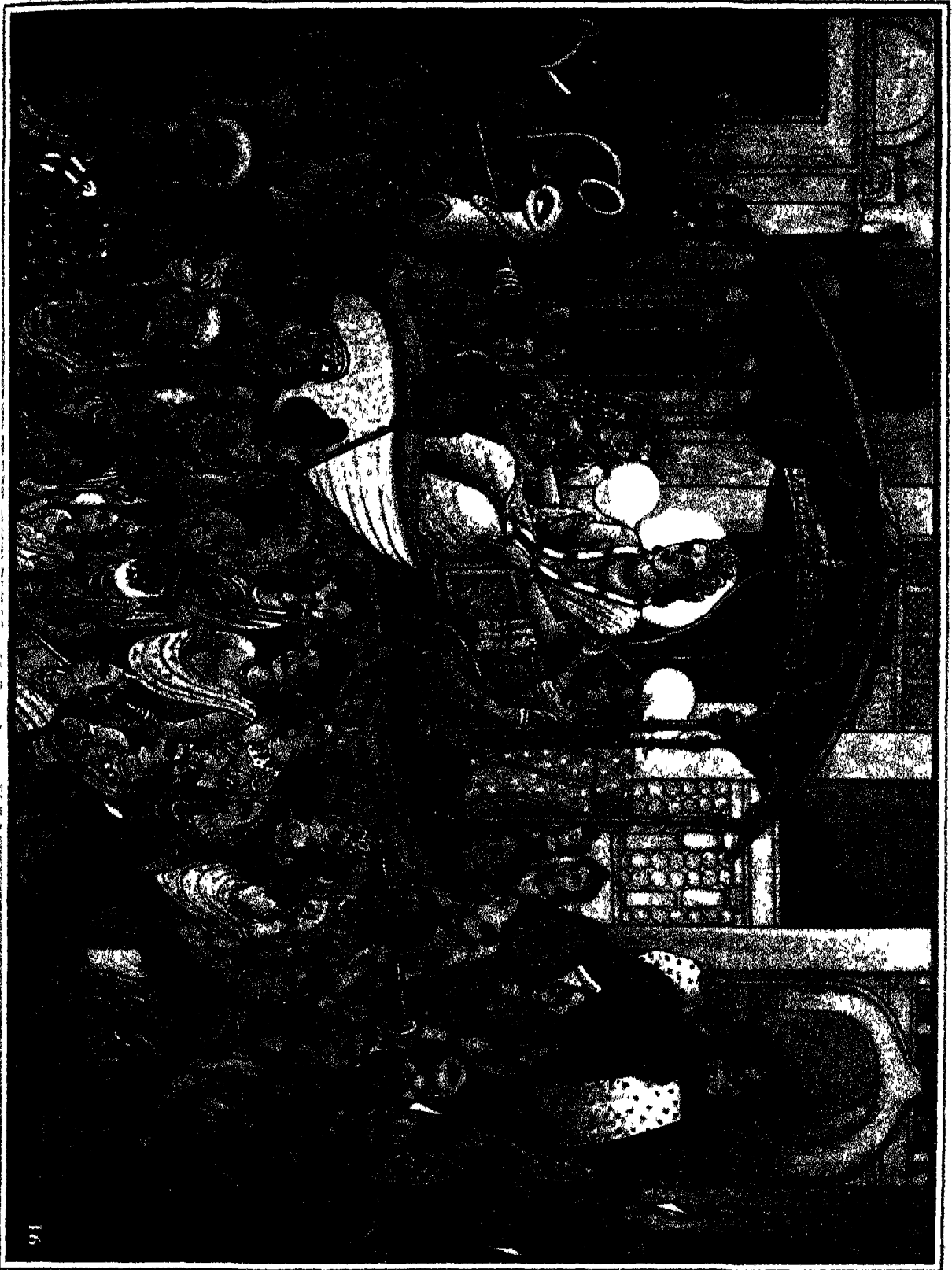
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दीक्षा महोत्सव

(CHAPTER-5)

this Krishna Vasudev called his staff and instructed them to prepare Thavacchaputra for the renunciation After getting ready, Thavacchaputra, accompanied by those one thousand individuals, moved through the city of Dwarka towards the place where Arhat Arishtanemi was stationed He witnessed the triple canopy, the flags fluttering one over the other, and other divine signs associated with the Tirthankar He saw various gods and ascetics arriving and departing He, then, got down from the palanquin (details as mentioned in the story of Megh Kumar)

कृष्ण द्वारा शिष्य-भिक्षा

सूत्र २० तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्त पुरओ काउ जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी, सव्व त चेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ।

तए ण से थावच्चा गाहावइणी हसलक्खणेण पडसाडए ण आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ। पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलिपगासाइं असूणि विणिम्मुचमाणी विणिम्मुचमाणी एव वयासी–"जइयव्व जाया ! घडियव्व जाया ! परक्कमियव्व जाया ! अस्मि च ण अट्ठे णो पमाएव्व" जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया।

सूत्र २० कृष्ण वासुदेव ने थावच्चापुत्र को आगे किया और अरिहन्त अरिष्टनेमि के पास पहुचकर यथाविधि वन्दना आदि कर प्रार्थना की, "भते ! यह थावच्चापुत्र अपनी माता का इकलौता अत्यन्त प्रिय पुत्र है। ससार से वैराग्य प्राप्त कर यह दीक्षा लेना चाहता है, आप इसे शिष्य-भिक्षा के रूप मे स्वीकारे।" इन शब्दो मे उनसे थावच्चापुत्र को शिष्य-भिक्षा स्वरूप स्वीकार करने का अनुरोध किया (विस्तृत विवरण मेघकुमार की शिष्य-भिक्षा के समान)।

अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव की प्रार्थना स्वीकार की तो थावच्चापुत्र ने वहाँ से ईशाणकोण म जाकर वस्त्रालकारो का त्याग किया। थावच्चा सार्थवाही ने परम्परानुसार उज्ज्वल श्वेत वस्त्र मे इन्हे ग्रहण कर लिया। फिर वह आँसू बहाती हुई बोली–"हे पुत्र ! इस प्रव्रज्या को यत्न से निभाना। हे पुत्र ! साधना मे सलग्न रहना, पराक्रम करना। हे पुत्र ! इस सबमे तनिक भी प्रमाद मत करना।" यह कहकर वह वहाँ से लौट आई।

DISCIPLE DONATION BY KRISHNA

20. Keeping Thavacchaputra ahead of him, Krishna Vasudev approached Arhat Arishtanemi and after offering due obeisance

submitted, "Bhante! This is Thavacchaputra, the only and beloved son of his mother. He desires to get detached from the worldly affairs and get initiated into your order Kindly accept him as a disciple-donation from me" With these words he appealed to Arhat Arishtanemi to accept Thavacchaputra as a disciple (details as mentioned in the story of Megh Kumar)

When Arhat Arishtanemi accepted the request of Krishna Vasudev, Thavacchaputra proceeded in the north-east direction and shed his ornaments and cloths According to the tradition his mother Thavaccha collected all these in a white cloth With tear filled eyes she said, "Son! Follow the discipline of the order with due care Son! indulge in the practices with resolve and courage and don't show even a trace of negligence and lethargy" Expressing her feelings thus, she returned

सूत्र २१. तए ण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, जाव पव्वइए। तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ।

सूत्र २१. थावच्चापुत्र ने एक हजार पुरुषो के साथ स्वयं ही पचमुष्टि लोच किया और यथाविधि दीक्षा लेकर अनगार हो गया। ईर्यासमिति, भाषासमिति आदि सभी श्रमण नियमो का पालन करता विचरने लगा।

21. Pulling out all the hair from the head (formally termed as five-fistful pulling out of hair) Thavacchaputra and the accompanying one thousand persons took Diksha in the prescribed manner and became ascetics They took to the ascetic way of life following the discipline of movement, discipline of speech, and all the other rules of the order

सूत्र २२. तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ। अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेण विहरइ। तए ण अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइय अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयइ।

सूत्र २२ अरिहन्त अरिष्टनेमि के वरिष्ट स्थविरो की निश्रा मे थावच्चापुत्र ने सामायिकादि से आरंभ कर चौदह पूर्वो तक सभी विषयों का अध्ययन किया। वे

अष्टभक्तादि अनेक तप करते हुए विचरने लगे। फिर अर्हत् अरिष्टनेमि ने उन्हे उनके साथ दीक्षित होने वाले इभ्यादि एक हजार श्रमण शिष्य-रूप में प्रदान किये।

22. Under the tutelage of the senior ascetic disciples of Arhat Arishtanemi, Thavacchaputra studied all the subjects beginning from Samayik and concluding with the fourteen Purvas (sublime canons) He started doing various penances including fasts and followed the ascetic way of life Later Arhat Arishtanemi gave him charge of the one thousand ascetics who were initiated with him

थावच्चापुत्र का विहार

सूत्र २३ तए ण मे थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरह अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–"इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे सहस्सेणं अणगारेण सद्धि बहिया जणवयविहार विहरित्तए।"

"अहासुह देवाणुप्पिया !"

सूत्र २३ एक बार थावच्चापुत्र ने अर्हत् अरिष्टनेमि को यथाविधि वन्दना करके कहा–"भन्त ! यदि आप आज्ञा दे तो मै अपने एक हजार अनगार शिष्यो के साथ जनपदो मे विहार करना चाहता हूँ।"

भगवान ने कहा–"जिसमे तुम्हे सुख लगे वह करो देवानुप्रिय !"

WANDERINGS OF THAVACCHAPUTRA

23. One day, after formal greetings, Thavacchaputra requested Arhat Arishtanemi, "Bhante! If you grant permission, I would like to wander around various populated areas with my one thousand disciples "

"You may do as you please, O Beloved of gods!" consented the Lord

सूत्र २४ तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि बहिया जणवयविहार विहरइ।

सूत्र २४ अनुमति प्राप्त कर थावच्चापुत्र अपने शिष्यो सहित उदार, उग्र, अर्हत् द्वारा प्रदत्त और स्वय द्वारा ग्रहण किये श्रमण नियमो का पालन करते हुए विभिन्न जनपदों मे विचरने लगे।

24. After getting the permission Thavacchaputra and his one thousand disciples commenced the itinerant way of life following the

elaborate and harsh rules of ascetic discipline prescribed by Arhat Arishtanemi and accepted by them

राजा शैलक का श्रावक बनना

सूत्र २५. तेणं कालेणं तेण समए ण सेलगपुरे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावई देवी, मंडुए कुमारे जुवराया।

तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा पंच मतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइयाए पारिणामियाए कम्मियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया रज्जुधुरचितया वि होत्था।

थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे। राया णिग्गते। धम्मकहा।

सूत्र २५ काल के उस भाग मे शैलकपुर नाम का एक नगर था जिसके बाहर सुभूमिभाग नाम का एक उद्यान था। उस नगर के राजा का नाम शैलक, रानी का नाम पद्मावती और युवराज का नाम मडुक था।

शैलक राजा के पथक आदि पॉच सौ मत्री थे जो औत्पत्तिक आदि चारो प्रकार की बुद्धि से सम्पन्न थे और राज्य का सचालन करते थे।

थावच्चापुत्र अनगार अपने शिष्यो सहित इसी शैलकपुर मे पधारे। वन्दना करने आये राजा को उन्होने धर्मोपदेश दिया।

KING SHAILAK BECOMES A FOLLOWER

25. During that period of time there was a town named Shailakpur Outside this town there was a garden named Subhumi The names of the king, queen and the prince of this town were Shailak, Padmavati, and Manduk respectively

King Shailak had five hundred ministers lead by Panthak They were endowed with four types of wisdom and ruled the kingdom ably

Thavacchaputra and his disciples arrived at Shailakpur When the king came to pay his respects to the ascetic he listened to Thavacchaputra's sermons

सूत्र २६ धम्म सोच्चा "जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्ण जाव पव्वइया, तहा ण अह नो सचाएमि पव्वइत्तए। तओ ण अह देवाणुप्पियाण अंतिए पचाणुव्वइय जाव समणोवासए, जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ। पथगपामोक्खा पच मतिसया समणोवासया जाया। थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ।

सूत्र २६ उनका उपदेश सुन राजा शैलक ने कहा–"हे देवानुप्रिय ! जैसे आपके पास अनेक उग्रादि कुलो के पुरुषो ने अपना वैभव त्यागकर दीक्षा ग्रहण की है, वैसा करने में तो मै समर्थ नही हूँ। किन्तु मैं आपसे अणुव्रतादि को धारणकर श्रमणोपासक बनना चाहता हूँ।" और वह राजा जीव-अजीव आदि का ज्ञाता हो सयम से आत्मा को भावित करता जीवन बिताने लगा। फिर पथक आदि पॉच सौ मत्री भी श्रावक बन गये। थावच्चापुत्र अणगार वहॉ से विहार कर अन्य जनपदो मे घूमने लगे।

26. After hearing the sermons the king said, "Beloved of gods! Many persons from higher classes (like Ugra, etc) have abandoned wealth and grandeur and taken Diksha from you, but I don't find myself fit for that However, I wish to take minor vows under your guidance and become a follower of the Shramans " And the king took the vows after knowing the fundamentals like soul and matter and started leading a disciplined life After this, Panthak and other ministers also became Shravaks (followers of Shramans) Ascetic Thavacchaputra resumed his itinerant way

सूत्र २७ **तेण कालेण तेण समए ण सोगधिया नाम नयरी होत्था, वण्णओ। नीलासोए उज्जाणे, वण्णओ। तत्थ ण सोगधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नगरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए।**

सूत्र २७ काल के उस भाग मे सौगधिका नाम की नगरी का वर्णन मिलता है (औपपातिक सूत्र)। उस नगरी के बाहर नीलाशोक नाम के उद्यान का भी वर्णन है। सौगधिका नगरी मे सुदर्शन नाम का नगरसेठ रहता था। वह समृद्धिवान (आदि) और समादृत था।

27. During that period of time there was a town named Saugandhika (Aupapatik Sutra) There is also a mention of a garden named Nilashok outside this town In this town lived a merchant named Sudarshan He was wealthy (etc) as well as respected

शुक परिव्राजक

सूत्र २८ **तेण कालेण तेण समएण सुए नाम परिव्वायए होत्था–रिउव्वेय-जजुव्वेय सामवेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले, संखसमए लद्धट्ठे, पचजम-पंचनियमजुत्तं सोयमूलय दसप्पयार परिव्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्त-वत्थ-पवर-परिहिए तिदड-कुंडिय-छत्त-छन्नालियंकुस-पवित्तय-**

केसरिहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संखसमए ण अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

सूत्र २८ उसी समय में शुक नाम का एक परिव्राजक था। वह ऋक् आदि चारो वेद और षष्ठितत्र का पारगत था। साख्य दर्शन के अर्थ का ज्ञाता था। पाँच यम और पाँच नियम का पालन करता था और शौच मूलक दस प्रकार के परिव्राजक धर्म, दान धर्म, शौच धर्म और तीर्थाभिषेक का उपदेश देता और प्रचार करता था। वह त्रिदड, कमडल, छत्र, छन्नालिका (काठ का एक उपकरण), अकुश, ताँबे की अँगूठी और चीवर–ये सात उपकरण धारण करता था। यह शुक परिव्राजक अपने एक हजार शिष्य परिव्राजको के साथ सौगधिका नगरी के एक मठ मे आकर ठहरा और अपने उपकरण रखे। वहाँ वह साख्य मतानुसार साधना करता हुआ रहने लगा।

SHUK PARIVRAJAK

28. During the same period there was a Parivrajak (a specific class of monks) named Shuk He was an accomplished scholar of all the four Vedas and the Shashtitantra He followed the discipline of five Yamas and five Niyams He propagated the ten cleansing based tenets of the Parivrajak sect and preached for indulgence in charity, cleansing, and annointing of/at places of pilgrimage He used to carry seven accouterments prescribed for a Parivrajak, namely—a trident, a Kamandal (a vessel made of gourd shell), an umbrella, Chhannalika (a wooden instrument), an Ankush (a lancet), a copper ring, and a piece of cloth This Shuk Parivrajak arrived in the town of Saugandhika with one thousand of his Parivrajak disciples and stayed in a Math (a specific type of religious abode) There he started his practices based on the Sankhya ideals

सूत्र २९ तए ण सोगंधियाए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ–एव खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ। परिसा निग्गया। सुदसणो निग्गए।

सूत्र २९ सौगधिका नगरी के शृगाटक आदि सर्व स्थानो पर लोगो के झुण्ड एकत्र हो उसके आने और ठहरने की चर्चा करने लगे। नागरिको की परिषद निकलकर मठ मे पहुँची। वही सुदर्शन सेठ भी आया।

29. In every nook and corner of the town throngs of people collected and started gossiping about the arrival and stay of this Parivrajak. A delegation of citizens went to visit the religious man in the Math. Sudarshan Seth was also among them

शुक की धर्मदेशना

सूत्र ३०. तए ण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं सखाणं परिकहेइ–एव खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते। से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, त जहा–दव्वसोए य भावसोए य। दव्वसोए य उदए णं मट्टियाए य। भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य। ज ण अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ, तं सव्व सज्जो पुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ त असुई सुई भवइ। एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छति।

तए ण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइम-वत्थेण पडिलाभेमाणे जाव विहरइ।

तए ण से सुए परिव्वायए सोगधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ।

सूत्र ३० शुक परिव्राजक ने सुदर्शन सहित उस परिषद को साख्य मत का उपदेश दिया–"हे सुदर्शन ! हमारा धर्म शौच मूलक धर्म कहा गया है। यह शौच दो प्रकार का बताया गया है–द्रव्य शौच और भाव शौच। द्रव्य शौच जल और मिट्टी से होता है तथा भाव शौच दर्भ (घास/नारियल) और मत्र से होता है। हे देवानुप्रिय ! हमारे मतानुसार हमारी जो भी वस्तु अपवित्र हो जाती है उसे पहले मिट्टी से मॉज दिया जाता है और फिर शुद्ध जल से धो लिया जाता है। इससे वह अपवित्र वस्तु पवित्र हो जाती है। इसी प्रकार प्राणी भी जलाभिषेक से, जल स्नान से आत्मा को पवित्र कर निर्विघ्न स्वर्ग प्राप्त करता है।"

सुदर्शन धर्मवाचना सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने शुक से शौचमूलक धर्म स्वीकार किया। वह परिव्राजको को प्रचुर आहार सामग्री और वस्त्रादि दान करता जीवन बिताने लगा। कालातर मे शुक परिव्राजक सौगधिका नगरी से निकल अन्य जनपदो मे घूमने लगा।

THE PREACHING OF SHUK

30. Shuk Parivrajak preached about the ideals of the Sankhya school before the gathering including Sudarshan—

"Sudarshan! The religion I preach is known as cleansing based religion The cleansing is said to be of two types—physical cleansing and spiritual cleansing The physical cleansing is done with the help of water and sand and the spiritual one with the help of grass or coconut and mantra O Beloved of gods! According to our tenets anything that becomes impure is first rubbed with sand and then washed with pure water This process turns impure into pure Similarly a being purifies its soul by annointing or taking bath with water and crossing every hurdle reaches the heaven "

Pleased with this discourse Sudarshan embraced the cleansing based religion of Shuk He started giving ample food, cloths, and other things as alms to Parivrajaks After some time Shuk Parivrajak left Saugandhika and started wandering in other populated areas

थावच्चापुत्र-सुदर्शन संवाद

सूत्र ३१ तेण कालेण तेण समए ण थावच्चापुत्ते णाम अणगारे सहस्सेण अणगारेण सद्धि पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे, गामाणुगाम दूइज्जमाणे, सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव सोगधिया नयरी, जेणेव नीलासोए उज्जाणे, तेणेव समोसढे।

परिसा निग्गया। सुदसणो वि णिग्गए। थावच्चापुत्त नाम अणगार आयाहिण पयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–तुम्हाण किमूलए धम्मे पन्नत्ते ?

तए ण थावच्चापुत्ते सुदसणेण एव वुत्ते समाणे सुदसण एव वयासी–"सुदसणा ! विणयमूले धम्मे पण्णत्ते। से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा–अगारविणए य अणगारविणए य। तत्थ ण जे से अगारविणए से ण पच अणुव्वयाइ, सत्तसिक्खावयाइ, एक्कारस उवासगपडिमाओ।

तत्थ ण जे से अणगारविणए से ण पच महव्वयाइ पन्नत्ताइ, त जहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमण, जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण, दसविहे पच्चक्खाणे, बारस भिक्खुपडिमाओ, इच्चेए ण दुविहेणं विणयमूलए ण धम्मेण अणुपुव्वेण अट्ठकम्म-पगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणे भवति।

सूत्र ३१ काल के उस भाग मे थावच्चापुत्र अनगार अपनी शिष्य संपदा सहित सौगधिका नगरी के नीलाशोक उद्यान मे आकर ठहरे।

उनके आने पर परम्परानुसार परिषद धर्म सुनने निकली। सुदर्शन भी वहाँ आया और यथाविधि वदना करके पूछा–"आपके धर्म का मूल क्या है ?"

थावच्चापुत्र अनगार ने सुदर्शन को उत्तर दिया–"हे सुदर्शन ! हमारा धर्म विनयमूलक वताया गया है। यह विनय दो प्रकार का कहा है–आगार विनय अर्थात् गृहस्थ का चारित्र और अणगार विनय अर्थात् श्रमण का चारित्र। आगार विनय पाँच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत और ग्यारह उपासक-प्रतिमा रूप है तथा अणगार विनय पॉच महाव्रत रूप है। पाँच महाव्रत है–समस्त प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह का त्याग। साथ ही रात्रि-भोजन तथा समस्त मिथ्यादर्शन शल्य से विरमण। इनके साथ ही दस प्रकार का प्रत्याख्यान और बारह भिक्षु प्रतिमाये भी अणगार विनय मे सम्मिलित है। इन दो प्रकार के विनयमूलक धर्म के पालन से क्रमश आठ कर्मप्रकृतियो का क्षय कर जीव लोकाग्र अर्थात् मोक्ष मे स्थान पाता है।

DIALOGUE BETWEEN THAVACCHAPUTRA AND SUDARSHAN

31. During that period of time Thavacchaputra arrived with all his disciples and stayed at the Nilashok garden of Saugandhika city

As per the norms, on his arrival a delegation came to attend his discourse Sudarshan also arrived there and after formal obeisance he asked, "What is the fundamental principle of your religion?"

Thavacchaputra replied, "Sudarshan! My religion is based on discipline The discipline is of two types—Agar-discipline or the way of life of the laity and Anagar-discipline or the way of life of the ascetic

The first includes five minor-vows, seven preparatory vows and eleven prescribed practices for the citizen

The second includes the five great vows These great vows are—complete abstainment from acts and feelings of destruction of life, falsehood, acquisition, sex, and possession Also included are refraining from eating at night and pursuing misconceptions Besides these, ten types of reversions and twelve prescribed practices for the ascetic are also added to these disciplines

By following this religion, based on two types of discipline, a being sheds all the eight categories of Karma in due course and attains liberation."

सुदर्शन का धर्म-परिवर्तन

सूत्र ३२. तए ण थावच्चापुत्ते सुदंसण एव वयासी–"तुब्भे ण सुदसणा ! किमूलए धम्मे पण्णत्ते ?"

"अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पण्णत्ते, जाव सग्ग गच्छति।"

सूत्र ३२ फिर थावच्चापुत्र ने सुदर्शन से कहा–"हे सुदर्शन ! तुम्हारे धर्म का मूल क्या कहा गया है ?"

उसने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक कहा गया है और इसी से जीव स्वर्ग मे जाते हैं (शुक के कथन के समान)।"

CONVERSION OF SUDARSHAN

32. Now Thavacchaputra asked Sudarshan, "Sudarshan! What is the basis of your religion?"

He replied, "Beloved of gods! my religion is based on cleansing and, a being goes to heaven only by practicing it (details as per Shuk's statement)

सूत्र ३३. तए णं थावच्चापुत्ते सुदसणं एवं वयासी–"सुदसणा ! जहानामए केई पुरिसे एग महं रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा, तए ण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि कोइ सोही ?"

"णो तिणट्ठे समट्ठे।"

सूत्र ३३ थावच्चापुत्र ने सुदर्शन से प्रश्न किया–"हे सुदर्शन ! कोई पुरुष रक्त के दाग वाले एक वस्त्र को रक्त से ही धोये तो क्या वह स्वच्छ-शुद्ध हो जायेगा ?"

सुदर्शन ने उत्तर दिया–"यह ठीक नही है, ऐसा नही हो सकता।"

33. Thavacchaputra put a question before Sudarshan, "Sudarshan! If a person washes a blood stained cloth with blood only, would it become clean and pure?"

Sudarshan replied, "That is not right and it is not possible "

सूत्र ३४. एवामेव सुदंसणा ! तुब्भं पि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही।

"सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हं गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?"

"हता भवइ।"

एवामेव सुदसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वि तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही।

सूत्र ३४ "उसी प्रकार, हे सुदर्शन ! तुम्हारे मतानुसार भी प्राणातिपात आदि कर्मों द्वारा शुद्धि नही हो सकती।

"हे सुदर्शन ! कोई व्यक्ति एक रक्त से सने कपडे को खार के पानी में भिगोये, चूल्हे पर चढाकर उबाले और तब स्वच्छ जल से धोवे तो निश्चय ही वह रक्त सना वस्त्र स्वच्छ-शुद्ध हो जाता है या नही ?"

"जी हॉ ! हो जाता है।"

"उसी प्रकार, हे सुदर्शन ! हमारे धर्म के अनुसार भी अहिंसा आदि से शुद्धि हो जाती है।"

34. "Similarly Sudarshan! Even according to your views purity cannot be achieved through such acts as violence

"Sudarshan! If a person puts a blood stained cloth in a solution of caustic soda, boils it, and then rinses it with clean water, would that blood stained cloth become clean and pure or not?"

"Yes, it certainly would "

"Similarly, Sudarshan! according to my religion purity is achieved through the practice of disciplines like Ahimsa "

सूत्र ३५. तत्थ णं सुदंसणे सबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–''इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए, जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ।''

सूत्र ३५ सुदर्शन को इन बातों से प्रतिबोध प्राप्त हुआ। उसने थावच्चापुत्र को यथाविधि वन्दना करके कहा–''भन्ते ! मै सच्चे धर्म को सुनना और जानना चाहता हूँ।'' और थावच्चापुत्र का उपदेश सुन वह श्रावक बन गया, जीव-अजीव का ज्ञाता हो गया और धर्म पालन करता हुआ जीवन बिताने लगा।

35. This dialogue enlightened Sudarshan He formally bowed before Thavacchaputra and submitted, "Bhante! I want to hear and understand true religion" And after listening to the preaching of Thavacchaputra and knowing the fundamentals like soul and matter, Sudarshan became a Shravak and started leading a disciplined life

शुक का पुनरागमन

सूत्र ३६. तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु सुदसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने। तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए, पुणरवि सोयमूलए धम्मं आघवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेण सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे, जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ।

सूत्र ३६ शुक परिव्राजक को इस घटना की सूचना मिली तो उसके मन मे विचार उठा–''सुदर्शन ने शौचधर्म का त्यागकर विनयमूलधर्म स्वीकार कर लिया है। उसकी इस नई श्रद्धा से उसे मुक्त कर पुन शौच-मूलक धर्म का उपदेश देना मेरे लिए हितकर होगा।'' यह विचार आने पर वह अपने एक हजार शिष्यो के समूह सहित सौगन्धिका नगरी मे आकर मठ मे ठहरा। फिर गेरुए वस्त्र पहने और अपने कुछ शिष्यो सहित वह मठ से निकलकर सुदर्शन के घर गया।

RETURN OF SHUK

36. When Shuk Parivrajak came to know about this incident he thought, "Sudarshan has been converted from the cleansing based

religion to the discipline based religion. It would be good to preach and bring him back to my order" Thinking thus he came back to Saugandhika town and stayed in the Math Taking a few of his disciples dressed in ochre coloured garbs he came out of the Math and went to Sudarshan's house

सूत्र ३७. तए णं सुदसणे तं सुय एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो वंदइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसण अणब्भुट्ठियं पासित्ता एवं वयासी-"तुमं णं सुदसणा ! अन्नया ममं एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि, इयाणिं सुदंसणा ! तुमं मम एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वदसि, तं कस्स णं तुमे सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूलधम्मे पडिवन्ने ?"

सूत्र ३७. सुदर्शन ने शुक परिव्राजक को आते देखकर न तो खड़े होने का उपक्रम किया, न आगे बढ़ा, न आदर किया, न परिचित होने का प्रदर्शन और न ही वन्दना। वह मौन ही रहा।

इस पर शुक परिव्राजक ने कहा-"हे सुदर्शन ! पहले तो तुम मुझे आता देखकर खड़े होते थे और आगे बढ़कर आदर आदि करते थे। परन्तु आज तो तुमने वह सब व्यवहार नहीं किया। हे सुदर्शन ! बताओ तुमने किसके पास विनयमूल धर्म अगीकार किया है ?"

37. Even when he saw Shuk Parivrajak approaching, Sudarshan neither stood up, went forward, greeted, nor bowed to him; he did not even recognize Shuk He just remained silent

Disturbed by this neglect, Shuk Parivrajak said, "Sudarshan! In the past when I came, you would stand up and come forward to greet me But today you have not extended that courtesy Tell me, Sudarshan! who has initiated you into the discipline based religion?"

सूत्र ३८. तए णं से सुदसणे सुए ण परिव्वायए ण एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल सुय परिव्वायगं एव वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए, इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स ण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने।"

सूत्र ३८ यह सुनकर सुदर्शन आसन से उठा और हाथ जोडकर शुक परिव्राजक से बोला-"देवानुप्रिय! अर्हत् अरिष्टनेमि के अन्तेवासी थावच्चापुत्र नाम के अनगार विहार

करते हुए यहाँ आये हैं और नीलाशोक नामक उद्यान मे ठहरे है। मैने उन्ही के पास विनयमूल धर्म स्वीकार किया है।''

38. Sudarshan got up from his seat and joining his palms replied, "Beloved of gods! An itinerant ascetic Thavacchaputra, a disciple of Arhat Arishtanemi, has come to the town and is staying at the Nilashok garden I have been initiated into the discipline based religion by him "

सूत्र ३९. तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण एव वयासी-''तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो। इमाइं च ण एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो। त जइ ण मे से इमाइ अट्ठाइं जाव वागरइ, तए ण अह वदामि नमसामि। अह मे से इमाइ अट्ठाइ जाव नो वागरेइ, तए णं अहं एएहि चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरण करिस्सामि।''

सूत्र ३९ शुक परिव्राजक ने कहा-''हे सुदर्शन ! चलो हम तुम्हारे धर्माचार्य थावच्चापुत्र के पास चले और उनसे अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारण तथा व्याकरण-देशना का समाधान प्राप्त करे। यदि वे समाधान कर देगे तो मै उन्हे वदनादि करूँगा और यदि वे समाधान नही दे पाये तो मै इन्ही अर्थ आदि से उन्हे निरुत्तर कर दूँगा।''

39. Shuk Parivrajak said, "Sudarshan! come, let us go to your preceptor, Thavacchaputra and seek his explanations on some topics with reference to meaning, cause, question, reason and grammar If he is able to explain I shall become his follower and bow before him but if he fails to explain I shall strike him dumb by my arguments on the same parameters "

शुक-थावच्चापुत्र संवाद

सूत्र ४० तए ण से सुए परिव्वायगसहस्सेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धि जेणेव नीलासोए उज्जाणे, जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी-''जत्ता ते भते ! जवणिज्ज ते ? अव्वाबाह पि ते ? फासुय विहार ते ?''

तए ण से थावच्चापुत्ते सुए ण परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुय परिव्वायगं एव वयासी-''सुया ! जत्ता वि मे, जवणिज्ज पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे।''

सूत्र ४० तत्पश्चात् शुक परिव्राजक अपने एक हजार शिष्यों के समूह तथा सुदर्शन सेठ के साथ थावच्चापुत्र के पास आया और उनसे कहा–"भन्ते ! यह आपकी यात्रा है, यापनीय है, अव्याबाध है, अथवा प्रासुक विहार हो रहा है ?

थावच्चापुत्र ने उत्तर दिया–"हे शुक ! मेरी यात्रा भी हो रही है, यापनीय भी है, अव्याबाध भी और प्रासुक विहार भी।"

DIALOGUE BETWEEN SHUK AND THAVACCHAPUTRA

40. After this, Shuk Parivrajak, along with his one thousand disciples and merchant Sudarshan, came to Thavacchaputra and said, "Bhante! You are in a state of movement (Yatra), ritual practices (Yapaniya), undisturbed suspension (Avyabadh), or rootless roving (Prasuk Vihar) ?"

Thavacchaputra replied, "Shuk! I am in all these four states at the same time "

सूत्र ४१. तए ण से सुए थावच्चापुत्त एवं वयासी–"किं भते ! जत्ता ?"

"सुया ! ज ण मम णाण-दंसण-चरित्त-तव-सजममाइएहिं जोएहि जयणा से तं जत्ता।"

"से कि त भते ! जवणिज्जे ?"

"सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य।"

"से कि त इंदियजवणिज्जे ?"

"सुया ! जं ण मम सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइ वसे वट्टंति, से त इंदियजवणिज्जं।"

"से किं त नोइंदियजवणिज्जे ?"

"सुया ! जन्न कोह-माण-माया-लोभा खीणा, उवसता, नो उदयति, से तं नोइंदियजवणिज्जे।"

सूत्र ४१ शुक–"भते ! आपकी यात्रा क्या है ?"

थावच्चापुत्र–"हे शुक ! ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और संयम आदि से सभी प्रवृत्तियों मे यतना का पालन करना हमारी यात्रा है।"

शुक–"भंते ! यापनीय क्या है ?"

थावच्चापुत्र–"शुक ! यापनीय दो प्रकार का है–इन्द्रिय-यापनीय तथा नोइन्द्रिय-यापनीय।"

शुक–"इन्द्रिय-यापनीय क्या है ?"

थावच्चापुत्र–"शुक ! श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय मेरे वश मे हैं, कोई उपद्रव नही करती। यह इन्द्रिय-यापनीय है।"

शुक–"नोइन्द्रिय-यापनीय क्या है ?"

थावच्चापुत्र–"हे शुक ! नोइन्द्रिय मन का विषय है अत यह जो हमारे क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषाय क्षीण हो गये हैं, उपशांत हो गये हैं और उदय मे नहीं आ रहे, वही हमारा नोइन्द्रिय-यापनीय है।"

41. Shuk, "Bhante! How do you define your state of movement?"

Thavacchaputra, "Shuk! Indulgence in activities like knowledge, conduct, penance, and discipline with due care is the state of movement for us "

Shuk, "What about the state of ritual practices?"

Thavacchaputra, "Shuk! There are two types of the state of ritual practices, one is related to the senses and the other to the para-senses "

Shuk, "Explain the one related to the senses "

Thavacchaputra, "Shuk! All my five senses, namely ears, eyes, nose, tongue, and skin are under my complete control, they do not cause any disturbance to me For us this is the state of ritual practices related to the senses "

Shuk, "The one related to the para-senses?"

Thavacchaputra, "Shuk! the para-senses are the subjects of mind As such, for us the state in which our passions, namely anger, conceit, illusion, and greed; are subdued and not precipitating is the state of ritual practices related to the para-senses

सूत्र ४२. "से कि त भंते ! अव्वाबाह ?"

"सुया ! जन्न मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया विविहा रोगायका णो उदीरेंति, से त अव्वाबाहं।"

"से किं तं भंते ! फासुयविहारं ?"

"सुया ! जन्नं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पवासु इत्थि-पसु पडगवियज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं उगिण्हित्ता प विहरामि, से तं फासुयविहारं।"

सूत्र ४२ शुक ने कहा-"भते ! अव्याबाध क्या है ?"

थावच्चापुत्र-हे शुक ! वात, पित्त, कफ, सन्निपात आदि जनित विविध प्रकार के रोग और आतक उदय मे न आवे, यही हमारा अव्याबाध है।"

शुक-"भते ! प्रासुक विहार क्या है ?"

थावच्चापुत्र-"शुक ! आराम, उद्यान, देवकुल, सभा, प्याऊ, स्त्री-पुरुष-नपुसकविहीन उपाश्रय आदि मे हम जो वापस लौटा देने के लिये पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक आदि वस्तुएँ ग्रहण करके विहार करते हैं वही हमारा प्रासुक विहार है।"

42. Shuk asked, "Bhante! How do you define the state of undisturbed suspension?"

Thavacchaputra, "Shuk! To remain unaffected by ailments and fears caused by the three humours (wind, bile, and phlegm) and their morbid state is for us the state of undisturbed suspension."

Shuk asked, "Bhante! How do you define the state of rootless roving?"

Thavacchaputra, "Shuk! In places like house, garden, temple, hall, water-hut, and other uninhabited places meant for itinerant ascetics, our temporary stay using returnable facilities like divan, seat, bed, and cot is for us the state of rootless roving."

सूत्र ४३ "सरिसवया ते भंते ! भक्खेया अभक्खेया ?"

"सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि।"

से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! सरिसवया दुविहा पण्णत्ता, त जहा-मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य। तत्थ ण जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा-सहजायया, सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया। ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया।

तत्थ ण जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ ण जे ते असत्थपरिणया तं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–फासुगा य अफासुगा य। अफासुगा णं सुया ! नो भक्खेया।

तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–जाइया य अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइया ते अभक्खेया। तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया।

तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते निग्गंथाणं भक्खेया।

एएणं अट्ठेण सुया ! एवं वुच्चइ सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि।

सूत्र ४३. शुक–"भंते ! सरिसवया भक्ष्य है अथवा अभक्ष्य ?"

थावच्चापुत्र–"शुक ! सरिसवया भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी।"

शुक–"यह कैसे, भंते ?"

थावच्चापुत्र–"शुक ! सरिसवया दो प्रकार के कहे गए हैं–मित्र-सरिसवया (समान आयु वाले) और धान्य-सरिसवया (सर्षप अर्थात् सरसों)। इनमें से मित्र-सरिसवया तीन प्रकार के हैं–साथ जन्मे हुए, साथ बड़े हुए और साथ-साथ खेले हुए। ये तीनो प्रकार के मित्र सरिसवया श्रमणों के लिये अभक्ष्य है अर्थात् त्याज्य हैं। धान्य-सरिसवया दो प्रकार के है–शस्त्र परिणत और अशस्त्र परिणत। इनमे जो अशस्त्र परिणत है अर्थात् जो सचित्त हैं वे श्रमणों के लिये अभक्ष्य हैं। जो शस्त्र परिणत हैं वे भी दो प्रकार है–प्रासुक तथा अप्रासुक। अप्रासुक अथवा सचित्त अभक्ष्य हैं। जो प्रासुक हैं वे दो प्रकार के है–याचित और अयाचित। अयाचित अभक्ष्य हैं। जो याचित है वे भी दो प्रकार के हैं–एषणीय और अनेषणीय। अनेषणीय अर्थात् जो गवेषणा करके ग्रहण करने योग्य नही हो वे अभक्ष्य है। जो एषणीय हैं वे भी दो प्रकार के हैं लब्ध और अलब्ध। अलब्ध (अप्राप्त) अभक्ष्य है। जो लब्ध (प्राप्त) है केवल वही श्रमणो के लिये भक्ष्य हैं।

"हे शुक ! मैने इसीलिये कहा है कि सरिसवया भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी।

43. Shuk, "Bhante! Is Sarisavaya (this term has two meanings that are explained in the reply) acceptable or not?"

Thavacchaputra, "Shuk! Sarisavaya is acceptable as well as unacceptable."

Shuk, "How so, Bhante!"

Thavacchaputra, "Shuk! There are two types of Sarısavaya—friend-Sarısavaya (here this term means 'of same age') and grain-Sarısavaya (here this term means mustard).

"The first or friend Sarısavaya are of three types—born together, grown together, and played together For the Shramans all these three types of friend Sarısavaya are not acceptable

"The second or the grain Sarısavaya are of two types—harvested and non-harvested For the Shramans the non-harvested or the living are not acceptable. The harvested are of two types—contaminated or non-contaminated. The contaminated are unacceptable The non-contaminated are again of two types—solicited and unsolicited. The unsolicited are unacceptable The solicited are of two types—tested and found suitable and unsuitable The unsuitable are unacceptable The suitable again are of two types—readily available and unavailable The unavailable including that which is specifically made available for the Shraman is not acceptable For a Shraman only the available one is acceptable

"Shuk! that is why I said that Sarısavaya is acceptable as well as unacceptable

सूत्र ४४ एव कुलत्था वि भाणियव्वा। नवरि इमं नाणत्त–इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पन्नत्ता, तं जहा–कुलवधुया य, कुलमाउया य, कुलधूया य। धन्नकुलत्था तहेव।

एव मासा वि। नवरि इम नाणत्त–मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–कालमासा य, अत्थमासा य, धन्नमासा य। तत्थ णं जे ते कालमासा ते ण दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा–सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया। अत्थमासा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–हिरन्नमासा य सुवण्णमासा य। ते ण अभक्खेया। धन्नमासा तहेव।

सूत्र ४४ "उपरोक्त विवेचन कुलत्था के सम्बन्ध मे भी लागू होता है। कुलत्था के दो भेद हैं–स्त्री-कुलत्था तथा धान्य-कुलत्था। स्त्री-कुलत्था तीन प्रकार की हैं–कुलवधू, कुलमाता और कुलपुत्री। ये तीनो श्रमण के लिए अभक्ष्य हैं। धान्य-कुलत्था के विषय में वही नियम है जो सरिसवया के लिये बताया है।

"ऐसा ही विवेचन मास का है। मास तीन प्रकार के होते हैं–कालमास, अर्थमास और धान्यमास। कालमास (महीना) बारह है–श्रावण से आषाढ़ तक वर्ष के बारह मास। ये सब

अभक्ष्य हैं। अर्थमास (माशा—तोल का माप) दो प्रकार के हैं—चाँदी का और सोने का। दोनों अभक्ष्य हैं। धान्यमास (उड़द) के विषय में वही नियम है जो सरिसवया के लिये बताया है।"

44. "The same rule is applicable to the term Kulattha which is of two types—**woman-Kulattha** (a female of the family) and grain Kulattha (**a type of** bean) The first are of three types—wife, mother and daughter All these are not acceptable for a Shraman To the second the aforesaid rule meant for Sarisavaya is applicable

"Same is true for the term Mas which is of three types—time-Mas wealth-Mas, and grain-Mas There are twelve time-Mas (month) All these are unacceptable for a Shraman, in other words he is not guided in his spiritual pursuit by any social or other norms pertaining to any specific month There are two wealth-Mas (a small measure of weight)—for silver and for gold These both are unacceptable To the grain-Mas the aforesaid rule meant for Sarisavaya is applicable "

सूत्र ४५. "एगे भवं ? दुवे भवं ? अणेगे भवं ? अक्खए भवं ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूयभावभविए वि भवं ?"

"सुया ! एगे वि अहं, दुवे वि अहं, जाव अणेगभूयभावभविए वि अहं।"

"से केणट्ठेण भंते ! एगे वि अहं जाव अणेगभूयभावभविए वि अहं ?"

"सुया ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुवे वि अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं।"

सूत्र ४५ शुक परिव्राजक—"आप एक हैं, दो है, अनेक हैं, अक्षय हैं, अव्यय है, अवस्थित हैं, अथवा भूत-भाव-भावी (अनित्य) है ?"

थावच्चापुत्र—"शुक ! मै यह सभी हूँ।"

शुक—"वह कैसे भंते ?"

थावच्चापुत्र—"हे शुक ! मै द्रव्य की अपेक्षा से एक हूँ। ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा से मै दो हूँ। आत्म-प्रदेशो की अपेक्षा से मै अक्षय भी हूँ, अव्यय भी और अवस्थित भी। और उपयोग अथवा प्रवृत्ति की अपेक्षा से भूत-भाव-भावी अर्थात् अनित्य भी हूँ।"

45. Shuk Parıvrajak, "You are one, two, many, imperishable, immutable, permanent, or transitory (having past, present, and future) ?"

Thavacchaputra, "Shuk! I am all these "

Shuk, "How so, Bhante!"

Thavacchaputra, "Shuk! In context of fundamentals I am one (soul). In context of knowledge and perception I am two. In context of soul-segments I am many as well as imperishable, immutable and permanent And in context of attitude or indulgence I am transitory (having past, present, and future) also "

शुक की प्रव्रज्या

सूत्र ४६. एत्थ ण से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"इच्छामि णं भंते ! तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्म निसामित्तए। धम्मकहा भाणियव्वा।"

तए ण सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वयासी-"इच्छामि णं भते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए।"

"अहासुह देवाणुप्पिया !" जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे तिदडयं जाव धाउरत्ताओ एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उपाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं अणगारं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अन्तिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइए। सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ। तए णं थावच्चापुत्ते सयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ।

सूत्र ४६. थावच्चापुत्र के इन उत्तरो से शुक परिव्राजक को प्रतिबोध प्राप्त हुआ। उसने उन्हे यथाविधि वन्दना की और कहा-"भंते ! मै आपसे केवली प्ररूपित धर्म सुनना चाहता हूँ।" थावच्चापुत्र ने धर्मकथा कही (औपपातिक सूत्र के अनुसार)।

धर्मकथा सुन-समझकर शुक ने कहा-"भते ! मैं एक हजार परिव्राजकों सहित आपके पास दीक्षा लेना चाहता हूँ।"

थावच्चापुत्र ने कहा-"देवानुप्रिय ! जिसमे तुम्हें सुख मिले वह करो।" शुक परिव्राजक तब उत्तर पूर्व दिशा में गये, अपने वस्त्र-उपकरण त्याग दिये और अपनी शिखा उखाड़ दी।

मुंडित हो थावच्चापुत्र के पास जा वह दीक्षित हो गये। सामायिक से चौदह पूर्व तक पूरी वाचना का अध्ययन किया। इसके बाद थावच्चापुत्र ने उसके साथ दीक्षित हुए एक हजार श्रमणों को शिष्य रूप मे उसे प्रदान किया।

INITIATION OF SHUK

46. Shuk Parivrajak was enlightened by these explanations provided by Thavacchaputra He formally bowed and said, "Bhante! I want to listen to the tenets propagated by the omniscient " Thavacchaputra gave a religious discourse for his benefit (Aupapatik Sutra) Listening to and absorbing the tenets Shuk said, "Bhante! Along with my one thousand Parivrajak disciples I want to take Diksha from you "

Thavacchaputra replied, "Beloved of gods! Do as you please " Now Shuk Parivrajak proceeded in the north-east direction, got rid of all his belongings including his garb, and pulled out the lock of hair on the crown of his head Bald-headed he came to Thavacchaputra and got initiated Beginning from Samayik he studied the complete canonical text including the fourteen sublime canons After this Thavacchaputra promoted him to be the leader of one thousand Shramans who had been initiated along with him

सूत्र ४७. तए ण थावच्चापुत्ते सोगधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ। तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय सणियं दुरूहइ। दुरूहित्ता मेघघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय जाव पाओवगमण समणुवन्ने।

तए ण से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

सूत्र ४७ तब थावच्चापुत्र अनगार सौगधिक नगर से निकल विभिन्न जनपदो मे विचरण करने लगे। अत मे वे एक हजार साधुओ सहित पुण्डरीक (शत्रुजय) पर्वत के पास आये और धीरे-धीरे उस पर्वत पर चढ़े। वहाँ उन्होने मेघ सम काली शिला का प्रतिलेखन कर यथाविधि पादोपगमन अनशन ग्रहण किया। अनेक वर्षो का साधु जीवन व्यतीत कर

अंत में एक माह की संलेखना करके साठ भक्त अनशन कर केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर वे सिद्ध हुए।

47. Now Thavacchaputra left Saugandhika town and resumed his itinerant life. At last he and one thousand of his disciples arrived at the foot of the Shatrunjaya hills. They slowly climbed to the summit. There they searched a large rock black as clouds After properly cleaning this rock they sat on it and took the ultimate vow of meditation and fast till death following the prescribed procedure After a month long fast they attained Keval Jnana and Keval Darshan and got liberated terminating a long ascetic life

राजा शैलक का वैराग्य

सूत्र ४८. तए ण सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए। परिसा निग्गया, सेलओ निग्गच्छइ। धम्मं सोच्चा जं णवरं–"देवाणुप्पिया ! पथगपामोक्खाइं पंच मंतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया !"

सूत्र ४८. शुक अनगार एक बार शैलकपुर नगर के सुभूमिभाग उद्यान में पधारे। वहा परिषद निकली और राज शैलक भी आये। धर्मोपदेश सुनकर उन्होंने कहा–"हे देवानुप्रिय ! मै पथक आदि पाँच सौ मत्रियो से पूछ लूँ, और मडुक कुमार को राज्य दे दूँ फिर गृह त्यागकर आपके पास दीक्षा लूँगा।"

शुक अनगार ने कहा–"जिसमे तुम्हे सुख मिले वही करो।"

KING SHAILAK GETS DETACHED

48. Ascetic Shuk once arrived at the Subhumibhag garden in Shailakpur King Shailak and a delegation of the townsfolk came for his discourse After the discourse the king said, "Beloved of gods! I would like to renounce the world and take Diksha from you, but first I shall go and seek opinion of my ministers including Panthak I would also like to handover the kingdom to prince Manduk Kumar"

Ascetic Shuk replied, "Do as you please"

सूत्र ४९. तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणंसि सन्निसन्ने।

तए णं से सेलए राया पथयपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य धम्मे मए इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। अहं ण देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह ? किं वसेह ? कि वा ते हियइच्छिए त्ति ?"

तए णं त पथयपामोक्खा सेलग राय एव वयासी-"जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा ? अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! ससारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा ण पव्वइयाण वि समाणाण बहूसु जाव चक्खुभूए।

सूत्र ४९ शैलक राजा अपने नगर मे प्रवेश कर अपने महल की राजसभा मे गया और सिहासन पर बैठा। उसने पथक आदि पॉच सौ मत्रियो को बुलाया और कहा-"हे देवानुप्रियो ! मैने शुक अनगार से धर्म सुना है, वह मुझे रुचा है और मैने उसकी इच्छा की है। अत हे देवानुप्रियो ! मै ससार के भय से उद्विग्न आदि होकर (पूर्व सम) दीक्षा ले रहा हूँ। तुम क्या करोगे ? कहाँ रहोगे ? तुम्हारी हार्दिक इच्छा क्या है ?"

पंथक आदि मत्रियो ने कहा-"हे देवानुप्रिय ! जब आप प्रव्रजित होना चाहते है तो हमारा अन्य कौन-सा आधार है, कौन आलबन है ? अत हम भी दीक्षा अगीकार करेंगे। हे देवानुप्रिय ! जैसे आप गृहस्थावस्था मे हमारे समस्त कार्यो और कारणो मे मार्गदर्शक हैं-वैसे ही दीक्षित अवस्था मे भी मार्गदर्शक रहेगे।

49. King Shailak entered his town, went into his palace and sat on his throne in the assembly hall He called his five hundred ministers including Panthak and said, "Beloved of gods! I have listened to the discourse of ascetic Shuk, I have liked it and I wish to embrace his religion As such, Beloved of gods! being disturbed by the sorrows of the world (etc, as mentioned earlier) I shall get initiated into his order What shall you do? Where shall you live? What is your true desire?"

Panthak and the ministers replied, "Beloved of gods! Once you renounce the world and become an ascetic we will be without a support

and protection As such, we shall also take Diksha. Beloved of gods! As you have been our guide in all our worldly activities so you shall be in our ascetic activities "

सूत्र ५०. तए णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वयासी–"जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे संसारभयउव्विगा जाव पव्वयह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएस सएसु कुडुबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुबमज्झे ठावेत्ता पुरिस-सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह" त्ति। तहेव पाउब्भवंति।

सूत्र ५० शैलक राजा ने उनसे कहा–"हे देवानुप्रियो ! यदि तुम भी दीक्षा लेना चाहते हो तो जाओ और अपने-अपने कुटुम्बो में अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्रों को कुटुम्ब का उत्तरदायित्व सौपो और पुरिससहस्स वाहनो पर बैठकर मेरे पास लौटो।" सब मंत्री अपने-अपने घर गये और राजाज्ञा का पालन कर लौट आए।"

50. King Shailak said, "Beloved of gods! If you want to take Diksha go and bid good bye to your families after handing over the responsibilities of your families to your eldest sons After this, return here sitting in the Purisasahassa palanquins." All the ministers went away and complying the king's order returned back

सूत्र ५१. तए ण से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थ जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह।" अभिसिंचइ जाव राया जाए, जाव विहरइ।

सूत्र ५१ राजा ने प्रसन्न होकर अपने सेवकों को बुलाया और कहा–"देवानुप्रियो ! जल्दी से मडुक-कुमार के वैभवपूर्ण राज्याभिषेक की तैयारी करो।" सेवकों ने आज्ञा का पालन किया। शैलक राजा ने कुमार का राज्याभिषेक किया और मंडुक राजा सुखपूर्वक रहने लगा।

51. The king, with all enthusiasm, called his attendants and said, "Beloved of gods! Immediately make all arrangements for a grand coronation of prince Manduk" The attendants did as told. King Shailak crowned the prince and left him to enjoy the power and pleasures of the new life

शैलक की दीक्षा

सूत्र ५२ तए ण से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ। तए णं से मंडुए राया

कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"खिप्पामेव सेलगपुरं नयरं आसित्त जाव गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करित्ता कारवित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।"

तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"खिप्पामेव सेलगस्स रण्णो महत्थ जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावई देवी अग्गकेसे पडिच्छइ। सव्वे वि पडिग्गहं गहाय सीय दुरूहंति, अवसेसं तहेव, जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ।"

सूत्र ५२ तब शैलक ने मंडुक राजा से दीक्षा लेने की आज्ञा माँगी। मडुक राजा ने सेवको को बुलाकर कहा-"जल्दी से शैलकपुर नगर की सफाई करवाकर रमणीय बना दो (पूर्व सम) और कार्यपूर्ति की सूचना दो।"

यह काम हो जाने पर राजा ने पुन सेवको को बुलाया और कहा-"जल्दी से शैलक महाराज के वैभवपूर्ण दीक्षाभिषेक की तैयारी करो।" दीक्षोत्सव का समस्त विवरण वैसा ही है जैसा मेघकुमार की दीक्षा मे हुआ था। विशेष घटना यह है कि शैलक के अग्रकेश पद्मावती देवी ने ग्रहण किये। दीक्षा के पश्चात् शैलक अनगार ने अध्ययन किया और फिर बहुविध तपस्या करते हुए विहार करने लगे।

DIKSHA OF SHAILAK

52. Now Shailak sought permission for Diksha from king Manduk King Manduk called his staff and said, "Go and make immediate arrangements for the cleaning (etc) of Shailakpur town and report back."

When this work was done the king once again called his staff and said, "Make all necessary arrangements for a grand initiation ceremony for Maharaj Shailak" The detailed description of this ceremony is same as that mentioned in the story of Megh Kumar The only difference is that the pulled locks of hair were collected by Padmavati Devi After being initiated Shailak Anagar completed his studies and commenced his itinerant life doing a variety of penances

सूत्र ५३. तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथयपामोक्खाइ पच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ।

तए ण से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तए णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेण सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पुंडरीए पव्वए जाव।

मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे।

सूत्र ५३ शुक अनगार ने शैलक अनगार को पंथक आदि पाँच सौ श्रमण शिष्य रूप में प्रदान किये। शैलक मुनि शैलक नगर में निकलकर विभिन्न जनपदो मे विहार करने लगे।

शुक अनगार अपनी एक हजार श्रमणों की शिष्य संपदा सहित एक गाँव से दूसरे गाँव मे विहार करते अंत मे पुंडरीक पर्वत पर पधारे और एक मास की संलेखना लेकर केवलज्ञान प्राप्त करके अन्त मे सिद्ध पद को प्राप्त हुए (वर्णन पूर्व सम)।

53. Ascetic Shuk awarded the leadership of five hundred ascetics including Panthak to ascetic Shailak who left Shailak town and started moving from one populated area to another

At the end of his itinerant life Ascetic Shuk and one thousand of his disciples went to Shatrunjaya hills and attained liberation after taking the ultimate vow (details as mentioned earlier)

शैलक मुनि की रुग्णता

सूत्र ५४. तए ण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहि अतेहि य, पतेहि य, तुच्छेहि य, लूहेहि य अरसेहि य, विरसेहि य, सीएहि य, उण्हेहि य, कालाइक्कंतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य णिच्च पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, कंडुयदाहपित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ। तए ण से सेलए तेण रोगायंकेणं सुक्के जाए यावि होत्था।

सूत्र ५४ उधर शैलक श्रमण को सदा अन्त, प्रान्त, तुच्छ, रूक्ष, अरस, विरस, ठडा-गरम, असमय और अल्पाधिक आहार मिलने के कारण शरीर मे व्याधि हो गई। उसकी वेदना उत्कट और दुस्सह थी। उनको पित्त ज्वर हो आया जिससे शरीर मे खुजली और दाद हो जाते है। शैलक श्रमण बीमारी से सूख गये।

AILING SHAILAK

54. In the mean time Ascetic Shailak became sick due to getting terminal, left over, low value, dry, insipid, unpalatable, too hot, too cold, untimely, too little or too much food. The pain he suffered was

acute and intolerable He suffered from bile fever that causes eczema and itching in the whole body Ascetic Shailak became anaemic due to this disease.

सूत्र ५५. तए णं से सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव विहरइ। परिसा निग्गया, मंडुओ वि निग्गओ, सेलयं अणगारं वंदइ, नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता पज्जुवासइ।

तए णं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरय सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-"अहं णं भंते ! तुब्भ अहापवित्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवित्तेणं ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टामि, तुब्भे णं भते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरइ।"

सूत्र ५५ शैलक मुनि विहार करते हुए शैलकपुर के सुभूमिभाग उद्यान में आकर ठहरे। परिषद निकली, मडुक राजा भी आये। सभी ने शैलक अनगार को यथाविधि वन्दना की और उपासना करने लगे। मडुक राजा ने शैलक मुनि का निस्तेज, सूखा और रोग से जर्जर शरीर देखा तो बोले-"भते ! मै आपकी ऐसे चिकित्सक, औषध, भेषज और भोजन-पान द्वारा चिकित्सा करवाना चाहता हूँ जिसे स्वीकार करने मे साधु के लिये कोई आपत्ति नही हो। भते ! आप मेरी यानशाला में पधारिये और प्रासुक तथा एषणीय पीठादि ग्रहण करके रहिये।"

55. During his roving Ascetic Shailak once arrived in Shailakpur town and stayed in the Subhumibhag garden King Manduk came to visit him along with a delegation of citizens and they started worshipping him after the formal bowing When king Manduk observed the dull, anaemic, deteriorated and ailing body of Ascetic Shailak he commented, " Bhante! I wish to get you treated by such a doctor, medicines, and diet that are not prohibited for an ascetic. Bhante! Please come to my garage and stay there accepting seat, bed, etc prescribed for an ascetic "

सूत्र ५६. तए ण से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठ तह त्ति पडिसुणेइ। तए णं से मंडुए सेलय वंदइ, नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाय पंथगपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुर-मणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता फासुयं पीढं जाव विहरइ।

सूत्र ५६ शैलक अनगार ने 'ऐसा ही हो' कहकर मंडुक राजा के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। राजा वन्दना करके लौट गया। दूसरे दिन सुबह होने पर शैलक अनगार अपने पाँच सौ शिष्यों व पथक के साथ नगर में गये और मंडुक राजा की यानशाला में पहुँच प्रासुक उपकरण स्वीकार कर रहने लगे।

56. Ascetic Shailak uttered—"May it be so", and accepted the request of king Manduk The king returned after paying his respects. Next morning Ascetic Shailak and his five hundred disciples including Panthak entered the town, went to the kings garage and stayed there accepting things prescribed for an ascetic

सूत्र ५७ तए णं मंडुए राया चिगिच्छए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुय-एसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह।"

तए ण तेगिच्छया मंडुए णं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सेलयस्स रायरिसिस्स अहापवित्तेहि ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति। मज्जपाणयं च से उवदिसंति।

तए ण तस्स सेलयस्स अहापवित्तेहिं जाव मज्जपाणेणं रोगायंके उवसंते होत्था, हट्ठे जाव बलियसरीरे जाए ववगयरोगायंके।

सूत्र ५७ मडुक राजा ने चिकित्सको को बुलाकर कहा-"देवानुप्रियो ! शैलक मुनि की प्रासुक औषध आदि द्वारा उचित चिकित्सा करो।" राजा की आज्ञा सुन चिकित्सक कृतकृत्य हुए और आवश्यक औषध आदि सुझाई। साथ ही मद्यपान (नींद की औषधि) लेने को भी कहा। चिकित्सको के मतानुसार चिकित्सा करने से शैलक राजर्षि का रोग शान्त हो गया। वे स्वस्थ निरोग और बलवान् हो गये।

57. King Manduk called the doctors and said, "Beloved of gods! Start proper treatment of Ascetic Shailak with medicines (etc.) that are acceptable to ascetics " The doctors felt honoured by getting this order from the king and prescribed suitable medicines. They also advised the ascetic to take sedatives The treatment cured Ascetic Shailak and he became disease free, healthy and strong.

शैलक का प्रमाद

सूत्र ५८. तए ण से सेलए तंसि रोगायकसि उवसतंसि समाणसि, तसि विपुलसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एव पासत्थे पासत्थविहारी, कुसीले कुसीलविहारी, पमत्ते पमत्तविहारी, संसत्ते संसत्तविहारी, उउबद्धपीढ-फलग-सेज्जा-सथारए पमत्ते यावि विहरइ। नो सचाएइ फासुयं एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय पच्चप्पिणित्ता मंडुय च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरित्तए।

सूत्र ५८ निरोग हो जाने के बाद शैलक राजर्षि प्रचुर आहार और मद्यपान मे मूर्छित, मत्त, गृद्ध और अत्यन्त आसक्त हो गये। वे आलसी हो गये और आलस्यमय जीवन बिताने के आदी हो गये। वे कर्तव्यच्युत हो गये और कर्तव्यविहीन जीवन बिताने के आदी हो गये। वे शीलविरोधी हो गये और शील- विरोधी जीवन बिताने के आदी हो गये। वे प्रमादी हो गये और प्रमादमय जीवन शैली के आदी हो गये। वे शिथिलाचारी हो गये और वैसे ही जीवन के आदी हो गये। वे चातुर्मास के बाद भी शैय्या आदि उपकरण का उपयोग करने लगे और इस कारण वे राजा से अनुमति ले जनपदो मे विहार करने मे असमर्थ हो गये।

LETHARGY OF SHAILAK

58. When Ascetic Shailak regained his health, the continued consumption of sumptuous food and sedatives made him tight, tipsy, and intoxicated to the point of addiction He became lethargic and habituated to an easy way of life He drifted from his goal, went against discipline, became illusioned and lax in his conduct and got trapped in a goalless, undisciplined, illusioned, and unruly way of life Even when the prescribed period of monsoon stay came to an end, he continued the use of facilities like bed and, as such, was unable to resume his itinerant way of life seeking permission form the king

सूत्र ५९ तए णं तेसिं पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"एव खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्ज जाव पव्वइए, विपुलं ण असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए, नो संचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाण जाव पमत्ताण विहरित्तए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कल्ल सेलयं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-

सथारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जए ण जाव विहरित्तए।" एव संपेहेंति, संपेहित्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पथयं अणगार वेयावच्चकरं ठावेंति, ठावित्ता बहिया जाव विहरति।

सूत्र ५९ ऐसी स्थिति मे पथक के अतिरिक्त शेष पाँच सौ अनगार एक मध्य-रात्रि को एकत्र हो बैठे और विचार किया–"शैलक राजर्षि राज्य आदि का त्याग करके दीक्षित हुए है किन्तु विपुल आहारादि तथा मद्यपान मे लिप्त हो गये हैं, भ्रमित हो गये हैं और जनपद-विहार करने मे असमर्थ है। देवानुप्रियो ! श्रमणो के लिये प्रमादी होकर एक स्थान पर रहना नही कल्पता। अत· हमारे लिए यही श्रेयस्कर है कि कल ही शैलक राजर्षि से आज्ञा ले, उपकरण वापस लौटाकर, पथक अनगार को उनकी सेवा मे नियुक्त कर यहाँ से चले और जनपदो मे विहार करे।" यह निश्चय कर दूसरे दिन प्रात काल वे शैलक राजर्षि के पास गये। उनकी आज्ञा ली और उपकरण वापस कर दिये। पथक अनगार को उनकी सेवा मे नियुक्त किया और वहाँ से विहार कर गये।

59. Under these circumstances all the five hundred disciples leaving aside Panthak convened a meeting one night and conferred—"Although king Shailak has become an ascetic after abandoning his kingdom (etc) he has become addicted to sumptuous food and sedatives He has lost his direction and is unable to wander about. Beloved of gods! It is not proper for the ascetics to become lethargic and stay at one place As such, it would be good for us if with the break of the dawn we go to Ascetic Shailak, seek his permission, return all the equipment, give the responsibility of his care to ascetic Panthak and resume our itinerant way of life." Once a decision was reached they acted accordingly next morning and left the place

प्रमाद भग

सूत्र ६0 तए णं से पंथए सेलयस्स सेज्जा-संथारय-उच्चार-पासवण-खेल-संघाण-मत्त ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणए णं अगिलाए विणए ण वेयावडियं करेइ।

तए ण से सेलए अन्नया कयाइ कत्तियचाउम्मासियंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम आहारमाहारिए सबहु मज्जपाणय पीए पुव्वावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते।

तए णं से पंथए कत्तियचाउम्मासियसि कयकाउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउंकामे सेलय रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेण पाएसु संघट्टेइ।

तए ण से सेलए पंथए ण सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता एव वयासी-"से केस ण भते ! एस अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे ण मम सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेइ ?"

सूत्र ६० पथक अनगार सब प्रकार से शैलक राजर्षि की विनयपूर्वक और बिना ग्लानि के सेवा करने लगे।

एक बार शैलक राजर्षि चातुर्मास के कार्तिक महीने में सध्या समय खूब भोजन और मद्यपान कर आराम से सो रहे थे।

उसी समय पथक मुनि ने दिन का कायोत्सर्ग तथा प्रतिक्रमण कर लेने के बाद चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करने से पूर्व शैलक राजर्षि से क्षमायाचना हेतु अपने मस्तक मे उनके चरणो को छूया। इस पर शैलक कुपित हो गये और क्रोध से तिलामिलाकर उठ गये। वे उग्र हो चिल्लाये-"अरे कौन श्रीहीन है जो अपनी अकाल मृत्यु की इच्छा रखता है ? किसने मेरे पैरों का स्पर्श कर मुझे सुख भरी नीद से जगा दिया ?"

BREAKING OF THE TRAP

60. Ascetic Panthak served Ascetic Shailak with all humility and without any reservations

One evening during the month of Kartic, the last month of the monsoon stay, after a heavy dinner and a doze of sedative, Ascetic Shailak was sleeping in all comfort

At that time ascetic Panthak arrived there after finishing his day time meditation and Pratikraman (the ritual reviewing of the deeds of the day) and touched the feet of Ascetic Shailak with his forehead in order to seek the formal forgiveness before commencing the Chaturmasik Pratikraman (the ritual reviewing of the deeds of the year) This disturbed Shailak and consumed by anger he got up He shouted angrily, "Who is the ill fated one that desires for an untimely death? Touching my feet, who has woken me up from my pleasant sleep?"

सूत्र ६१. तए ण से पंथए सेलए ण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी-"अह ण भंते ! पथए

कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमण पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि। तं खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खमंतु मेऽवराहं, तुमं णं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो एवं करणयाए'' त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणए णं भुज्जो खामेइ।

सूत्र ६१ क्रोध के इस उग्र प्रदर्शन से पथक मुनि भय से अवाक् हो गये। उनका मन त्रास और खेद से भर गया। वे हाथ जोडकर बोले–''भते ! मै पथक हूँ। मैं कायोत्सर्ग और दैवसी प्रतिक्रमण के बाद चातुर्मास प्रतिक्रमण करने जा रहा था। अतः चातुर्मासिक क्षमायाचना के लिये आपको वन्दना करते समय मैंने अपने मस्तक से आपके चरणों का स्पर्श किया था। अत हे देवानुप्रिय ! क्षमा करें। मै भविष्य मे ऐसा नहीं करूँगा। मेरे अपराध को क्षमा कर दीजिये।'' पथक मुनि हाथ जोड विनयपूर्वक बार-बार खमाने लगे।

61. Ascetic Panthak was awe-struck by this violent display of anger He was filled with panic and repentance Joining his palms he said, "Bhante! It is I, Panthak I was proceeding to commence the Chaturmasik Pratikraman after concluding the daily one. As such, I touched your feet with my forehead in order to seek the annual forgiveness I am sorry, Beloved of gods! I will never repeat this mistake Kindly pardon my misdeed" With joined palms and all humility Panthak sought pardon again and again

शैलक का पुनर्जागरण

सूत्र ६२ तए ण सेलयस्स रायरिसिस्स पथए णं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–''एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ-फलग-सेज्जा-सथारए पमत्ते विहरामि। त नो खलु कप्पइ समणाणं णिग्गंथाणं पासत्थाण जाव विहरित्तए। त सेय खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठ-फलग-सेज्जा-सथारय पच्चप्पिणित्ता पंथए णं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जए णं जाव जणवयविहारेण विहरित्तए।'' एव संपेहेइ, सपेहित्ता कल्लं जाव विहरइ।

सूत्र ६२ पथक के इस कथन पर राजर्षि शैलक के मन में विचार उठे–''मै राज्यादि का त्याग करके भी प्रमादी होकर अपने अन्त समय मे भी उपकरणो का उपभोग करता हुआ रह रहा हूँ। श्रमणो को इस तरह का शिथिलाचार नहीं कल्पता। अत कल मंडुक राजा की अनुमति लेकर, उपकरण लौटाकर पथक अनगार के साथ उग्र विहार करना ही मेरे लिये श्रेयस्कर होगा।'' यह निश्चय कर दूसरे दिन प्रातःकाल वे यथाविधि वहाँ से विहार कर गये।

REAWAKENING OF SHAILAK

62. This statement of panthak forced Ascetic Shailak to think, "In spite of abandoning my kingdom (etc) I still continue to enjoy these worldly facilities during the last part of my life It is not proper for an ascetic to be so lax in conduct As such, it would be best for me to seek permission from king Manduk, return all the equipment, and commence the harsh itinerant ascetic life tomorrow itself taking along Panthak with me " Once the decision was reached he acted accordingly and left the place

सूत्र ६३. एवामेव समणाउसो ! जो निग्गथो वा निग्गथी वा ओसन्ने जाव सथारए पमत्ते विहरइ, से ण इहलोए चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो।

सूत्र ६३ "हे आयुष्मानो ! इसी प्रकार जो श्रमण-श्रमणी आलस्य से उपकरण आदि मे आसक्त होकर रहता है वह इसी लोक मे अनेक श्रमणो-श्रावको की अवहेलना का पात्र होता है और चिरकाल तक ससार-चक्र का भ्रमण करता है।"

63. Similarly, O blessed ones! the ascetics who are trapped by the fondness of equipment and the consequent lethargy become the object of disdain of numerous ascetics of this land and are sucked in within the vortex of the unending cycle of rebirth

सूत्र ६४. तए ण ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्न सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी-"सेलए रायरिसी पथए ण बहिया जाव विहरइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलय उवसपज्जित्ताण विहरित्तए।" एव सपेहेंति, सपेहित्ता सेलय रायरिसि उवसपज्जित्ता ण विहरंति।

तए ण ते सेलगपामोक्खा पच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणित्ता जेणेव पोडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा।

सूत्र ६४ पथक के अतिरिक्त उनके अन्य शिष्यो ने ये समाचार सुने तो सभी एकत्र हो विचार करने लगे-"शैलक राजर्षि तथा पथक अनगार उग्र विहार कर रहे है अत अब हमे उनके निकट ही विचरना चाहिए।" यह निश्चय कर वे राजर्षि शैलक के पास लौटे और उनके साथ ही विहार करने लगे।

कालान्तर में वे सभी शत्रुजय पर्वत पर जा सलेखना कर थावच्चापुत्र की भॉति सिद्ध हुए।

64 When the other disciples of Ascetic Shailak heard the news they assembled and thought, "Now that Ascetic Shailak and Panthak have resumed the harsh itinerant life we should join them " And they joined back Ascetic Shailak

Later they all went to the Shatrunjaya Hills and attained liberation after taking the ultimate vow like Thavacchaputra

उपसंहार

सूत्र ६५. एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ., एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ६५. हे आयुष्मन् श्रमणो ! जो साधु ऐसा आचरण करेगा वह अतत: संसार भ्रमण स मुक्ति प्राप्त करेगा।

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने पॉचवे ज्ञाताध्ययन का यही अर्थ कहा है। ऐसा मै कहता हूँ।

CONCLUSION

65. Blessed ones! The ascetic who follows such conduct gets liberated in the end

Jambu! This is the text and the meaning of the fifth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I confirm

॥ पचम अज्झयण समत्त ॥

॥ पचम अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE FIFTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की इस पॉचवी कथा मे शिथिलाचार के दोष को प्रकट किया है। साधु अथवा सयम के मार्ग पर चलने का नियम ले लेने वाला निरन्तर साधना के पथ पर विकास की दिशा में गतिमान होता है। उसे शैल खण्ड के समान गतिहीन अथवा शिथिल नहीं होना चाहिए। प्रमादग्रस्त हो शिथिल हो जाने वाला अपना इहलोक ही नही परलोक भी खराब कर लेता है और ससार चक्र मे उलझ जाता है। मुक्ति प्राप्त करने का साधन है निरन्तर अप्रमत्त

साधना। थावच्चा-पुत्र तथा शुक परिव्राजक के सवाद मे साधु जीवन के मुख्य बिन्दुओ पर संक्षिप्त और सरल किन्तु सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत की गई है।

उपनय गाथा

सिढिलिय संजम कज्जा वि होइउं उज्जमं ति जइ पच्छा।
संवेगाओ तो सेलउव्व आराहया होंति॥

प्रमाद की बहुलता से यदि कोई साधक संयम चर्या मे शिथिल हो जाते हैं, परन्तु बाद मे सवेग–वैराग्य व ज्ञान के प्रभाव से पुन. संयम मे उद्यत हो जाते हैं तो वे शैलक राजर्षि की तरह आराधक माने जाते हैं।

CONCLUSION

This fifth story of Jnata Dharma Katha elaborates the vice of laxity of conduct. An ascetic or the individual who has opted for the path of discipline has to be ever active in the right direction for his spiritual upliftment. He cannot afford to be inactive or static like a rock Encumbered by a lethargic attitude if he becomes inactive or lax in observance of conduct he spoils not only this life but also the one beyond and remains entrapped in the unending cycle of rebirths Vigorous and unimpeded practice is the means of attaining liberation The story also includes simple and brief but significant details about the salient features of ascetic life style in the form of the dialogue between Shuk Parivrajak and Thavacchaputra

THE MESSAGE

If some practicer becomes lax in his conduct due to excess of lethargy but amends his ways due to the inherent craving for the goal, he is accepted as a spiritualist like ascetic Shailak

परिशिष्ट

द्वारका–सौराष्ट्र की मुख्य प्राचीन नगरी (पन्नवणासूत्र)। यह समुद्र तट पर स्थित द्वारका से भिन्न है। महाभारत के अनुसार जरासध से आक्रान्त मथुरा के यादव, श्रीकृष्ण की सैन्य योजना के अनुसार अपने मूल स्थान को छोड़ रैवतक पर्वत के निकट कुशस्थली में आ गये थे। यहाँ उन्होने अनेको द्वार वाली एक नगरी बसाई जिसका नाम द्वारका पड गया। द्वार का अर्थ गुजराती में बन्दरगाह भी है। अत यह

अनुमान किया जाता है कि यह नगरी रैवतक पर्वत के निकट न होकर समुद्र तट पर बसी होगी। इस विषय पर अनेक इतिहासज्ञो ने विभिन्न मत प्रकट किये हैं। सम्प्रति कच्छ की खाड़ी में एक जलमग्न नगर के अवशेष भी मिले हैं और वहाँ एक टापू भी है जिसे बेट द्वारका कहते हैं। वायुपुराण का यह वर्णन कि महाराजा रेवत ने समुद्र के मध्य कुशस्थली नगरी बसाई थी जो श्रीकृष्ण के समय द्वारका नाम से प्रसिद्ध हो गई, इस नई खोज से पुष्ट होता है। ऐसे विभिन्न वर्णनों से एक संभावना यह भी उभरकर आती है कि किसी काल में द्वारिका एक विशाल भू-भाग में फैला एक महानगर रहा होगा जो रैवतक पर्वत की तराई से समुद्र तट तक फैला हुआ होगा। आज जिन सीमित क्षेत्रों को हम द्वारका और बेट द्वारका के नाम से जानते हैं वे उस महानगर के उपनगरीय भाग रहे होंगे।

रैवतक पर्वत–सौराष्ट्र मे द्वारका के निकट का पर्वत जो वर्तमान में गिरनार नाम से अधिक प्रसिद्ध है। जैनो का पवित्र तीर्थ-स्थल है क्योंकि बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का निर्वाण यहीं हुआ था। इसके अन्य नाम हैं–उज्जयत, उज्ज्वल तथा गिरिणाल।

प्रतिमा–यह एक प्रकार का तप है जिसमें आहार की मात्रा तथा आसन विशिष्ट करने के कुछ नियम होते हैं। कौन-सी प्रतिमा कितने दिन तक रखनी होती है इस काल का परिमाण भी निश्चित नियम के अनुसार होता है।

APPENDIX

Dwarka—Important ancient metropolis of the Saurashtra area in western India (Pannavna Sutra) This is not the same as the coastal Dwarka According to the Mahabharat the Yadavs of Mathura oppressed by Jarasandh left their place of origin and according to the strategic plan of Shri Krishna they migrated to Kushasthali near the Raivatak mountain Here they constructed a large and beautiful town with numerous gates (Dwars) It became popularly known as Dwarka. In the Gujarati language the word Dwar also means port As such another inference that Dwarka must have been situated at the sea-coast and not near the Raivatak mountain gained popularity Different historians have presented different theories on this subject Recently evidences of a submerged town have been found in the bay of Kuccha, nearby is an island named Bait Dwarka These recent findings support the story from Vayupurana that `King Raivat founded Kushasthali city in the middle of the sea and it became popular as Dwarka' All these divergent theories give rise to another concept—that in the remote past Dwarka must have been a great metropolis occupying a very large tract of land spread between the Raivatak mountain and the sea Those smaller areas we now know as Dwarka and Bait Dwarka could have been the suburbs of that great metropolis

Raivatak mountain—The mountain range near Dwarka in Saurashtra now popularly known as Girnar It is a pious pilgrimage centre of Jains because the twenty second Tirthankar Bhagavan Neminath attained nirvan here Other names—Ujjayant, Ujjval, Girinal

Pratima—This is a category of penance where there are some prescribed rules regarding the quantity of food and the posture of meditation The duration of various penances in this category also follows specified rules

छठा अध्ययन : तुम्बक : आमुख

शीर्षक–तुबए–तुम्बक–तूम्बा–एक फल विशेष जिसकी ऊपरी खाल सख्त होती है। इसे भीतर से खाली कर पात्र बनाया जाता है जिसको सामान्यतया साधु-सन्यासी काम मे लेते है। खाली करके इसके मुँह को भली प्रकार बन्द कर दें तो यह भीतर की हवा के कारण पानी मे डूबता नही अथवा हल्का हो जाता है। गुरुता-लघुता या हल्कापन-भारीपन आत्मा के सदर्भ में समझाने के लिए यह सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

कथासार–श्रमण भगवान महावीर राजगृह नगरी मे आये हुए हैं। उनके पट्ट शिष्य गणधर गौतम वहाँ उनसे शका समाधान हेतु प्रश्न करते हैं कि आत्मा गुरुता और लघुता को कैसे प्राप्त होना है। भगवान महावीर बताते हैं कि जैसे मिट्टी और घास की आठ पर्तें चढ़ने पर तूम्बा भारी होकर पानी मे डूब जाता है वैसे ही कर्मबधन की आठ पर्तें चढ़ने पर आत्मा गुरुता को प्राप्त होती है और नीचे डूबकर नरक मे पहुँच जाती है। जिस प्रकार घास और मिट्टी की पर्तें पानी मे घुलकर नष्ट होने पर तूम्बा ऊपर उठकर जल की सतह पर आ जाता है वैसे ही कर्मों की पर्तों का नाश होने पर आत्मा लघुता को प्राप्त कर ऊपर उठती है और लोकाग्र पर पहुँच जाती है।

SIXTH CHAPTER : TUMBAK : INTRODUCTION

Title—Tumbae or Tumbak or Tumba is the name of a fruit having a hard outer shell, gourd When it is ripe it is emptied, cleaned and dried and used as a pot particularly by monks and mendicants When empty, if its mouth is closed and sealed, it becomes lighter than water and does not sink It has been used as an appropriate example to explain the terms heavy and light in context with soul

Gist of the Story—Shraman Bhagavan Mahavir arrives in Rajagriha city His chief disciple ascetic Indrabhuti puts a question that how does a being quickly reach the heavy state (of soul) and the light state (of soul) ? Bhagavan Mahavir replies, "Gautam! As a gourd, made heavy with eight layers of fibers and mud, sinks in water, similarly a being fused with eight types of Karmas reaches the heavy state and sinks to the hell When all the eight layers of fibers and mud are washed off the gourd rises to the surface of the water body Similarly when a being destroys the fused eight types of Karmas, it rises to the zenith of the living universe

■■

छट्ठं अज्झयणं : तुंबए
छठा अध्ययन : तुम्बक
SIXTH CHAPTER : TUMBAK - THE GOURD

सूत्र १. "जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?"

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने पूछा-"भते ! श्रमण भगवान महावीर ने छठे ज्ञाता अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the sixth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समए णं रायगिहे णामं नयरे होत्था। तत्थ ण रायगिहे णयरे सेणिए नाम राया होत्था। तस्स ण रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण गुणसिलए नामं चेइए होत्था।

तेण कालेण तेण समए णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव समोसढे। अहापडिरूव उग्गहं गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। परिसा निग्गया, सेणिओ वि निग्गओ, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया-हे जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नाम के नगर मे श्रमण भगवान महावीर पधारे। वहाँ श्रेणिकराज सहित परिषद निकली और भगवान ने देशना दी। (विस्तृत विवरण पूर्व सम)

2. Sudharma Swami narrated—Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir, wandering from one village to another, arrived in Rajagriha city and stayed at a proper place in the Gunasheel temple complex A delegation of citizens led by King Shrenik arrived there and Bhagavan gave a discourse (details as before)

सूत्र ३. तेणं कालेणं तेण समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते जाव सुक्कज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसड्ढे जाव एवं वयासी-"कहं णं भंते ! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ?"

सूत्र ३. काल के उस भाग में भगवान के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति अनगार भी उनके पास ध्यान साधना में लीन रहते थे। जिज्ञासा एव श्रद्धा से अभिभूत इन्द्रभूति ने भगवान से प्रश्न किया-"भंते ! जीव शीघ्र ही गुरुता तथा लघुता को कैसे प्राप्त होता है ?"

3. During that period of time the chief disciple of Bhagavan, ascetic Indrabhuti, was also there He used to be engrossed in his spiritual practices under the guidance of Shraman Bhagavan Mahavir With absolute faith Indrabhuti put a question to Bhagavan, "Bhante! How does a being quickly reach the heavy state (of soul) and the light state (of soul) ?"

गुरुता का कारण

सूत्र ४. "गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह सुक्कं तुंबं णिच्छिद्द निरुवहय दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिपइ, उण्हे दलयइ, दलइत्ता सुक्कं समाणे दोच्चं पि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे सुक्के समाणं तच्चं पि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिपइ। एव खलु एएणुवाए ण अतस वेढेमाणे अतरा लिपेमाणे, अतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहि मट्टियालेवेहिं आलिपइ, अत्थाह-मतार-मपोरिसियंसि उदगसि पक्खिवेज्जा। से णूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्ह मट्टियालेवेण गुरुययाए भारिययाए गरुयभारिययाए उप्पि सलिलमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा ! जीवा वि पाणाइवाए णं जाव मिच्छादसणसल्लेणं अणुपुव्वेण अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणंति। तासिं गरुययाए भारिययाए गरुयभारिययाए कालमासे कालं किच्चा धरिणयलमइवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठाणा भवंति। एव खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति।"

सूत्र ४ "गौतम ! यदि कोई व्यक्ति एक बड़ा-सा बिना छेद वाला, बिना टूटा तुम्बा ले, उस पर नारियल के रेशे और दूब लपेटे तथा ऊपर से मिट्टी का लेप करे और धूप मे रख

रख दे। जब वह सूख जावे तो उस पर पुनः घास व मिट्टी लपेटकर फिर धूप में रख दे। इसी प्रकार घास और मिट्टी का लेप आठ बार उस तुम्बे पर चढ़ाये। इसके बाद उस तुम्बे को ले जाकर ऐसे जल में डाले जो पुरुष की ऊँचाई से भी बहुत गहरा हो और तैरने में कठिन हो। हे गौतम ! मिट्टी के आठ लेपों के भार से गुरु हुआ वह तुम्बा पानी में डूबकर तल में पहुँच जायेगा।

इसी प्रकार जीव भी हिंसा आदि अठारह पाप स्थानकों में लिप्त होने के कारण आठ कर्म-प्रकृतियो का बंध करता है। उन कर्म-प्रकृतियों के भार से गुरु होकर मृत्यु होने पर पृथ्वी (तिर्यक लोक) की सतह से गिरकर नरक (अधोलोक) की सतह पर पहुँच जाता है। गौतम ! जीव इस प्रकार गुरुता को प्राप्त होता है।

THE HEAVY STATE

4. "Gautam! Let someone take a large pot of hollowed gourd that is without a hole or a crack. Wrap coconut fibers and grass around it Cover it with a paste of sticky mud and put it in sun. When it dries, again wrap fibers around it, cover it with mud and let it dry. This way cover it with these layers eight times After this, take this gourd and throw it in a pond or lake that is much deeper than a man's height and difficult to swim across Gautam! made heavy with the eight layers of mud, that gourd will sink and reach the bottom of the water body

"Similarly a being (soul) is fused with eight types of Karmas as a result of his indulgence in eighteen types of sinful activities including violence Due to the weight of these Karmas it reaches the heavy state and after death sinks below the surface of the earth and reaches the bottom level of the living universe, the hell Gautam! This is how a being reaches the heavy state

लघुता का कारण

सूत्र ५. अह णं गोयमा ! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तित्तंसि कुहियंसि पडिसडियंसि ईसि धरणियलाओ उप्पइत्ता णं चिट्ठइ। तयाणंतरं च णं दोच्चं पि मट्टियालेवे जाव उप्पइत्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु एए णं उवाए णं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरिणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसण-सल्लवेरमणेण अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छंति।

सूत्र ५. "हे गौतम ! अब यदि गीला होने के कारण उस तूबे का ऊपरी लेप गलकर नष्ट हो जाये तो वह तूबा उस जलराशि से नीचे रही धरती की सतह से कुछ ऊपर उठ आता है। इसी प्रकार एक के बाद एक आठो लेप नष्ट हो जाने पर वह तूबा निर्लेप या बन्धनहीन होकर ऊपर उठता जाता है और जल की सतह पर आ जाता है।

"हे गौतम ! इसी प्रकार हिसा आदि अठारह पाप स्थानको को नष्ट करने से, त्याग देने से जीव क्रमश आठ कर्म-प्रवृत्तियो का क्षय करता है और आकाश मे उडकर लोकाग्र पर पहुँच जाता है। जीव इस तरह शीघ्र ही लघुता को प्राप्त होता है।"

THE LIGHT STATE

5. "Gautam! Now, if the uppermost layer is softened by the surrounding water and washes off, the gourd rises a little from the bottom One by one when all the eight layers are washed off the gourd becomes clean and light and rises to the surface of the water body

"Gautam! Similarly when a being destroys or refrains from indulgence in the eighteen sinful activities he sheds the fused eight types of Karmas, rises above the surface of the earth and reaches the zenith of the living universe This is how a being reaches the light state "

उपसंहार

सूत्र ६. एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ६ हे जबू ! श्रमण भगवान महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का यही अर्थ कहा है। ऐसा मैं कहता हूँ।

CONCLUSION

6. Jambu! This is the text and the meaning of the sixth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I confirm.

॥ छट्ठं अज्झयण समत्त ॥

॥ षष्ठ अध्ययन समाप्त ॥

॥ **END OF THE SIXTH CHAPTER** ॥

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

लघु-गुरु का रहस्य

चित्र १७

गणधर इन्द्रभूति गौतम ने भगवान महावीर से प्रश्न किया-

भन्ते ! आत्मा गुरु (भारी) और लघु (हल्का) किस कारण होता है ?

उत्तर में भगवान उदाहरण देते हैं एक व्यक्ति बड़ा सूखा तुम्बा लेकर उस पर घास आदि लपेटता है फिर मिट्टी का लेप लगाकर धूप में सूखा देता है। दुबारा तिबारा यों आठ बार इसी प्रकार लेप आदि करके सुखाने के बाद वह उस तुम्बे को जल में डालता है तो वह भारी बना तुम्बा गहरे जल में डूब जाता है। जब धीरे धीरे मिट्टी के लेप उतरते हैं तो तुम्बा क्रमशः जल के ऊपर आता है। जब आठों लेप उतर जाते हैं तो निर्लेप तुम्बा अपने आप एकदम हल्का होकर जल पर तैरने लगता है।

इसी प्रकार आठ कर्मों से भारी होने पर जीव संसार समुद्र में डूबते-डूबते नीचे नरक में जाता है। क्रमशः कर्म मुक्त होकर हल्का होते-होते वह ऊर्ध्व गति में आता है और आठों लेप मुक्त होने पर ऊर्ध्वगति मोक्ष में चला जाता है। (अध्ययन ६)

THE SECRET OF HEAVINESS AND LIGHTNESS

ILLUSTRATION 17

Shraman Bhagavan Mahavir arrives in Rajagriha city. His chief disciple Ganadhar Indrabhuti Gautam asks Bhagavan Mahavir 'Bhante! How does a being quickly reach the heavy state (of soul) and the light state (of soul)?'

Bhagavan Mahavir replies, "Gautam! If a person takes a gourd, wraps fibers around it, coats it with mud or slime and puts it in sun to dry, repeats this process eight times and puts this gourd in a water body, the gourd, made heavy with eight layers of fibers and mud, sinks in water. As the layers of mud dissolve in water the gourd starts rising. When all the eight layers get removed the gourd rises to the surface of the water body.

Similarly a being fused with eight types of Karmas reaches the heavy state and sinks to the hell. And when a being destroys the fused eight types of Karmas, it rises to the zenith of the living universe or gets liberated.

(CHAPTER-6)

उपसंहार

ज्ञातासूत्र की इस छठी कथा में एक उदाहरण द्वारा एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर समझाया है। कोई प्राणी जब पापकर्म मे लिप्त होता है तो उसकी आत्मा कर्म-बन्धन करती है। आठ कर्म प्रकृतियों के इस मल से आत्मा बोझिल होकर नीचे गिरती है और नरकगति तक जा पहुँचती है। यह गुरुता है और हेय है। जब साधना तथा सत्कर्म के जल से यह कर्म-मल धोया जाता है तो आत्मा हल्की हो ऊपर उठती है। पूर्ण निर्मल होने पर वह लोकाग्र मे पहुँच सिद्धगति को प्राप्त होती है। यह लघुता है और श्रेय है।

उपनय गाथा

जह मिउलेवालित्त गरुय तुंबं अहोवयइ एव ।
आसव कय-कम्म गुरु जीवा वच्चंति अहरगइं ।१।
त चेव तव्विमुक्क, जलोवरिं ठाइ जाय लहुभावं ।
जह तह कम्म विमुक्का, लोयग्ग पइट्ठिया होंति ।२।

–जैसे मिट्टी के लेप से भारी होकर तुम्बा जल के तल मे चला जाता है, इसी प्रकार आस्रव द्वारा उपार्जित कर्मो से भारी होकर जीव अधोगति में जाता है।१।

–जैसे वही तुम्बा मिट्टी के लेप से विमुक्त होने पर, लघु होकर जल के ऊपर स्थित होता है, वैसे ही कर्मविमुक्त जीव लोक के अग्र अर्थात ऊपरी भाग में विराजमान हो जाते है।२।

CONCLUSION

This sixth story of Jnata Dharma Katha gives answer to an important question with the help of a suitable example When an individual indulges in sinful activity his soul binds karmas Encumbered by the dirt of the eight categories of karmas this soul starts falling down and may reach the hell This is known as heaviness and is detestable If this dirt of karmas is washed away with the help of water of pious activity and spiritual practice the soul becomes light and starts rising up When it becomes absolutely clean and pure it

reaches the edge of the universe attaining the Siddha status. This is known as lightness and is desirable.

THE MESSAGE

As a gourd, made heavy by layers of mud, sinks to the bottom of a water body, so a being, made heavy by in flow of karmas sinks to lowest dimension (the hell).

As the same gourd becoming light by getting free of the mud, rises to the surface of the water-body, so a being getting free of the karmas rises and reaches the edge of the universe (Siddha status)

परिशिष्ट

इन्द्रभूति–भगवान महावीर के प्रथम तथा पट्ट शिष्य जो गणधर गौतम के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्द्रभूति गौतम गोत्रीय थे और उस काल के मूर्धन्य वैदिक विद्वान्। भगवान महावीर की प्रथम देशना के समय उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित करने का उद्देश्य ले ये समवसरण में आये थे। किन्तु स्वय अपने मन के सन्देह मिटा महावीर के प्रथम शिष्य के रूप में प्रव्रजित हुए। महावीर के निर्वाण के तत्काल बाद इन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ और एक वर्ष बाद इनका निर्वाण हुआ।

APPENDIX

Indrabhuti—The first and senior most disciple of Bhagavan Mahavir who became famous as Ganadhar Gautam He was the foremost Vedic scholar of his time and belonged to the Gautam clan During the first discourse of Bhagavan Mahavir he came to win over Mahavir in debate However, Mahavir removed the ambiguities that plagued Gautam's mind and then initiated him as his first disciple He became omniscient immediately after Mahavir's nirvana and got liberated one year later

■■

सातवाँ अध्ययन : रोहिणी ज्ञात : आमुख

शीर्षक–रोहिणीणाए–रोहिणी ज्ञात अर्थात संवर्धन करने वाली या बढ़ाने वाली की कथा। आत्मा का लक्ष्य है विकास पथ पर निरन्तर बढ़ते रहना और यह प्रयत्न से होता है। प्रयत्न करने की प्रवृत्ति के अभाव में ह्रास होता है। इस कथा में धन सार्थवाह की चार पुत्र-वधुओं के उदाहरण से विवेकपूर्ण अध्यवसाय के महत्त्व को दर्शाया गया है।

कथासार–राजगृह नगर में धन सार्थवाह रहता था। उसकी चार पुत्र-वधुओं का नाम क्रमशः उज्झिका, भोगवती, रक्षिका तथा रोहिणी था। एक बार धन सेठ को चिन्ता हुई कि उसके बाद उसके घर-परिवार की सुचारु व्यवस्था का उत्तरदायित्व कौन ले सकेगा? उसने अपनी पुत्र-वधुओं की योग्यता परीक्षा लेने की योजना बनाई। अपने सगे-सम्बन्धियों को आमन्त्रण दे उनके सामने उसने प्रत्येक बहू को पाँच-पाँच दाने चावल के दिये और कहा कि इन्हें सँभालकर मंजूषा में रखना। जब भी वह उन दानों को माँगे तो वापस देने होगे।

उज्झिका दाने लेकर भीतर गई और यह सोचकर कि भण्डार में ढेरो चावल पड़ा रहता है जब ससुर जी माँगेंगे, पाँच दाने उठाकर दे दूँगी, उसने वे पाँचों दाने फेंक दिये। ठीक यही विचार भोगवती के मन मे उठे। पर उसने वे दाने फेकने की जगह मुँह में रखे और निगल गई। रक्षिका ने सोचा कि ससुर जी की बात मे अवश्य कोई रहस्य है जो समझ में नहीं आ रहा है। अत ये दाने सँभालकर रखने चाहिए और उसने वे दाने सहेज-सँभालकर रख दिये।

चौथी बहू रोहिणी ने सोचा कि अवश्य ससुर जी ने किसी विशेष उद्देश्य से ये पाँच दाने दिये हैं–फिर भी पडे-पडे क्या होगा। इनका संवर्धन करना चाहिए और उसने अपने पीहर वालों को बुलाकर वे दाने दिये और कहा कि उन्हें खेत मे अलग से बोने का प्रबन्ध करें। जब तक वह उन दानों को वापस न माँगे वे उन दानो से उपजी फसल को पुन -पुन बोते रहें और धान बढ़ाते रहें।

पाँच वर्ष बीत जाने पर धन सार्थवाह ने पुन· अपने सम्बन्धियों को बुलाया और उनके सामने चारों बहुओं से दाने वापस माँगे। पहली बहू के यह बताने पर कि उसने दाने फेंक दिये हैं सेठ ने उसे घर की सफाई आदि के काम पर नियुक्त कर दिया। दूसरी, जिसने दाने खा लिये थे, को रसोई आदि की व्यवस्था पर लगा दिया और तीसरी, जिसने दाने सँभालकर रखे थे, उसे घर-भण्डार की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सौप दिया।

चौथी बहू से जब दाने माँगे तो उसने कहा कि दाने वापस करने के लिए उसे गाड़ियों की आवश्यकता पडेगी तो सेठ आश्चर्यचकित हो गया। उसके पूछने पर रोहिणी ने सारी बात बताई। सेठ ने प्रसन्न हो उसे घर का मुखिया बना दिया।

SEVENTH CHAPTER : ROHINI JNATA : INTRODUCTION

Title—Rohini Naye or Rohini Jnata or the story of Rohini or the story of the enhancer The aim of a soul is to continue moving on the path of progress These is done with the help of endeavour In the absence of the will to work the direction changes to regression In this story the importance of rational endeavour has been presented with the help of the story of Dhanya Merchant and his four daughters-in-law

Gist of the Story—In Rajagriha lived a wealthy merchant named Dhanya The names of his daughters-in-law were—Ujjhika, Bhogvati, Rakshika, and Rohini respectively

Dhanya Merchant was worried that after him who will take responsibility of the household and properly look after and support his family He made a plan to test the wisdom of his daughters-in-law He invited his friends and relatives and in their presence gave five grains of rice to each daughter in-law for safe keeping and returning back when desired

Ujjhika took the grains and went inside Thinking that as there are heaps of rice lying in the family godown, whenever father asks I will collect five grains and give him back, she threw away those five grains Bhogvati also had the same thoughts However, instead of throwing the grains she swallowed them Rakshika thought that there must be some secret purpose for such instructions Accordingly she wrapped the grains and put the packet at a safe place

The fourth daughter-in-law, Rohini, thought, "There must be some secret behind this act of giving rice grains However, what is the use of just keeping them aside in safety I should not only protect them but also multiply them " Accordingly she called her maternal people and asked them to sow the grains in a separate plot As long as she did not ask they were to sow the yield again and again and multiply the produce

When five years passed Dhanya Merchant invited his friends and relatives, called the daughters-in-law and asked them to return the rice grains When the first one informed that she had thrown away the grains Dhanya appointed her as in-charge of deprecatory duties like sweeping and cleaning The second one who had swallowed the grains was appointed the in-charge of household duties connected with the kitchen The third one who had kept the grains safe and secured was appointed the in-charge of all the valuables of the household

When Dhanya asked back the five grains from the fourth one, she wanted numerous carts to return the grains When Dhanya expressed his surprise Rohini told the whole story of how she had multiplied the grains Dhanya was pleased and he appointed Rohini as the head of the household

■■

सत्तमं अज्झयणं : रोहिणीणाए

सातवाँ अध्ययन : रोहिणी ज्ञात

SEVENTH CHAPTER : ROHINI JNATA - THE STORY OF ROHINI

सूत्र १. "जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?"

सूत्र १. जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया-"भते ! श्रमण भगवान महावीर ने सातवें ज्ञाता अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the seventh chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २. "एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेणं समए णं रायगिहे नामं नयरे होत्था। तत्थ ण रायगिहे णयरे सेणिए नाम राया होत्था। तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था।

तत्थ ण रायगिहे नयरे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था, अहीणपंचिंदियसरीरा जाव सुरूवा।"

तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, त जहा-धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा-उज्झिया, भोगवइया, रक्खिया, रोहिणिया।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने बताया-"हे जम्बू ! काल के उस भाग में राजगृह नाम का एक नगर था जिसके बाहर सुभूमिभाग नामका उद्यान था।

राजगृह मे धन्य नाम का एक समृद्धिशाली सार्थवाह रहता था। उसकी परिपूर्ण शरीर वाली सुन्दरी भार्या का नाम भद्रा था।"

धन्य सार्थवाह और भद्रा के चार पुत्र थे-धनपाल, धनदेव, धनगोप तथा धनरक्षित।

उनकी पत्नियो के नाम थे-उज्झिका, भोगवती, रक्षिका और रोहिणी।

2. Sudharma Swamı narrated—"Jambu! During that period of tıme there was a town named Rajagrıha outsıde which there was a garden named Subhumıbhag. Kıng Shrenık was the ruler of that town.

In Rajagrıha lıved a wealthy merchant named Dhanya whose beautıful wıfe was Bhadra

Dhanya Merchant and Bhadra had four sons—Dhanpal, Dhandev, Dhangope, and Dhanrakshıt The names of theır wıves were—Ujjhıka, Bhogvatı, Rakshıka, and Rohını respectıvely

सूत्र ३. तए णं तस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"एवं खलु अहं रायगिहे णयरे बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं सयस्स य कुडुंबस्स बहुसु कज्जेसु य, करणिज्जेसु य, कुडुबेसु य, मंतणेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे, मेढी, पमाणे, आहारे, आलबणे, चक्खू, मेढीभूए, पमाणभूए, आहारभूए, आलंबणभूए, चक्खूभूए सव्वकज्जवड्ढावए। तं ण णज्जइ जं मए गयंसि वा, चुयंसि वा, मयंसि वा, भग्गंसि वा, लुग्गंसि वा, सडियंसि वा, पडियंसि वा, विदेसत्थंसि वा, विप्पवसियसि वा, इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलते विपुलं असणं पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ-णियग-सयण-सबंधि-परियण चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमतेत्ता तं मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूवपूप्फवत्थगंध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेइ वा, संगोवेइ वा, संवड्ढेइ वा ?

सूत्र ३. एक बार मध्य-रात्रि के समय धन्य सार्थवाह के मन में विचार उठा-"मै राजगृह नगर के अनेक ऐश्वर्यशाली निवासियो और अपने स्वजनो के अनेक कार्यों-व्यवहारो में मार्गदर्शक-सलाहकार (विस्तार पूर्व सम) स्वरूप हूँ। परन्तु मेरे कही चले जाने पर स्थान च्युत हो जाने पर, मर जाने पर, असमर्थ हो जाने पर, रोगी हो जाने पर, क्षीण हो जाने पर, चोटग्रस्त हो जाने पर, विदेश-परदेश जाकर रहने पर मेरे कुटुम्ब का

पृथ्वी के समान आधार कौन बनेगा ? झाडू की सींकों की तरह उसे बाँधकर रखने वाली रस्सी कौन बनेगा ?

"अत: मेरे लिये यह उचित होगा कि कल सूर्योदय होने पर भोज सामग्री तैयार कराऊँ और अपने स्वजनों आदि तथा चारों वधुओं के मायके वालों को निमंत्रण देकर बुलाऊँ। उनको भोजन कराऊँ तथा उनका यथोचित सम्मान-सत्कार करूँ। फिर उन सबके सामने पुत्र-वधुओं की परीक्षा लेने के लिए उन्हें पाँच-पाँच चावल के दाने दूँ। इससे मैं यह जान पाऊँगा कि कौनसी पुत्रवधू किस प्रकार उन दानों का संरक्षण-संवर्धन करती है।"

3. Once at midnight Dhanya Merchant thought, "I am like a confidante and adviser to many a wealthy citizens of Rajagriha as well as my relatives, in various matters (details as before). But who will be the support of my family, as the earth is of beings, when I go away, loose my position, breathe my last, become disabled, sick, weak, or injured, or live abroad? Who will act like the string of a broom that keeps the straws tied together?

As such, it would be proper if in the morning I make arrangements for a feast and invite my friends as well as the parents and relatives of the four daughters-in-law Offer them food and due honour. After the feast, I give five grains of rice each to the four daughters-in-law in order to test their wisdom This way I will know which one takes what care of those grains."

पुत्र-वधू परीक्षा

सूत्र ४. एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह सुण्हाणं कुलवरवग्ग आमंतेइ, आमंतित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ।

तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए मित्त-णाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणेणं चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइम-साइम आसादेमाणे जाव सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठं सुण्हं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी– "तुम णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए

जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्झाएज्जासि'' त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र ४ दूसरे दिन अपनी योजनानुसार उसने अपने स्वजनो तथा चारो पुत्र-वधुओ के पीहर वालो को आमन्त्रित किया और भोज-सामग्री तैयार करवाई।

तब धन्य सार्थवाह स्नानादि कर भोजन मंडप मे अच्छे आसन पर बैठा और उसने सब अतिथियो के साथ सुखपूर्वक भोजन किया। अतिथियो का पुष्प-गधादि से यथोचित सम्मान करने के बाद उनके सामने ही हाथ मे चावल के पॉच दाने लिये और बड़ी पुत्र-वधू उज्झिका को बुलाकर कहा–"हे पुत्री ! तुम मेरे हाथ से ये पाँच चावल के दाने ले लो और इनको पूरी सार-सँभाल से अपने पास रखो। भविष्य मे जब भी मै ये पाँच दाने माँगूँ तब मुझे यही पॉच दाने वापस लौटाना।'' यह कहकर उसने वे दाने उज्झिका के हाथ में दिये और उसे विदा कर दिया।

TESTING THE DAUGHTERS-IN-LAW

4. Next day as per his plan he made arrangements for the feast and invited his friends as well as the parents and relatives of the four daughters-in-law

Dhanya Merchant got ready after taking his bath, came and took a seat at an appropriate place in the pavilion prepared for the feast He enjoyed the food with his guests and then, honoured them with flowers, perfumes, etc He then took five grains of rice in his hand, called the eldest daughter-in-law and said, "Daughter! Take these five grains of rice and keep them with you taking all possible care In future when I ask for these, you should return me the very same five grains " He handed over those five grains and told her to go

सूत्र ५. तए ण सा उज्झिया धण्णस्स तह त्ति एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था–एव खलु तायाण कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठंति, त जया ण ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सइ, तया ण अहं पल्लंतराओ अन्ने पच सालिअक्खए गहाय दाहामि'' त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता ते पच सालिअक्खए एगते एडेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था।

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED
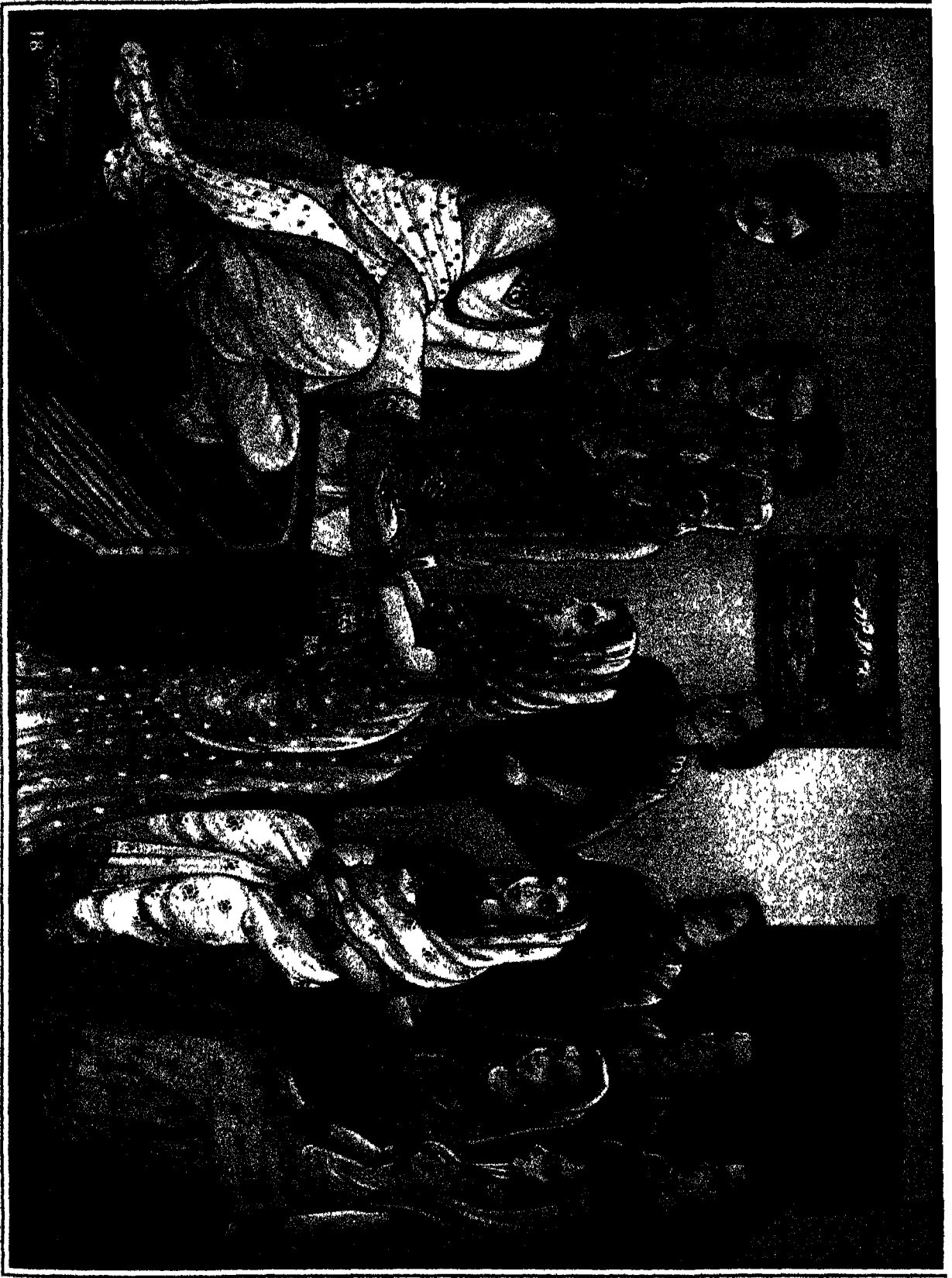
योग्यता की परीक्षा

चित्र १८

राजगृह निवासी धन नामक सार्थवाह ने पुत्रवधुओं को घर की जिम्मेदारी सौंपने के लिए उनकी योग्यता की परीक्षा लेने का एक आयोजन किया। धनपाल आदि चारों पुत्रों व स्वजन मित्रों के समक्ष चारों पुत्रवधुओं को पाँच पाँच शालिकण (धान के दाने) सौंपते हुए कहा — जब मैं मांगूँ तब मुझे ये कण वापस दे देना। चारों पुत्रवधुओं के क्रमशः नाम हैं १. उज्झिका, २. भोगवती, ३. रक्षिता और ४. रोहिणी। सर्व प्रथम बड़ी बहू दाने ले रही है।

(अध्ययन ७)

TEST OF ABILITIES

ILLUSTRATION 18

In Rajagriha Dhanya Merchant made a plan to test the wisdom of his daughters-in-law in order to entrust them with various duties of the household. In presence of his four sons including Dhanpal and friends and relatives he gave five grains of rice to each daughter-in-law for safe keeping and returning back when desired. The names of his daughters-in-law were—Ujjhika, Bhogvati, Rakshika, and Rohini respectively. First of all Ujjhika is taking the grains.

(CHAPTER-7)

सूत्र ५ उज्झिका ने धन्य सार्थवाह के आदेश को 'जो आज्ञा' कहकर स्वीकार किया, उसके हाथ से पाँच दाने चावल लिये और वहाँ से चली गयी। अकेली होने पर उसने मन ही मन सोचा–"पिताजी के भण्डार में चावलों के अनेक पल्य हैं (साढ़े तीन मन)। जब भी वे मुझसे ये पाँच दाने माँगेंगे मैं किसी भी ढेर में से पाँच दाने लेकर उन्हें दे दूँगी।" यह सोचकर उसने वे पाँच दाने एक ओर फेंक दिये और अपने काम में लग गई।

5. Ujjhika accepted the instructions saying, "As you say, father." Taking the grains from Dhanya Merchant's hand she left When she was alone she thought, "There are many Palyas (one and a half quintal approx) of rice in papa's godown Whenever he asks these grains back I will collect five grains from any of those heaps of rice and give him back " She threw away those five grains and resumed her routine work.

सूत्र ६. एवं भोगवइयाए वि, णवरं सा छोल्लेइ, छोल्लित्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसजुत्ता जाया। एवं रक्खिया वि, णवरं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाइ. चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी–"तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि" त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच-सालिअक्खए दलयइ, त भवियव्वमेत्थ कारणेण ति कट्टु एवं संपेहेइ, सपेहित्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

सूत्र ६ इसी प्रकार धन्य ने दूसरी पुत्र-वधू भोगवती को बुलाकर पाँच दाने चावल के दिये। उसके मन मे भी वैसे ही विचार उठे पर वह दानों को फेंकने के स्थान पर उन्हें निगल गई और अपने काम मे लग गई।

तीसरी पुत्र-वधू रक्षिका के मन मे विचार उठा–"मेरे स्वसुर ने स्वजनों और सम्बन्धियो के सामने बुलाकर ये दाने दिये हैं और इनकी रक्षा करने को कहा है। अवश्य ही इसमे कोई महत् कारण होगा।" यह सोचकर उसने उन पाँच दानों को साफ कपड़े में बाँधा और अपने गहनो के डिब्बे मे रख उस डिब्बे को बिस्तर के सिराहने रख दिया। सुबह-दोपहर-शाम वह उनकी सार-सँभाल करने लगी।

6. Similarly Dhanya Merchant called the second daughter-in-law, Bhogvati and gave her five grains of rice. She also had almost the same thoughts as the first one However, instead of throwing the grains she swallowed them and resumed her work

The third daughter-in-law, Rakshika, thought, "My father-in-law has called me and given these grains in front of friends and relatives and asked me to protect them There must be some specific and important reason for this" Accordingly she tied the grains in a clean piece of cloth, put the packet carefully in her jewellery box and placed it near the pillow on her bed. She made it a habit to watch the packet every morning, afternoon, and evening

दूरदर्शी रोहिणी

सूत्र ७. तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित्त. जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ। सद्दावेत्ता जाव "तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डाग केयारं सुपरिकम्मिय करेह। करित्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह। वावेत्ता दोच्चं पि तच्चंपि उक्खयनिक्खए करेह, करेत्ता वाडिपरिक्खेवं करेह, करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं सवड्ढेह।"

सूत्र ७ धन्य सार्थवाह ने अन्त मे चौथी पुत्र-वधू रोहिणी को बुलाया और उसी प्रकार पाँच दाने चावल दिये। रोहिणी ने विचार किया–"इस प्रकार पाँच दाने देने के पीछे कोई रहस्य होना चाहिए। अत मुझे चाहिए कि मैं इनका संरक्षण और सगोपन ही नही, सवर्धन भी करूँ।" यह सोचकर उसने अपने पीहर वालों को बुलाया और कहा–

"देवानुप्रियो ! तुम ये पाँच चावल के दाने लो। वर्षा ऋतु आरभ होने पर जब प्रचुर वर्षा हो तब एक छोटी-सी साफ क्यारी मे ये पाँच दाने बो देना। फिर पौध को तीन-चार बार स्थान बदलकर रोप देना। क्यारी के चारो तरफ बाड लगा देना। इस प्रकार रक्षा करते हुए क्रमश इन्हे बढ़ाना।"

FAR-SIGHTED ROHINI

7. In the end Dhanya Merchant called his fourth daughter-in-law, Rohini, and gave her five grains of rice Rohini thought, "There must be some secret behind this act of giving rice grains As such, I should not only hide and protect them but also multiply them. Accordingly she called her maternal people and said—

"Beloved of gods! Take these five grains of rice. When the monsoon season starts and there is plenty of rain, sow these in a small and clean furrow. At right time replant the sprouts. Raise a protective fence around the plot. This way let them grow, providing all care and protection"

सूत्र ८. तए णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं संरक्खंति, संगोवंति विहरंति।

तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते पच सालिअक्खए ववंति, ववित्ता दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयनिक्खए करेंति, करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति, करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति।

सूत्र ८ रोहिणी के पीहर वाले उसके अनुरोध के अनुसार उन पाँच दानों को ले गये और सँभालकर रखा। वर्षा ऋतु के आरम्भ में उन्होंने वे दाने एक क्यारी में बो दिये। समयानुसार पौध को स्थानांतरित किया और बाड़ लगाकर उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया।

8. At her request the maternal relatives of Rohini took along the grains and kept them safe When the monsoon season started they sowed these in a small and clean furrow. At right time they replanted the sprouts and raised a protective fence around the plot

सूत्र ९. तए णं ते सालिअक्खए अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया, किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया पासादीया दंसणीया अभिरूवा पडिरूवा।

तए णं ते साली पत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था।

तए ण ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति। लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं चोक्खाण सूयाण अखंडाण अफोडियाणं छड्डछड्डापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए।

सूत्र ९. समय पर वे चावल के पौधे बढ़ गये और गहरे रंग की कान्ति बिखेरने लगे। पौधों का वह झुण्ड दर्शनीय और प्रसन्नतादायक हो गया। समय के साथ वे पौधे पल्लवित हुए, भरे-भरे दिखने लगे, उनमें मंजरियाँ निकलीं और उनकी सुगन्ध चारों ओर फैलने लगी। मंजरियाँ गर्भित हो गईं और तब उनमें अन्न के दाने पनपे और पककर तैयार हो

गये। इसके बाद जब पत्ते सूखे तो वे सलाई के आकार के हो नीचे लटकने लगे और कुछ पत्ते झडने भी लगे। फलियाँ पककर पीली पड गईं।

जब मजदूरो ने देखा कि फसल पककर तैयार हो गई है तो उन्होने तेज और नई धार किये हँसियो से फलियो को काट लिया। काटी हुई सूखी फलियो को हाथ से मसलकर धान को फली से अलग किया। सूप से फटक-फटककर धान के साबूत दाने अलग किये गये। इनका भार एक प्रस्थक था (मगध देश का तत्कालीन माप)।

9. At the proper time the rice plants grew high and displayed a rich green hue That little bunch of plants was beautiful and satisfying With time these plants furthered and looked full Slowly appeared the buds and flowers and a fragrance spread all around The flowers got pollinated and the seed pods appeared As the seeds matured the leaves started turning yellow Some of the leaves looked like straw, some wilted, and others dropped Finally the pods became ripe and yellow

When the workers saw that the crop is ready they harvested it with sharp and freshly honed scythes They threshed these stalks with hands and then winnowed the grains The weight of these grains was one Prasthak (a measure of weight in ancient Magadh, a state in eastern India)

अक्षत संवर्धन

सूत्र १०. तए णं ते कोडुबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता उवलिपति, उवलिपित्ता लछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति।

तए ण ते कोडुबिया दोच्चम्मि वासारत्तसि पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, करित्ता ते साली ववति, दोच्च पि तच्च पि उक्खयनिक्खए जाव लुणेंति जाव चलणतलमलिए करेति, करित्ता पुणति, तत्थ ण सालीण बहवे कुडए जाए। जाव एगदेससि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा विहरंति।

सूत्र १० इन नये चावलो को एक घडे मे भर दिया गया और उसके मुँह को बदकर मिट्टी से लीप दिया गया। इस घडे पर मोहर लगाकर भडार मे एक ओर सुरक्षित रख दिया गया।

उन खेतिहारों ने अगली वर्षा ऋतु में तेज वर्षा होने पर इस घड़े के चावलों को निकाला और पुनः बुवाई कर दी। इस बार फसल पकने पर अनेक कुडव (एक माप) चावल हो गये जिन्हें सरक्षणादि का प्रबन्ध कर भंडार के एक भाग में रख दिया गया।

THE RICE MULTIPLIED

10. These fresh grains were filled in a pitcher and its mouth was closed and sealed with mud This pitcher was marked and stored in the godown.

When the next sowing season came and it rained, the farm-hands took out those same grains from the pitcher and sowed them again. This time, after the harvest, the yield was many Kudavs (a weight measure) This rice was also similarly stored in safety

सूत्र ११. तए ण ते कोडुबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए करेंति, जाव लुणेति, लुणित्ता सवहंति, संवहित्ता खलयं करेंति, करित्ता मलेति, जाव बहवे कुभा जाया।

तए ण ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति, जाव विहरंति। चउत्थे वासारत्ते वहवे कुभसया जाया।

सूत्र ११ तीसरी वर्षा ऋतु मे इसी प्रकार फिर फसल बोने पर चावल की मात्रा कुछ कुम्भ (एक माप) हो गई।

चौथी वर्षा ऋतु मे वही बढ़कर सैकडो कुम्भ प्रमाण चावल हो गये।

11. In the third season the seeds were again sowed and this time the yield was a few Kumbhs (a large measure of weight)

After the fourth sowing the total quantity of rice became hundreds of Kumbhs

परीक्षा परिणाम

सूत्र १२. तए णं तस्स धण्णस्स पंचमयसि सवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु मम इओ अईए पचमे सवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना, त सेयं खलु मम कल्ल जाव जलंते पच सालिअक्खए परिजाइत्तए। जाव जाणामि ताव काए किह सारक्खिया वा सगोविया वा संवड्ढिया वा ? जाव त्ति कट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाइ. चउण्ह य

सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ. चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ। सद्दावित्ता एवं वयासी–

सूत्र १२ जब पाँचवाँ वर्ष चल रहा था तब धन्य सार्थवाह को एक दिन अर्द्ध-रात्रि के समय मन मे विचार उठा–"पाँच वर्ष पहले चारों पुत्र-वधुओं को मैंने पाँच-पाँच दाने चावल के उनकी परीक्षा लेने हेतु दिये थे। अच्छा होगा कि कल सुबह उनसे वे पाँच-पाँच दाने वापस माँगूँ और देखूँ कि किसने, किस प्रकार उनका संरक्षण, सगोपन और संवर्धन किया है ?" दूसरे दिन उसने पूर्ववत् भोज का प्रबन्ध किया और स्वजनो तथा पुत्र-वधुओं के पीहर वालो को निमन्त्रण दिया। भोज के बाद सब अतिथियो के सामने उसने सबसे पहले ज्येष्ठ पुत्र-वधू को बुलाकर कहा–

RESULT OF THE TEST

12. When the fifth year after the giving of the rice grains was running, one day at midnight Dhanya Merchant thought, "Five years earlier I had given five grains of rice each to my four daughters-in-law to test their virtues. Tomorrow morning I should ask them to return those grains and see how have they stored, preserved, or multiplied them?" Next day he made arrangements for a feast, as he had done earlier, and invited his friends as well as the parents and relatives of the four daughters-in-law After the feast and in presence of all the guests he called the eldest daughter-in-law and said—

सूत्र १३. "एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अईए पंचमसि सवच्छरंसि इमस्स मित्तणाइ. चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पच सालिअक्खए दलयामि, जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि त्ति कट्टु त हत्थंसि दलयामि, ते नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता, अत्थि।"

"त ण पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि।"

सूत्र १३ "हे पुत्री ! आज से पाँच वर्ष पूर्व इन्हीं स्वजनो के सामने मैने तुम्हे पाँच चावल दिये थे और कहा था कि जब मै ये पाँच दाने माँगूँ तब तुम उन्हे मुझे वापस देना। मै ठीक कह रहा हूँ ?"

उज्झिका–"जी हाँ, आप ठीक कह रहे हैं।"

धन्य–"तो हे पुत्री ! मेरे वह चावल वापस दो।"

13. "Daughter! Five years back, in presence of these same guests, I had given you five grains of rice with instructions that when I demand you should return those to me. Am I correct?"

"Yes, Papa, you are absolutely correct."

"So, daughter, I want those grains back"

उज्झिका : बाह्य सेविका

सूत्र १४. तए णं सा उज्झिया एयमट्ठं धण्णस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-"एए णं ते पंच सालिअक्खए" त्ति कट्टु, धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयइ।

तए णं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-"किं णं पुत्ता ! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?"

सूत्र १४ उज्झिका ने धन्य सार्थवाह की बात सुनी और भण्डार-गृह में गई। वहाँ ढेर से पाँच दाने चावल के उठाये और धन्य सार्थवाह के पास आकर बोली-"ये लीजिये चावल के वे पाँच दाने।" और उसने वे दाने धन्य के हाथ में रख दिये।

धन्य सार्थवाह ने उज्झिका को शपथ दिलाकर पूछा-"पुत्री ! ये वही पाँच दाने हैं अथवा दूसरे ?"

UJJHIKA : THE OUTER SERVANT

14. Ujjhika at once went into the store room, picked up five grains of rice, returned to Dhanya Merchant and said, "Here are those five grains of rice." She handed over the grains to Dhanya Merchant.

Dhanya Merchant asked her on oath, "Daughter! these are the very same grains or some other?"

सूत्र १५. तए णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-"एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तणाइ. चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स जाव विहराहि। तए णं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि। पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि, एगंतमवक्कमामि। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि. सकम्मसंजुत्ता। तं णो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अन्ने।"

सूत्र १५. उज्झिका ने उत्तर दिया-"हे तात ! आपने पाँच वर्ष पहले इन्ही लोगो के सामने पाँच दाने देकर कहा था कि इनका संरक्षण, संगोपन व सवर्धन करना। मैने आपकी बात मानकर पाँच दाने लिये और एकान्त में जाकर विचार किया कि आपके भण्डार मे ढेर सारे चावल भरे हैं, जब चाहे तब उनमे से दे दूँगी और मैंने वे दाने फेक दिये। अत हे तात ! ये दूसरे दाने है, वे नहीं।"

15. Ujjhika replied, "Papa! Five years back, in presence of these same guests, you had given me five grains of rice with instructions to store, preserve, and multiply them I heard your instructions and took the grains and when I was alone I thought that your godown is full of grains, whenever you demand I shall take out five grains from the godown and give them back to you As such, I threw away the five grains you gave So, Papa, these are other grains not the original ones "

सूत्र १६. तए ण से धण्णे उज्झियाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झिइय तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबध-परियणस्स चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च सपुच्छियं च सम्मज्जिअं च पाउवदाइय च ण्हाणावदाइय च बाहिरपेसणकारि च ठवेइ।

सूत्र १६ उज्झिका की यह बात सुनकर धन्य सार्थवाह क्रुद्ध हो गये और तिलमिला उठे। उन्होने उज्झिका को उन सभी स्वजनो के सामने कुल-गृह की राख फेकने वाली, उपले थापने वाली, झाडू लगाने वाली, पैर धोने का पानी देने वाली, स्नान के लिये पानी देने वाली तथा अन्य ऊपर के दासी योग्य कार्य करने वाली के रूप मे नियुक्त किया।

16. Hearing all this Dhanya Merchant lost his temper In presence of all those guests he appointed Ujjhika as house-hold in-charge of deprecatory duties like throwing ash, preparing cow-dung cakes, sweeping and cleaning the house, arranging for water to wash and bathe and other such manual work

सूत्र १७ एवामेव समणाउसो ! जो अह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए पच य से महव्वयाइ उज्झियाइ भवति, से ण इह भवे चेव बहूणं समणाण, बहूण समणीण, बहूणं सावयाणं, बहूण सावियाण हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ। जहा सा उज्झिया।

सूत्र १७ इसी प्रकार हे आयुष्मानो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेकर पॉच महाव्रतरूपी अक्षत के दानो को फेक देता है वह उज्झिका के समान इस भव मे चतुर्विध सघ की अवहेलना का पात्र बनता है और ससार चक्र मे घूमता रहता है।

17. Long-lived Shramans! The same way those of our ascetics who, after getting initiated, throw away the grains of five great vows become the objects of criticism, public contempt, hatred and disrespect in this life Besides this they also suffer misery in the next life and are caught in the cycle of rebirth indefinitely

भोगवती : गृह-सेविका

सूत्र १८. एव भोगवइया वि नवरं तस्स कुलघरस्स कंडंतियं कोट्टंतियं पीसंतियं च एव रुधंतियं च रंधंतिय च परिवेसंतिय च परिभायंतिय च अब्भितरियं पेसणकारिं महाणसिणि ठवेइ।

सूत्र १८ पहली पुत्र-वधू के समान दूसरी पुत्र-वधू को भी उसी प्रकार प्रश्न किया गया। उसने दाने फेके नही, खा लिये थे अत धन्य सेठ ने उसे दलने, कूटने, पीसने, फटकने, पकाने, परोसने, पर्व-प्रसगो पर भोज्य सामग्री वितरण करने, घर के भीतर के काम करने, रसोई का काम करने आदि पर नियुक्त कर दिया।

BHOGVATI. THE COOK

18. The second daughter-in-law was also asked the same question As she had swallowed the grains Dhanya Merchant appointed her as in-charge of household duties connected with preparing food including grinding, beating, cleaning, and other such processes for preparing grains, cooking and serving food, distributing food on festive occasions as well as other works of kitchen and living area

सूत्र १९. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच य से महव्वयाइ फोडियाइ भवंति, से णं इह भवे चेव बहूण समणाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाण, बहूण सावियाण जाव हीलणिज्जे, जहा व सा भोगवइया।

सूत्र १९ हे आयुष्मान् श्रमणो ! इस प्रकार हमारे जो साधु-साध्वी पाँच महाव्रतरूपी चावल के दानो का खडन करता है वह भोगवती के समान चतुर्विध सघ की अवहेलना का पात्र बनता है और ससार चक्र मे भटकता रहता है।

19. Long-lived Shramans! The same way those of our ascetics who, after getting initiated, break the grains of five great vows become the objects of criticism, public contempt, hatred and disrespect in this life Besides this they also suffer misery in the next life and are caught in the cycle of rebirth indefinitely

रक्षिकाः गृह-संरक्षिका

सूत्र २०. एवं रक्खिया वि। नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयइ।

सूत्र २० धन्य सार्थवाह ने रक्षिका से जब उसी प्रकार प्रश्न किया तो वह अपने कमरे मे गई और गहनों की पेटी खोल उसमें सँभालकर रखे पाँचो दाने निकाले। धन्य सार्थवाह के पास आकर उसने वे दाने उसके हाथ में रख दिये।

RAKSHIKA : THE PROTECTOR

20. When Dhanya Merchant asked the same question to Rakshika, she went into her room and took out the five grains kept safely in her jewellery box She returned to Dhanya Merchant and put the grains in his hand

सूत्र २१. तए ण से धण्णे सत्थवाहे रक्खिय एव वयासी-"किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए, उदाहु अण्णे ?" त्ति।

तए णं रक्खिया धण्णं सत्थवाह एवं वयासी-"ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया, णो अन्ने।"

"कहं ण पुत्ता ?"

"एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमम्मि सवच्छरे जाव भवियव्व एत्थ कारणेण ति कट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसझं पडिजागरमाणी यावि विहरामि। तओ एए णं कारणेणं ताओ ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए, णो अन्ने।"

तए णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंस-दूस-विपुलधण जाव सावतेज्जस्स य भंडागारिणि ठवेइ।

सूत्र २१. धन्य सार्थवाह ने पूछा-"पुत्री ! क्या ये वही पाँच दाने हैं ?"

रक्षिका-"जी हाँ, तात ! ये वही पाँचो दाने हैं, दूसरे नही।"

धन्य-"वह कैसे ?"

रक्षिका-"तात ! पाँच वर्ष पूर्व जब आपने ये पाँच दाने दिये थे तब मैंने विचार किया कि इसमें समसुच ही कोई विशेष कारण होना चाहिये। इसलिये मैंने इन्हें शुद्ध वस्त्र में

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED
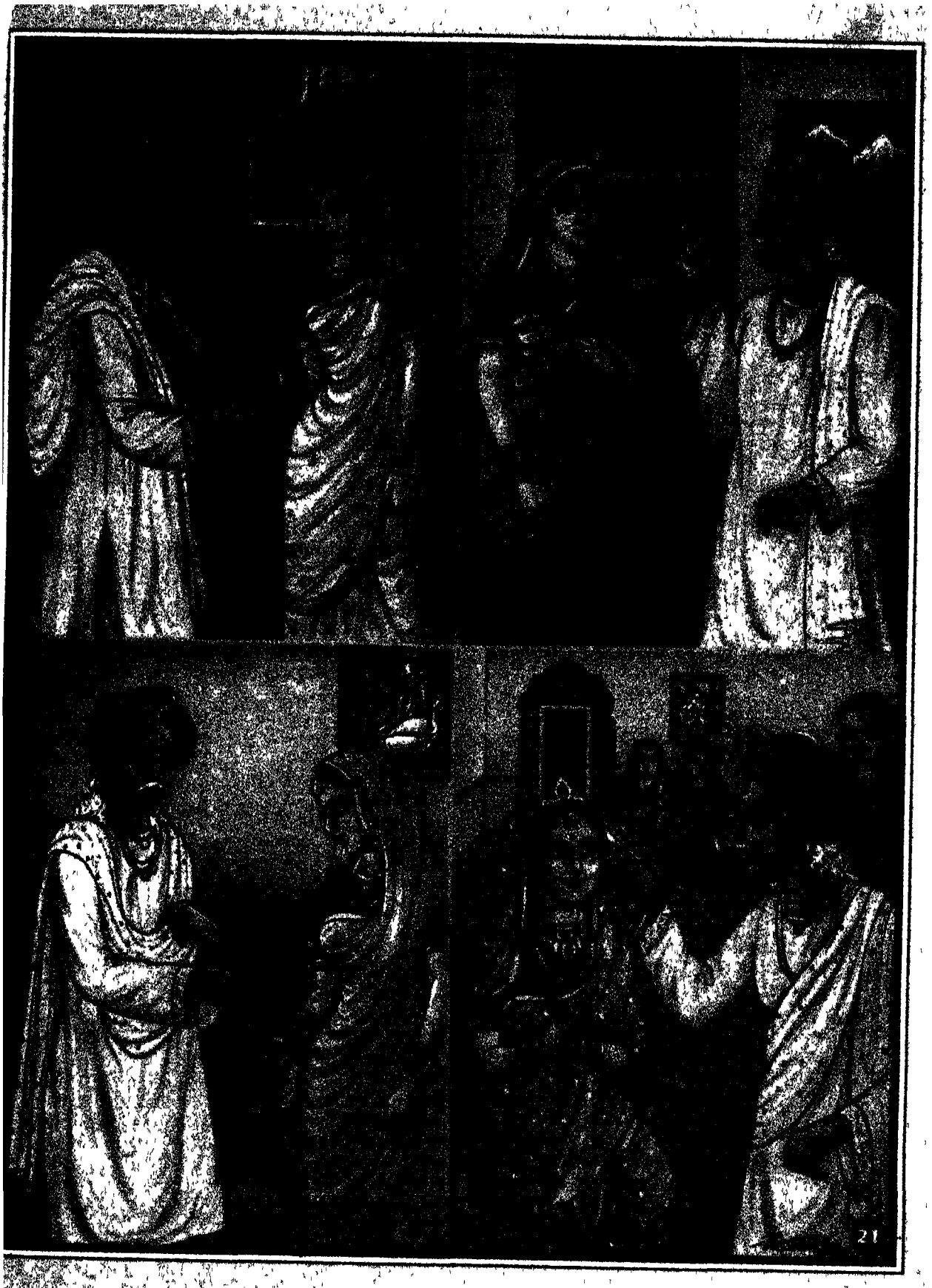
योग्यता के अनुसार उत्तरदायित्व

चित्र २१

धन सार्थवाह ने उज्झिया के हाथ में झाड़ू सौंपते हुए कहा-पुत्री! तुम फेंकने में चतुर हो। घर का कूड़ा-कचरा बाहर फेंक कर सफाई की जिम्मेदारी तुम पर है।

भोगवती को भोजन बनाने का कार्य सौंपते हुए सेठ ने कहा—खाने और चखने में तुम होशियार हो।

तीसरी रक्षिता को घर के भण्डारों की चाबी सौंपते हुए कहा- तुम प्रत्येक वस्तु को सँभालकर सुरक्षित रख सकती हो, अतः रखवाली का दायित्व तुम्हारा है।

सबसे छोटी रोहिणी को परिवार का नेतृत्व सौंपते हुए ससुर ने आशीर्वाद दिया परिवार की चतुर्मुखी वृद्धि करने की योग्यता तुम में है। इस कुटुम्ब की वृद्धि का सारा दायित्व तुम पर है।

(अध्ययन ७)

DUTY ACCORDING TO ABILITY

ILLUSTRATION 21

Dhanya merchant gave a broom to Ujjhika and said—Daughter! you are adept at throwing things as such, you are given the responsibility of cleaning the household by throwing the dirt and trash out. As she was fond of eating, Bhogvati was given the responsibility of the kitchen. Handing over all the keys to Rakshika Dhanya said—You have the capacity to keep things properly and protect them. As such, you are given the responsibility of safe keeping and protection of everything in the household. Giving the overall responsibility of the household to Rohini, the merchant said—You have the ability to lead the family on the way to progress and all-round development. As such you are appointed the head of the family.

(CHAPTER-7)

बाँधा और तब से तीनों संध्याओं के समय नित्य इनकी सार-सँभाल करती रही। अतः ये वही दाने हैं, अन्य नहीं।"

धन्य सार्थवाह यह सुनकर प्रसन्न हुआ। उसने रक्षिता को अपने घर के सोना व गहने, कॉसा आदि के बर्तन, मूल्यवान वस्त्र, विपुल धन-धान्य आदि सम्पत्ति की भाण्डागारिणी (भडारिनी) के रूप मे नियुक्त कर दिया।

21. Dhanya Merchant asked her, "Daughter! Are these the very same grains ?"

Rakshika, "Yes, father! these are the very same grains."

Dhanya Merchant, "How so?"

Rakshika, "Papa! Five years back when you gave me these grains I thought there must be some secret purpose behind this. As such, I tied the grains in a clean piece of cloth, put the packet carefully in my jewellery box and placed it near the pillow on my bed. Since then I have been watching the packet every morning, afternoon and evening Thus, these are the very same grains you gave me, not any other "

Dhanya Merchant was pleased to hear this He appointed Rakshika as the in-charge of all the valuables of the household including gold, ornaments, metal utensils, costly dresses, cash, grains and other property

सूत्र २२. एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयाइं रक्खियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूण समणाणं, बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे, जहा जाव से रक्खिया।

सूत्र २२ हे आयुष्मान् श्रमणो ! इसी प्रकार जो साधु-साध्वी पाँच महाव्रत रूप दानों की रक्षा करता है वह रक्षिका के समान चतुर्विध संघ द्वारा अर्चनीय, वन्दनीय, पूजनीय, सत्करणीय, सम्माननीय आदि होता है।

22. Long lived Shramans ! The same way those of our ascetics who, after getting initiated, protect the five grains of great-vows become objects of reverence, worship, and respect for the four fold religious organization

रोहिणी : मुखिया

सूत्र २३. रोहिणिया वि एवं चेव। नवरं–"तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि, जेण अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि।"

तए णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणिं एवं वयासी–"कहं णं तुमं मम पुत्ता ! ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइस्ससि ?"

तए णं सा रोहिणी धण्णं एवं वयासी–"एवं खलु ताओ ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव बहवे कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं। एव खलु ताओ। तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि।"

सूत्र २३ इसी तरह जब धन्य सार्थवाह ने रोहिणी से पाँच दाने माँगे तो उसने कहा–"तात ! आप मुझे बहुत से गाडे-गाडियाँ दीजिये जिससे मैं आपके वे पाँच दाने लौटा सकूँ।"

धन्य–"पुत्री ! तुम वे पाँच दाने चावल गाडे-गाडियों मे भरकर कैसे दोगी ?"

रोहिणी–"तात ! जो पाँच दाने आपने पाँच वर्ष पूर्व मुझे दिये थे वे अब सैकड़ो घडों मे आवें इतने हो गये हैं।" उसने उन दानो की बुवाई आदि का वर्णन विस्तार से बताया (पूर्व सम) और कहा–"अत हे तात ! मैं आपके वे पाँच दाने अब गाडे-गाडियों मे भरकर लौटा रही हूँ।"

ROHINI: THE CHIEF

23. Similarly when Dhanya Merchant asked for five grains from Rohini, she replied, "Papa! Please arrange for numerous carts and trucks so that I may return your five grains of rice "

Dhanya Merchant, "Daughter! Why do you need carts and trucks to fill those five grains?"

Rohini, "Papa! The five grains you had given me five years back have now become enough to fill hundreds of pitchers " She narrated the details of repeated sowing and harvesting of those five grains (details as before), and added, "This is how I am returning your five grains in carts and trucks "

सूत्र २४. तए णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुय सगडसागड दलयइ, तए ण रोहिणी सुबहुसगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिंदइ, उब्भिदित्ता सगडीसागड भरेइ, भरित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ।

तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ-"धन्ने णं देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा, जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिए णं निज्जाइए।

सूत्र २४. धन्य सार्थवाह ने बहुत से गाड़े-गाड़ियों का प्रबन्ध कर दिया। रोहिणी उन्हें लेकर अपने पीहर गई और वहाँ भण्डार में जा पल्यों को खोलकर सारा धान गाड़ियों में भर लिया और नगर के बीच से होती हुई वापस अपने घर आई। नगर के मार्गों पर लोग चर्चा करने लगे-"धन्य है धन्य सार्थवाह जिसकी पुत्र-वधू रोहिणी ने पाँच चावलों के दानों को गाडियो में भरकर लौटाया है।"

24. Dhanya Merchant arranged for the required carts and trucks. Rohini took them to her parents' house and loaded them with rice stored in godowns She returned with these cart loads of rice passing through the town The people on the streets commented. "Blessed is Rohini, the daughter-in-law of Dhanya Merchant, who is returning cart loads of rice for just five grains "

सूत्र २५. तए ण से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पडिच्छइ। पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघर-वग्गस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य अपुच्छणिज्जं जाव वट्टावियं पमाणभूयं ठावेइ।

सूत्र २५ धन्य सार्थवाह ने प्रसन्न और संतुष्ट हो वह धान स्वीकार किया और अतिथियो के सामने रोहिणी को घर-परिवार के सभी महत्-गौण कार्यों की प्रभारी, रहस्यों व समस्याओ मे सलाह देने वाली और सभी बातो का अंतिम निर्णय लेने वाली मुखिया के रूप मे नियुक्त किया।

25. Dhanya Merchant was pleased and contented to accept the large quantity of grains In presence of the guests he appointed Rohini as the head of the family and in-charge of all normal and important activities of the household, advisor in all confidential matters and problems, and final authority for taking all important decisions.

सूत्र २६. एवामेव समणाउसो ! जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया।

सूत्र २६. हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेकर पाँच महाव्रतरूपी कणों में वृद्धि करते हैं वे इस भव में रोहिणी के समान चतुर्विध संघ द्वारा पूजे जाते हैं और अंतत: संसार चक्र से मुक्त हो जाते हैं।

26. Long-lived Shramans! The same way those of our ascetics who, after getting initiated, multiply (enhance the perfection in) the five grains of great vows become objects of reverence for the four-fold religious organisation in this life and finally cross the ocean of rebirth.

उपसंहार

सूत्र २७. एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र २७ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सातवें ज्ञाताध्ययन का यही अर्थ कहा है। ऐसा मैं कहता हूँ।

CONCLUSION

27. Jambu! This is the text and the meaning of the seventh chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I confirm

॥ सत्तमं अज्झयण समत्तं ॥

॥ सातवाँ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE SEVENTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की इस सातवी कथा में विवेकपूर्ण विकास की ओर प्रेरित जीवन पर बल दिया है। पारिवारिक रूपक द्वारा यह इगित किया है जो साधु अक्षत के पाँच दानो के समान पंच-महाव्रतादि का यथाविधि पालन करने के साथ-साथ संयम विकास और विस्तार मे जुटा रहता है वह सभी के आदर का पात्र होता है और अन्तत संसार-चक्र से मुक्त हो जाता है। किन्तु जो उस संयम को त्याग देता है और व्रतों के विपरीत चलने लगता है वह निन्दा का भागी होता है और अनन्तकाल तक ससार-चक्र मे भ्रमण करता रहता है। बीच की दोनों स्थितियाँ उसी क्रम मे विकास-ह्रास की कडियाँ है।

इस पारिवारिक बोध कथा से यह तथ्य और भी स्पष्ट होकर उभरता है कि जो नियम अध्यात्म-पथ के लिए श्रेयस्कर हैं वही नियम प्रयोगात्मक दृष्टि-भेद से संसार-पथ के लिए भी श्रेयस्कर होते हैं। स्वस्थ विवेक बुद्धि समान रूप से प्रभावी होती है चाहे व्यक्ति सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक।

उपनय गाथा

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह णाइजणो तहा समणसंघो।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं॥१॥

जह सा उज्झियणामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा।
पेसण-गारित्तेणं, असंखदुक्खक्खणी जाया॥२॥

तह भव्वो जो कोई, संघसमक्खं गुरुविदिण्णाइं।
पडिवज्जिउं समुज्झइ, महव्वयाइं महामोहा॥३॥

सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कारभायणं होइ।
परलोए उ दुहत्तो, नाणाजोणीसु संचरइ॥४॥

जह वा सा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव॥५॥

तह जो महव्वयाइ उवभंजुइ जीवियत्ति पालिंतो।
आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए॥६॥

सो इत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिंगित्ति।
विउसाण नाइपुज्जो परलोयम्मि दुही चेव॥७॥

जइ व रक्खिय बहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा।
परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइ च संपत्ता॥८॥

तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जिज्जा महव्वए पंच।
पालेइ निरइयारे, पमायलेसंपि वज्जेंतो॥९॥

सो अप्पहिएक्करई, इहलोयंमि वि विऊहिं पणयपओ।
एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खं पि पावेइ॥१०॥

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा।
वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्स सामित्तं॥११॥

तह सो भव्वो पाविय वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं।
अन्नेसिं पि भव्वाणं देइ अणेगेसिं हियहेउं॥१२॥

सो इह संघपहाणो, जुगप्पहाणेत्ति लहइ संसद्दं।
अप्प-परेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहुव्व।।१३।।

तित्थस्स वड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं।
विउस-नर-सेविय-कमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ।।१४।।

श्रेष्ठी (धन्य सार्थवाह) के स्थान पर गुरु, ज्ञातिजनों के स्थान पर श्रमणसंघ, बहुओ के स्थान पर भव्य प्राणी और शालिकणों के स्थान पर महाव्रत समझने चाहिए।१।

जैसे उज्झिता बहू यथार्थ नाम वाली थी और शालि के दानों को फेक देने के कारण घर के दासी का कार्य करने से दुःखों को प्राप्त हुई।२।

वैसे ही जो भव्य जीव, गुरु द्वारा प्रदत्त पच महाव्रतो को सघ के समक्ष स्वीकार करके मोह व प्रमाद के वशीभूत होकर त्याग देता है।३। वह इस भव में जनता के तिरस्कार का पात्र होता है और परलोक में भी दुःख से पीड़ित होकर अनेक योनियो मे भ्रमण करता है।४।

जैसे यथार्थ नाम वाली भोगवती बहू शालिकणो को खा गई, वह भी विशेष प्रकार के दासी-कर्म करने के कारण दुःख को ही प्राप्त हुई।५।

वैसे ही जो महाव्रतो को आजीविका का साधन मानकर पालन करता है एव उनका उसी प्रकार से उपयोग करता है, आहारादि मे आसक्त होता है और ये महाव्रत मुक्ति के साधन हो, इस भावना से रहित होता है।६। वह केवल साधुलिंगधारी यथेष्ट आहारादि प्राप्त करता है पर विद्वानो का पूजनीय नही होता। उसे परलोक मे भी दुःख होता है।७।

जिस प्रकार यथार्थ नामवाली बहू रक्षिता ने शालिकणो की रक्षा की और पारिवारिक जनो में मान्य हुई। उसने भोग-सुखो को भी प्राप्त किया।८। उसी प्रकार जो जीव महाव्रतो को स्वीकार करके लेश मात्र भी प्रमाद नही करता हुआ उनका निरतिचार पालन करता है।९। वह एक मात्र आत्महित मे आनन्द मानने वाला इस लोक मे विद्वानो द्वारा पूजित तथा एकान्त रूप से सुखी होता है। परभव में मोक्ष भी प्राप्त करता है।१०।

जैसे यथार्थ नाम वाली रोहिणी नामक पुत्रवधू शालि के रोप द्वारा उनकी वृद्धि करके समस्त धन की स्वामिनी बनी।११। उसी प्रकार जो भव्य प्राणी महाव्रतो को प्राप्त करके स्वय उनका सम्यक् प्रकार से पालन करता है और दूसरे भी भव्य प्राणियों को उनके हित के लिए प्रदान करता है।१२। वह इस भव में गौतमस्वामी के समान सघप्रधान एव युगप्रधान पदवी को प्राप्त करता है तथा अपना और दूसरों का कल्याण करने वाला होता है।१३।

वह तीर्थ का अभ्युदय करने वाला, कुतीर्थियों का निराकरण करने वाला और विद्वानो द्वारा पूजित होकर क्रमशः सिद्धि को भी प्राप्त करता है।१४।

CONCLUSION

This seventh story of Jnata Dharma Katha emphasizes the importance of rational and progressive way of life. The value of sincerely following the code of conduct on the spiritual path has been skillfully presented through a family drama. The ascetics who multiply (enhance the perfection in) the five grains of great vows become objects of reverence for all the ascetics in this life and finally cross the ocean of rebirth. On the other hand the ascetics who throw away (do not observe sincerely) the grains of five great vows become the objects of criticism and contempt and are caught in the cycle of rebirth indefinitely. The other two situations are stages in progressive development.

This story clearly reveals that the rules and codes applicable on the spiritual path are also applicable on the mundane path simply with minor variations A healthy moral attitude has the same importance irrespective of the person being mundane or spiritual

THE MESSAGE

The merchant is Guru, guests are the religious organization, the daughters-in-law are the ascetics on the spiritual path, and the five grains of rice are the five great vows (1)

Ujjhika, according to her name, threw away the grains and consequently was put to manual labour suffering misery. (2)

Similarly the ascetic who, after taking the five vows before the guru in presence of the organization, abandons the path under the influence of fondness and illusion. (3)

becomes object of public contempt during this life, gets trapped in the cycles of rebirth, and suffers misery (4)

Bhogvati, according to her name, swallowed the grains and consequently was put to a little respectful manual labour, but still suffering misery (5)

Similarly the ascetic who observes the five great vows considering them to be the means of earning his living and using them for the same purpose, is infected with the craving for food and other

conveniences, and is devoid of the feeling that the great vows are the means of attaining liberation. (6)

is an ascetic in appearance only. He begets only food and not the regard of the learned ones He also suffers misery in the life beyond. (7)

Rakshika, according to her name, protected the grains and was respected by the family members She also enjoyed the pleasures of life (8)

Similarly, the ascetic who, after taking the five vows, is not even slightly negligent in observing the vows without any transgression. (9)

is an ascetic who derives pleasure solely in upliftment of the soul He is revered by the learned ones and begets extreme joy In the life beyond he gets liberated (10)

Rohini, according to her name, multiplied the grains by sowing and became the head of the household (11)

Similarly, the ascetic who, after taking the five vows, observes the vows as well as inspires other deserving ones to accept these vows. (12)

earns during this life the status of head of the order and the head of the era like Gautam Swami He becomes the benefactor of the self as well as others (13)

He enlivens the religious organization and subjugates the transgressors He is revered by the learned ones and in the end attains the status of Siddha (14)

परिशिष्ट

कुडव–भार का प्राचीन नाम। दो असई की एक पसई, दो पसई या दो खोबा की एक सेतिका, चार सेतिका का एक कुडव और चार कुडव का एक प्रस्थ होता है। दशकुमारचरित्र के अनुसार एक प्रस्थ चार सेर का होता है। अत कुडव एक सेर के बराबर होना चाहिए।

APPENDIX

Kudav—An ancient weight measure popular in Magadh Two Asai equals one Pasai, two Pasai or two Khova equals one Setika, four Setika equals one Kudav, and four Kudav is one Prasth According to Dashkumar Charitra one Prasth is equivalent to four seers Thus one Kudav is equivalent to one seer or about one kilogram ■■

आठवाँ अध्ययन : मल्ली : आमुख

शीर्षक–मल्ली–उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम। यों तो सभी महापुरुषों के जीवन का घटना-क्रम प्रेरक और उद्बोधक घटनाओं से भरा होता है, किन्तु अर्हत् मल्ली की आत्मा की विकास गाथा उन सबमें भी अद्भुत है। भावना मे उत्पन्न अंशमात्र दोष भी कर्म-बन्धन का कारण होता है और उसके प्रभाव को भोगे बिना शुद्धतम स्तर की आत्मा का भी निस्तार नहीं। अर्हत् मल्ली का जीवन उस सूक्ष्म स्तर पर हुई अशुद्धि और उसके फल का ज्वलन्त उदाहरण है। इस कारण उनका नाम ही एक प्रतीक बनकर जैन वाङ्मय में स्थापित हो गया है।

कथासार–महाविदेह क्षेत्र की वीतशोका नगरी के राजा बल थे। उनके पुत्र का नाम महाबल था। एक बार एक स्थविर श्रमण नगरी के बाहर के उद्यान में आये। उनके प्रवचन से प्रभावित हो राजा बल ने महाबल को राज्य सौंप दीक्षा ग्रहण कर ली।

महाबल राजा के छह अन्य राजा बाल-मित्र थे। ये सभी सातों मित्र सभी काम एक-दूसरे की सहमति व सहयोग से करते थे। एक बार एक स्थविर श्रमण का उपदेश सुन महाबल के मन में वैराग्य का उदय हुआ। महाबल ने अपने छहो मित्रो से कहा कि वे दीक्षा लेना चाहते हैं। छहों मित्रों ने भी उनके साथ ही दीक्षा लेने का निर्णय लिया। महाबल आदि मित्रों ने अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्रो का राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण कर ली।

अपने श्रमण जीवन मे साधना करते हुए इन श्रमणों ने परस्पर विमर्श कर यह निश्चय किया कि उनमे से एक जो साधना या तपस्या करेगा शेष सब भी वही साधना करेंगे। साधना के इस काल में महाबल सबसे आगे निकल जाने के लिए गुप्त रूप से अधिक तपस्या करने लगे। अन्य मित्र एक उपवास करते तो वे किसी बहाने से दो उपवास करते। छल-माया की इस प्रवृत्ति के चलते उन्होंने स्त्री-नाम-गोत्र कर्म का बन्धन किया। कालान्तर में महाबल-मुनि ने बीस स्थानक की उत्कृष्ट आराधना की और अपनी विशुद्ध साधना के बल पर तीर्थंकर नाम-गोत्र कर्म का बन्धन किया। ये सभी मित्र अपने साधनामय जीवन को पूर्ण कर जयन्त देवलोक में देवरूप में जन्मे और वहाँ की आयुष्य पूर्ण कर भरत-क्षेत्र में भिन्न-भिन्न राजवंशों मे जन्मे।

महाबल के जीव ने मिथिला के राजा कुम्भ की पुत्री मल्लीकुमारी के रूप में जन्म लिया। अन्य सभी मित्र भी राजवशो मे जन्मे और युवा होने पर अपने-अपने राज्यों के अधिपति बने। उनके नाम थे–कौशल देश के राजा प्रतिबुद्ध, अग देश के राजा चन्द्रच्छाय, काशी के राजा शंख, कुणाल के राजा रुक्मि, कुरु के राजा अदीनशत्रु तथा पाचाल देश के राजा जितशत्रु ।

मल्लीकुमारी भी युवावस्था को प्राप्त हुईं। उन्होंने अपने अवधिज्ञान से अपने पूर्व-जन्म के मित्रों के सम्बन्ध में सभी सूचनाएँ जान लीं। भविष्यानुमान के आधार पर उन्होंने अपने उद्यान में एक विलक्षण मोहनगृह का निर्माण करवाया। इस गृह में मध्य में एक ऐसा कमरा था जिसके चारों ओर छह कमरे थे।

जिनकी खिड़कियों की जाली में से यह कमरा दिखाई देता था। इस कमरे के मध्य में मल्लीकुमारी ने अपनी अनुकृति की एक सोने की पुतली बनवाकर स्थापित करवाई। यह मूर्ति खोखली थी और इसके सर पर एक ढकना बना हुआ था। मल्लीकुमारी प्रतिदिन भोजन के समय एक ग्रास भोजन इस मूर्ति में डालती रहती थीं।

उधर उन छहों राजाओं को भिन्न-भिन्न माध्यमों से मल्लीकुमारी के सौन्दर्य के समाचार मिले। कौशलराज प्रतिबुद्ध को उनके अमात्य सुबुद्धि ने बताया। अगराज चन्द्रच्छाय को श्रमणोपासक व्यापारी अर्हन्नक ने, कुणालपति रुक्मि को उनके अंगरक्षक ने, काशीराज शख को मिथिला से निष्कासित सुनारो ने, कुम्भराज अदीनशत्रु से मल्लदिन्न द्वारा निष्कासित चित्रकार ने और पाचाल नरेश जितशत्रु को चोक्खा परिव्राजिका ने बताया। ये छहों राजा मल्लीकुमारी का रूप-वर्णन सुन कर उन पर अनुरक्त हो गये और अपने दूतों के साथ विवाह प्रस्ताव भिजवाया।

राजा कुम्भ के पास ये दूत एक साथ ही विवाह प्रस्तावो सहित पहुँचे। कुम्भ ने ये प्रस्ताव सुन क्रोधित हो प्रस्ताव ठुकरा दिए और दूतों को लौटा दिया। दूतों ने अपने स्वामियो को सूचना दी कि कुम्भ ने प्रस्ताव ठुकराकर उन्हें अपमानित कर दिया है। छहो राजाओं ने परस्पर मंत्रणा की और एक साथ मिथिला पर चढ़ाई कर दी। राजा कुम्भ उनका सामना करने विदेह राज्य की सीमा पर पहुँचे तो इस सयुक्त सेना के सामने टिक नहीं सके। हारकर वे नगर के भीतर भाग आये और द्वार बन्दकर सुरक्षा हेतु चिन्ता करने लगे। आक्रमणकारी राजाओं की सेनाओं ने मिथिला पर घेरा डाल दिया।

पिता की चिन्ता देख मल्लीकुमारी ने उन्हें उपाय बताया। उन्होंने कहा कि छहो राजाओं को एक ही प्रस्ताव गोपनीय तरीके से भिजवा दिया जाय कि कुमारी का विवाह उससे ही कराया जायेगा। अत वह संध्या समय अकेला मिथिला में आ जावे। इन राजाओं को अलग-अलग मोहन-भवन मे भेज बाहरी छह कमरों में अलग-अलग रखा जाय।

मल्लीकुमारी की योजनानुसार राजा कुम्भ ने सभी कार्य कर दिये। राजाओं ने मोहन-घर के अपने-अपने कमरे से मध्य में रही सुन्दर प्रतिमा को देखा तो उसे मल्लीकुमारी समझकर मोहित हो गये और विवाह की मधुर कल्पनाओं में डूब गये। प्रातःकाल मल्लीकुमारी अपनी परिचारिकाओं के साथ मोहन-गृह मे आई और मूर्ति के सर पर से ढकना हटा दिया। तत्काल सारे वातावरण मे तीव्र दुर्गन्ध व्याप्त हो गई। सभी राजा उस दुर्गन्ध से तिलमिला उठे। तब मल्लीकुमारी ने उन्हें इस दुर्गन्धमय पार्थिव शरीर पर अनुरक्त न होने का प्रतिबोध दिया और अपने पूर्व-भव की कथा सुनाई। राजाओं को जाति-स्मरण ज्ञान हुआ और उन्होने मल्लीकुमारी के साथ ही दीक्षित होने का निश्चय कर लिया।

कालान्तर मे अर्हत मल्ली ने परम्परानुसार गृह त्यागकर यथाविधि दीक्षा ली। उन्हें तत्काल मन पर्यवज्ञान और उसी दिन केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। दीर्घकाल तक धर्म प्रतिपादन कर उन्होने सम्मेत शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया।

EIGHTH CHAPTER : MALLI : INTRODUCTION

Title—Malli—The name of the nineteenth Tirthankar It is obvious that the life of all great persons is filled with inspiring and educating incidents, but the story of the evolution and progress of the soul that was Arhat Malli is unique even among them Even a minute aberration in feelings results in karmic bondage and even the purest of souls can not escape suffering the consequences The story of the life of Arhat Malli is a vivid exposition of such minute aberration and its consequences As such her name stands out in the Jain literature as a unique example

Gist of the Story—The name of the ruler of Veetshoka city in the Mahavideh area was Bal He had a son named Mahabal. Once, senior ascetic Dharmaghosh arrived in the Kumbh garden outside the city Inspired by his discourse, King Bal crowned prince Mahabal and got initiated as an ascetic

King Mahabal had six childhood friends They all did everything with mutual consent Once, a senior ascetic came to the city After listening to the preaching king Mahabal felt like renouncing the world Mahabal conveyed his feelings to his friends They also decided to get initiated All of them transferred their kingdoms to their heirs and became ascetics

They decided with mutual consent that whatever penance or practice any one of them starts all the others should do exactly the same Mahabal, however, started cheating his friends When others observed a one day fast he would observe a two day fast Thus he secretly did more vigorous penance Due to these guileful ways he acquired the Karma that would make him take the next birth as a female. Later Mahabal also indulged in the twenty auspicious practices and acquired the Tirthankar-nam-gotra-karma After completing this pious life span they were born as gods in the Jayant dimension

Completing the life-span in the dimension of gods Mahabal was born as Malli, the daughter of king Kumbh of Mithila All the six friends of Mahabal were born as princes They grew to be rulers of different states—Pratibuddha the king of Kaushal, Chandracchaya the king of Anga, Shankh the king of Kashi, Rukmi the king of Kunal, Adinshatru the king of Kuru, and Jitshatru the king of Panchal

Malli grew to be a beautiful young woman She became aware of her friends from the earlier birth through her Avadhi Jnana Guided by her premonition she arranged to construct a large house of illusion At the exact centre of this building there was a room with grills surrounded by six other connected rooms At the centre of this room Malli got installed a life-size statue, an exact replica of her own self in gold It was hollow with a hole at the top that was covered with a lotus Malli started dropping one handful of the rich food she ate, inside the hollow statue every day

The above said six kings got information about Malli's youthful beauty through different sources Pratibuddha the king of Kaushal was informed by his minister Subuddhi Shramanopasak merchant Arhannak informed Chandracchaya the king of Anga. Shankh the king of Kashi got the information from the goldsmiths exiled from Mithila Rukmi the king of Kunal was informed by his bodyguard The artist exiled by Malladinna told Adinshatru the king of Kuru And Jitshatru the king of Panchal was informed by Chokkha Parivrajika All the six kings fell in love with Malli just by hearing about her beauty and sent marriage proposals through their messengers

All the six messengers with marriage proposals reached Mithila and went to king Kumbh King Kumbh got angry and rejecting the proposals he dismissed the emissaries The emissaries returned to their masters and informed that Kumbh had dismissed them rejecting their marriage proposals The six kings conspired and at once attacked Mithila The combined army of the six kings mauled and overwhelmed King Kumbh's army He retreated to Mithila The combined armies laid a siege King Kumbh sat down on his throne worrying

When Princess Malli saw her brooding father she provided a solution—Send messengers secretly and convey the same message to each one of them that you will marry me to him, and he should secretly come in the evening when the streets are deserted Lead them to the six separate rooms surrounding the hall of illusion to stay for the night

King Kumbh followed this plan suggested by Princess Malli The kings peeped through the grill of their rooms and saw the life-like golden statue of Princess Malli They assumed that this was Princess Malli Stunned by the beauty of that female figure they stared at it with unblinking and lusty eyes Princess Malli came to the hall of illusion with her retinue She went near the statue and removed the lotus cover. As soon as the cover was removed an obnoxious stench started spreading Distressed by the stench the kings covered their faces Princess Malli gave them a discourse about futility of indulgence in physical pleasures and told the story of their earlier births The kings got the Jatismaran Jnana and they decided to renounce the world along with Malli

In due course Arhat Malli became an ascetic She acquired Manahparyava Jnana immediately on initiation and Keval Jnana the same day After a long period of religious activities she got nirvana at Sammet Shikhar

■■

अट्ठमं अज्झयणं : मल्ली
आठवाँ अध्ययन : मल्ली
EIGHTH CHAPTER : MALLI
(THE NINETENTH TIRTHANKAR)

सूत्र १. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पन्नत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया-"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवें ज्ञात अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante ! What is the meaning of the eighth chapter of the Jnata Sutra according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २. एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सीयोयाए महाणईए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरच्छिमेण एत्थ णं सलिलावती नामं विजए पन्नत्ते।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया-हे जम्बू ! काल के उस भाग में इसी जम्बूद्वीप मे महाविदेह नामक क्षेत्र में, मेरु पर्वत की पश्चिम दिशा में सलिलावती नामक विजय (भौगोलिक क्षेत्र) था जिसके उत्तर मे निषध नामक विशाल पर्वत था, दक्षिण में शीतोदा नाम की महानदी थी, पश्चिम में सुन्दर वक्षार पर्वत और पूर्व में पश्चिमी लवण समुद्र था।

2. Sudharma Swami narrated—Jambu ! During that period of time in this same Jambu continent in the Mahavideh area on the western side of the mountain Meru there existed a Vijaya (a geographical area, like a state) named Salilavati It was surrounded by a large mountain named Nishadh at its north, a great river named Sheetoda at its south, the beautiful Vakshar Mountain at its west and the western salty-sea at its east

सूत्र ३. तत्थ णं सलिलावतीविजए वीयसोगा नामं रायहाणी पण्णत्ता–नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया।

तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं इंदकुंभे नामं उज्जाणे होत्था।

तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया होत्था। तस्स धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं उवरोधे होत्था।

सूत्र ३ सलिलावती विजय की राजधानी वीतशोका नगरी थी। वह नौ योजन चौडी और बारह योजन लम्बी थी और साक्षात् देवलोक के समान थी।

वीतशोका के उत्तर-पूर्व में इन्द्रकुम्भ नाम का उद्यान था।

वहाँ के राजा का नाम बल था जिसके एक हजार रानियाँ थी और उनमें धारिणी प्रमुख थी।

3. The capital of Salılavatı Vıjaya was the cıty of Veetshoka It was twelve yojan (an ancient measure of dıstance) long and nıne yojan wıde and looked like a heavenly town

There was a garden named Indrakumbh to the north-east of the cıty

The name of the ruler of that cıty was Bal He had one thousand consorts lead by queen Dharını

महाबल का जन्म

सूत्र ४. तए ण सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए, उम्मुक्कबालभावे जाव भोगसमत्थे। तए णं त महब्बल अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खाण पंचण्ह रायवरकन्नासयाण एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति। पंच पासायसया पचसओ दाओ जाव विहरइ।

सूत्र ४ धारिणी देवी एक बार स्वप्न मे सिह को देखकर जाग पडी थी। स्वप्न के शुभ फल के रूप में यथासमय उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम महाबल रखा गया। यह बालक जब युवा हुआ तो उसका विवाह एक साथ पाँच सौ सुन्दर व श्रेष्ठ कुल की राजकुमारियो से कर दिया गया जिनमें कमलश्री प्रमुख थी। विवाह के बाद महाबल को पाँच सौ महल और प्रत्येक महल के साथ प्रचुर धन दिया गया। महाबल मनुष्योचित कामभोग भोगता जीवन व्यतीत करने लगा।

BIRTH OF MAHABAL

4. One day queen Dharini woke up from her sleep after seeing a great lion in her dream. As a result of this auspicious dream she gave birth to a son who was named Mahabal. When this boy grew to be a young man he was married to five hundred young princesses lead by Kamal Shri, and was given five hundred well furnished palaces and ample wealth to maintain these Mahabal spent his time enjoying all earthly pleasures along with his wives.

सूत्र ५. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव इंदकुंभे नाम उज्जाणे तेणेव समोसढे, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरंति।

परिसा निग्गया, बलो वि राया निग्गओ, धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बलं-कुमारं रज्जे ठावेइ, ठावित्ता सयमेव बले राया थेराणं अंतिए पव्वइए, एक्कारसअंगविओ, बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मासिएणं भत्तेणं अपाणेणं केवलं पाउणित्ता जाव सिद्धे।

सूत्र ५ एक बार धर्मघोष स्थविर अपनी शिष्य-सपदा सहित विहार करते हुए इंद्रकुम्भ उद्यान मे पधारे।

नगर मे परिषद निकली और साथ में राजा बल भी धर्मोपदेश सुनने को आये। धर्म सुनकर उन्हे वैराग्य हो गया। उन्होंने महाबल कुमार को राजगद्दी पर बैठाया और स्वयं दीक्षा ले ली। ग्यारह अग शास्त्रो का अध्ययन करके उन्होंने अनेक वर्ष तक धर्म साधना की और अन्त मे चारु पर्वत पर जाकर एक माह का अनशन कर वे सिद्ध गति को प्राप्त हुए।

5. Once during his wanderings senior ascetic (Sthavir) Dharmaghosh arrived in the Kumbh garden along with his disciples.

A delegation of citizens led by king Bal came to attend his discourse King Bal was overwhelmed by a feeling of detachment. He crowned prince Mahabal and got initiated as an ascetic. Studying all the eleven canons and doing spiritual practices for a number of years, he went to the Charu mountain. After fasting for a month and meditating all through he got liberated in the end

सूत्र ६. तए णं सा कमलसिरी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था।

सूत्र ६. कालान्तर में एक बार रानी कमलश्री ने स्वप्न में सिंह देखा, गर्भवती हुई और यथासमय पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम बलभद्र रखा। वह धीरे-धीरे विकास पा युवा हो गया।

6. Later, one day queen Kamalshri woke up from her sleep after seeing a great lion in her dream As a result of this auspicious dream she got pregnant and in due course gave birth to a son who was named Balbhadra With passage of time he turned to be a handsome young man

सूत्र ७. तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा-(१) अयले, (२) धरणे, (३) पूरणे, (४) वसू, (५) वेसमणे, (६) अभिचंदे, सहजाया सहवड्ढियया अण्णमण्णहियइच्छियकारया अण्णमण्णेसु रज्जेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति।

सूत्र ७. महाबल राजा के छह बाल मित्र थे-अचल, धरण, पूरण, वसु, वैश्रमण और अभिचन्द्र। वे एक समय पर ही जन्मे थे, साथ-साथ बडे हुए, परस्पर एक-दूसरे के हित की भावना रखते थे, और एक-दूसरे की इच्छा के अनुसार ही सब काम करते थे। उन्होने यह निश्चय भी कर लिया था कि इसी प्रकार आत्म-कल्याण का कार्य भी साथ-साथ ही करेगे।

7. King Mahabal had six childhood friends—Achal, Dharan, Puran, Vasu, Vaishraman, and Abhichandra They all were born at the same time and did everything with mutual consent They had also resolved that they would even do spiritual practices together

महाबल की दीक्षा

सूत्र ८. तेण कालेणं तेणं समएण धम्मघोसा थेरा जेणेव इंदकुभे उज्जाणे तेणेव समोसढा, परिसा निग्गया, महब्बलो वि राया निग्गओ। धम्मो कहिओ। महब्बलेण धम्म सोच्चा-"जं नवरं देवाणुप्पिया ! छप्पिय बालवयंसगे आपुच्छामि, बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छइ।"

तए णं ते छप्पिय बालवयंसए महब्बलं रायं एवं वयासी-"जइ ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयह, अम्हं के अन्ने आहारे वा ? जाव आलंबे वा ? अम्हे वि य णं पव्वयामो।"

तए णं से महब्बले राया छप्पिय बालवयसए एव वयासी-"जइ ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह, तओ णं तुब्भे गच्छह, जेट्ठपुत्त सएहिं सएहिं रज्जेहिं
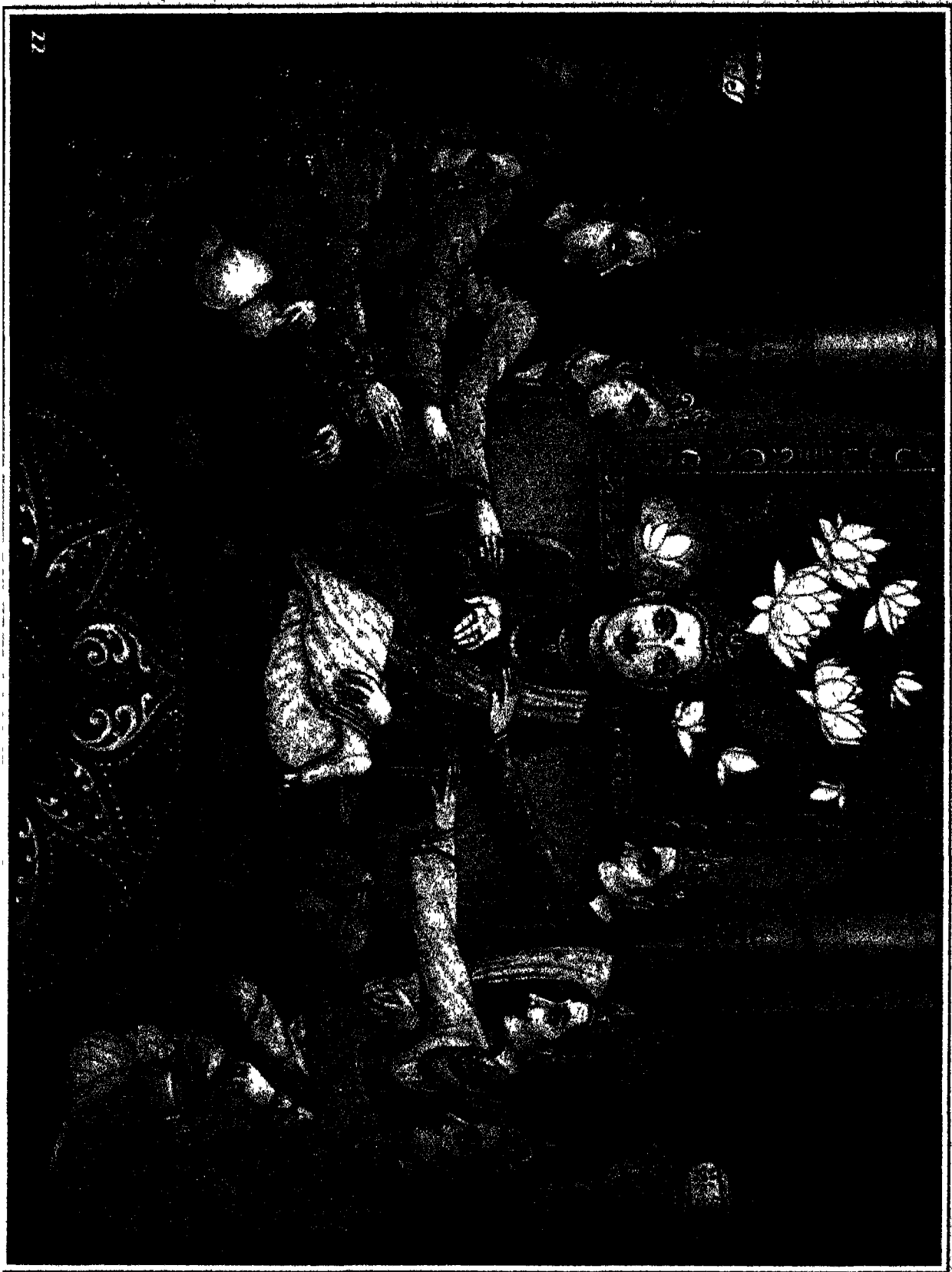
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

साथ निभाने का संकल्प

चित्र २२

मेरुपर्वत के पश्चिम में वर्मी महाविदेह क्षेत्र में सलिलावती विजय थी। उसकी राजधानी थी वीतशोका नगरी।

वीतशोका नगरी के बल राजा का पुत्र महाबल। उसके बाल साथी छह अन्तरंग मित्र थे- १ अचल २ धरण ३ पूरण ४ वसु ५ वैश्रमण और ६ अभिचन्द्र। राजकुमार महाबल और उसके छहों मित्रों ने एक दिन एक दूसरे को वचन दिया हम बचपन के साथी हैं, सुख दुःख में सदा साथ निभाया है और जीवनभर हम एक दूसरे का साथ निभायेंगे। चाहे संसार में रहें या संसार त्यागें। कर्म और धर्म दोनों ही कार्यों में हम एक दूसरे को पूछकर परस्पर की सहमति से साथ देंगे।

आगे चलकर महाबल के साथ छहों मित्रों ने दीक्षा ली। तप आराधना किया। किन्तु तप आराधना में महाबल मुनि मित्रों से छुपकर अधिक तप करने लगे। मित्रों से माया (कपट) करने के कारण उन्होंने स्त्री गोत्र का बंधन कर लिया। फिर २० बोलों की उत्कृष्ट आराधना के फलस्वरूप महाबल मुनि तीर्थंकर गोत्र उपार्जित कर अगले भव में भगवान मल्लिनाथ बने।

(अध्ययन ८)

THE RESOLVE TO GIVE COMPANY

ILLUSTRATION 22

Veetshoka city was the capital of Salilavati Vijaya situated on the western side of the mountain Meru in the Mahavideh area. The name of the ruler of that city was Bal. He had a son named Mahabal. Mahabal had six childhood friends--Achal, Dharan, Puran, Vasu, Vaishraman, and Abhichandra. They all did everything with mutual consent. They also resolved that they would even do spiritual practices together. Later all the seven friends became ascetics and did vigorous penance. However, Mahabal secretly did more penances to be ahead of his friends. As a result of this deceit he earned the karma that would lead to a birth as a female in some future birth. With the help of the Bees Sthanak practice Mahabal also earned the Tirthankar Gotra and became Arhat Malli.

(CHAPTER-8)

ठावेह पुरिससहस्स-वाहिणीओ सीयाओ दुरुढा जाव पाउब्भवह। तए णं ते छप्पिय बालवयंसए जाव पाउब्भवंति।"

सूत्र ८. काल के उसी भाग में इन्द्रकुम्भ उद्यान में धर्मघोष स्थविर पधारे। परिषद निकली। धर्म सुनकर वैराग्य जागने पर महाबल राजा ने कहा-"हे देवानुप्रिय ! मैं अपने छह बाल मित्रों से परामर्श कर लेता हूँ और कुमार बलभद्र को सिंहासनारूढ़ कर देता हूँ फिर आकर आपसे दीक्षा ग्रहण करूँगा।"

फिर महाबल ने अपने छहों बाल मित्रों से पूछा। उन्होंने कहा-"देवानुप्रिय ! यदि तुम दीक्षा ले लेते हो तो हमारा कोई आधार नहीं रहेगा। ऐसे में हम भी दीक्षा लेंगे।"

महाबल ने उन्हें कहा-"देवानुप्रियो, यदि तुम भी मेरे साथ दीक्षा लेना चाहते हो तो पहले अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्रों को राज्य सौंपो और तब पुरिससहस्रवाहिनी शिविका पर सवार होकर मेरे पास लोटो।"

INITIATION OF MAHABAL

8. During that period of time senior ascetic Dharmaghosh arrived and stayed in the Indrakumbh garden A delegation of citizens led by the king came to attend the discourse of the ascetic After listening to the preaching when king Mahabal felt like renouncing the world he said, "Beloved of gods! I will go and consult my six childhood friends as well as crown prince Balbhadra, and then come back to get initiated into the order by you "

Mahabal went and conveyed his decision to his friends and asked their opinion They said unanimously, "Beloved of gods! If you renounce the world we will be left with no support. As such, we would also like to get initiated "

Mahabal replied, "Beloved of gods! If you too want to get initiated with me, first of all hand over your kingdoms to your heirs-apparent and come back to me riding the Purisasahassa palanquins."

सूत्र ९. तए ण से महब्बले राया छप्पिय बालवयंसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, जाव बलभद्दं कुमारं अभिसिंचेंति।

सूत्र ९ अपने मित्रो के वापस लौटने पर महाबल राजा प्रसन्न हुआ। फिर उसने अपने पुत्र बलभद्र कुमार का समारोह सहित राज्य अभिषेक कर दिया।

9. King Mahabal was pleased when his friends did as he had told and returned With grand ceremonies he crowned his son, prince Balbhadra

सूत्र १०. तए णं से महब्बले राया बलभद्दं कुमारं आपुच्छइ। तओ णं महब्बलपामोक्खा छप्पिय बालवयसए सद्धिं जाव पव्वयंति, एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमेहि अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति।

सूत्र १० महाबल ने तब राजा बलभद्र से आज्ञा ले अपने छहो बाल मित्रो सहित समारोहपूर्वक दीक्षा ग्रहण की, ग्यारह अग शास्त्रो का अध्ययन किया और विभिन्न प्रकार की तपस्याएँ करते हुए विचरने लगे।

10. Mahabal then sought permission from king Balbhadra and with prescribed procedure and ceremonies got initiated along with his six childhood friends These new ascetics now studied all the eleven canons and commenced their itinerant life doing penance and other spiritual practices

सूत्र ११ तए णं तेसिं महब्बलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-"ज ण अम्ह देवाणुप्पिया ! एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, त ण अम्हेहि सव्वेहि सद्धिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बहूहि चउत्थ जाव विहरति।

सूत्र ११ एक दिन महाबल व उनके मित्र-सातो अनगार परस्पर विचार करने लगे- "हम लोगो मे से एक जिस तप का पालन करे वही तप सबको पालना चाहिये।" सबने यह बात स्वीकार कर ली और सभी एक साथ उपावस, बेला यावत मासखमण आदि तपस्याएँ करते हुए साधनामय जीवन बिताने लगे।

11. One day Mahabal and his friends had consultations, "Whatever penance or practice anyone of us starts all the others should follow the same " They all accepted this idea and started a series of penances one after another, including fasts for a day or more, stretching even to a month

महाबल का मायाचार

सूत्र १२. तए णं से महब्बले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणामगोय कम्म निव्वत्तिंसु-जइ णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थ उवसपज्जित्ता ण विहरंति,

तओ से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। जइ णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। एवं अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो दुवालसमं।

सूत्र १२ महाबल ने इस श्रमण जीवन में अपने साथियो से छल करना आरम्भ कर दिया। जब अन्य छह श्रमण उपवास करते तो महाबल बेला करते, जब अन्य बेला करते तो महाबल तेला करते और इस प्रकार वे छल से अपने साथियों से अधिक तपस्या करते थे। इस छल व्यापार के फलस्वरूप उन्होंने स्त्री नामगोत्र कर्म का बन्धन कर लिया।

CHEATING BY MAHABAL

12. Mahabal, however, started cheating his friends When others observed a one day fast he would observe a two day fast. Thus he secretly did more vigorous penance on one pretext or the other Due to these guileful ways he acquired the Karma that would make him take the next birth as a female (The Stree-naam-gotra karma)

सूत्र १३. इमेहि पुण वीसाएहि य कारणेहि आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्म निव्वत्तिसु, त जहा–

अरिहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुए-तवस्सीसुं।
वच्छलया य तेसिं, अभिक्ख णाणोवओगे य॥१॥

दसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारं।
खणलव-तवच्चियाए, वेयावच्चे समाही य॥२॥

अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयणे पभावणया।
एएहि कारणेहि, तित्थयरत्त लहइ जीवो॥३॥

सूत्र १३ महाबल ने इनके अतिरिक्त बीस कारणों (बीस स्थानक) की एकानेक बार उपासना–आराधना की जिसके फलस्वरूप उन्होने तीर्थंकर नामगोत्र कर्म का बंधन भी कर लिया। वे बीस स्थानक हैं–

(१) अरिहत, (२) सिद्ध, (३) प्रवचन, (४) गुरु, (५) स्थविर, (६) बहुश्रुत, (७) तपस्वी की सेवा-भक्ति (८) सतत ज्ञानोपयोग, (९) दर्शनविशुद्धि, (१०) विनय, (११) षडावश्यक, (१२) निरतिचार ब्रत साधना, (१३) विरक्ति, (१४) तप, (१५) सुपात्र दान, (१६) वैयावृत्य, (१७) सघ को समाधि प्रदान करना, (१८) अपूर्व ज्ञान ग्रहण, (१९) श्रुत भक्ति, (२०) प्रवचन प्रभावना।

13. Besides these penances, Mahabal also repeatedly indulged in the twenty auspicious practices that are the basis of acquiring the Tirthankar-naam-gotra-karma, or the karma that leads one to the lofty status of a Tirthankar in the birth after the next one These practices are termed as Bees Sthanak and are—

1 Arihant (worship of the Tirthankar), 2 Siddha (worship of the liberated soul), 3 Pravachan (faith in the discourse), 4 Guru (worship of the teacher), 5 Sthavir (worship of the senior ascetic), 6 Bahushrut (worship of the scholar) , 7. Tapasvi (worship of those who indulge in penance), 8 Satat Jnanopayog (continued application of knowledge for maximum possible time), 9 Darshan Vishuddhi (purity of perception), 10 Vinay (to praise the virtues of others and be happy at the progress of others), 11 Shadavashyak (to practice the six essentials in the prescribed way at the prescribed time), 12 Niratichar Vrat Sadhana (to observe all the vows and codes of conduct with ever increasing indulgence), 13 Virakti (to develop and practice apathy for attachment, fondness, conceit, and greed), 14 Tapa (to practice penance with all intensity), 15 Supatra Daan (to give charity to the deserving), 16 Vaiyavritya (to look after and take care of the detached), 17 Samadhi (to give due importance and respect to the four pronged religious organization), 18 Apurva-Jnana-Grahan (to enhance knowledge regularly), 19 Shrut Bhakti (to have faith on the sermons of the detached or the canons), and 20 Pravachan Prabhavana (propagation of the sermon of the Tirthankar and the discipline of the order)

महाबल आदि की तपस्या

सूत्र १४. तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासिअ भिक्खुपडिम उपसपज्जित्ता ण विहरंति, जाव एगराइअ भिक्खुपडिम उपसपज्जित्ता ण विहरंति।

सूत्र १४ इसके बाद वे सातो अनगार एक माह की पहली भिक्षु प्रतिमा का पालन करने लगे। फिर उन्होने क्रमश बारहवी भिक्षु प्रतिमा तक का पालन किया।

PENANCES OF MAHABAL AND FRIENDS

14. After this all these seven ascetics observed a specific penance known as the first Bhikshu Pratima for one month They continued

this practice in ascending order up to the twelfth Bhikshu Pratima (as detailed in the first chapter).

सूत्र १५. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा–

चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेंति, पारित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दुवालसम करेंति, करित्ता सोलसम करेंति, करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसम करेंति, करित्ता सोलसम करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता वीसइम करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं, करेंति, करित्ता चोद्दसम करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति। सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति।

सूत्र १५ उपर्युक्त तपस्याओ के बाद सातो अनगारों ने एक और कठिन तप जिसे क्षुल्लक सिह-निष्क्रीडित तप कहते है, किया। उसकी आराधना विधि इस प्रकार है–

प्रथम एक उपवास करके विगय सहित पारणा किया जाता है। उसके बाद दो उपवास और पारणा, फिर एक उपवास और पारणा, तब तीन उपवास और पारणा, दो उपवास और पारणा, चार उपवास और पारणा, यह क्रम ९ उपवास तक बढ़ता रहता है और उसी क्रम से घटकर एक उपवास पर आता है। पूरा क्रम इस प्रकार है–१ उ पा, २ उ. पा, १ उ पा, ३ उ पा, २ उ पा, ४ उ पा., ३ उ पा, ५ उ पा., ४ उ. पा., ६ उ पा, ५ उ पा, ७ उ पा, ६ उ पा, ८ उ पा., ७ उ पा, ९ उ पा, ८ उ. पा., ९ उ पा, ७ उ पा, ८ उ पा, ६ उ पा, ७ उ पा, ५ उ पा, ६ उ. पा., ४ उ. पा, ५ उ पा, ३ उ पा, ४ उ पा, २ उ पा., ३ उ पा, १ उ. पा., २ उ. पा, १ उ पा। उ = उपवास, पा = पारणा।

15. After these practices all the seven ascetics observed a much harsher penance known as minor Simha-Nishkreedit. The details of this penance are as follows—

It is started with a fast for one day and eating unrestricted but pure food the next day After this a two day fast is observed and it

is broken like the earlier one Again a one day fast followed by a day with food, then a three day fast and after a day with food a two day fast. This sequence is followed in ascending order till it reaches a period of nine day fast and then the whole sequence is reversed, in descending order, till it reaches one day fast. The complete sequence being—

Fast for 1 day, eat one day, fast for 2 days, eat one day, fast for 1 day, eat one day, fast for 3 days, eat one day, fast for 2 days, eat one day, fast for 4 days, eat one day, fast for 3 days, eat one day, fast for 5 days, eat one day, fast for 4 days, eat one day, fast for 6 days, eat one day, fast for 5 days, eat one day, fast for 7 days, eat one day, fast for 6 days, eat one day, fast for 8 days, eat one day, fast for 7 days, eat one day, fast for 9 days, eat one day, fast for 8 days, eat one day, fast for 9 days, eat one day, fast for 7 days, eat one day, fast for 8 days, eat one day, fast for 6 days, eat one day, fast for 7 days, eat one day, fast for 5 days, eat one day, fast for 6 days, eat one day, fast for 4 days, eat one day, fast for 5 days, eat one day, fast for 3 days, eat one day, fast for 4 days, eat one day, fast for 2 days, eat one day, fast for 3 days, eat one day, fast for 1 day, eat one day, fast for 2 days, eat one day, fast for 1 day, eat one day

सूत्र १६. एव खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहि मासेहि सत्तहि य अहोरत्तेहिय अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ।

तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेति, नवरं विगइवज्ज पारेंति। एव तच्चा वि परिवाडी, नवर पारणए अलेवाडं पारेंति। एवं चउत्था वि परिवाडी, नवर पारणए आयंबिलेणं पारेंति।

सूत्र १६ इस तप का प्रथम चरण छह महीने सात दिन का होता है और इसमे १५४ उपवास और तेतीस पारणे किये जाते है।

दूसरे चरण मे उपवास और पारणे का क्रम वही रहता है किन्तु पारणा निर्विगय (विगय रहित) किया जाता है। तीसरे चरण मे पारणा निर्लेप (रूखा) आहार का होता है और चौथे चरण मे आयबिल से पारणा करते हैं।

16. This first section of the penance lasts for six months and seven days It has 154 days of fasting and 33 days with food

The second section is done with the same sequence of fasting and eating, but this time the food is restricted or no prohibited things are included In the third section the food is without any thing oily and in the fourth section the fast is broken with Ayambil (to eat food prepared with one type of grain only without adding even oil or water).

सूत्र १७ तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीहनिक्कीलियं तवोकम्म दोहि संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी–

इच्छामो ण भंते ! महालय सीहनिक्कीलियं तवोकम्म तहेव जहा खुड्डागं, नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए, एगाए चेव परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसेहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ। सव्व पि सीहनिक्कीलियं छहि वासेहिं, दोहि य मासेहिं, बारसेहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ।

सूत्र १७ महाबल और सातो अनगार जब इस लघु सिहनिष्क्रीडित तप के चारो चरण दो वर्ष और अट्ठाईस दिन मे तीर्थकर की आज्ञा और सूत्र के निर्देशानुसार पूर्ण कर चुके तब वे स्थविर भगवत के पास आए और बोले–

"भन्ते ! अब हम महा सिहनिष्क्रीडित तप करना चाहते है।" गुरु की आज्ञा मिलने पर उन्होने यह तप किया। इस तप मे उपवासो और पारणो का विकास क्रम वही रहता है पर ९ उपवास के स्थान पर यह सोलह उपवास तक चलता है। इस एक चरण में एक वर्ष छह महीने और अठारह दिन लगते है। चारो चरण पूर्ण करने में छह वर्ष दो महीने और बारह दिन लगते है।

17. When the seven ascetics including Mahabal completed the four sections of this great penance in two years and twenty eight days, strictly following the rules laid down in the scriptures by the Tirthankar, they approached the senior ascetic and said—

"Bhante! We now want to observe the major Simhanishkreedit penance " On getting the permission they started this penance. This penance is observed exactly as the earlier one but the duration of the maximum days of fasting is increased up to sixteen days instead of nine days One section of this penance lasts for one year six months and eighteen days It takes six years two months and twelve days to complete all the four sections of this penance

सूत्र १८. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरंति।

सूत्र १८ स्थविर भगवन्त की आज्ञा प्राप्त कर महाबल आदि सातों अनगारों ने सूत्रानुसार विधि से तप सम्पन्न किया। तत्पश्चात् वे स्थविर भगवन्त के पास लौटे, उन्हें यथाविधि वन्दना कर सामान्य व्रत-उपवास करते जीवन बिताने लगे।

18. With the permission of the senior ascetic and according to the procedure prescribed in the scriptures the seven ascetics completed the penance. They came to the senior ascetic and after offering him salutations they resumed their normal ascetic life observing the simple penances.

समाधिमरण

सूत्र १९. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेण उरालेण तवोकम्मेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ, नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरूहंति। दुरूहित्ता जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं अणसणं, चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउय पालइत्ता जयते विमाणे देवत्ताए उववन्ना।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं महब्बल-वज्जाण छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई, महब्बलस्स देवस्स पडिपुण्णाइ बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

सूत्र १९. ये सातों अनगार इस कठोर तप के कारण स्कन्दक मुनि (भगवतीसूत्र) के समान दुबले और तेजहीन हो गये। उन्होने स्थविर भगवंत से आज्ञा ली और चारु पर्वत पर चले गये। वहाँ उन्होंने दो महीने की संलेखना कर शरीर त्याग दिया। वे सातो अनगार चौरासी लाख वर्षो तक श्रमण जीवन बिता, चौरासी लाख पूर्व की पूर्ण आयु मे देवलोक गये। जयत नाम के तीसरे अनुत्तर विमान में देवरूप मे उनका जन्म हुआ।

जयत विमान मे उत्कृष्ट स्थिति बत्तीस सागरोपम की बताई है। महाबल की देव आयुष्य पूरे बत्तीस सागरोपम की हुई और अन्यों की उससे कुछ वर्ष कम।

HEDITATION UNTO DEATH

19. As a result of this extreme penance all the seven ascetics became dull and weak like Skandak Muni (as detailed in Bhagavati

Sutra). They sought permission from the senior ascetic and went to the Charu mountain. There they took a two month duration ultimate vow and breathed their last. All these ascetics spent eight million four hundred thousand years as ascetics out of their total age of eight million four hundred thousand Purvas (a superlative measure of time), before going to the dimension of gods. They were born as gods in the third Anuttar Viman named Jayant (a dimension of gods).

The maximum life-span of a god in the Jayant Viman is said to be thirty two Sagaropam (a superlative measure of time) Mahabal had this maximum life-span whereas the others had a few years shorter

सूत्र २०. तए णं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चय चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया। तं जहा–

पडिबुद्धी इक्खागराया १,

चंदच्छाए अंगराया २,

संखे कासिराया ३,

रुप्पी कुणालाहिवई ४,

अदीणसत्तू कुरुराया ५,

जियसत्तू पचालाहिवई ६।

सूत्र २०. महाबल के छहो साथी देवलोक की आयु, स्थिति और भव समाप्त होने पर तत्काल शरीर त्याग कर जम्बूद्वीप मे भरतवर्ष में माता-पिता के विशुद्ध वशों व राजकुलों मे अलग-अलग कुमार रूप मे जन्मे। वे इस प्रकार हैं–

(१) प्रतिबुद्धि इक्ष्वाकु देश का राजा बना (अयोध्या)।

(२) चद्रच्छाय अग देश का राजा बना (चम्पा)।

(३) शख काशी देश का राजा बना (वाराणसी)।

(४) रुक्मि कुणाल देश का राजा बना (श्रावस्ती)।

(५) अदीनशत्रु कुरु देश का राजा बना (हस्तिनापुर)।

(६) जितशत्रु पांचाल देश का राजा बना (कांपिल्यपुर)।

20. Completing the life-span, state, and life in the dimension of gods, all the six friends of Mahabal immediately left there divine

bodies and were born as princes in pure clans and ruling families in Bharatvarsha in the Jambu continent They grew to be rulers of the following states—

1 Pratibuddhi the king of Ikshvaku country (capital-Ayodhya)
2 Chandracchaya the king of Anga country (capital-Champa)
3 Shankh the king of Kashi country (capital-Varanasi)
4. Rukmi the king of Kunal country (capital-Shravasti)
5 Adinshatru the king of Kuru country (capital-Hastinapur)
6 Jitshatru the king of Panchal country (capital-Kampilyapur)

तीर्थंकर अवतरण

सूत्र २१ तए णं से महब्बले देवे तिहिं णाणेहि समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु, सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिसि मारुतंसि पवायंसि, निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि, पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु, अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेण जोगमुवागएण, जे से हेमताण चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे, तस्स ण फग्गुणसुद्धस्स चउत्थिपक्खेण जयंताओ विमाणाओ बत्तीससागरोवमट्ठिइयाओ अणतरं चय चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभावईए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कंतीए भववक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते।

सूत्र २१ सभी ग्रह उच्च स्थान पर थे, सभी दिशाएँ सौम्य, अधकार रहित और विशुद्ध थी, सभी शकुन विजय कारक थे, दक्षिण दिशा से चलता पवन अनुकूल हो वह रहा था, फले-फूले धान से खेत हरे-भरे थे और लोग हर्ष से क्रीडा कर रहे थे। हेमन्त ऋतु के चौथे महीने का आठवाँ पक्ष चल रहा था। फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष का चौथा दिन था। मध्य-रात्रि के समय अश्विनी नक्षत्र का योग आने पर महाबल देव ने तीन ज्ञान से युक्त हो बत्तीस सागरोपम की आयु, भव और स्थिति पूर्ण कर जयन्त नामक विमान से प्रयाण किया और भरत क्षेत्र की मिथिला नगरी के कुभ राजा की भार्या प्रभावती देवी की कोख मे दैवीय आहार, भव और शरीर को मानवीय आहार, भव और शरीर मे बदलते हुए अवतरित हुआ।

THE DESCENT OF THE TIRTHANKAR

21. All the planets were in their ascendant positions All the cardinal directions were serene bright and pure There was an

abundance of auspicious signs. The southern wind was favourable The fields were lush green and rich with crops Masses were exultant with joy It was the fourth month and the eighth fortnight of the winter season It was the fourth day of the bright half of the month of Phalgun

At midnight when the moon entered the first (Ashwin) lunar mansion the soul of Mahabal, completed its thirty two Sagaropam age, state, and life as god, and left the Jayant dimension of gods. Equipped with three types of knowledge and transforming the state, constitution, and factors of sustenance from the divine realm to the human realm, it descended into the womb of queen Prabhavati Devi, wife of King Kumbh of Mithila city in Bharat area

सूत्र २२. तं रयणि च णं पभावई देवी तंसि तारिसगसि वासभवणंसि सयणिज्जंसि जाव अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमेयारूवे उराले कल्लाणे सिवे धण्णे मगल्ले सस्सिरीए चउद्दसमहासुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा। त जहा–

गय-वसह-सीह-अभिसेय-दाम-ससि-दिणयर-झय-कुंभे।
पउमसर-सागर-विमाण-रयणुच्चय-सिहिं च॥

तए ण सा पभावई देवी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव भत्तार-कहण, सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ।

सूत्र २२ उस रात स्वच्छ शयनागार में सोई हुई प्रभावती देवी चौदह महास्वप्न देखकर जागी–(१) हाथी, (२) वृषभ, (३) सिह, (४) देवी लक्ष्मी का अभिषेक, (५) पुष्प माला, (६) चन्द्रमा, (७) सूर्य, (८) ध्वजा, (९) कुम्भ, (१०) पद्म-सरोवर, (११) सागर, (१२) देव विमान (भवन), (१३) रत्न राशि, और (१४) निर्धूम अग्नि।

इन स्वप्नो की बात उसने कुभ राजा से बताई। राजा ने स्वप्न पाठकों से उनका फल पूछा और वे प्रसन्न हो समय बिताने लगे।

22. That night Prabhavati Devi awoke when she saw the fourteen great dreams They are—1 an elephant, 2. a bull, 3 a lion, 4 annointing of goddess Laxmi, 5 a garland of flowers, 6. the moon, 7 the sun, 8 a flag, 9 an urn, 10 a lotus flower pond, 11. a sea, 12 a vehicle of gods, 13 a heap of gems, and 14. smokeless flames of fire

She narrated these dreams to king Kumbh He called the dream diviners and asked the interpretation. They were pleased to hear about the auspicious and bountiful future the dreams forebode

पुष्प-दोहद

सूत्र २३. तए णं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए-"धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ जाओ णं जल-थलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवण्णेण मल्लेणं अत्थुय-पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य विहरंति। एगं च णं महं सिरीदामगंडं पाडल-मल्लिय-चंपय-असोग-पुन्नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्ज-कोज्जय-कोरंट-पत्तवरपउर परमसुह-फासदरिसणिज्ज महया गधद्धुणि मुयत अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति।

सूत्र २३. तीन महीने बीत जाने पर प्रभावती देवी के मन मे एक दोहद उत्पन्न हुआ-"वे माताएँ धन्य हैं जो जल-थल मे उत्पन्न, खिले हुए तरह-तरह के पचरगे फूलो की कई तहों से भरी-पूरी शय्या पर आनन्द से बैठती और सोती है। गुलाब, मालती, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, नाग, मरुवा, दमनक, कोरट तथा सुन्दर कुब्जक के फूलो-पत्तो से बने कोमल, सुन्दर और सुरभित गजरों को सूँघती हैं और इस प्रकार फूलो से घिरी अपना दोहद पूरा करती है।"

DOHAD OF FLOWERS

23. During the third month of her pregnancy Queen Prabhavati had a Dohad—"Blessed are the mothers who enjoy sitting and sleeping on a bed filled with layers of a variety of multicoloured flowers which grow on land as well as in water Who smell soft, beautiful and sweetly fragrant intwined garlands made of flowers like rose, Malati, Champa, Ashok, Punnaag, Naag, Maruva, Damanak, Korant, and Kubjak and leaves from the same plants Thus surrounded with flowers they fulfill their Dohad"

सूत्र २४. तए णं तीसे पभावईए देवीए इमेयारूव डोहल पाउब्भूय पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय-भासुरप्पभूयं दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रण्णो भवणंसि साहरंति। एग च णं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं मुयंत उवणेंति।

सूत्र २४. आसपास रहे वाण-व्यन्तर देवों को जैसे ही प्रभावती देवी के इस दोहद का आभास हुआ, उन्होंने जल्दी से जल-थल के उपर्युक्त फूलों के ढेर राजा कुम्भ के महल में पहुँचा दिये और साथ में एक सुन्दर, कोमल, सुरभित गजरा भी रख दिया।

24. As soon as the Van-Vyantar gods (a specific category of lower gods) became aware of this Dohad of Queen Prabhavati they delivered heaps of flowers, mentioned above, in King Kumbh's palace. They also put a beautiful, delicate and fragrant intwined garland with these flowers

सूत्र २५. तए णं सा पभावई देवी जलथलयभासुरप्पभूएणं मल्लेणं डोहलं विणेइ। तए णं सा पभावई देवी पसत्थडोहला जाव विहरइ।

तए ण सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य रत्तिंदियाणं जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे, तस्स णं मग्गसिरसुद्धस्स एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्ठाणगएसु गहेसु जाव पमुइयक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोय एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया।

सूत्र २५ प्रभावती देवी ने इन फूलों और मालाओं से अपना दोहद पूर्ण किया और आनन्द से रहने लगी। इसी प्रकार नौ महीने और साढ़े सात दिन बीत गये। हेमन्त ऋतु के पहले महीने और दूसरे पक्ष मे मंगसर सुदी एकादशी के दिन मध्य-रात्रि के साथ अश्विनी नक्षत्र का योग आने पर प्रभावती देवी ने सुखपूर्वक पूर्ण आरोग्य युक्त उन्नीसवें तीर्थंकर को जन्म दिया।

25. Queen Prabhavati fulfilled her Dohad with these flowers and garlands and lived happily. Nine months and seven and a half days passed During the first month and the second fortnight of the winter season Queen Prabhavati normally gave birth to the nineteenth Tirthankar on the eleventh day of the bright half of the month of Mangsar when the moon entered the first (Ashwini) lunar mansion at midnight

जन्म व नामकरण उत्सव

सूत्र २६. तेण कालेण तेण समएण अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महयरीयाओ जहा जुबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं भाणियव्वं। नवरं मिहिलाए नयरीए कुभरायस्स भवणसि पभावईए देवीए अभिलावो संजोएव्वो जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा।

सूत्र २६ काल के उस भाग में अधोलोक में रहने वाली प्रधान आठ दिशा कुमारिकाएँ आईं और फिर देवता आये। सबने मिलकर परम्परागत रीति से तीर्थंकर का जन्माभिषेक किया और तब नन्दीश्वर द्वीप में जाकर महोत्सव किया। (विस्तृत वर्ण जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुसार)

BIRTH AND NAMING CEREMONIES

26. During that period of time the eight goddesses of direction came from the lower worlds followed by other gods They together performed the traditional post-birth annointing ritual Then they proceeded to the Nandishvar island and celebrated the birth festival of the Tirthankar (details available in Jambudveep Prajnapti)

सूत्र २७. तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवइ-वाणविंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयरजम्मणाभिसेय जायकम्मं जाव नामकरण, जम्हा ण अम्हे इमीए दारियाए माउगब्भसि वक्कममाणंसि मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीए, त होउ ण णामेणं मल्ली, नामं ठवेइ, जहा महाबले नाम जाव परिवड्ढिया।

सा वड्ढई भगवई, दियालोयचुया अणोपमसिरीया।
दासीदासपरिवुडा, परिकिन्ना पीढमद्देहि ॥१॥
असियसिरया सुनयणा, बिंबोट्ठी धवलदंतपतीया।
वरकमलगब्भगोरी फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥२॥

सूत्र २७ फिर राजा कुम्भ ने भवन पति आदि चारो जाति के अनेक देवो के सान्निध्य मे तीर्थंकर का जातकर्म व अन्य सस्कार सम्पन्न कर नामकरण घोषित किया–"जब हमारी यह पुत्री माता के गर्भ मे थी तब माता को माला (फूल) की शय्या पर सोने का दोहद हुआ था अत इसका नाम मल्ली हो।" यह सब वर्णन भगवतीसूत्र मे वर्णित महाबल के नामकरण के समान है।

27. King Kumbh performed the traditional post birth ceremonies in presence of gods from all the four classes including Bhavanpati The last was the naming ceremony when the king announced, "When this daughter of ours was still in the womb her mother had a Dohad of sleeping on a bed filled with flowers and garlands So let her be known as Malli (flower garland)" The detailed description of these celebrations is same as that mentioned in Bhagavati Sutra with reference to Mahabal

सूत्र २८ तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

सूत्र २८ विदेहराज की वह दिव्य पुत्री समय के साथ बढ़ने लगी और बाल्यावस्था पार कर रूप, यौवन और लावण्य से परिपूर्ण उत्कृष्ट देहवाली हो गई।

28. With passage of time this divine daughter of the king of Videh crossed her childhood and grew to be a beautiful, charming, and perfectly proportioned young woman

सूत्र २९. तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना देसूणवाससयजाया ते छप्पिय रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी विहरइ, तं जहा–पडिबुद्धिं जाव जियसत्त पचालाहिवइ।

सूत्र २९ मल्लीकुमारी जब सौ वर्ष से कुछ कम आयु की हुई तब अपने पूर्व भव के मित्रो के विषय मे अपने अवधिज्ञान से जानने लगी जो यहा पर प्रतिबुद्धि, जितशत्रु आदि बने है।

29. When Princess Malli was a little less then one hundred years old she became aware of the present state of her friends from the earlier birth through her Avadhi Jnana (extra-sensory perception of the physical dimension)

मोहनगृह का निर्माण

सूत्र ३० तए ण सा मल्ली विदेहवररायकन्ना कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–"गच्छह ण देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एग महं मोहणघरं करेह अणेयखभसयसन्निविट्ठं। तत्थ ण मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह। तेसिं ण गब्भघराण बहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह। तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेह।" ते वि तहेव जाव पच्चप्पिणति।

सूत्र ३० एक दिन मल्लीकुमारी ने सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! जाओ और अशोक वाटिका मे एक विशाल मोहनघर (मायामहल) बनाओ जिसमें अनेक स्तम्भ हो। उस सभागृह के बीचोबीच छह कमरो से घिरा एक जालीदार कमरा बनाओ। इस जालीदार कमरे के बीचोबीच एक मणियो से जड़ी चौकी बनाओ।" सेवकों ने यह सब काम पूरा कर वापस आ उन्हे सूचना दी।

CONSTRUCTION OF THE HOUSE OF ILLUSION

30. One day Princess Malli called her staff and said, "Beloved of gods! Go to the Ashok garden and arrange to construct a large house of

illusion having numerous pillars At the exact centre of this building construct a room with grills surrounded by six other connected rooms At the centre of this room erect a pedestal inlaid with gems" The attendants carried out the order and reported back

सूत्र ३१. तए णं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरिसत्तयं सरिसव्वयं सरिस-लावन्न-जोव्वण-गुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ, करित्ता जं विपुलं असणं पाणं खाइम साइमं आहारेइ, तओ मणुन्नाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी विहरइ।

सूत्र ३१ मल्लीकुमारी ने तब अपनी अनुकृति की, समान त्वचा, समवय, समान लावण्य, यौवन, और गुणयुक्त सोने की एक समाकार मूर्ति बनवाकर उस चौकी पर रखवाई। इस खोखली मूर्ति के मस्तक पर एक छेद था और उस पर कमल का ढक्कन। मल्लीकुमारी प्रतिदिन जो स्वादिष्ट भोजन करती उसमे से एक ग्रास नित्य मस्तक के छेद से उस मूर्ति में डालने लगी।

31. Now Princess Malli arranged for a life-size statue, an exact replica of her own self in gold, and got it installed on the pedestal This idol resembled her in all parameters including skin-tone, age, charm, youth, and other attributes It was a hollow idol with a hole at the top and it was covered with a lotus Princess Malli started dropping one handful of the rich food she ate into the hollow idol through this hole every day

सूत्र ३२. तए णं तीसे कणगमईए जाव मत्थयछिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिडे पक्खिप्पमाणे पक्खिप्पमाणे पउमुप्पलपिहाणं पिहेइ। तओ गंधे पाउब्भवइ, से जहानामए अहिमडेइ वा जाव चेव अमणामतराए।

सूत्र ३२ मूर्ति के भीतर नित्य भोजन डालकर वह छेद कमल के ढक्कन से बन्द कर देती। इससे उसमे से ऐसी अप्रिय और भीषण दुर्गन्ध निकलने लगी जिसकी तुलना मे सर्प आदि मृत जीवो के सडे शरीर से निकलती गंध भी कुछ नही थी।

32. She would close the hole with the lotus-lid after dropping the food After a few days it started emitting a stench that was much more foul and obnoxious even as compared with that emitted by putrefied dead bodies

राजा प्रतिबुद्धि

सूत्र ३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसले नाम जणवए होत्था। तत्थ णं सागेए नाम नयरे होत्था। तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे।

तत्थ णं नयरे पडिबुद्धी नाम इक्खागराया परिवसइ, तस्स पउमावई देवी, सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड भेद-उपप्पयाण-नीतिसुपउत्त-णयविहण्णू जाव रज्जधुराचिंतए होत्था।

सूत्र ३३. काल के उसी भाग में कौशल देश के साकेत नगर से उत्तर-पूर्व दिशा में एक नाग मंदिर था। उस चमत्कारी मन्दिर में की गई सेवा सफल होती थी। उसके अधिष्ठाता नागदेव का कथन सत्य होता था।

साकेत नगर में इक्ष्वाकुवश का राजा प्रतिबुद्धि राज्य करता था। उसकी पटरानी का नाम पद्मावती था और अमात्य का नाम सुबुद्धि था। सुबुद्धि बड़ा नीतिवान था और योग्यता से राज्य का सचालन करता था।

KING PRATIBUDDHI

33. During that period of time, on the north eastern side of the city of Saket in the Kaushal country there was a temple of a serpent-god Any worship done in that temple was said to be fruitful. Whatever the deity conveyed always came true.

The king of Saket city was Pratibuddhi; he belonged to the Ikshvaku clan The name of his principal queen was Padmavati, and that of his minister was Subuddhi Minister Subuddhi was an able and just administrator, he managed the affairs of the state well

सूत्र ३४. तए णं पउमावईए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था। तए णं सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. जाव बद्धावेत्ता एवं वयासी-"एवं खलु सामी ! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सइ, तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नय गमित्तए, तुब्भे वि णं सामी ! मम नागजन्नंसि समोसरह।"

सूत्र ३४. एक बार नागपूजा के उत्सव पर पद्मावती देवी राजा प्रतिबुद्धि के पास गई और बोली-"स्वामी ! कल मुझे नागपूजा करनी है। आपकी अनुमति लेकर मैं पूजा के लिये जाना चाहती हूँ। मेरी इच्छा है कि आप भी उस पूजा में सम्मिलित हों।"

34. Once on the occasion of the annual snake-worship festival, Queen Padmavati approached King Pratibuddhi and said, "Sire! Tomorrow I have to worship the serpent-god I wish to seek your permission and go I also wish that you too join me in the worship rituals "

सूत्र ३५ तए ण पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रण्णा अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी- "एव खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्ल नागजन्नए भविस्सइ, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वयह-

"एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल नागजन्नए भविस्सइ, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! जलथलय-भासुरप्पभूय दसद्धवन्नं मल्ल नागघरयंसि साहरह, एग च ण महं सिरिदामगड उवणेह। तए ण जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेण णाणाविहभत्तिसुविरइयं करेह। तसि भत्तिसि हंस-मिय-मऊर-कोच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्तिचित्त महग्घ महरिहं विपुल पुप्फमडव विरएह। तस्स ण बहुमज्झदेसभाए एग महं सिरिदामगड जाव गधद्धुणि मुयत उल्लोयसि ओलबेह। ओलबित्ता पउमावइं देवि पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठह।" तए ण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति।

सूत्र ३५ प्रतिबुद्धि ने रानी से अपनी सहमति प्रकट की। रानी ने प्रसन्न हो सेवको को बुलाया और कहा-"देवानुप्रियो, कल मेरे यहाँ नागपूजा होगी। अत तुम माला बनाने वालो को बुलाओ और कहो-

'कल महारानी नागपूजा करेगी अत तुम लोग जल-थल के पचरगे ताजा फूलो का एक गजरा बनाकर नाग-मन्दिर मे लाओ। साथ ही उन फूलो की सुन्दर रचनाओं से उस मन्दिर को सजाओ। उस रचना मे हस, मृग, मोर, क्रौच, सारस, चकवा, मैना, कोयल, ईहामृग, वृषभ, घोडा आदि के चित्रो से भरा, प्रतिष्ठित लोगो के बैठने योग्य एक विशाल मडप बनाओ। उस मडप के बीच मे सुरभित पुष्पो के गजरे छत पर लटकाओ।' यह सब कार्य पूर्ण कर वही रुको और महारानी की प्रतीक्षा करो।" यह कार्य पूर्ण कर सेवक महारानी की प्रतीक्षा करते मदिर मे रुक जाते है।

35. King Pratibuddhi accepted the queen's proposal The joyous queen called her staff and said, "Beloved of gods! Tomorrow I shall worship the serpent-god As such, you call the garland makers and tell them—

'Tomorrow the queen will be going for the worship of the serpent-god so you should make an intwined garland of multicoloured fresh flowers from land as well as water, and bring it to the temple of the serpent-god You should also decorate the temple with beautiful art-work made of such flowers. This flower decoration should also have a large pavilion suitable to accommodate the cream of the society. It should have figures of swan, deer, peacock, heron, crane, ruddy-goose, starling, cuckoo, Ihamrig, bull, horse, etc made up of flowers. Suspend large garlands of fragrant flowers at various points at the ceiling.' When they complete this work you stay their and wait for the queen." The attendants carried out the order and stayed back in the temple waiting for the queen

सूत्र ३६. तए णं सा पउमावई देवी कल्लं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त-सम्मज्जियोवलित्त जाव पच्चप्पिणंति।"

सूत्र ३६ दूसरे दिन सुबह पद्मावती देवी ने सेवकों को बुलाकर कहा-"हे देवानुप्रियो ! साकेत नगर को भीतर बाहर पानी से धुलवाकर साफ कराओ, लिपाई कराओ और सुगन्ध से भरकर मनोरम बना दो।" सेवकों ने कार्य सम्पन्न किया।

36. Next morning Queen Padmavati called her servants and said, "Beloved of gods! Get the interior and exterior parts of the city of Saket cleaned, white-washed and perfumed. Make the city attractive." The attendants carried out the order

सूत्र ३७ तए ण सा पउमावई देवी दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह।" तए णं ते वि तहेव उवट्ठवेंति।

तए ण सा पउमावई अतो अतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा।

सूत्र ३७ पद्मावती देवी ने तब सेवकों से कहा-"शीघ्र ही तेज चाल वाले घोड़ों को जोतकर रथ ले आओ।" सेवक रथ ले आए। पद्मावती देवी अपने अन्तःपुर से स्नानादि सभी कार्य निपटा वस्त्रालकार पहन बाहर आईं और रथ पर सवार हो गईं।

37. After this Queen Padmavati ordered her attendants, "Bring a chariot drawn by fast horses" The attendants brought the chariot.

Getting ready after bath and putting on her dress and ornaments the queen came out of her palace and climbed into the chariot

सूत्र ३८. तए णं सा पउमावई नियगपरिवालसंपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ। ओगाहित्ता जलमज्जण जाव परम-सुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइं जावं गेण्हइ। गेण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ३८ अपने स्वजनों को साथ ले साकेत नगर के बीच होती हुई पद्मावती पुष्करिणी-बावडी नदी के तट पर आईं। वहाँ बावडी मे उतर स्नानादि कर स्वच्छ हो, कमल आदि फूल लेकर नाग-मंदिर जाने को रवाना हुईं।

38. Taking her friends and relatives along and passing through the town, Queen Padmavati arrived at the river bank She entered the river and after taking her bath and collecting lotus flowers she left for the temple of the serpent-god

सूत्र ३९ तए ण पउमावई दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति।

तए णं पउमावई सव्विड्ढीए जेणव णागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरय अणुपविसइ, अणुपविसित्ता लोमहत्थगं जाव धूव डहइ, डहित्ता पडिबुद्धि राय पडिवालेमाणी पडिवालेमाणी चिट्ठइ।

सूत्र ३९ पद्मावती देवी की अनेक दासियाँ हाथो मे फूलो की टोकरियाँ और धूपदानियाँ लेकर उनके पीछे-पीछे चलने लगी। वे अपने सारे साज-सामान के साथ नाग-मन्दिर पहुँची। मन्दिर के गर्भगृह मे जा पीछी से प्रतिमा को साफ किया और धूप खेई। फिर वे राजा प्रतिबुद्धि की प्रतीक्षा करने लगी।

39. Numerous maid servants carrying baskets filled with flowers and pots filled with incense walked behind Queen Padmavati She reached the temple with all the accompanying grandeur She entered the sanctum sectorum of the temple and cleaned the idol with pea-cock feather brush She performed the ritual of burning incense After all these rituals she waited for the arrival of King Pratibuddhi

पुष्प-मण्डप

सूत्र ४०. तए णं पडिबुद्धी राया ण्हाए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-जोह-महयाभडचडगरपहकरेहिं

साकेयं नगरं मज्झं-मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव णागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं।

सूत्र ४० राजा प्रतिबुद्धि स्नानादि से निवृत्त हो उत्तम हाथी पर सवार हुआ। छत्र-चामर से सुशोभित हो आगे चतुरंगिनी सेना, सुभट आदि समस्त वैभव ले वह नगर के बीच से होता हुआ नाग-मंदिर पहुँचा। हाथी से उतरते ही प्रतिमा पर दृष्टि गई तो उसने प्रणाम किया और पुष्प-मण्डप मे प्रवेश किया। वहाँ उसने एक विशाल गजरा देखा।

THE FLORAL PAVILION

40. After getting ready King Pratibuddhi rode his best elephant Accompanied by attendants carrying the royal umbrella and whisks, the brigade of guards, and all his grandeur, King Pratibuddhi passed through the city and arrived at the temple When he got down from the elephant he chanced to look at the idol and bowed before it He entered the floral pavilion and at once saw a large intwined garland of flowers

सूत्र ४१ तए ण पडिबुद्धी त सिरिदामगडं सुदूर कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तसि सिरिदामगडसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–

"तुम ण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर. जाव संनिवेसाइं आहिंडसि, बहूणि राईसर जाव गिहाइं अणुपविससि, त अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?"

सुत्र ४१ उस सुन्दर गजरे को देख राजा प्रतिबुद्धि चकित रह गया और अमात्य सुबुद्धि से पूछा–"हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत के रूप में अनेक ग्राम-नगरादि स्थानों पर और राजाओ-जागीरदारो आदि व्यक्तियो के घरो में आते-जाते रहे हो। क्या तुमने पद्मावती देवी के इस गजरे जैसा सुन्दर गजरा पहले भी कहीं देखा है?"

41. The king was dumbstruck looking at the enchanting beauty of the garland He asked minister Subuddhi, "Beloved of gods! As my emissary you frequent numerous cities, villages and other such places and visit the houses of kings, landlords, and other such people Tell me, have you ever seen an entwined garland as beautiful as this one belonging to Queen Padmavati?"

सूत्र ४२. तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी-"एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहवररायकन्नाए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे। तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमं पि कलं न अग्घइ।"

सूत्र ४२ अमात्य सुबुद्धि ने उत्तर दिया-"स्वामी ! मैं एक बार आपके दूत के रूप में किसी काम से मिथिला नगरी गया था। वहाँ मैंने राजा कुंभ और रानी प्रभावती की पुत्री, विदेह राजकन्या, राजकुमारी मल्ली के जन्म दिवस के महोत्सव के समय एक दिव्य गजरा देखा था। उसके सामने महारानी पद्मावती का यह गजरा उसके एक बाल के अंश के बराबर भी नहीं ठहरता।"

42. Minister Subuddhi replied, "Sire! Once I went on some mission as your emissary to Mithila city. There, on the occasion of the birthday celebrations of Princess Malli, the daughter of King Kumbh and Queen Prabhavati, I saw a divine entwined garland Queen Padmavati's garland stands nowhere as compared to that, even a thin fiber from that garland was much more attractive than this whole garland."

मल्लीकुमारी की प्रशंसा

सूत्र ४३. तए णं पडिबुद्धी राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी-"केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहवररायकन्ना जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमं पि कल न अग्घइ ?"

तए ण सुबुद्धी अमच्चे पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी-"एव खलु सामी ! मल्ली विदेह-वररायकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा, वन्नओ।"

सूत्र ४३. राजा प्रतिबुद्धि ने अमात्य से कहा-"वह मल्लीकुमारी कैसी है जिसके जन्म-दिवस के उत्सव के गजरे की तुलना में यह गजरा तुच्छ सा है ?"

सुबुद्धि ने उत्तर दिया-"स्वामी ! विदेह राजकन्या मल्ली सुप्रतिष्ठित और अपूर्व सुन्दरी है। (उसके चरण कछुए के समान उन्नत हैं आदि विस्तृत वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के समान)"

PRAISE OF PRINCESS MALLI

43. King Pratibuddhi asked further, "What about Princess Malli, whose birthday-celebration-garland you are so praising?"

Subuddhi replied, "Sire! the princess of Videh is a famous and divinely beautiful lady (Her feet are smoothly curved like a tortoise etc as mentioned in Jambudveep Prajnapti)"

सूत्र ४४. तए णं पडिबुद्धी राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सिरिदामगडजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"गच्छाहि ण तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं, तत्थ ण कुम्भगस्स रण्णो धूयं पउमावईए देवीए अत्तयं मल्लिं विदेहवररायकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि ण सा सयं रज्जसुंका।

सूत्र ४४ अमात्य की यह बात सुन-समझकर राजा प्रतिबुद्धि के मन मे मल्लीकुमारी और उसके गजरे के अपूर्व सौन्दर्य के प्रति अनुराग की भावना उठी। उन्होने अपने दूत को बुलाकर कहा-"देवानुप्रिय ! तुम मिथिला राजधानी जाओ और राजा कुम्भ तथा रानी प्रभावती की कन्या मल्लीकुमारी का हाथ मेरे लिए माँगो। इसके लिये चाहे अपना सारा राज्य ही क्यो न प्रतिदान मे देना पडे।"

44. This description by the minister evoked a feeling of fondness to the extant of infatuation for Princess Malli and her garland in the mind of King Pratibuddhi He called one of his emissaries and said, "Beloved of gods! Proceed to Mithila city and ask for the hand of Princess Malli for me from her parents, King Kumbh and Queen Prabhavati It does not matter if I have to give away my whole kingdom as dowry"

सूत्र ४५ तए ण से दूए पडिबुद्धिणा रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरह पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरूढे जाव हय-गय-महयाभडचडगरेण साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ४५ दूत ने राजा की आज्ञा सहर्ष स्वीकार की और अपने घर लौटा। वहाँ उसने अपने चार घटो वाले रथ मे घोडे जोतकर उसे यात्रा के लिए तैयार किया। उस रथ पर सवार हो बहुत से घोडे, हाथी और पैदल सैनिको को साथ ले उसने साकेत नगर से निकल विदेह जनपद की राह पर मिथिला के लिये प्रस्थान किया।

45. The emissary felt honoured and returned home He prepared a chariot drawn by four horses for his journey. Taking along a large contingent of horses, elephants, and soldiers he left Saket and commenced his journey to Mithila city in Videh country.

राजा चन्द्रच्छाय

सूत्र ४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अंगे नाम जणवए होत्था। तत्थ णं चंपानामं णयरी होत्था। तत्थ ण चपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था।

सूत्र ४६. काल के उसी भाग में अग जनपद की चम्पानगरी मे अंगराज चन्द्रच्छाय राज्य करते थे।

KING CHANDRACCHAYA

46. During that period of time King Chandracchaya reigned over Champa city in the Anga country

सूत्र ४७. तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नकपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया। तए ण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था, अहिगयजीवाजीवे, वन्नओ।

सूत्र ४७. चम्पानगरी मे अर्हन्नक आदि अनेक समृद्धिशाली और प्रतिष्ठित सायात्रिक (विदेश जाकर व्यापार करने वाले) और नौवणिक् (नौकाओ से व्यापार करने वाले) रहते थे। अर्हन्नक एक श्रमणोपासक था और जीव-अजीवादि तत्त्वो का ज्ञाता था (विस्तृत वर्णन पूर्व सम)।

47. In the city of Champa lived Arhannak and other wealthy and reputed Sanyantriks (merchants who went to other countries for trade) and Nauvaniks (merchants who carried their merchandise in boats) Arhannak was a Shramanopasak (a worshiper of Shramans or a Jain) and conversant with fundamentals like being and matter (details as before).

सूत्र ४८. तए णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं सजत्ताणावावाणियगाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पज्जित्था–

"सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिम च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भडग गहाय लवणसमुद्दं पोय-वहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्ज च भडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडिसागडियं च सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स च धरिमस्स च मेज्जस्स च पारिच्छेज्जस्स च भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति, भरित्ता सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण भोयणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडिसागडियं

जोयंति, चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति।

सूत्र ४८ एक दिन ये सभी व्यापारी एक स्थान पर एकत्र हुए तो उनमें आपस में मत्रणा हुई–"हमे गणिम (सख्या मे बेची जाने वाली), धरिम (तोल से बेची जाने वाली), मेय (नाप से बेची जाने वाली) और परिच्छेद (टुकडों मे बेची जाने वाली), ये चार प्रकार की वस्तुएँ लेकर समुद्र-यात्रा पर निकलना चाहिये।" सभी इस प्रस्ताव से सहमत हुए और तदनुसार विक्रय योग्य सभी सामग्री एकत्र की। गाड़ी-गाड़े साफ कर तैयार किये और उनमे वह सब सामग्री भर दी। फिर शुभ मुहूर्त देख अशन-पान आदि भोज सामग्री का प्रबन्ध कर अपने स्वजनो को भोज दिया और यात्रा के लिए उनकी अनुमति ली। फिर वे गाडी-गाडे जोत चम्पानगरी के बीच से होते हुए गभीर बन्दरगाह पर आए।

48. One day when all these merchants met together they discussed, "We should stock the four categories of goods and go on a sea-voyage. The four categories being—Ganim or the goods that are sold in numbers, Dharim or the goods that are sold by weight, Meya or the goods that are sold by measurement, and Paricched or the goods that are sold in pieces " Everyone agreed to this proposal and accordingly started collecting salable goods They got their carts and trucks cleaned and loaded them with the collected goods. They then looked for an auspicious moment, invited their friends and relatives on a feast and sought their permission for the proposed voyage. Once they got the permission they drove their transports through the town and arrived at Gambhir port

समुद्र–यात्रा

सूत्र ४९ उवागच्छित्ता सगडिसागडियं मोयंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य धरिमस्स य मेज्जस्स य परिच्छेज्जस्स य चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति, भरित्ता तंडुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स य उदयभायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य पावरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति। भरित्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति।

सूत्र ४९ बन्दरगाह पर पहुचकर गाडी-गाडे खडे कर उन्होंने जहाज तैयार किये और फिर वह सारी सामग्री जहाज मे भर दी। साथ ही उसमे चावल, आटा, तेल, घी, दही, पानी, पानी के बरतन, औषधियाँ, भेषज, घास, लकडी, वस्त्र, शस्त्र तथा अन्य सभी आवश्यक वस्तुएँ भी जहाज मे भर ली। अच्छा मुहूर्त्त देख स्वजनों को पुन भोज दिया और उनसे विदा ली और तट पर जहाजो के पास आये।

THE SEA-VOYAGE

49. At the port they parked their carts and made their ships sea-worthy They filled the holds of the ships with their merchandise Also loaded were other essential things including rice, flour, oil, Ghee, curd, potable water, water tanks and other utensils, drugs and medicines, hay, wood, dresses, and weapons At an auspicious moment they again invited their friends and bidding them good-bye they arrived at the pier near the ships

सूत्र ५० तए ण तेसि अरहन्नगपामोक्खाण जाव वाणियगाण परियणा जाव ताहि वग्गूहि अभिनदता य अभिसथुणमाणा य एव वयासी-"अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देण अभिरक्खिज्जमाणा अभिरक्खिज्जमाणा चिर जीवह, भद्द च भे, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियग घर हव्वमागए पासामो" त्ति कट्टु ताहि सोमाहि निद्धाहि दीहाहि सप्पिवासाहि पप्पुयाहि दिट्ठीहि निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्त सचिट्ठति।

सूत्र ५० अर्हन्नक आदि वणिको के स्वजनो ने मधुर वाणी मे उनकी प्रशसा और अभिनन्दन करते हुए कहा-"हे आर्य ! हे तात ! हे भाई ! हे मामा ! आप इन वरुण देव के सरक्षण मे चिरजीवी हो। आपका मगल हो। हम शीघ्र ही आपको निर्विघ्न यात्रा से धन-लाभ और कार्य सपन्न कर लौटा हुआ यथावत् देखे।" और व लोग इन यात्रियो को मधुर, स्नेहमय, अपलक, प्यासी और भीगी आँखो स दखते हुए कुछ देर वही खडे रहे।

50. The friends and relatives of Arhannak and other merchants offered the voyagers greetings and praises in sweet voice, "Gentlemen! (or father, brother, uncle, etc) May you live long under the protection of Varun, the god of water May all go well with you May we see you back soon successful and prosperous after a trouble free voyage " They stood there for some time looking at the voyagers with loving, fond, unblinking, expectant, and tearful eyes

सूत्र ५१. तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु, दिन्नेसु सरस-रत्तचंदण-दद्दर-पंचगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि धूवंसि, पूइएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयबाहासु, ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्ठसीहनाय जाव रवेणं पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूयं पिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं जाव वाणियगा णावं दुरूढा।

सूत्र ५१. फिर नाव की पूजा की गई। चंदन के लेप को हथेली में लगाकर छापे लगाए गए और धूप खेई गई। समुद्री पवन की पूजा की गई। वाद्यों की मधुर स्वर-लहरी आरंभ की गई। यह सब कार्य होने पर और यात्रा के लिए राजा का आदेश पत्र प्राप्त हो जाने पर शुभ शकुन देख सभी यात्री ऊँचे स्वर में सिंहनाद कर महासमुद्र जैसी गर्जन से धरती गुँजाते हुए एक दिशा से नाव पर चढ़े।

51. After this the ritual worship of the ship was performed. Palm imprints with sandal wood paste were applied on the ship and incense was burned In the end, ritual worship of the sea wind was performed. Instrumental music was played By the time all this was concluded they also received the official permission from the king to travel. At an auspicious moment all the voyagers boarded the ship from one side, hailing the start of journey The chorus of this hail was as loud and booming as the thunderclap of giant waves of the ocean

सूत्र ५२. तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु-"हं भो ! सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी, उवट्ठियाइं कल्ला-णाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइ, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो।"

तओ पुस्समाणवेण वक्कमुदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधार-कन्नधार-गब्भिज्ज-सजत्ताणावावाणियगा वावारिंसु, तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहि बंधणेहिंतो मुंचंति।

सूत्र ५२ तब चारणो ने कहा-"हे श्रेष्ठियो ! आप सभी को अर्थ लाभ हो। आपका कल्याण हो और आपके सभी विघ्न-बाधाएँ नष्ट हों। अभी पुष्य नक्षत्र का योग है और विजय नाम का मुहूर्त्त है, इस कारण यह देश-काल यात्रा के लिए श्रेष्ठ है।" यह सुनकर प्रसन्न हो चप्पू चलाने वाले नाविक, कर्णधार, गर्भज (नाव के मध्य में नियुक्त) कार्यकर्त्ता तथा वे व्यवसायी और अन्य यात्री अपने-अपने कार्यों में जुट गये और फिर माल से भरी उस मंगल-मुखी नाव की तट से बँधी रस्सियों को खोल दिया गया।

52. Bards said in farewell, "O Merchants! May you be prosperous May all be well with you and all your troubles and impediments vanish It is the auspicious conjunction of the Pushya constellation

and the victorious moment according to astrology, as such, it is a good moment to commence an overseas voyage" The helmsmen, peddlers, and other sailors along with the merchants and other passengers took charge of their respective duties and stations. At last the mooring lines of this auspicious ship, loaded with merchandise, were cast off

सूत्र ५३. तए णं सा णावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिल-तिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी सखुब्भमाणी उम्मी-तरंग-मालासहस्साइं समतिच्छमाणी समतिच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा।

सूत्र ५३ पवन के धक्के से वह नाव चल पडी। सफेद पाल चढ़ी वह नाव ऐसी लगती थी जैसे पंख फैलाए कोई युवा गरुडी उड रही हो। गंगा नदी के तीव्र प्रवाह से वेग प्राप्त कर सहस्रों छोटी-बडी लहरों को पार करती वह नाव कुछ ही दिनो मे लवण समुद्र मे कई सौ योजन दूर चली गई।

53. The force of wind pushed the ship With white sails it appeared as if an eagle was gliding with its wings spread The rapid flow of the Ganges added to its speed and crossing thousands of large and small waves, it went hundreds of Yojans ahead on the Lavana sea within a few days

भयावह आकृति

सूत्र ५४. तए णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण संजत्तानावावाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइं। तं जहा–

सूत्र ५४. इतनी दूर समुद्र में आ जाने पर अर्हन्नक तथा उसके सहयात्रियो को अनेक उत्पातों का सामना करना पड़ा।

HORRIFIC APPARITION

54. When they reached so far on the sea Arhannak and his companions came across numerous troubles and problems.

सूत्र ५५. अकाले गज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं आगासे देवताओ णच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति।

सूत्र ५५ अकाल गर्जना होने लगी, अकाल ही बिजली चमकने लगी। अकाल ही आकाश मे मेघ घिर आये और घन गर्जना होने लगी और इन सबके अतिरिक्त एक महापिशाच की आकृति दिखाई दी।

55. There were unexpected thunder and lightning. Suddenly the horizon was full of dense and thundering dark clouds. Besides these a giant demonic shape appeared

सूत्र ५६. तालजंघ दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसगमहिसकालगं, भरिय-मेहवन्नं, लबोट्ठ, निग्गयग्गदतं, निल्लालियजमलजुयलजीहं, आऊसिय-वयणगंडदेसं, चीणचिपिट-नासिय, विगयभुग्गभुग्गभुमयं, खज्जोयग-दित्तचक्खुरागं, उत्तासणगं, विसालवच्छं, विसालकुच्छिं, पलबकुच्छिं, पहसियपयलियपयडियगत्त, पणच्चमाणं, अप्फोडंतं, अभिवयंत, अभिगज्जंतं, बहुसो बहुसो अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पलगवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय अभिमुहमावयमाणं पासंति।

सूत्र ५७ तए ण ते अरहण्णगवज्जा संजत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसाय पासति–तालजंघं, दिव गयाहिं बाहाहिं, फुट्टसिरं भमर-णिगर-वरमासरासिमहिसकालगं, भरियमेहवण्णं, सुप्पणहं, फालसरिसजीहं, लंबोट्ठं धवल-वट्ट-असिलिट्ठ-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयणं, विकोसिय-धारासिजुयल-समसरिस-तणुयचचल-गलंतरसलोल-चवल-फुरुफुरंत-निल्लालियग्गजीहं अवयत्थिय-महल्ल-विगय-वीभच्छ-लालपगलत-रत्ततालुय हिंगुलुय-सगब्भकंदर-बिलं व अंजणगिरिस्स, अग्गिजालुग्गिलतवयण आऊसिय-अक्खचम्म-उइट्ठगंडदेसं चीण-चिविड-वंक-भग्गणासं, रोसागय-धम-धमेन्त-मारुय-निट्ठुर-खर-फरुसझुसिरं, ओभुग्गणासियपुडं घाडुब्भड-रइय-भीसणमुह, उद्धमुहकन्न-सक्कुलिय-महंत-विगय-लोम-संखालग-लंबंत-चलियकन्नं, पिंगल-दिप्पतलोयण, भिउडितडियनिडाल नरसिरमाल-परिणद्धचिंधं, विचित्तगोणस-सुबद्धपरिकरं अवहोलंत-पुप्फुयायंत-सप्पविच्छुय-गोधुंदर-नउ-लसरड-विरइय-विचित्त-वेयच्छमालियाग, भोगकूर-कण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्नपूरं, मज्जार-सियाल-लइयखंधं, दित्तघुघुयतघूयकयकुंतलसिरं, घंटारवेण भीमं, भयंकरं, कायरजणहिययफोडणं, दित्तमट्टट्टहास विणिम्मुयंतं, वसा-रुहिर-पूय-मंस-मलमलिणपोच्चडतणुं, उत्तासणयं, विसालवच्छ, पेच्छंता, भिन्नणह-मुह-नयण-कन्नं वरवग्घ-चित्तकत्तीणिवसणं, सरस-रुहिर-गयचम्म-वितत-ऊसविय-बाहुजुयलं, ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-अणिट्ठ-दित्त-असुभ-अप्पिय-अकंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासंति।

सूत्र ५६-५७. (समन्वित अर्थ) पिशाच की जाँघें ताड़ के पेड जैसी लम्बी थीं और बाहें आकाश छूती थीं। उसके बिखरे हुए बालों से मस्तक ऐसा लग रहा था जैसे फूटा हुआ हो। वह काजल, काले चूहे, भँवरों के झुण्ड, उड़द के ढेर, काले भैंसे और जल भरे मेघ जैसे काले रंग का था। उसके नाखून छाजले जैसे थे। उसकी जीभ हल के फल जैसी थी और होंठ लम्बे थे। उसकी छीदी-छीदी दाढ़ें सफेद, गोल, तीखी, मजबूत, मोटी और टेडी-मेढ़ी थीं। उसकी जीभ चिरी हुई थी और दोनों अग्र भाग बिना म्यान की धारदार दो तलवारो जैसे पतले व चंचल थे और उनसे निरन्तर लार टपक रही थी। वे दोनो रस लोलुप जीह्वा मुँह से बाहर निकले हुए थे और तेजी से लपलपा रहे थे। उसका लार टपकाता, झाँकते लाल-लाल तालू वाला खुला मुख बड़ा ही विकृत और वीभत्स दिखाई देता था। उसके मुँह से अग्नि ज्वालाएँ निकल रही थीं जिससे वह ऐसा लगता था जैसे किसी काले पहाड की सिंदूर से भरी गुफा हो। उसके गाल पिचके हुए और चमडी सिकुड़ी हुई थी। उसकी नाक छोटी, चपटी, टेढ़ी और टूटी हुई थी। क्रोध के कारण उसके नथुनों से निष्ठुर और कर्कश फूत्कार निकल रही थी।

उसका चेहरा विकृत और भीषण था। उसके दोनों कान लम्बे और हिलते हुए थे, उनके आँख की कोर को छूते किनारे ऊँचे उठे हुए थे और उन पर लम्बे-बिखरे बाल थे। उसके नयन पीले और जुगनू की तरह चमकते हुए थे। उसकी भृकुटि तनी हुई थी और ललाट पर तड़ित जैसी दिख रही थी। उसके गले मे नर-मुंडों की माला लिपटी थी। उसने गोनस साँपो को परिधान की तरह लपेटा हुआ था और रेगते-फुसकारते साँप, बिच्छू, गोह, चूहा, नेवला और गिरगिट जैसे जन्तुओ की विचित्र माला पहनी हुई थी। भयावह फन वाले फुसकारते दो काले साँपों को उसने लम्बे लटकते कुडलों की तरह कान मे धारण कर रखा था। अपने दोनो कंधो पर उसने बिलाव और सियार बैठा रखे थे। छू-छू करते चमकते उल्लू को उसने मुकुट के समान सिर पर धारण कर रखा था। वह घटे के कर्णभेदी नाद के समान भयकर और कायरों के दिल को दहलाने वाला क्रूर अट्टहास कर रहा था। उसके सारे शरीर पर चर्बी, रक्त, मवाद, माँस और मल लिपटे थे। वह सभी प्राणियों के लिये त्रासदायक था। उसकी छाती चौडी थी। उसने नाक, मुख, नेत्र और कान युक्त अद्‌भुत व्याघ्र-चर्म पहन रखा था। उसने अपने दोनो हाथो में रस और रुधिर से गीला हाथी का चमडा ऊपर की ओर उठा रखा था। वह नाचता, आकाश को फोडता, गर्जन और अट्टहास करता सामने से आता दिखाई दे रहा था। वह अपने कठोर, क्रूर, अनिष्ट, उत्तापजनक, अशुभ, अप्रिय और कर्कश स्वर से नाव पर बैठे लोगो को डरा रहा था।

56-57. (assimilated meaning) Its thighs were as long as a palm tree and hands touched the sky. Due to its disheveled hair its head

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दृढ़धर्मी अर्हन्नक

चित्र २३

चम्पा नगरी का धनाढ्य व्यापारी अर्हन्नक वीतराग अरिहन्त का उपासक था। धर्म की दृढ़ श्रद्धा उसकी रग रग में रमी थी। एक बार वह बहुत से व्यापारियों को साथ लेकर लवणसमुद्र की यात्रा पर गया। यात्रा करते हुए अचानक समुद्र में भारी तूफान उठा। प्रचण्ड पवन वेग से नाव के मस्तूल टूट गये। और नाव समुद्र में हिचकोले खाने लगी। सभी यात्री घबरा उठे। तभी अचानक आकाश में एक भयंकर दैत्य विकराल रूप लिए दिखाई दिया। अर्हन्नक को सम्बोधित करके उसने ललकारा "हे अर्हन्नक! आज तेरा और तेरे सभी साथियों का मरण आया। देखता है मैं अभी तेरी नाव को उलटकर समुद्र में डुबा दूँगा और तुम सब लवण समुद्र में [illegible]कर मगर-मच्छों के भक्ष्य बन जाओगे। हाँ, यदि तू मेरी बात मानकर निर्ग्रन्थ प्रवचन का त्याग करके अपने लिए हुए व्रतों को छोड़ दे तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ दूँगा।

राक्षस की ललकार से सभी यात्री घबरा गए हैं। परन्तु अर्हन्नक निर्भय [illegible] अरिहन्त प्रभु का स्मरण कर रहा है। राक्षस के बार-बार [illegible] शान्त बैठा रहा। अन्त में उसकी दृढ़धर्मिता की विजय [illegible] प्रसन्न होकर दो दिव्य कुण्डल अर्हन्नक को भेंट कर क्षमा माँग कर चला गया। (अध्ययन ८)

DEVOUT ARHANNAK

ILLUSTRATION 23

Merchant Arhannak of Champa, with some other wealthy merchants went sea-faring on the Lavana sea. Suddenly, on the high seas, there arose a terrible storm. The tremendous force of wind shattered the masts and sails and the ship started rocking. Suddenly the horizon was full of dense and thundering, dark clouds. Besides these a giant and fearsome demonic shape appeared. This apparition asked Arhannak "Lo! Arhannak, you and your friends today face your death. I will sink your ship in the sea. You will drown in the Lavana sea and become food of sea creatures. However if you do as I say and go against the word of the Shramans by abandoning the vows you have taken, I shall leave you alone."

All the other passengers are afraid. Fearless Arhannak remains absorbed in his spiritual meditation with courage, serenity, stability, and silence. In the end his resolve wins. The demon appears in its true divine form, presents two pairs of divine earrings to Arhannak, seeks pardon and departs. **(CHAPTER-8)**

appeared to be parted It was as black as soot, black rat, flock of bumble-bees, heap of Udad (a type of pulse), black buffalo, and rain-clouds Its nails were like spades Its tongue was like a harrow and lips large Its molars were white, round sharp, strong, large, irregular shaped and spread apart Its tongue was split in the middle and both the edges were thin and flexible like two naked fencing swords Saliva was dropping continuously from this double edged tongue hanging out and lolling rapidly as if ready to consume anything

Its saliva dripping mouth, with deep red palate clearly visible, looked ugly and ominous This wide open and flame emitting mouth looked like a vermilion filled cave on a black mountain Its cheeks were hollow and skin stretched Its nose was small, flat, broken and distorted Its anger was evident in the harsh and piercing hissing sound coming out of its nostrils Its face was distorted and awe-inspiring It had large and fluttering ears They were raised high and touched the edges of its eyes, they had long and bushy hair on the edges Its eyes were pale and shining like glow-worms The permanent frown on its face made a lightning shaped line on its forehead

A garland of skulls hung around its neck It had wrapped Gonus snakes on its body like an apparel As an embellishment it had a garland of hissing and slithering creatures including snakes, scorpions, lizards, rats, mongoose, and chameleon As earrings it had two hissing black cobras with fearful hoods suspended on its ears Jackals and tomcats were perched on its shoulders As a crown it had placed a whistling owl on its head Its laughter was accompanied by an ear shattering and terrifying sound like that of a giant gong Its body was plastered with obnoxious things like animal fat, blood, pus, flash, and excreta It terrorized all beings It had a wide chest It was wearing a strange tiger-skin that still had nose, mouth, eyes and ears on it In its raised hands it was holding an elephant skin still drenched in blood and other body fluids It appeared to be dancing, splitting the sky, thundering and laughing and approaching near It terrorized the passengers of the ship with its harsh, cruel, ominous, agitating, evil, hateful, and screeching voice

सूत्र ५८. तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्द-सिव-वेसमण-णागाण भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ट-किरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा ओवाइयमाणा चिट्ठंति।

सूत्र ५८ अर्हन्नक के अतिरिक्त अन्य सभी वणिक् इस तालपिशाच की आकृति को नाव की तरफ आता देखकर डर से एक-दूसरे से लिपट गये और अपने-अपने इष्ट देवो– इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, शिव, वैश्रमण, नाग, भूत, यक्ष, दुर्गा, चण्डी आदि को बारबार पुकारकर मनौती मनाने लगे।

58. Seeing this Pine-demon approach the ship, all the merchants except Arhannak huddled together with fear and remembered and repeated the names of their individual deities like Indra, Skanda, Rudra, Shiva, Vaishraman, Naag, Bhoot, Yaksha, Durga, Chandi, etc for help.

सूत्र ५९. तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिण्णमुहराग-णयणवण्णे अदीणविमणमाणसे पोयवहणस्स एगदेसंमि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"नमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव ठाणं संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे" त्ति कट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ।

सूत्र ५९ श्रमणोपासक अर्हन्नक ने उस दिव्य पिशाच आकृति को अपनी ओर आते देखा। उसे देख अर्हन्नक तनिक भी भयभीत नहीं हुआ। उसके मन में त्रास, चंचलता, भ्रान्ति, व्याकुलता और उद्विग्नता उत्पन्न नहीं हुए। न तो उसके चेहरे का भाव बदला और न आँखों का रंग। हीनता और खिन्नता उससे दूर रही। वह नाव के एक भाग में जा कपड़े के छोर से बैठने के स्थान को साफ करके बैठ गया और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा–"नमोत्थुणं अरहंताणं ... अरिहंत भगवान को मेरा नमस्कार है" (शक्र स्तव का पाठ)। यदि मैं इस उपसर्ग से मुक्त हो जाऊँ तो मैं अपने इस कायोत्सर्ग को भंग करूँगा और यदि इस उपसर्ग से मुक्त न हो सकूँ तो इस कायोत्सर्ग को भंग नहीं करूँगा।" ऐसा कहकर उसने सागारी अनशन का संकल्प ले लिया।

59. Arhannak, the Shramanopasak, also saw the demon approaching but there was no fear in him. It did not evoke any panic, disturbance, illusion, anxiety, or agitation within his mind. There was no change in his facial expression or the colour of his eyes. The feelings of inferiority or sorrow never bothered him. He went to a solitary spot in the ship, cleaned that spot with the end of a cloth and sat down. He joined both his palms and started praying, "I bow to the Arihants. . . . . (the Shakra-panegyric). If I come out of this predicament I will break this meditation of mine otherwise not." Uttering thus he took the house-holders vow to fast and meditate.

सूत्र ६०. तए णं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी–

"ह भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! जाव परिवज्जिया ! णो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा, खडित्तए वा, भंजित्तए वा, उज्झित्तए वा, परिच्चइत्तए वा।

त जइ ण तुमं सीलव्वयं जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एय पोयवहणं दोहिं अगुलियाहि गेण्हामि, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासे उव्विहामि, उव्विहित्ता अतो जलसि णिच्छोलेमि, जेण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

सूत्र ६० तभी वह पिशाचाकृति अर्हन्नक के निकट आया और कहने लगा–"अरे अर्हन्नक ! हे अयाचित की याचना करने वाले। तुम्हे शीलादि व्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास आदि सकल्पो से डिगना, क्षोभ करना, खडित करना, भग करना, त्याग या परित्याग करना नही कल्पता है। किन्तु यदि तूने इनका परित्याग नहीं किया तो मैं तेरी इस नाव को अपनी दो अगुलियो से उठा लूँगा और सात-आठ तल की ऊँचाई तक आकाश मे उछाल दूँगा और फिर जल में डुबा दूँगा। जिससे तू आर्त्तध्यान मे डूब जायेगा, तेरी समाधि भग हो जाएगी और तू अकाल ही जीवनरहित हो जाएगा।"

60. The demonic apparition came near Arhannak and said, "Lo! Arhannak, the follower of the undesired path! It is against your norms to relax, avoid, alter, break, or abandon your vows of etiquette, discipline, review, fasting etc But if you do not do so I will lift this ship of yours with my two fingers and toss it high When it drops down I

shall sink it in the sea You will be possessed by the feeling of misery, your meditation will be interrupted and you will die a premature death."

सूत्र ६१. तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं देव मणसा चेव एवं वयासी-"अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे, नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभेत्तए वा विपरिणामेत्तए वा, तुम ण जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहराग-णयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

सूत्र ६१ अर्हन्नक ने उस देव को मन ही मन उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! मै अर्हन्नक नाम का श्रमणोपासक हूँ और जड तथा चेतन के स्वरूप को जानता हूँ। मुझे विश्वास है कि कोई भी देव, दानव, आदि मुझे निर्ग्रन्थ के उपदेश से विमुख या क्षुब्ध नहीं कर सकता और न उनके विरोध मे ले जा सकता। अत जो तुम्हारे मन मे आये वह करो।" यह विचार कर अर्हन्नक पहले के समान ही निर्भय हो बिना किसी परिवर्तन के निश्चल, निस्पन्द और मौन हो धर्मध्यान में लीन रहा।

61. Arhannak replied silently, "Beloved of gods! I am Arhannak, the Shramanopasak, who has the knowledge of the fundamentals like matter and soul I am confident that no divine or demonic power can disturb my faith in the word of the Nirgranth and turn me against it As such, you may do what you like " With these thoughts Arhannak remained absorbed in his spiritual meditation with courage, serenity, stability, and silence

सूत्र ६२. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नग समणोवासय दोच्च पि तच्च पि एव वयासी-"ह भो अरहन्नगा !" धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

सूत्र ६२ उस दिव्य पिशाच आकृति ने दुबारा-तिबारा अर्हन्नक को पूर्ववत् धमकी दी और अर्हन्नक मन ही मन पूर्ववत् उत्तर देकर धर्म ध्यानमग्न रहा।

62. The demonic apparition again and again threatened but Arhannak still gave the same reply and continued his meditation

सूत्र ६३ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अगुलियाहिं गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नग एव वयासी-"हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तव सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

सूत्र ६३ इस पर उस पिशाच ने धर्मध्यान में लीन अर्हन्नक पर क्रुद्ध हो उस नाव को दो अगुलियों मे उठाया और सात-आठ ताड की ऊँचाई पर ले जाकर वही धमकी दोहराई। किन्तु अर्हन्नक तब भी अपने धर्म-ध्यान से विचलित नहीं हुआ।

63. Annoyed with Arhannak the demon now picked up the ship in his fingers, lifted it to a great height, and repeated the threat Arhannak still remained undisturbed in his meditation

क्षमायाचना एवं कुण्डलों की भेंट

सूत्र ६४. तए णं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे उवसंते जाव निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ, ठवित्ता त दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूपं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिए अरहन्नग समणोवासय एवं वयासी–

सूत्र ६४ जब वह पिशाच अर्हन्नक को निर्ग्रन्थ वचन से विमुख करने में सफल नहीं हुआ तो वह शान्त हो गया। उसके मन मे खेद हुआ और उसने नाव को धीरे-धीरे समुद्र की सतह पर रख दिया। फिर उसने अपना पिशाच रूप त्यागकर दिव्य देवरूप धारण किया और पचरगे तथा छमछम करते दिव्य वस्त्राभूषण पहनकर आकाश में स्थिर हो अर्हन्नक से कहा–

GIFT OF EARRINGS

64. On failing to turn Arhannak against the preaching of the Nirgranth, the demon calmed down It was repentant and put back the ship slowly on the surface of the sea It then transformed its demonic appearance into a divine one with multicoloured dress and glittering divine ornaments It stationed itself in the sky and said to Arhannak—

सूत्र ६५ "हं भो अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले, जस्स ण तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूण देवाण मज्झगए महया सद्देण आइक्खइ–"एवं खलु जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे, नो खलु सक्का केणए देवेण वा दाणवेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामित्तए वा।

तए णं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स देविंदस्स एयमट्ठं णो सद्दहामि, नो रोययामि। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव परिच्चयइ ? णो परिच्चयइ ? त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहित्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पिया ! ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुरच्छिम दिसीभागं उत्तरवेउव्वियं समुग्घामि, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि। उवागच्छित्ता देवाणुप्पियाण उवसग्गं करेमि।

नो चेव ण देवाणुप्पिया भीया वा तत्था वा, तं ज ण सक्के देविदे देवराया वदइ, सच्चे ण एसमट्ठे। त दिट्ठे ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जुई जसो बल जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए। त खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतुमरिहतु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो भुज्जो एवं करणयाए।'' त्ति कट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ भुज्जो खामेइ, खामित्ता अरहन्नयस्स दुवे कुडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए।

सूत्र ६५ ''हे अर्हन्नक ! तुम धन्य हो। तुम्हारा जीवन सफल है कि तुमको निर्ग्रन्थ वचन के प्रति ऐसी श्रद्धा उपलब्ध हुई है और वह सम्यक् रूप से तुम्हारे आचरण मे प्रकट हुई है। हे देवानुप्रिय ! देवराज शक्रेन्द्र ने सौधर्मकल्प मे सौधर्मावतसक नाम के विमान की सुधर्मा सभा मे अनेक देवों के बीच शुभ वचनो मे कहा था–'जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की चम्पानगरी मे अर्हन्नक नाम का एक श्रमणोपासक जीव-अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता है। उसे कोई भी देव-दानव निर्ग्रन्थ वचन से विमुख करने मे समर्थ नही है।'

''हे देवानुप्रिय ! उस समय शक्रेन्द्र के इस कथन पर मुझे विश्वास नही हुआ था और न उनकी बात अच्छी लगी थी। उस समय मेरे मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ–'मै जाकर अर्हन्नक के सामने प्रकट होऊँ और पहले यह जानूँ कि उसे धर्म प्रिय है या नही ? वह धर्म मे दृढ है या नही ? वह शीलादि व्रतो से विमुख होता है या नही ?' इस विचार के आने पर मैने अवधिज्ञान से तुम्हारी स्थिति जानी और ईशानकोण मे जाकर वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रियशरीर धारण किया। फिर तीव्र गति से समुद्र मे जहाँ तुम थे वहाँ आया और तुम्हे आतकित करने के लिए उपसर्ग किये। पर तुम विचलित नही हुए। अत. शक्रेन्द्र के वचन सच्चे निकले। मैने देखा कि तुम्हे ऋद्धि, द्युति, यश, बल और पराक्रम प्राप्त हुआ है और तुमने उनका भलीभाँति उपयोग किया है। हे देवानुप्रिय ! मै आपको खमाता हूँ। आप क्षमा प्रदान करने योग्य है। हे देवानुप्रिय ! भविष्य मे मै ऐसा कुछ नहीं करूँगा।'' और वह देव दोनो हाथ जोड अर्हन्नक के चरणो मे गिरकर बारम्बार अपने उपद्रव के लिए विनयपूर्वक क्षमायाचना करे लगा। फिर उसने अर्हन्नक को दो कुडल युगल (दो जोडी) भेट किए और जिस दिशा से आया था उसी दिशा मे लौट गया।

65. "Arhannak! Praise be to you. You are a highly accomplished individual as you have developed so deep a faith in the preaching of the Nirgranth, all the more so because it is evident in your conduct Beloved of gods! Shakrendra, the king of gods had one day mentioned in the assembly of gods in the Saudharmavatansak dimension, 'In Champa city in the Bharat area of the Jambu continent lives Arhannak, a Shramanopasak, who has the knowledge of matter and soul It is not possible for any god or demon to turn him against the preaching of the Nirgranth '

"Beloved of gods! At that time I neither believed nor liked this statement of the king of gods I just thought, 'Let me first go and appear before Arhannak and test him if he loves his religion? If he is resolute in his discipline? and can he be turned against his vows?'

"Thinking thus I located you with the help of my Avadhi Jnana I proceeded in the north-east direction and with the process of Vaikriya Samudghat transformed myself into a demonic body I rushed to the area your ship was on the high seas and created various horrors to overwhelm you But you did not move an inch and maintained your poise Thus the king of gods was proved right

"I have observed that you have been blessed with wealth, aura, fame, strength, and prowess and you have utilized them well Beloved of gods! I beg your pardon You have the capacity to forgive and forget. Beloved of gods! I promise not to repeat this in future " And that god fell at the feet of Arhannak with joined palms and begged pardon again and again for his misdeed He then gifted two pairs of earrings to Arhannak and left for his abode

सूत्र ६६ तए ण अरहन्नए निरुवसग्गमित्ति कट्टु पडिमं पारेइ। तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लबति, लबित्ता सगडिसागड सज्जेति, सज्जित्ता त गणिमं धरिम मेज्ज परिच्छेज्जं सगडिसागडं संकामेंति, संकामित्ता सगडिसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला नगरी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणसि सगडिसागडं मोएन्ति, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थं महग्घ महरिहं विउल रायरिहं पाहुड कुंडलजुयल च गेण्हंति, गेण्हित्ता मिहिलाए रायहाणीए

अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव कट्टु तं महत्थं दिव्व कुंडलजुयलं उवणेंति जाव पुरओ ठवेंति।

सूत्र ६६. उपसर्ग के समाप्त हो जाने पर अर्हन्नक ने अपना कायोत्सर्ग सम्पन्न किया। पवन के दक्षिणमुखी होने के कारण उनकी नाव गम्भीर नाम के बन्दरगाह पर पहुँची। नाव के रुकने पर अर्हन्नक तथा अन्य व्यापारियो ने गाडियाँ तैयार कर उनमें माल भरा और घोडे जोतकर रवाना हो गये। वहाँ से वे मिथिला नगरी पहुँचे और नगर के बाहर श्रेष्ठ उद्यान मे अपनी गाडियाँ खडी कर दीं। फिर वे राजा के लिये बहुमूल्य तथा महान् व्यक्तियो को भेट करने योग्य सामग्री तथा कुडलों की वह दिव्य जोडी साथ मे लेकर मिथिला नगरी के भीतर आये। कुम्भ राजा के दरबार मे पहुँच दोनों हाथ जोड अभिनन्दन किया और भेट सामग्री तथा कुडल राजा के सामने रख दिये।

66. Arhannak concluded his meditation as soon as the affliction was over When the wind started blowing from the south their ship reached the Gambhir port After the ship docked, Arhannak and the other merchants prepared their carts and loaded their merchandise Harnessing the horses they left the port They came to Mithila city and parked their carts in the beautiful garden outside the city They selected valuable and suitable gifts as well as a pair of the divine earrings and entered the town Arriving at the court of King Kumbh they greeted him and placed the gifts and the earrings before him

सूत्र ६७ तए ण कुंभए राया तेसि संजत्तगाण नावावाणियगाणं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लिं विदेहवररायकन्नं सद्दावेइ, सद्दावित्ता तं दिव्व कुडलजुयल मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ।

तए ण से कुभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गध-मल्लालंकारेण जाव उस्सुक्कं वियरेइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र ६७ कुभ राजा ने उन नौका वणिको द्वारा दी बहुमूल्य भेट सामग्री स्वीकार की और मल्लीकुमारी को बुलवाया। वे दिव्य कुडल उन्होंने कुमारी को पहनाए और वापस भेज दिया।

फिर कुम्भ राजा ने अर्हन्नक आदि यात्रियो का प्रचुर आहार सामग्री तथा वस्त्रालकार प्रदान कर सत्कार किया। राजा ने उनका शुल्क भी माफ कर दिया और राजमार्ग पर ठहरने का स्थान प्रदान कर विदा किया।
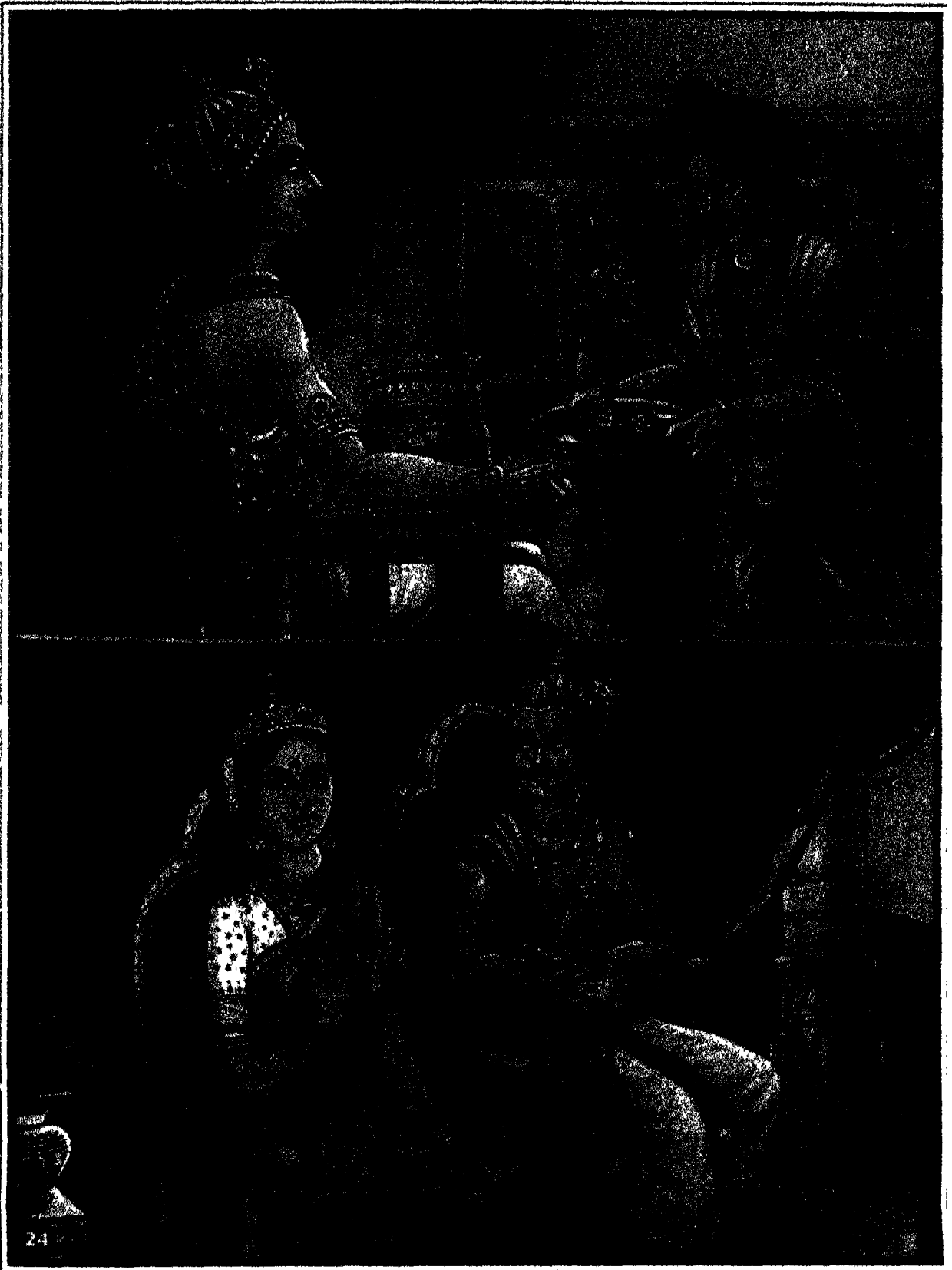
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दिव्य कुण्डल युगल की भेंट

चित्र २४

देव के उपहार रूप में प्राप्त कुण्डल युगल लेकर अर्हन्नक आदि समुद्र व्यापारी मिथिला के तट पर पहुँचे। वहाँ के राजा कुम्भ को भेंट देने के लिए स्वर्ण थाल में वे दिव्य कुण्डल सजाकर लाये। ऐसे दिव्य कुण्डल देखकर राजा कुम्भ बहुत प्रसन्न हुए। व्यापारियों का सम्मानित किया।

महाराज कुम्भ की पुत्री थी मल्लीकुमारी। संसार की अद्भुत रूप लावण्यवती और अनन्त पुण्यशालिनी। मल्लीकुमारी का वर्ण पन्ना रत्न जैसी हरी छवि युक्त था। महाराज कुम्भ ने वे दिव्य कुण्डल युगल राजकुमारी मल्ली को पहनाये तो जैसे कुण्डलों से राजकुमारी का और राजकुमारी की दिव्य छवि से कुण्डलों का सौन्दर्य सौ गुना निखर गया। महाराज कुम्भ के पास ही राजसिंहासन पर विराजित है मल्लीकुमारी।

(अध्ययन ८)

PRESENTING THE DIVINE EARRINGS

ILLUSTRATION 24

Taking the divine earrings Arhannak and his friends came to Mithila city They took a gold plate, placed the divine earrings in it, and came to the court of King Kumbh They greeted him and presented the earrings to him King Kumbh was pleased He felicitated the merchants Princess Malli, the daughter of King Kumbh, was a divine beauty and a pious person She had an emerald green complexion The king gave the divine earrings to his daughter When she put on these earrings her beauty was enhanced hundred fold, and the same happened to the divine beauty of the earrings Princess Malli is occupying the throne adjacent to King Kumbh

(CHAPTER-8)

67. King Kumbh accepted the costly gifts and called Princess Malli. He gave the divine earrings to her and let her wear them before going back

King Kumbh honoured Arhannak and other merchants by gifting ample food, cloths and ornaments He also exempted them from any levies and provided for a place to stay near the highway

सूत्र ६८. तए णं अरहन्नगसंजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भडववहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडिसागड भरेंति, जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति, सज्जित्ता भंड संकामेंति, दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव चंपाए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लबेंति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिम धरिम मेज्ज पारिच्छेज्ज सगडीसागडं संकामेंति, संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं दिव्व च कुडलजुयल गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति।

सूत्र ६८ राजा द्वारा बताये आवास पर आकर उन्होने अपना माल बेचना आरंभ कर दिया। सारा माल बेचकर उन्होने वहाँ से नया माल खरीदकर अपनी गाड़ियाँ भरीं और गम्भीर बन्दरगाह पर आकर नाव तैयार कर उसमे वह माल भर लिया। वहाँ से जलमार्ग द्वारा व चम्पानगरी के बन्दरगाह पर आये और अपना माल गाडियो में भर दिया। फिर वे बहुमूल्य भेट सामग्री तथा कुडलो की बची हुई दूसरी जोड़ी लेकर अगराज चन्द्रच्छाय के दरबार मे गये और भेट राजा के समक्ष रख दी।

68. After settling at the house allotted by the king they started trading their goods Selling all their stock and purchasing local goods they reloaded their carts and came to the port. Loading their ship they started on their journey back to the port of Champa They filled their carts with the merchandise and went to the court of King Chandracchaya of Anga with valuable gifts and the remaining pair of divine earrings The gifts were now placed before the king.

सूत्र ६९ तए ण चदच्छाए अगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलजुयलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वयासी-"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर० जाव सन्निवेसाइ आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खण अभिक्खणं पोयवहणेहिं ओगाहेह, तं अत्थियाइ भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?"

सूत्र ६९ राजा ने उनकी दिव्य कुण्डल जोडी की भेंट स्वीकार की और कहा–"हे देवानुप्रियो ! आप अनेक ग्रामादि में भ्रमण करते है तथा बार-बार समुद्र यात्रा पर जाते हैं। हमें बताओ कि कहीं आपने कोई आश्चर्य भी देखा है क्या ?"

69. The king accepted the gifts and said, "Beloved of gods! You have done many sea voyages and visited numerous villages, cities etc , tell me if you have come across some wonder somewhere?"

सूत्र ७०. तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अंगराय एवं वयासी–"एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावावाणियगा परिवसामो, तए णं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च धरिम च सेज्जं च परिच्छेज च तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रण्णो उवणेमो।

तए ण से कुभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयलं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता, पडिविसज्जेइ। त एस ण सामी ! अम्हेहि कुंभरायभवणसि मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे त नो खलु अन्ना का वि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना।

सूत्र ७० वणिको ने अंगराज चद्रच्छाय को उत्तर दिया–"हे स्वामी ! हम सब नौकावणिक् इसी चम्पानगरी के रहने वाले हैं। एक बार हम अपना माल भरकर यात्रा करते हुए मिथिला के राजा कुम्भ के पास गये। उन्हे भेंट समर्पित करके बैठे तो उन्होने उसमे से दिव्य कुण्डल निकालकर अपनी कन्या मल्लीकुमारी को पहना कर उसे वापस भेजा। हे स्वामी ! हमे राजा कुम्भ के भवन मे उनकी पुत्री मल्लीकुमारी एक आश्चर्य के रूप मे दिखाई दी। उसके जैसी सुन्दरी समस्त त्रिभुवन की कन्याओ मे नही है।"

70. The merchants replied to the king of Anga, "Sire! We seafarers are inhabitants of this Champa city Traveling once with our merchandise we arrived in Mithila city and visited King Kumbh When we took our seats after presenting the gifts to the king, he picked up the divine earrings and gave them to his daughter Princess Malli to wear Sire! In that palace of King Kumbh Princess Malli was a wonder She has no parallel in beauty in the whole universe "

सूत्र ७१. तए णं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ। तए णं चदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेइ, जाव जइ वि य णं सा सयं रज्जसुका। तए णं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ७१. राजा चन्द्रच्छाय ने अर्हन्नक आदि वणिकों का आदर-सत्कार किया और उन्हें विदा किया। वणिकों की बात सुन उनके मन में हर्ष और प्रेम की भावना जागी। उन्होंने अपने दूत को बुलाया और मल्लीकुमारी से विवाह करने का प्रस्ताव राजा कुंभ के पास ले जाने को कहा। दूत प्रसन्नचित्त रवाना हो गया।

71. King Chandracchaya bestowed honour on the traders and bid them good-bye He was pleased to hear the story narrated by the merchants and at the same time was filled with a desire He called his emissary and instructed him to go to King Kumbh with a marriage proposal for Princess Malli The emissary happily commenced his journey

राजा रुक्मि

सूत्र ७२. तेण कालेण तेण समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था। तत्थ णं सावत्थी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था। तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया होत्था, सुकुमाल पाणि पाया रूवेण य जोव्वणेण लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

तीसे ण सुबाहूए दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था।

सूत्र ७२ काल के उस भाग मे कुणाल नाम का एक जनपद था। वहाँ की राजधानी श्रावस्ती नगरी थी जहॉ रुक्मि नाम के राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम धारिणी था जिसकी कोख से जन्मी कन्या का नाम सुबाहु था। वह कन्या सुकोमल थी और शरीर, वय, रूप, यौवन तथा लावण्य मे उत्कृष्ट थी।

एक बार उस राजपुत्री के चातुर्मासिक स्नान के उत्सव का समय आया।

KING RUKMI

72. During that period of time there was a country named Kunal. The capital of Kunal was Shravasti city and King Rukmi ruled there The name of his queen was Dharini He also had a daughter named Subahu The princess was delicate as well as exemplary in beauty, youth and charm One day her annual bathing ritual was celebrated

सूत्र ७३. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठिय जाणइ, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"एवं खलु

देवाणुप्पिया ! सुबाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सइ, तं कल्लं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि जलथलयदसद्धवण्णमल्लं साहरेह, जाव ओलइंति।

सूत्र ७३ राजा रुक्मि ने उस अवसर पर अपने सेवको को बुलाकर कहा–"हे देवानुप्रियो ! कल कुमारी सुबाहु के चातुर्मासिक स्नान का उत्सव है। अत तुम जल-थल के पचरगे फूल लाओ और राजमार्ग के बीच चौक में उन फूलो की मालाओं का सुगधित गजरा लटकाओ।" सेवको ने राजाज्ञा के अनुसार कार्य सम्पन्न किया।

73. On that occasion King Rukmi called his staff and said, "Beloved of gods! Tomorrow is the annual bathing ceremony of princess Subahu As such, bring multi-coloured flowers from land and water and decorate the central square on the highway with intwined garlands of these flowers " The attendants carried out the order

सूत्र ७४. तए ण रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविह पच-वण्णेहि तंदुलेहिं णगरं आलिहह। तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टय रएह।" रएत्ता जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ७४ इसके पश्चात् राजा रुक्मि ने स्वर्णकारो–सुनारो के सघ को बुलाकर कहा–"हे देवनुप्रियो ! जल्दी ही राजमार्ग के बीच बनाये पुष्प-मडप मे तरह-तरह के पंचरगे चावलो से नगर का चित्र बनाओ और उसके बीच मे एक पाट रखो।" सुनार सघ ने आज्ञा के अनुसार कार्य सम्पन्न कर दिया।

74. King Rukmi now called the guild of goldsmiths and said, "Beloved of gods! Go and prepare a model of the city with multi-coloured rice in the flower-pavilion raised at the centre of the highway At the centre of the model erect a platform " The guild of goldsmiths carried out the order

सूत्र ७५. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भड-चडकर-रह-पहकरविंद-परिक्खित्ते अंतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे, जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

सूत्र ७५. राजा रुक्मि तब श्रेष्ठ हाथी पर सवार हो अपनी चतुरगिनी सेना, स्वजनों तथा वैभव सहित कुमारी सुबाहु को आगे कर राजमार्ग के मध्य बने पुष्प-मडप के पास

आया। हाथी पर से उतरकर पुष्प-मडप में प्रवेश किया और पूर्व दिशा की ओर मुख कर श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गया।

75. King Rukmı rode the best of hıs elephants and accompanied by the regiment of guards, his relatives, and all his regalia with princess Subahu in front, came to the flower-pavilion raised at the centre of the highway He got down from the elephant, entered the pavilion and sat on the royal throne facing east

सूत्र ७६. तओ णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरूहेंति। दुरूहित्ता सेयपीयएहि कलसेहिं ण्हाणेंति, ण्हाणित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता पिउणो पाय वंदिउ उवणेंति।

तए ण सुबाहू दारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ। तए ण से रुप्पी राया सुबाहु दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए वरिसधरं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"तुम ण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगर जाव सण्णिवेसाइं आहडिसि, बहूण य राईसर जाव सत्थवाहपभिईण गिहाणि अणुपविससि, त अत्थियाइं से कस्सइ रण्णो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए?"

सूत्र ७६ अत पुर की महिलाओ ने सुबाहुकुमारी को उस पाट पर आसीन किया और चॉदी व सोने के कलशो मे भरे पानी से उसे स्नान कराया। वस्त्रालकारो से सज्जित कर वे उसे अपने पिता के चरणो मे प्रणाम करने के लिए लाईं।

सुबाहुकुमारी ने पिता के निकट पहुँच उनके चरणों का स्पर्श किया। रुक्मि राजा ने अपनी पुत्री को गोद मे बिठा लिया और उसके रूप, यौवन और लावण्य को देख विस्मित हुए। उन्होने अन्त पुर के वरिष्ठ रक्षक को बुलाकर पूछा-"हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत के रूप मे अनेक ग्रामादि मे जाते हो। क्या तुमने किसी राजा या जागीरदार के यहाँ ऐसा स्नानोत्सव इससे पहले भी कही देखा है ?"

76. The ladies from the palace seated the princess on the platform and helped her bathe with water filled in pitchers made of gold and silver They also helped her dress and then took her to her father to touch his feet When the princess reached near her father she bowed down and touched his feet King Rukmı made her sit in his lap and was astonished to see her beauty, youth and charm He called the

commander of the brigade of palace guards and asked, "Beloved of gods! You have been to many villages (etc) as my emissary, tell me if you have ever seen such a bathing celebration at palaces of any of the kings or landlords "

सूत्र ७७. तए ण से वरिसधरे रुप्पिं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एव वदासी-"एवं खलु सामी ! अह अन्नया तुब्भे णं दोच्चेण मिहिलं गए, तत्थ ण मए कुभगस्स रण्णो धूयाए, पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नयाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुबाहूए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमं पि कल न अग्घेइ।

सूत्र ७७ रक्षक ने हाथ जोडकर कहा-"हे स्वामी ! एक बार मै आपके दूत के रूप मे मिथिला गया था। वहॉ मैने राजा कुभ और रानी प्रभावती की पुत्री मल्ली का स्नानोत्सव देखा था। सुबाहुकुमारी का यह स्नानोत्सव उसके लाखवे अश के बराबर भी नही है।"

77. The commander replied with joined palms, "Sire! Once I had gone to Mithila as your emissary There I chanced to witness the bathing ceremony of Princess Malli, the daughter of King Kumbh and Queen Prabhavati The bathing ceremony of princess Subahu is not even a millionth fraction as good as that of Princess Malli "

सूत्र ७८. तए ण से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणग-जणियहासे दूत सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी-"जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ७८ यह सुन-समझकर उस स्नानोत्सव के वर्णन से प्रभावित तथा आकर्षित राजा रुक्मि ने अपने दूत को बुलाया और मल्लीकुमारी से विवाह के प्रस्ताव सहित उसे मिथिला के लिए रवाना कर दिया।

78. Impressed by this, King Rukmi called his emissary and sent him to Mithila with a marriage proposal for Princess Malli

काशीराज शंख

सूत्र ७९ तेण कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था। तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था। तत्थ णं सखे नामं राया कासीराया होत्था।

सूत्र ७९ काल के उस भाग में काशी नाम का एक जनपद था जिसकी वाराणसी नाम की नगरी में काशीराज शंख राज्य करते थे।

KING SHANKH OF KASHI

79. During that period of time there was a country named Kashi and its capital was Varanasi city King Shankh ruled there

सूत्र ८०. तए णं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था।

तए ण कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह।"

सूत्र ८० एक बार मल्लीकुमारी के उन दिव्य कुण्डलों का एक जोड खुल गया। राजा कुभ ने सुनारो के सघ को बुलाकर कहा-"देवानुप्रियो ! इस कुडल के जोड को झाल लगाकर ठीक कर दो।"

80. Once, a joint in one of Princess Malli's divine earrings broke King Kumbh summoned the guild of goldsmiths and said, "Beloved of gods! Braze the broken joint and set this earring right."

सूत्र ८१ तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता तं दिव्वं कुडलजुयल गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगारभिसियासु णिवेसेइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स सधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएंति संघडित्तए।

तए ण सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० जाव वद्धावेत्ता एव वयासी-"एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह। सद्दावेत्ता जाव संधिं सघाडेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो। जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए। तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसयं कुंडलजुयल घडेमो।"

सूत्र ८१ सुनारो ने 'जो आज्ञा' कहकर वे कुण्डल ले लिये और अपने कारखाने चले गये। वहाँ आकर उन्होने अनेक प्रकार से उन्हे झालने की पूरी चेष्टा की पर वैसा नहीं कर सके।

निराश हो वे राजा के पास लौटे, हाथ जोड़कर अभिनन्दन किया और बोले-"हे स्वामी ! आज आपने हमे बुलाकर कुण्डलों को ठीक कर लाने की आज्ञा दी थी। हमने इन कुण्डलो को कारखाने ले जाकर झाल लगाने की बहुत चेष्टा की, किन्तु सफल न हो सके। अत यदि महाराज की आज्ञा हो तो हम ऐसी ही नई जोडी बनाकर ला देवें।"

81. The goldsmiths said, "As you say, Sire " and took the earrings to their smithy They tried their best, using all the skill at their command, to braze the joint but failed

Getting disappointed they came to the king, greeted him with joined palms and said, "Sire ! You called us today and instructed us to repair the earrings We took these earrings to our smithy and tried our best to braze the joint but failed. If your excellency permits we may make a new pair like this."

सुनारों का देश निकाला

सूत्र ८२. तए णं से कुभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी–

"केस णं तुब्भे कलायणं भवह ? जे णं तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह संधिं सघाडेत्तए?" ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ।

सूत्र ८२. सुनारों की बात सुनकर राजा कुभ कुपित हो गये। उनके ललाट पर तीन सलवट पड गये। उन्होंने सुनारो से कहा–"तुम कैसे सुनार हो जो इस कुण्डलो की जोडी मे झाल भी नहीं लगा सकते?" और राजा ने उन्हे देश निकाले की आज्ञा दे दी।

EXILE OF GOLDSMITHS

82. Hearing about the failure of the goldsmiths King Kumbh got angry He frowned deeply and addressed the goldsmiths, "What sort of goldsmiths are you, who could not do a simple thing like brazing a joint of these earrings?" And he issued orders for their deportation

सूत्र ८३. तए णं ते सुवण्णगारा कुंभेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति। निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव कासी जणवए, जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणसि सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गेण्हति, गेण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल. जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता पाहुड पुरओ ठावेंति, ठावित्ता संखरायं एव वयासी–

सूत्र ८३ देश से निकल जाने का दंड पाकर वे सुनार अपने-अपने घर लौटे और अपने कपडे-लत्ते, बर्तन-भॉड़े व औजार-पाती लेकर मिथिला नगरी के बीच होते हुए बाहर निकल गये। विदेह जनपद से निकलकर वे काशी जनपद मे वाराणसी नगरी पहुँचे। नगर के बाहर उद्यान में अपनी गाडियाँ खड़ी कर वे वाराणसी नगरी के बीच होते राजा शंख के दरबार में पहुँचे। हाथ जोड़कर राजा का अभिनन्दन किया और भेंट सामग्री राजा के सम्मुख रख दी। फिर वे राजा से बोले–

83. Getting this punishing order the goldsmiths returned to their respective homes, collected their cloths, utensils, instruments, and other necessary things, and left the town Leaving the Videh country they entered the Kashi country and arrived in Varanasi city. They parked their vehicles in a garden outside the city and arrived at the court of King Shankh They greeted the king with joined palms, placed gifts before him and submitted—

सूत्र ८४ "अम्हे ण सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हव्वमागया, तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भ बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुह सुहेण परिवसिउं।"

तए ण सखे कासीराया ते सुवण्णगारे एव वयासी–"कि णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएण रण्णा निव्विसया आणत्ता?"

तए ण ते सुवण्णगारा सख एव वयासी–"एव खलु सामी ! कुभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुडलजुयलस्स संधी विसघडिए। तए ण से कुंभए सुवण्णगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता।"

सूत्र ८४ "हे स्वामी ! राजा कुम्भ के द्वारा मिथिला नगरी से निर्वासित होकर हम सीधे यहाँ आये है। हम आपकी भुजाओं की छाया मे निर्भय और निरुद्वेग होकर सुख-शान्ति से रहना चाहते है।"

काशीराज ने प्रश्न किया–"देवानुप्रियो ! राजा कुभ ने तुम्हे देश निकाला क्यो दिया?"

सुनारो ने उत्तर दिया–"स्वामी ! राजा कुम्भ की पुत्री मल्लीकुमारी के कुण्डल का जोड खुल गया था। राजा ने हमे बुलाकर उसे ठीक करने को कहा और वैसा न कर पाने पर उन्होने हमे निर्वासित कर दिया।"

84. "Sire ! After being exiled by King Kumbh from Mithila we have come here straight-away We want to settle down here, in peace and without any fear or disturbance, under your protection "

The kıng of Kashı asked, "Beloved of gods! Why Kıng Kumbh exıled you?"

The goldsmıths replıed, "Sıre ! A joınt ın the earrıngs of Princess Mallı, the daughter of the kıng, had broken The kıng called us and ordered us to repaır ıt When we faıled to do so he exiled us "

सूत्र ८५. तए णं से संखे सुवन्नगारे एवं वयासी–"केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना?"

तए णं ते सुवण्णगारा संखरायं एवं वयासी–"णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना।"

तए णं कुंडलजुअलजणियहासे दूतं सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ८५. राजा शंख ने प्रश्न किया–"देवानुप्रियो ! राजा कुम्भ की पुत्री मल्लीकुमारी कैसी है?"

सुनारों ने कहा–"स्वामी ! मल्लीकुमारी जैसी सुन्दरी सारे त्रिभुवन में कहीं भी नहीं है।"

यह सुनकर कुंडलादि सहित मल्लीकुमारी के वर्णन से प्रभावित राजा शंख ने विवाह प्रस्ताव सहित अपने दूत को मिथिला के लिए भेज दिया।

85. Kıng Shankh asked, "Beloved of gods ! Tell me about Prıncess Mallı, the daughter of Kıng Kumbh "

Goldsmıths, "Sıre ! There ıs no dame as beautıful as Prıncess Mallı ın the whole unıverse."

The descrıptıon of the prıncess and her dıvıne earrıngs ımpressed kıng Shankh so much that he sent hıs emıssary to Mıthıla wıth a marrıage proposal

राजा अदीनशत्रु

सूत्र ८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरुजणवए होत्था, हत्थिणाउरे नयरे, अदीणसत्तू नामं राया होत्था, जाव विहरइ।

सूत्र ८६ काल के उस भाग में कुरु नामक जनपद के हस्तिनापुर नगर पर राजा अदीनशत्रु का शासन था।

KING ADINSHATRU

86. During that period of time King Adinshatru ruled over Hastinapur, the capital city of Kuru country

सूत्र ८७. तत्थ णं मिहिलाऐ कुंभगस्स पुत्ते पभावईए अत्तए मल्लीए आणुजायए मल्लदिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था।

तए ण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"गच्छह ण तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ८७. मिथिला नगरी के राजा कुम्भ का पुत्र और मल्लीकुमारी का छोटा भाई कुमार मल्लदिन्न वहाँ का युवराज था। एक दिन कुमार मल्लदिन्न ने अपने सेवकों को बुलाकर कहा–"मेरे महल के उद्यान (प्रमदवन) मे एक विशाल चित्रसभा का निर्माण कराओ।" सेवको ने कुमार की आज्ञा का पालन कर उन्हे सूचना दी।

87. Prince Malladinna, the son of King Kumbh and younger brother of Princess Malli, was the heir to the throne of Mithila One day Malladinna called his staff and said, "Construct a large art gallery in my palace garden " The attendants carried out the order and reported back to him

सूत्र ८८ तए ण मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! चित्तसभ हाव-भाव-विलास-विब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं चित्तेह। चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह।

तए ण सा चित्तगरसेणी तह त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नए य गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अणुपविसति, अणुपविसित्ता भूमिभागे विरचति, विरचित्ता भूमि सज्जति, सज्जित्ता चित्तसभं हावभाव० जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था।

सूत्र ८८ फिर मल्लदिन्न कुमार ने चित्रकारो के दल को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरी चित्रसभा को विभिन्न मुद्रा, भाव, विलास और चेष्टाओ युक्त चित्रों से परिपूर्ण कर दो।" कुमार की आज्ञा शिरोधार्य कर चित्रकार अपने घरो को लौट गये। तूलिकाएँ और रग आदि सामग्री लेकर वे चित्रसभा मे गये। वहाँ उन्होने सारे क्षेत्र का विभाजन किया और अपने-अपने क्षेत्र को तैयार कर चित्र बनाने का कार्य आरभ कर दिया।

88. Malladınna now called a number of painters and saıd, "Beloved of gods ! Fıll my art gallery wıth paintıngs on varıous subjects, themes, postures, gestures, and moods " Followıng the order the painters returned and came back after collectıng paints, brushes and other equıpment from theır homes Wıth all thıs materıal they entered the gallery and allotted a specıfic work area to each Every artıst prepared hıs area and started work

मल्लीकुमारी का चित्र

सूत्र ८९. तए ण एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया–जस्स णं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स ण देसाणुसारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ।

तए ण से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियतरियाए जालंतरेण पायगुट्ठं पासइ।

तए ण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था सेय खलु मम मल्लीए वि पायगुट्ठाणुसारेण सरिसग जाव गुणोववेय रूवं निव्वत्तित्तए, एव सपेहेइ, सपेहित्ता भूमिभाग सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुट्ठाणुसारेण जाव निव्वत्तेइ।

सूत्र ८९ उन चित्रकारो मे एक चित्रकार मे ऐसी असाधारण क्षमता (लब्धि प्राप्त) थी कि वह किसी दोपाये, चौपायें अथवा अन्य किसी वस्तु का एक अवयव मात्र दिखाई दे जाने पर उस वस्तु का सम्पूर्ण चित्र बना सकता था।

एक बार उस विशिष्ट चित्रकार ने पर्दे की ओट मे रही मल्लीकुमारी के पैर का अगूठा किसी जाली के छेद मे से देखा। तब उसके मन मे विचार उठा कि मल्लीकुमारी के अगूठे मे प्रेरित हो उनकी सम्पूर्ण चित्र अनुकृति बनानी चाहिये। उसने अपने विचार को क्रियान्वित करने के लिए दीवाल के एक भाग को तैयार किया और चित्र बनाकर पूरा किया।

THE PORTRAIT OF MALLI

89. Among those artısts there was one who had the astonıshıng abılıty to paint a subject, be ıt man, anımal or anythıng else, completely even ıf he had just a glımpse of a small part of ıts body

Thıs artıst once happened to see a toe of veıled Prıncess Mallı from a hole ın a grıll He ımmedıately thought that ınspıred by thıs glımpse of the toe of the prıncess he should make a lıfe sıze portraıt of the

princess He prepared a portion of the wall allotted to him and completed the portrait

सूत्र ९०. तए णं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विब्बोय-कलिएहिं, रूवेहि चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए ण मल्लदिन्ने चित्तगरसेणि सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुल जीवियारिहं पीइदाण दलेइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र ९० जब चित्रकारो के दल ने चित्रसभा को मल्लदिन्न की आज्ञानुसार चित्रित कर दिया तो वे कुमार के पास गए और कार्य सम्पन्न होने की सूचना दी। कुमार ने उनका यथोचित सत्कार किया और यथेष्ट प्रीतिदान देकर विदा किया।

90. When the group of artists completed the assignment given to them by Malladinna they approached the prince and reported accordingly The prince honoured them and dismissed them after rewarding generously

सूत्र ९१ तए ण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया ण्हाए अतेउरपरियालसपरिवुडे अम्मधाईए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुपविसइ। अणुपविसित्ता हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलियाइं रूवाइ पासमाणे पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूव रूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्त इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"एस ण मल्ली विदेहवररायकन्न' त्ति कट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणिय सणिय पच्चोसक्काइ।

सूत्र ९१ फिर एक दिन स्नानादि से निवृत्त हो अपने रनिवास आदि तथा धायमाता को साथ ले मल्लदिन्न कुमार उस चित्रसभा मे आया। विविध हाव-भावयुक्त उन चित्रो को देखता-देखता वह उस ओर बढ़ा जहाँ मल्लीकुमारी का चित्र बना हुआ था। वहाँ पहुँचकर उसने जैसे ही राजकुमारी का चित्र देखा, वह चौक पडा-"अरे यह तो मल्लीकुमारी है।" लाज-शर्म से सकुचाकर वह धीरे-धीरे वहाँ से पीछे हटने लगा।

91. One day getting ready after his bath etc Malladinna came to the gallery accompanied by his queens, staff and his governess Appreciating the paintings with various moods (etc) he drifted towards the portrait of Princess Malli The moment his gaze fell upon

this portrait he was taken aback, "My god ! this is Princess Malli?" Ashamed of himself he started retracing his steps

मल्ली नहीं ! चित्र

सूत्र ९२. तए णं मल्लदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी-"किं णं तुम पुत्ता ! लज्जिए वीडिए विअडे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ ?"

तए णं से मल्लदिन्ने अम्मधाइं एवं वयासी-"जुत्तं ण अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेव-भूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए ?"

सूत्र ९२ कुमार को इस प्रकार हटते हुए देख उसकी धायमाता ने कहा-"हे पुत्र ! तुम लज्जा से धीरे-धीरे हट क्यों रहो हो ?" कुमार ने उत्तर दिया-"माता ! मेरी गुरु और देवता समान बडी बहन के सामने चित्रकारो द्वारा बनाई इस सभा मे प्रवेश करते क्या मुझे लज्जित नहीं होना चाहिये ?"

A PORTRAIT, NOT MALLI !

92. When his governess saw him moving away from there she asked, "Son ! what makes you move away from this spot as if you are ashamed of something?" The prince replied, "Mother ! Should I not be ashamed of entering this art gallery decorated with such candid paintings, in presence of my revered and respected elder sister?"

सूत्र ९३. तए णं अम्मधाई मल्लदिन्ने कुमारे एवं वयासी-"नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली विदेह-वररायकन्ना चित्तगरएण तयाणुरूवे निव्वत्तिए।"

तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते एव वयासी-"केस ण भो ! चित्तयरए अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेण ममं जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए जाव निव्वत्तिए ?" त्ति कट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ।

सूत्र ९३ धायमाता ने बताया-"हे पुत्र ! यह सदेह मल्लीकुमारी नही है अपितु चित्रकार ने उसकी जीवन्त अनुकृति चित्रित की है।

धायमाता की यह बात सुनकर मल्लदिन्न कुमार क्रुद्ध होकर बोला-"मृत्यु की इच्छा रखने वाला वह दुर्बुद्धि चित्रकार कौन है जिसने देव गुरु समान मेरी बडी बहन का यह चित्र बनाया है ?" और उसने उस चित्रकार का वध करने की आज्ञा दे दी।

93. The governess explained, "Son ! this is not Princess Malli but just a unique life like portrait of the princess "

Malladınna lost his temper at this statement of his governess and said, "Who is that ill fated and foolish artist who has made this portrait of my respected elder sister?" and he ordered the artist to be killed

सूत्र ९४. तए णं सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेति, तं मा णं सामी ! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह। तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह।"

सूत्र ९४ इस घटना की जानकारी मिलते ही चित्रकारो की वह मण्डली कुमार के पास आई और हाथ जोड अभिनन्दन कर उनसे प्रार्थना की–"स्वामी ! उस चित्रकार को ऐसी विशिष्ट योग्यता प्राप्त है कि वह किसी भी वस्तु की पूर्ण अनुकृति उसका एक अवयव देखकर ही बना सकता है। अत हे स्वामी ! आप उसके वध की आज्ञा न देकर अन्य कोई उपयुक्त दण्ड देने की कृपा करे।"

94. When the group of artists became aware of this development they came to the prince, greeted him and appealed, "Sire ! That artist has the astonishing ability to paint a subject completely even if he just has a glimpse of a small part of its body As such, we appeal for your mercy to reduce his sentence "

निर्वासित चित्रकार

सूत्र ९५ तए ण से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स सडासगं छिंदावेइ, निव्विसयं आणवेइ।

तए ण से चित्तगरए मल्लदिन्नेण निव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ णिक्खमइ, णिक्खमित्ता विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे, जेणेव कुरुजणवए, जेणेव अदीणसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं णिव्वत्तेइ, णिव्वत्तित्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भइत्ता महत्थ जाव पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता हत्थिणापुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव

अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता त करयल० जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता "एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए, त इच्छामि ण सामी ! तुब्भ बाहुच्छाया-परिग्गहिए जाव परिवसित्तए।"

सूत्र ९५ यह सुनकर मल्लदिन्न ने उस चित्रकार के दाहिने हाथ का अंगूठा और तर्जनी कटवाकर देश से निकाल देने की आज्ञा दे दी।

दण्ड पाकर वह चित्रकार अपना सारा सामान लेकर मिथिला नगरी से प्रस्थान कर गया। विदेह जनपद से निकलकर वह कुरु जनपद मे हस्तिनापुर नगर मे आया। अपना सामान उचित स्थान पर रखकर उसने एक चित्र फलक तैयार किया और उस पर मल्लीकुमारी का पूर्ण चित्र बनाया। उस चित्र को अपनी बगल मे दबा, राजा को भेट देने योग्य उपहार लेकर हस्तिनापुर नगर के बीच से राजा अदीनशत्रु के दरबार मे आया। उपहार राजा के सामने रख, हाथ जोडकर राजा का अभिनन्दन करके वह बोला– "स्वामी ! मिथिला नगर के राजा कुभ के पुत्र युवराज मल्लदिन्न ने मुझे देश से निर्वासित कर दिया तो मै सीधा यहाँ आ गया हूँ। अब मै आपकी बाहुओं की छत्रछाया मे सुरक्षित हो यहाँ बसना चाहता हूँ।"

EXILED PAINTER

95. Malladinna considered their request and reduced the sentence of the artist to deportation after amputating the thumb and index finger of his right hand

After his punishment the artist collected his belongings and left Mithila Leaving Videh he came to Hastinapur in Kuru He found a proper place to stay and preparing a canvas he made a portrait of Princess Malli He took this portrait with him, collected some suitable gifts, and went to the court of King Adinshatru After placing the gifts before the king and greeting him the artist said, "Sire ! Prince Malladinna, son of King Kumbh of Mithila has exiled me I have come here to settle under your esteemed protection "

सूत्र ९६. तए ण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारय एव वयासी–"कि ण तुम देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेण निव्विसए आणत्ते ?"

सूत्र ९६ राजा ने चित्रकार से पूछा–"देवानुप्रिय ! कुमार मल्लदिन्न ने तुम्हे देश-निर्वासन की आज्ञा किस कारण दी ?"

96. The king asked, "Beloved of gods ! Why did prince Malladinna order your exile?"

सूत्र ९७. तए णं से चित्तयरदारए अदीणसत्तुरायं एव वयासी-"एव खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-"तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभ" त चेव सव्व भाणियव्व, जाव मम सडासग छिदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ, त एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेण कुमारेण निव्विसए आणत्ते।"

सूत्र ९७ चित्रकार ने उत्तर दिया-"हे स्वामी ! कुमार ने एक दिन चित्रकारो की मण्डली को बुलाकर चित्र सभा बनाने की आज्ञा दी थी, ।" और उसने आदि से अन्त तक घटना का पूरा वृत्तान्त सुनाया।

97. The artist replied, "One day the prince summoned a group of artists . " and he narrated the story

सूत्र ९८ तए ण अदीणसत्तू राया त चित्तगरं एव वयासी-से केरिसए ण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तदाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ?"

तए ण से चित्तगरे कक्खतरगओ चित्तफलय णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी-"एस ण सामी ! मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवर-कन्नगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए।"

सूत्र ९८ राजा अदीनशत्रु ने फिर पूछा-"देवानुप्रिय ! तुमने मल्लीकुमारी का कैसा चित्र बनाया था ?"

इस पर चित्रकार ने अपनी बगल से वह चित्र निकालकर राजा के निकट रख दिया और बोला-"हे स्वामी ! मल्लीकुमारी का यह चित्र मैने उन्ही के अनुरूप सभी हाव-भाव समेटकर प्रतिबिम्ब रूप मे बनाया है। उनका वास्तविक साक्षात् रूप तो देवादि भी नही बना सकते।"

98. King Adinshatru once again asked, "Beloved of gods ! What sort of a portrait of Princess Malli had you made?"

The painter at once unwrapped the portrait he had brought along and placed it before the king with the comment, "Sire ! I have tried to make an exact image of the princess with her real mood and expression However, to create her true replica is even beyond gods "

सूत्र ९९. तए णं अदीणसत्तू राया पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ९९. उस चित्र को देख अनुराग से प्रेरित हो अदीनशत्रु ने अपने दूत को मल्लीकुमारी से विवाह के प्रस्ताव सहित मिथिला के लिए रवाना कर दिया।

99. Just a glance at the portrait ınstılled a feelıng of love wıthın Kıng Adınshatru and ınspıred hım to send his emıssary to Mıthıla wıth a marrıage proposal

राजा जितशत्रु

सूत्र १००. तेणं कालेणं तेणं समएणं पचाले जणवए, कंपिल्ले पुरे नयरे होत्था। तत्थ णं जियसत्तू णाम राया होत्था पंचालाहिवई। तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणीपामोक्ख देविसहस्स ओरोहे होत्था।

सूत्र १०० काल के उस भाग मे पांचाल जनपद के काम्पिल्यपुर नगर में जितशत्रु नाम का राजा राज्य करता था। वह सपूर्ण पाचाल प्रदेश का अधिपति था। जितशत्रु के अन्त पुर मे एक हजार रानियाँ थी।

KING JITSHATRU

100. Durıng that perıod of tıme Kıng Jıtshatru ruled over Kampılyapur, the capıtal of the Panchal country He had one thousand queens

सूत्र १०१ तत्थ ण मिहिलाए चोक्खा नाम परिव्वाइया रिउव्वेय० जाव यावि होत्था।

तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईण पुरओ दाणधम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेय च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ।

सूत्र १०१ मिथिला नगरी में चोक्खा नाम की एक परिव्राजिका रहती थी। वह नगर के अनेक गणमान्यो (राजा आदि) के सामने दानधर्म, शौचधर्म और तीर्थस्नान का प्रतिपादन करती और उपदेश देती थी।

101. In Mıthıla lıved a Parıvrajıka (a class of female preachers) named Chokkha She used to preach her relıgıon of charıty, cleansıng,

and bathing at a place of pilgrimage to various important citizens of the town including the king

सूत्र १०२. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव कण्णंतेउरे, जेणेव मल्ली विदेहवररायकन्ना, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए, दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयति, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ।

सूत्र १०२ एक बार चोक्खा अपने हाथ मे त्रिदण्ड, कमण्डल आदि लिये गेरुए वस्त्र पहने अपने मठ से निकली और कुछ परिव्राजिकाओं के साथ नगर के बीच से राजभवन की ओर गई। वहाँ पहुँचकर वह अंत पुर मे मल्लीकुमारी के पास गई। भूमि पर पानी छिडका, घास बिछाई और उस पर आसन बिछाकर बैठ गई। उसने मल्लीकुमारी को अपने शौचादि धर्म का उपदेश देना आरंभ कर दिया।

102. One day, carrying her trident, gourd-pot, and wearing her ochre coloured dress, Chokkha left her abode and entered the palace along with her disciples She straight-away came to the inner part where Princess Malli stayed She sprinkled some water on the floor, spread some hay and her mattress and sat down After this she started her usual preaching of the religion of cleansing (etc)

सूत्र १०३. तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइय एवं वयासी– "तुब्भ ण चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?"

तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी–"अम्हं णं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पण्णवेमि, जं ण अम्हं किंचि असुई भवइ, तं णं उदएण य मट्टियाए य जाव अविग्घेण सग्गं गच्छामो।"

सूत्र १०३ इस पर विदेहकुमारी ने प्रश्न किया–"चोक्खा ! तुम्हारे धर्म का मूल क्या कहा गया है ?"

चोक्खा ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिये ! मैं शौच मूलक धर्म का उपदेश देती हूँ। हमारे मत मे प्रत्येक अशुचि को जल और मिट्टी से शुद्ध किया जाता है। इसी प्रकार जलाभिषेक से जीव पवित्र हो जाता है। अतत इस धर्म पालन से ही जीव निर्विघ्न स्वर्ग को प्राप्त करता है।"

103 Interrupting her, Princess Malli asked, "Chokkha! What is said to be the basis of your religion?"

Chokkha replied, "Beloved of gods! I preach the religion that is based on cleansing. Our school propagates that every impurity is cleansed with the help of sand and water. Thus, by bathing, a being becomes pure. By following this religion only, a being gets liberated in the end."

चोक्खा का पराभव

सूत्र १०४. तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइयं एव वयासी–"चोक्खा ! से जहानामए केइ पुरिसे रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा, अत्थि ण चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण धोव्वमाणस्स काइ सोही ?"

"णो इणट्ठे समट्ठे।"

सूत्र १०४ मल्लीकुमारी ने फिर प्रश्न किया–"चोक्खा ! यदि कोई व्यक्ति रक्त मे सने कपडे को रक्त से ही धोवे तो उस कपडे की थोडी-सी भी शुद्धि होती है क्या ?"

चोक्खा–"नही ! ऐसा नही हो सकता।"

DEFEAT OF CHOKKHA

104. Princess Malli again asked, "Chokkha ! If someone washes blood stained cloths with blood only, does it cleanse it even a little?"

Chokkha, "No, that is not possible."

सूत्र १०५ "एवामेव चोक्खा ! तुब्भे णं पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि काई सोही, जहा व तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण धोव्वमाणस्स।"

सूत्र १०५ मल्ली–"उसी प्रकार हे चोक्खा ! तुम्हारे धर्म मे हिसा, मिथ्यादर्शन-शल्य आदि अठारह पापो के लिये निषेध नही होने के कारण किसी प्रकार की शुद्धि नही हो सकती। ठीक उसी प्रकार जैसे रक्त सने कपडे को रक्त से ही धोने से शुद्धि नही होती।"

105. Princess Malli, "So, Chokkha ! as there is no denial for indulgence in the eighteen sins including violence, misconception, (etc.) in the religion you preach, it cannot cause any purification. Exactly like washing with blood cannot remove blood stains from a cloth."

सूत्र १०६. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था। मल्लीए णो सचाएइ किचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीया संचिट्ठइ।

सूत्र १०६ मल्ली के इस कथन से चोक्खा के मन में अपने सिद्धान्त के प्रति शका, काक्षा और विचिकित्सा उत्पन्न हुई। वह दुविधा में पडकर मौन हो गई।

106. This statement of Princess Malli gave rise to doubt, curiosity and suspense in Chokkha's mind The confusion made her silent

सूत्र १०७ तए ण तं चोक्ख मल्लीए बहूओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिसंति, गरहति, अप्पेगइयाओ, हेरुयालति, अप्पेगइयाओ मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइयाओ वग्घाडीओ करेति, अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ करेंति, अप्पेगइयाओ तालेमाणीओ करेति, अप्पेगइयाओ निच्छुभंति।

तए ण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसमिसेमाणा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसियं गेण्हइ, गेण्हित्ता कण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गछित्ता परिव्वाइयासपरिवुडा जेणेव पचालजणवए जेणेव कपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूण राईसर जाव परूवेमाणी विहरइ।

सूत्र १०७ मल्लीकुमारी की अनेक दासियाँ चोक्खा की निंदा, आलोचना करती उसके दोष प्रकट करने लगी, चिढाने लगी, उसकी ओर मुँह मटकाने लगी, उपहास करने लगी और उसकी तर्जना-ताडना करते उसे ठेलकर बाहर निकाल दिया।

इस व्यवहार से चोक्खा खिन्न हो गई और क्रोध से मिसमिसाती हुई मन ही मन मल्ली के प्रति द्वेष करने लगी। उसने जल्दी से अपना आसन उठाया और महल से बाहर निकल गई। वह अपनी परिव्राजिका शिष्याओं के साथ मिथिला नगर से भी बाहर निकल गई और पाचाल जनपद मे प्रवेश कर कापिल्यपुर नगर मे जा पहुँची। वहाँ उसने अपने शौच प्रधान धर्म का उपदेश देना आरम्भ कर दिया।

107. The multitude of Princess Malli's maids censured, condemned, criticized and jibed at Chokkha and making her a laughing stock pushed her out

This ill-treatment disturbed Chokkha and she gnashed her teeth with anger and aversion for the princess She lifted her mattress and hurried out of the palace With her group of disciples she left Mithila

as well She entered the area of Panchal and reached Kampılyapur There too she started preaching her cleansıng based relıgıon

जितशत्रु के पास चोक्खा

सूत्र १०८. तए णं से जियसत्तू अन्नया कयाई अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरइ।

तए णं सा चोक्खा परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे, जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तु जएणं विजएणं वद्धावेइ।

तए ण से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्खं परिव्वाइय सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता समाणित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ।

तए ण सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निविसइ, जियसत्तु राय रज्जे य जाव अतेउरे य कुसलोदंत पुच्छइ। तए ण सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्म च जाव विहरइ।

सूत्र १०८ एक दिन राजा जितशत्रु अपने परिवार से घिरा अन्त पुर मे सिहासन पर बैठा था। तभी अपनी शिष्याओं सहित चोक्खा परिव्राजिका ने वहॉ प्रवेश किया और राजा का विजय कामना सहित अभिनन्दन किया। परिव्राजिका को आया देख राजा सिहासन से उठा और चोक्खा का स्वागत सत्कार कर उसे बैठने को कहा।

चोक्खा ने यथाविधि अपना आसन बिछाया और बैठकर राजा से क्षेम-कुशल पूछी। फिर उसने अपने शौच धर्म का उपदेश दिया।

CHOKKHA WITH JITSHATRU

108. One day Kıng Jıtshatru was sıttıng on hıs throne surrounded by hıs famıly ın the ınner part of hıs palace With her dıscıples Chokkha entered the palace and arrıved theır She greeted the kıng, wıshıng for hıs vıctory When the kıng saw her comıng he left hıs throne, receıved her wıth honour and offered her a seat

Chokkha spread her mattress on the floor, sat down and asked about the kıng's well beıng After thıs she started her preachıng

सूत्र १०९. तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी-"तुमं णं देवाणुप्पिए ! बहूणि गामागर जाव अडसि, बहूण य राईसरगिहाइं अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्स वि रण्णो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह उवरोहे ?"

सूत्र १०९. अपनी रानियों के सौन्दर्यादि से अभिभूत जितशत्रु ने तब चोक्खा से पूछा-"हे देवानुप्रिये ! तुम अनेक ग्रामादि में अनेक राजा आदि के घरों में आती जाती हो। बताओ तुमने मेरे रनिवास जैसा कोई रनिवास भी देखा है क्या ?"

109. Obsessed with the beauty of his queens King Jitshatru asked Chokkha when her preaching concluded, "Beloved of gods ! You wander around, go to numerous villages (etc.) and visit many a king (etc) Tell me if you have ever come across any seraglio like mine?"

कूपमंडूक

सूत्र ११० तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसिं अवहसिय करेइ, करित्ता एव वयासी-"एव च सरिसए णं तुमे देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स।"

"केस ण देवाणुप्पिए ! से अगडदद्दुरे ?"

"जियसत्तू ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया, से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे, अण्ण अगड वा तलाग वा दहं वा सर वा सागरं वा अपासमाणे एवं मण्णइ-"अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा।"

तए णं त कूव अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए। तए ण से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं एव वयासी-"से केस णं तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?"

तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुरं एव वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे।"

तए ण से कूवदद्दुरे त सामुद्दय दद्दुरं एवं वयासी-"केमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"

तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुरं एवं वयासी-"महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे।"

तए ण से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढित्ता एवं वयासी-"एमहालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"

"णो इणट्ठे समट्ठे, महालए ण से समुद्दे।"

तए ण से कूवदद्दुरे पुरच्छिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ताणं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—"एमहालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"

"णो इणट्ठे समट्ठे।" तहेव।

सूत्र ११० चोक्खा मुस्कराई और बोली—"देवानुप्रिय ! तुम्हारे इन वचनो से तुम कूपमडूक जैसे जान पडते हो।"

राजा—"देवानुप्रिये ! कैसा कूपमडूक ?"

चोक्खा—"जितशत्रु ! किसी कुएँ मे एक कुएँ का मेढक था। वह उसी कुएँ मे पैदा और बडा हुआ था। उसने अन्य कोई कुऑ, तालाब, झील, सरोवर या समुद्र नहीं देखा था। इसलिये उसकी धारणा थी कि यही कुऑ है और यही सागर, इसके अतिरिक्त कुछ भी नही है। एक दिन उस कुएँ मे अचानक एक समुद्री मेंढक आ गया। कुएँ के मेढक ने उससे पूछा—'तुम कौन हो और अचानक कहाँ से आ गए?'

"समुद्री मेढक—'देवानुप्रिय ! मै समुद्र का मेढक हूँ।'

"कूपमडूक—'देवानुप्रिय ! यह समुद्र कितना बडा है ?'

"समुद्री मेढक—'समुद्र बहुत बडा है।'

"कूपमडूक ने अपने पैर से एक रेखा खीची और बोला—'क्या इतना बडा है?'

"समुद्री मेढक—'नही, इससे बहुत बडा।'

"तब कूपमडूक पूर्व दिशा के छोर से कूदकर कुछ दूर गया और पूछा—'वह समुद्र क्या इतना बडा है?'

"समुद्री मेढक—'नही, इससे बहुत बडा।'

"कूपमडूक इसी प्रकार अपनी कूद की दूरी बढाकर पूछता रहा और समुद्री मेढक हर बार उसे वही उत्तर देता रहा।

A WELL-FROG

110. Chokkha smiled and said, "Beloved of gods ! Your statement gives an impression that you are as ignorant as a frog in a well "

King, "Beloved of gods! what is a frog in a well?"

Chokkha, "Jitshatru ! There lived a frog in a well It was born in that well and grew up there only It had not seen any other well, pond,

pool, lake, or sea As such, it believed that well to be the universe. Its concept of a sea was only that well. Suddenly one day a sea-frog came into that well The well-frog asked it, 'Who are you? From where have you come all of a sudden?'

"Sea-frog, 'Beloved of gods! I am a frog from the sea '

"Well-frog, 'Beloved of gods! How big is this sea?'

"Sea-frog, 'The sea is very large '

"The well-frog drew a line with its paw and said, 'Is it this big?'

"Sea-frog, 'No, much bigger than this '

"The well-frog then jumped a little distance from the eastern side of the well and asked, 'Is it this big?'

"Sea-frog, 'No, much bigger than this '

"The well-frog continued to ask the same question again and again after increasing the distance a little every time And every time he got the same answer from the sea-frog

सूत्र १११ "एवामेव तुम पि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूण राईसर जाव सत्थवाहपभिईण भज्ज वा भगिणि वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणेसि–जारिसए मम चेव ण ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स। त एव खलु जियसत्तु ! मिहिलाए नयरीए कुभगस्स धूआ पभावईए अत्तया मल्ली नामं विदेहवर-रायकण्णा रूवेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काइ देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली। विदेहरायवरकण्णाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सइमं पि कल न अग्घइ" त्ति कट्टु जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया।

सूत्र १११ "इसी तरह हे जितशत्रु ! तुमने अन्य राजा आदि गणमान्य व्यक्तियो की पत्नी, बहन, अथवा पुत्र-वधू देखी नही है। इस कारण तुम समझते हो कि तुम्हारे अन्त पुर जैसा कोई अन्य नही है। हे जितशत्रु ! मिथिला नगरी की राजकुमारी मल्ली जैसी अनिद्य सुदरी सारे त्रिभुवन मे नही है। विदेह राजकुमारी के पैर की अगुली के लाखवें अश के बराबर भी नही है तुम्हारा यह अन्त पुर।" ये वचन कहकर चोक्खा वहाँ से अपने स्थान को प्रस्थान कर गई।

111. "Similarly, Jitshatru ! You have not seen the wives, sisters, and daughters-in-law of other prominent people That is the reason that you consider your queens to be the best Jitshatru ! A spotless beauty

like Princess Malli of Mithila is the one and only in this universe. The beauty of all your queens combined together cannot stand before a millionth part of the beauty of the toes of the princess of Videh " With these words Chokkha took his leave

सूत्र ११२. तए णं जियसत्तू परिव्वाइयाजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ११२ इन वचनो से मल्लीकुमारी के प्रति उत्पन्न अनुराग के वश जितशत्रु ने अपना दूत विवाह प्रस्ताव सहित मिथिला के लिए रवाना कर दिया।

112. These words of Chokkha inspired King Jitshatru to send his emissary to Mithila with a marriage proposal

दूतों का संदेश-निवेदन

सूत्र ११३. तए ण तेसि जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ११३ इस प्रकार जितशत्रु आदि उपरोक्त छहो राजाओ के दूत मिथिला नगरी के लिए रवाना हो गये।

EMISSARIES IN MITHILA

113. Thus, six messengers from six different kings including King Jitshatru started for Mithila

सूत्र ११४. तए णं छप्पि य दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेय पत्तेय खधावारनिवेस करेंति, करित्ता मिहिल रायहाणि अणुपविसंति। अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेय पत्तेयं करयल परिग्गहिय साण साण राईण वयणाइं निवेदेति।

सूत्र ११४ ये छहो दूत मिथिला पहुँचे और वहाँ के मुख्य उद्यान मे उन्होने अलग-अलग पड़ाव डाले। फिर वे नगर के बीच होते हुए कुभ राजा के पास आये और उनका हाथ जोड अभिनन्दन करके अपने-अपने स्वामियो के विवाह प्रस्ताव प्रस्तुत किये।

114. When they reached Mithila they camped at different spots in the public garden of Mithila They went separately to the court of King Kumbh, greeted him and conveyed the messages of their respective masters

सूत्र ११५. तए णं से कुंभए राया तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु एवं वयासी-"न देमि णं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहरायवरकन्नं" ति कट्टु ते छप्पि दूते असक्कारिय असंमाणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ।

सूत्र ११५ राजा कुभ दूतो की बाते सुन क्रोध से लाल हो गया और भृकुटी तानकर कहा-"कुमारी मल्ली के लिए तुम मे से किसी का भी प्रस्ताव मुझे स्वीकार नहीं है।" और उसने दूतो का बिना यथोचित सत्कार-सम्मान के पिछले दरवाजे से निकाल दिया।

115. These marriage proposals irritated King Kumbh and he burned with anger Frowning he said, "None of these proposals for Princess Malli is acceptable to me." And he dismissed the emissaries disgracefully through the rear gate

सूत्र ११६. तए ण जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईण दूया कुंभएणं रण्णा असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा सगा जणवया, जेणेव सयाइं सयाइ णगराइं जेणेव सगा सगा रायाणो तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय एव वयासी-

"एव खलु सामी ! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेण निच्छुभावेइ, त न देइ ण सामी ! कुभए राया मल्लिं विदेहरायवरकन्न, साण साण राईण एयमट्ठ निवेदेति।

सूत्र ११६ राजा कुम्भ द्वारा असत्कारित, असम्मानित और निष्कासित वे दूत अपने-अपने राजाओ के पास वापस लौटे और हाथ जोडकर बोले-"हे स्वामी ! जितशत्रु आदि छह राजाओ के हम दूत एक साथ ही मिथिला नगरी पहुँचे। किन्तु राजा कुम्भ ने हमारा अनादर कर हमे निकाल दिया। अत हे स्वामी ! कुभ राजा ने आपका विवाह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया है।"

116. Disgraced, slighted and summarily dismissed the six emissaries returned to their masters and with joined palms submitted, "Sire ! We, all the six emissaries from different kings, reached Mithila at the same time and went to King Kumbh with the marriage proposals But the king summarily dismissed us Thus, sire! King Kumbh has rejected your marriage proposal"

युद्ध की तैयारी

सूत्र ११७. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसि दूयाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमणस्स दूयसंपेसणं करेंति, करित्ता एवं वयासी-

"एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव णिच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा महयाहय-गय-रह-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव दुंदुभिनाइयरवेणं सएहिंतो सएहिंतो नगरेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलाइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए।"

सूत्र ११७ जितशत्रु आदि छहो राजा अपने-अपने दूतों की यह बात सुन-समझकर अत्यन्त कुपित हो गये। उन्होने परस्पर एक-दूसरे के पास दूत भेजे और कहलवाया-"हे देवानुप्रिय ! हम छहो राजाओं के दूतो के साथ मिथिला मे एक-सा व्यवहार कर उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया है। अत हमे कुम्भ राजा पर चढ़ाई कर देनी चाहिए।" सभी ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिर वे स्नानादि से निवृत्त हो वस्त्रादि पहन कवच-शस्त्रादि धारण कर तैयार हो गये। छत्र-चामर सहित हाथी पर सवार हो चतुरगिनी सेना और अपने समस्त वैभव के साथ दुदुभि की ध्वनि करते अपने-अपने नगरों से निकले। सब एक स्थान पर एकत्र हुए और मिथिला की ओर प्रयाण किया।

WAR PREPARATIONS

117. Hearing about the treatment accorded to their emissaries by King Kumbh, all the six kings were enraged They at once sent their representatives to each other with the message, "Beloved of gods ! King Kumbh has ill-treated all our emissaries and turned them out from his court As such, we all should declare war against him and march " Everyone of them welcomed the proposal They got ready with armours and weapons and riding elephants, with umbrellas and whisks and other regalia they came out of their cities With all pomp and show and beats of war-drums they joined their four pronged armies All the six armies rendezvoused at a place and together the started their march to Mithila

सूत्र ११८. तए णं कुभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरहपवर-जोहकलियं सेण्णं सन्नाहेह।" जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ११८. उधर कुम्भ राजा ने यह सूचना मिलने पर अपने सेनापति को बुलाकर कहा—"देवानुप्रिय ! शीघ्र ही अश्वादि से युक्त चतुरंगिनी सेना सजाओ।" सेनापति ने समस्त तैयारी कर राजा को सूचना दी।

118. When King Kumbh got this news he called his commander-in-chief and said, "Beloved of gods ! Get our four pronged army ready to march " The general took necessary steps and informed the king

सूत्र ११९. तए णं कुभए राया ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता विदेहं जणवय मज्झंमज्झेणं जेणेव देसअंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावार-निवेसं करेइ, करित्ता जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ।

सूत्र ११९ राजा कुम्भ तब स्नानादि से निवृत्त हो युद्ध के लिये तैयार हुए और छत्र-चामरादि सहित हाथी पर सवार हो गये। फिर अपनी सुसज्जित सेना सहित मिथिला नगरी के बीच से होते हुए विदेह जनपद की सीमा पर आये। वहाँ पड़ाव डालकर जितशत्रु आदि छह राजाओ की प्रतीक्षा मे युद्ध के लिये सन्नद्ध हो रुके रहे।

119. King Kumbh got ready with armour and weapons and riding an elephant he came out of the town and joined his army With his army he marched to the borders of Videh He camped his army there and waited for Jitshatru and other kings, ready at battle stations

कुम्भ की पराजय

सूत्र १२० तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभएण रण्णा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था।

तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं राय हय-महिय-पवरवीरघाइय-निवडिय-चिधद्धय-प्पडागं-किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडिसेहिंति।

तए ण से कुभए राया जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-महिय जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ।

सूत्र १२० कुछ समय बाद जितशत्रु आदि राजा वहाँ पहुँचे और युद्ध आरम्भ हो गया।

उन छहों राजाओं ने मिलकर कुभ राजा की सेना का हनन-मंथन किया। उसके श्रेष्ठ योद्धाओं का घात किया। उसके ध्वजा आदि राजचिन्हों को छिन्न-भिन्न करके नीचे गिरा दिया। कुभ के प्राण सकट में पड गये और उसकी सेना में भगदड मच गई। इस प्रकार सामर्थ्यविहीन, बलहीन और निर्वीर्य होकर कुंभ राजा पूरे वेग के साथ मिथिला नगरी लौट आया और द्वार बन्द करके किले की रक्षा में जुट गया।

DEFEAT OF KUMBH

120. After sometime all the warrıng kings arrıved and the battle started

The combıned army of the sıx kıngs mauled and overwhelmed Kıng Kumbh's army. The best of hıs warrıors were kılled Hıs flag and regalıa were shattered and sent to dust Kumbh's army was ın shambles and ıt started a quıck retreat Kumbh's own lıfe was ın danger. Loosıng all hıs power, glory, and vıgour he rushed away from the battle He entered Mıthıla and at once got the gates closed The hectıc preparatıons for protectıng the cıty started

मिथिला का घेराव

सूत्र १२१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति।

तए णं कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासण-वरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह राईणं छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पित्तियाहि य ४ बुद्धीहि परिणामेमाणे परिणामेमाणे किचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ।

सूत्र १२१. जितशत्रु आदि छहों राजाओं की सेनाएँ मिथिला नगरी पहुँचीं और वहॉ से मनुष्यो के आवागमन को रोक दिया। नित्य व्यवहार में भी अवरोध पडे इस प्रकार नगर के चारो ओर घेरा डाल दिया।

राजा कुभ अपनी राजधानी को चारो ओर से घिरा जान अपने भीतरी सभा-स्थल में जा सिहासन पर बैठ गया। वह जितशत्रु आदि राजाओ के छिद्र, विवर (दुर्बलता) और मर्म को नहीं समझ सका। अनेक उपाय और उत्पतिया आदि चतुर्यामी बुद्धि का उपयोग करने पर भी उसे कोई उपाय नही सूझा। तब उसका धैर्य टूट गया और हथेली में मुँह टिकाये वह चिन्तामग्न हो गया।

THE SIEGE OF MITHILA

121. The combined armies of the six kings reached the outskirts of mithila and laid a siege. Movement of people was stopped completely. It became difficult to perform the routine daily chores also

Aware of the siege King Kumbh sat down on his throne in the inner parts of the palace. He could not fathom the weakness, shortcomings, points of penetration and other secrets of the attacking armies In spite of applying all his wit he could not formulate a plan to defeat them He gave up and getting listless put his chin on the palm and started brooding

सूत्र १२२. इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं परिवुडा जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ। तए णं कुभए राया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं णो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र १२२ इधर मल्लीकुमारी स्नानादि से निवृत्त हुई तो अपनी दासियो के साथ राजा कुभ के पास आई। उसने पिता के चरण छूकर प्रणाम किया। राजा कुभ ने उसका स्वागत नही किया। गहरी चिन्ता मे डूबे रहने के कारण उन्हे कुमारी के आने का भान भी नहीं हुआ और वे मौन ही रहे।

122. When Princess Malli got free from her routine work she came to King Kumbh with her attendants She touched her father's feet and greeted him King Kumbh did not acknowledge As he was deeply worried he was not even aware of her arrival He just remained silent

मल्ली की योजना

सूत्र १२३. तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभय राय एवं वयासी-"तुब्भे णं ताओ ! अण्णया ममं एज्जमाण जाव निवेसेह, कि ण तुब्भ अज्ज ओहयमणसंकप्पे जाव झियायह ?"

तए ण कुभए राया मल्लिं विदेहरायवरकन्न एव वयासी-"एव खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया, ते णं मए असक्कारिया जाव णिच्छूढा। तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिल रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठन्ति। तए णं अहं पुत्ता ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि।"

सूत्र १२३. यह देख मल्लीकुमारी ने कहा—"हे तात ! आप तो मुझे आती देख स्वागत करते थे, प्रफुल्ल हो गोद में बिठाते थे किन्तु आज ऐसा क्या हुआ कि आप हारे हुए मानसिक संकल्प से प्रभावित हो चिन्तामग्न बैठे हैं ?"

कुम्भराज ने उत्तर दिया—"हे पुत्री ! तुमसे विवाह हेतु जितशत्रु आदि छह राजाओ ने अपने दूत भेजे थे। मैंने उन दूतो को अपमानित करके यहाँ से निकाल दिया। अपने दूतो से यह सब जान वे राजा लोग क्रुद्ध हो गए और मिथिला नगरी को घेर लिया है। मै उनकी सैन्य सज्जा के छिद्रादि को न जान सकने के कारण चिन्तित हूँ।"

MALLI'S PLAN

123. Prıncess Mallı observed thıs and saıd, "Father ! When you saw me comıng you used to greet me and wıth ȷoy made me sıt ın your lap What ıs wrong wıth you today? You appear to be deȷected and worrıed "

Kıng Kumbh replied, "Daughter ! Kıng Jıtshatru and five other kıngs had sent proposals for marrıage wıth you I reȷected the proposals and turned theır emıssarıes out Thıs made these kıngs furıous and they have surrounded Mıthıla I am worrıed because I have not been able to formulate a counter move to defeat them

सूत्र १२४. तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभय रायं एवं वयासी—"मा ण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह, तुब्भे ण ताओ ! तेसि जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईण पत्तेय पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वयह—"तव देमि मल्लि विदेहरायवरकन्नं, ति कट्टु संझाकाल-समयसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनिसंतंसि पत्तेय पत्तेय मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह। अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिधेह, पिधित्ता रोहसज्जे चिट्ठह।

तए णं कुंभए राया एवं तं चेव जाव पवेसेइ, रोहसज्जे चिट्ठइ।

सूत्र १२४. यह सुनकर मल्लीकुमारी ने समाधान प्रस्तुत किया—"तात ! आप उदास व चिन्तित न हों। आप उन छहो राजाओं के पास गुप्त रूप से अलग-अलग दूत भेजकर प्रत्येक को कहला दीजिए कि मैं मल्लीकुमारी का कन्यादान तुम्हें करूँगा। इस सदेश के साथ ही उन्हें अलग-अलग, सध्या के समय जब रास्ते सुनसान रहते हैं, मिथिला नगरी मे बुलाइये। उन्हे वैसे ही अलग-अलग मोहन-गृह के छह गर्भगृहों मे ठहरा दीजिये। यह सब हो जाने पर नगर द्वार बन्द करवाकर नगर रक्षा के लिये तत्पर रहिये।"

राजाकुभ ने मल्लीकुमारी के सुझाव के अनुसार सब काम किया।

124. Princess Malli provided a solution, "Father ! Please don't be sad and dejected. You send messengers secretly and convey the same message to each one of the kings that you will marry me to him. With this message you should also invite each one of them to enter the city in the evening when the streets are deserted Lead them to the six separate rooms surrounding the hall of illusion to stay for the night and make arrangements for their comfortable stay. Once this is done, again close the city gates and be prepared to defend the city"

King Kumbh acted upon this plan suggested by Princess Malli.

सूत्र १२५. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो कल्लं पाउप्पभायाए जाव जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासंति। "एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्न' त्ति कट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववन्ना अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा चिट्ठंति।

सूत्र १२५ दूसरे दिन सुबह वे सब राजा अपने-अपने कमरे की जालियों से मोहनगृह के मध्य रखी मस्तक का छेद और कमल के ढक्कन वाली सोने की बनी मल्लीकुमारी की प्रतिमा को निहारने लगे। यही विदेहराज की श्रेष्ठ कन्या मल्लीकुमारी है–ऐसा समझकर वे उसके रूप, यौवन और लावण्य पर मोहित व आसक्त हो ललचाई दृष्टि से उसे अपलक देखते रहे।

125. Next morning when the kings got up they peeped through the grill of their rooms and saw the life-like golden statue of Princess Malli installed at the centre of the hall of illusion They assumed that this was King Kumbh's daughter, Princess Malli Stunned and entrapped by the beauty, youth and charm of that female figure they continued to stare at it with unblinking and lusty eyes

राजाओं का मन-परिवर्तन

सूत्र १२६. तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए, जेणेव कणगपडिमा तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेइ। तए णं गंधे णिद्धावइ से जहानामए अहिमडे इ वा जाव असुभतराए चेव।

सूत्र १२६ उधर मल्लीकुमारी स्नानादि नित्य कार्यों से निवृत्त हो समस्त वस्त्रालकार धारण किये और अनेक दासियों सहित मोहनगृह में आई। वहाँ आकर वह प्रतिमा के पास

गई और उसके मस्तक से कमल का ढक्कन हटा दिया। ढक्कन हटाते ही उसमें से मृत पशुओं के शरीर से निकली दुर्गन्ध से भी अधिक अरुचिकर अशुभतर दुर्गन्ध निकलने लगी।

MIND CHANGE OF THE KINGS

126. Princess Malli got ready after her bath and wearing her dress and ornaments and came to the hall of illusion with her retinue She went near the statue and removed the lotus cover from the hole at the top As soon as this cover was removed a stench, more obnoxious than that of a corpse, started spreading

सूत्र १२७. तए णं जियसत्तुपामोक्खा तेण असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा सएहि सएहि उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठेंति।

तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी-"किं ण तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं सएहिं उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह ?"

तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लिं विदेहरायवरकन्न एव वयति-"एव खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं सएहि जाव चिट्ठामो।"

सूत्र १२७ जितशत्रु आदि राजा उस तीव्र दुर्गन्ध से विचलित हो गये और घबराकर अपने उत्तरीय से मुँह ढाँपकर विपरीत दिशा मे मुँह करके खडे हो गये। इस पर मल्लीकुमारी ने कहा-"देवानुप्रियो ! आप लोग उत्तरीय से मुँह ढाँप पलटकर क्यो खडे हो गये ?"

उन लोगो ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिये ! हम इस दुर्गन्ध से घबराकर ऐसा करने को विवश हुए है।"

127. King Jitshatru and the other kings were hit by this stench In distress they covered their faces with their shawls and turned around Princess Malli commented, "Beloved of gods! What makes you cover your faces with shawls and turn around?"

They replied, "Beloved of gods ! Flustered by this terrible stench we have been forced to do that "

सूत्र १२८. तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी-"जइ ताव देवाणुप्पिया ! इमीसे कणगमईए जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे पिडे पक्खिप्पमाणे पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे, इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स
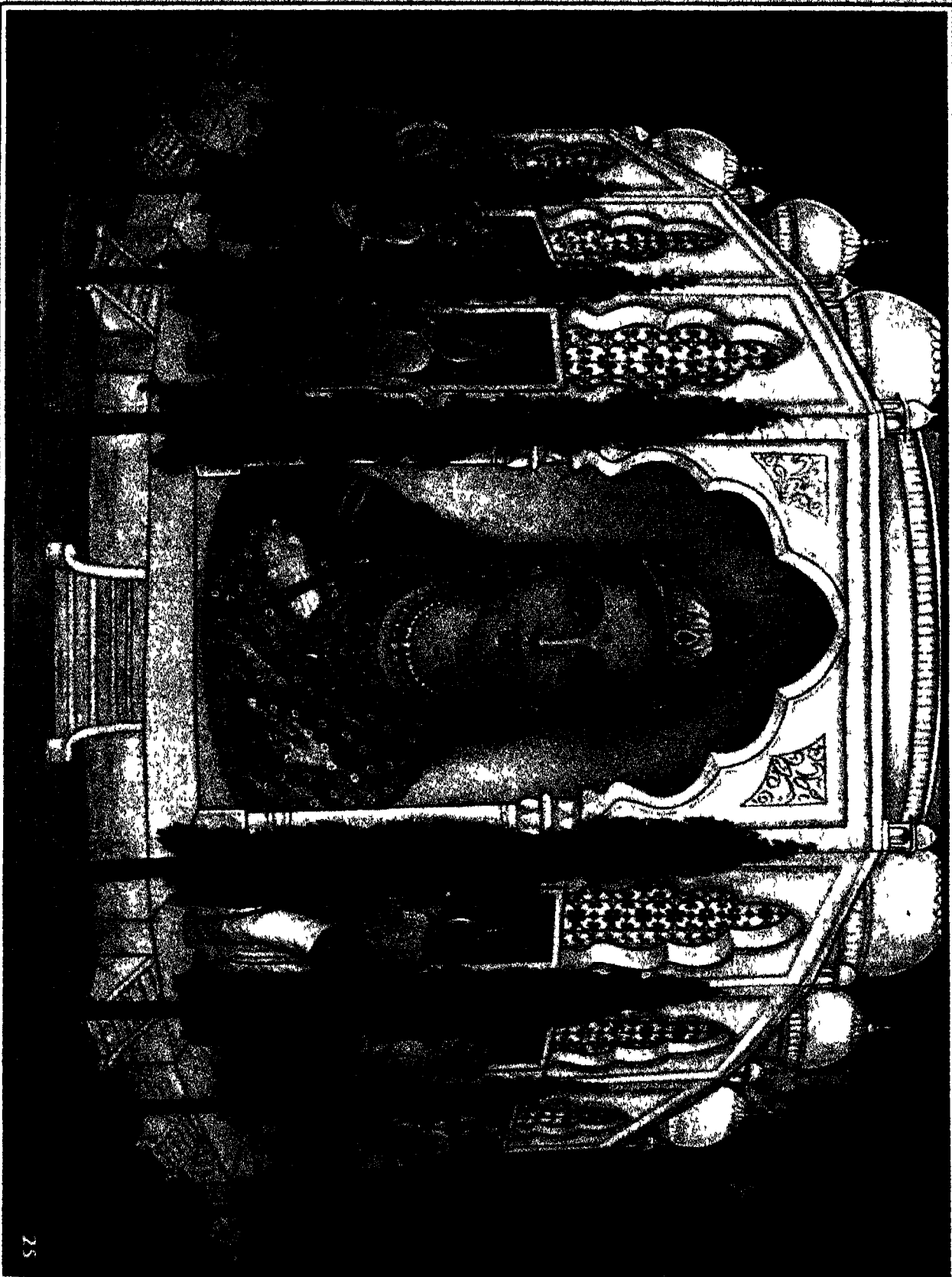
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

छह राजाओं को प्रतिबोध

चित्र २५

मल्लीकुमारी के अद्‌भुत रूप लावण्य की चर्चा सुनकर पूर्वभव के छह मित्र राजा-१ प्रतिबुद्ध, २ चन्द्रछाय, ३ शंख, ४ रुक्मि, ५ अदीनशत्रु और ६ जितशत्रु ने विवाह प्रस्ताव भेजे। किन्तु कुम्भ राजा द्वारा अस्वीकृत करने पर छहों ने एक साथ मिथिला पर आक्रमण कर दिया। मल्लीकुमारी ने अपनी पूर्व योजनानुसार उन्हें प्रतिबोध देने के लिए एक सुन्दर मोहन गृह का निर्माण करवाया था। छहों राजाओं को आमंत्रित करके वहीं अलग-अलग कमरों में ठहरा दिया गया। छहों राजा अपने अपने भवन की जाली में से मध्य में स्थित मल्लीकुमारी की स्वर्णमयी प्रतिमा को ही साक्षात् मल्लीकुमारी समझकर मुग्ध भाव से निहार रहे हैं।

(अध्ययन ८)

PREACHING THE SIX KINGS

ILLUSTRATION 25

Hearing about the astonishing and divine beauty of princess Malli, marriage proposals were sent by her friends from earlier life, now the six kings named— Pratibuddha, Chandracchaya, Shankh, Rukmi, Adinshatru, and Jitshatru. But when king Kumbh rejected the proposals they jointly attacked Mithila. According to her preconceived plan Malli got a house of illusions constructed to clear the misconceptions of these kings. They were invited and sent in six different rooms. Everyone of them is looking through the window in his room and beholding lustily the golden statue believing it to be princess Malli.

(CHAPTER-8)

सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसास-नीसासस्स दुरूव-मुत्तपूतिय-पुरीस-पुण्णस्स सडण-पडण-छेयण-विद्धंसणधम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ ? तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु रज्जह, गिज्झह, मुज्झइ, अज्झोववज्जह।''

सूत्र १२८ तब मल्लीकुमारी ने उन्हें समझाया-''हे देवानुप्रियो ! इस सोने की प्रतिमा के भीतर प्रतिदिन रुचिकर आहार का एक-एक पिण्ड डालते रहने से पुद्‌गल के परिवर्तन का ऐसा अरुचिकर परिणाम सामने आया है। जरा सोचिये, हमारे इस औदारिक शरीर से तो कफ झरता है, खराब उच्छ्‌वास-निश्वास निकलता है, दुर्गन्धयुक्त मल-मूत्र इसमें भरा रहता है, सडना, पडना, नष्ट और विध्वस्त होना इसका स्वभाव है। इस शरीर का परिणमन कैसा होगा ? कल्पना कीजिये ? इसलिये हे देवानुप्रियो ! मनुष्य शरीर से जुड़े कामभोगों के प्रति राग मत करो, अनुरक्ति मत रखो, मोह मत करो और तीव्र आसक्ति मत करो।

128. Princess Malli explained, "Beloved of gods ! This obnoxious stench is the result of the change of state of matter effected by dropping just one handful of best food everyday into this golden statue Just consider that this earthly body of ours releases phlegm, exhales bad air, and is filled with stinking waste or excreta; moreover, its nature is to degenerate, fall, decay, and disintegrate Imagine, then, that what is going to be the ultimate end of this earthly body? As such, Beloved of gods ! Do not get attached to , have fondness for, fall in love with, or get infatuated with the lustful indulgences related to this earthly body

सूत्र १२९ एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावइंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्त वि य बालवयसगा रायाणो होत्था, सह जाया जाव पव्वइया।

तए ण अह देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेण इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि-जइ णं तुब्भे चउत्थ उवसपज्जित्ताण विहरह, तए ण अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। सेसं तहेव सव्व।

सूत्र १२९ ''हे देवानुप्रियो ! हम इससे पहले के तीसरे भव मे पश्चिम महाविदेहवर्ष के सलिलावती विजय की वीतशोका नगरी मे महाबल आदि सात मित्र थे। हम सातो एक समय ही जन्मे और साथ ही दीक्षित हुए थे। उस समय तुमने चतुर्थ भक्त किया तो मैंने षष्ट भक्त कर लिया इस प्रकार तपस्या मे छल करने के कारण मैने स्त्री-नाम-गोत्र कर्म का उपार्जन किया था। (वर्णन पूर्वसम)

129. "Beloved of gods ! In the third birth prior to this one we were seven friends including Mahabal, in the town of Veetshoka in the state of Salilavati of the east Mahavideh area. We all were born at the same time and had become ascetics together. I had earned the Stri-naam-gotra Karma due to cheating in penances (details as before)

राजाओं को जातिस्मरण ज्ञान

सूत्र १३०. तए णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा। तत्थ णं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई। तए णं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे जाव साइं साइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरह।

तए णं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव दारियत्ताए पच्चायाया–

किं थ तयं पम्हुट्ठं, जं थ तया भो जयंत पवरम्मि।
वुत्ता समयनिबद्धं, देवा ! तं संभरह जाइं॥१॥

सूत्र १३०. "फिर तुम लोग यथासमय देह त्यागकर जयन्त विमान में उत्पन्न हुए। वहाँ कुछ कम बत्तीस सागरोपम की आयु पूरी करके तुम लोग इस जम्बूद्वीप मे जन्म ले अपने-अपने राज्यों के अधिपति के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे हो। मै उसी देवलोक की आयु पूर्ण कर कन्या के रूप में जन्मी हूँ।

"क्या तुम उस जयन्त नामक अनुत्तर विमान का वास भूल गये? और यह भी कि हमने परस्पर यह संकेत किया था कि हमे एक-दूसरे को प्रतिबोध देना चाहिए? उस देव भव का स्मरण करो।"

JATISMARAN JNANA TO THE KINGS

130. "Then you all completed your lives and reincarnated as gods in the Jayant dimension Completing a little less than thirty two Sagaropam of age you reincarnated as princes in various states in the Jambu continent and are now living as the rulers of your respective states. After completing my age in the same dimension of gods I have taken birth as a girl.

"Have you forgotten the time you spent in the dimension of gods? And also that we had mutually decided to enlighten each other? Try to remember that life as gods "

सूत्र १३१. तए णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं, पसत्थेणं अज्झवसाणेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णिपुव्वे जाइस्सरणे समुप्पन्ने। एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति।

सूत्र १३१. मल्लीकुमारी से अपने पूर्वभव का यह वृत्तान्त सुनने-समझने के फलस्वरूप जितशत्रु आदि छह राजाओं को शुभ परिणाम, प्रशस्त अध्यवसाय, विशुद्ध होती लेश्याएँ, और ईहापोह (चिन्तन) का उदय हुआ। तब उन्हें जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त हुआ और वे अपने पूर्वभव को देख सके। उन्होंने मल्लीकुमारी के कथन को भलीभाँति समझ लिया।

131. Hearing and understanding all this from Princess Malli, Jitshatru and the other kings went through the process of thinking, ascertaining, analyzing, and exploring (Iha, Apoh, Margana, and Gaveshana) As a result of gradually purifying inner energies (Leshya), righteous endeavour and lofty attitude, they acquired the knowledge about earlier births (Jatismaran Jnana) They at once had the direct perception of all these details about their earlier births. Now they fully understood the statement of Princess Malli

सूत्र १३२. तए णं मल्ली अरहा जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेइ। तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति। तए णं महब्बलपामोक्खा सत्त वि य बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था।

सूत्र १३२ छहों राजाओ को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया है, यह जानते ही मल्ली अर्हत् ने उन गर्भगृहो के द्वार खुलवा दिये। सब राजा बाहर निकलकर मल्ली के पास आये और पूर्वभव के महाबल आदि सातो मित्रो का परस्पर मिलन हुआ।

132. As soon as Princess Malli knew that all the kings now had the knowledge of their earlier births she ordered the gates of all the rooms opened All the kings came out of their rooms and went to Princess Malli Mahabal and his six friends from the earlier birth met.

दीक्षा का संकल्प

सूत्र १३३. तए ण मल्ली अरहा जियसत्तुपामोक्खे छप्पि य रायाणो एवं वयासी—

"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं किं करेह ? किं ववसह ? किं भे हियइच्छिए सामत्थे ?"

सूत्र १३३. फिर अर्हत् मल्ली ने उनसे कहा-"हे देवानुप्रियो ! मै ससार-भय से उद्विग्न हो गई हूँ अत प्रव्रज्या स्वीकार करना चाहती हूँ। आप लोग क्या करना चाहेंगे? किस प्रकार रहेंगे? आपकी भावना और सामर्थ्य की क्या दिशा है?"

RESOLVE TO RENOUNCE THE WORLD

133. Arhat Malli then addressed them, "Beloved of gods ! The fear of rebirths plagues me and so I want to renounce the world. What would you like to do? How would you live? What is the direction and state of your feelings and capacity?"

सूत्र १३४. तए णं जितसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो मल्लि अरहं एवं वयासी-"जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभयउव्विगा जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबधे वा ? जह चेव ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्ह इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव ण देवाणुप्पिया ! इण्हिं पि जाव भविस्सह। अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! ससारभयउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो।"

सूत्र १३४ जितशत्रु आदि राजाओ ने उत्तर दिया-"हे देवानुप्रिये ! यदि आप उक्त कारण से दीक्षा ले रही हैं तो हमारे लिये अन्य कोई आलंबन, आधार अथवा प्रतिबन्ध नहीं है। जिस प्रकार पूर्वभवो में अनेक क्षेत्रो मे आप हमारी मेढी, प्रमाण और धर्मधुरा थीं उसी प्रकार आज भी बने। हे देवानुप्रिये ! हम भी ससार-भय से उद्विग्न है अत आपके साथ ही मुडित होकर हम सभी दीक्षा लेने को तत्पर हैं।"

134. Jitshatru and other kings replied, "Beloved of gods ! If you are renouncing the world for the said reason we shall be left with no support, base, or restraint You should become our friend guide and inspiration as you were in our earlier incarnations Beloved of gods ! we are also plagued by the fear of rebirths, as such we too are ready to shave and renounce the world along with you "

सूत्र १३५. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी-"ज ण तुब्भे ससारभयउव्विग्गा जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं सएहि रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह। दुरूढा समाणा मम अतिय पाउब्भवह।

सूत्र १३५. अर्हत् मल्ली ने कहा–"यदि आप सभी मेरे साथ दीक्षित होना चाहते हैं तो प्रस्थान करें और अपने-अपने राज्य में अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य सौंप कर पुरिससहस्रवाहिनी पालकी पर सवार होकर मेरे पास लौट आवें।"

135. Arhat Malli said, "If you want to get initiated with me please return to your kingdoms, hand over the kingdoms to your elder sons, and come back to me riding the Purisasahassa palanquins."

सूत्र १३६. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति।

तए णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे गहाय जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ।

तए ण कुंभए राया ते जियसत्तुपामोक्खे विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्ल-लकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं, जेणेव नयराइं, तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता सयाइं सयाइं रज्जाइं उवसपज्जित्ता ण विहरंति।

सूत्र १३६ छहो राजाओं ने अर्हत् मल्ली की यह बात स्वीकार कर ली। अर्हत् मल्ली उन्हे साथ लेकर राजा कुभ के पास आईं और उनसे राजा कुम्भ के चरणों में प्रणाम करवाया। राजा कुम्भ ने जितशत्रु आदि राजाओं का यथोचित स्वागत-सत्कार किया भोजन आदि कराया और सम्मान सहित उन्हे विदा किया।

छहो राजा अपने-अपने राज्यो मे लौट गये और सुखपूर्वक रहने लगे।

136. All the kings accepted this suggestion from Arhat Malli She brought them to King Kumbh and made them touch his feet. King Kumbh greeted them, served them food, and suitably honoured them before bidding them farewell

The kings returned to their kingdoms and resumed their routine life happily

सूत्र १३७. तए णं मल्ली अरहा "संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि" त्ति मणं पहारेइ।

सूत्र १३७. इधर अर्हत् मल्ली ने यह सकल्प किया कि "मैं आज से एक वर्ष पूरा होने पर दीक्षा ग्रहण कर लूँगी।"

137. Here, Arhat Malli resolved, "I shall get initiated exactly after one year from this date."

सूत्र १३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स आसणं चलइ। तए णं सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"एवं खलु जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रण्णो मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ।"

सूत्र १३८ अर्हत् मल्ली के सकल्प करने पर, उस समय शक्रेन्द्र का आसन डोलने लगा। इस पर उन्होने अपने अवधिज्ञान से जाना कि जम्बूद्वीप के भारतवर्ष की मिथिला नगरी के राजा कुम्भ की पुत्री अर्हत् मल्ली ने यह सकल्प किया है कि वे एक वर्ष पश्चात् दीक्षा लेगी।

138. During that period of time the throne of Shakrendra started shaking He used his Avadhi Jnana to know that in Mithila city in Bharatvarsh in the Jambu continent the daughter of King Kumbh, Arhat Malli, has resolved to renounce the world after one year

वर्षी-दान

सूत्र १३९. "तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पन्न-मणागयाणं सक्काण देविदाणं देवरायाण, अरहंताणं भगवंताणं णिक्खममाणाणं इमेयारूव अत्थसंपयाणं दलित्तए। त जहा-

तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीइं च होंति कोडीओ।
असिइ च सयसहस्सा, इदा दलयंति अरहाण॥"

सूत्र १३९. शक्रेन्द्र ने विचार किया-"अतीत, वर्तमान और भविष्य के शक्र देवेन्द्रों का यह कर्त्तव्य है कि तीर्थंकर भगवान जब दीक्षा लेने वाले हों तब उन्हे दान हेतु प्रचुर सम्पदा उपलब्ध करानी चाहिए। उसका प्रमाण है-तीन अरब अट्ठासी करोड अस्सी लाख सुवर्ण-मुद्राये इन्द्र अर्हतों को देते है।"

THE GREAT CHARITY

139. Shakrendra thought, "It is the duty of the Shakrendras of the past, present and future that when a Tirthankar resolves to get initiated he should be provided with heaps of wealth for charity The traditionally prescribed amount of this wealth is three billion eight hundred eighty eight million gold coins "

सूत्र १४०. एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- "एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीइं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कुंभगभवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।"

सूत्र १४०. यह विचार आने पर शक्रेन्द्र ने वैश्रमण (कुबेर) देव को बुलवाया और कहा- "देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप में अर्हत मल्ली ने दीक्षा लेने का निश्चय किया है अतः परम्परानुसार उन्हें प्रचुर धन उपलब्ध कराना चाहिए। तुम जाओ और नियमानुसार द्रव्य राजा कुम्भ के महल में पहुँचाकर मुझे सूचना दो।"

140. Shakrendra now called Vaishraman (Kuber, the god of wealth) and said, "Beloved of gods ! In the Jambu continent Arhat Malli has resolved to get initiated So, according to the tradition she should be provided with heaps of wealth Please go and deliver the traditionally prescribed sum at the palace and report back."

सूत्र १४१. तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- "गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं, कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया, अट्ठासीयं च कोडीओ असीइं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरह, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

सूत्र १४१ वैश्रमण ने हर्षित हो, हाथ जोड़ शक्रेन्द्र की आज्ञा स्वीकार की और अपने आधीन जृंभक देवों को बुलाकर कहा-"देवानुप्रियो ! जम्बूद्वीप के भारतवर्ष की मिथिला नगरी में जाओ और वहाँ के राजा कुंभ के महल में तीन अरब अट्ठासी करोड़ अस्सी लाख सुवर्ण-मुद्रायें पहुँचाकर मुझे सूचित करो।"

141. Vaishraman was pleased to accept this order from Shakrendra, standing before him with joined palms. He called his subordinate Jrimbhak gods and instructed, "Beloved of gods ! Go to Mithila city in Bharatvarsh in the Jambu continent and deliver three billion eight hundred eighty eight million gold coins and report back to me."

सूत्र १४२. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव पडिसुणेत्ता उत्तर-पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, जेणेव मिहिला

रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रण्णो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति। साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति।

तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ।

सूत्र १४२ जृभक देव यह आज्ञा सुनकर उत्तर-पूर्व दिशा में गये। वहाँ उन्होंने उत्तरवैक्रिय शरीर धारण किया और कुभ राजा के महल मे पहुँचे। वहाँ उन्होंने आज्ञानुसार द्रव्य रख दिया और वापस लौटकर वैश्रमण को कार्य सम्पन्न होने की सूचना दी। वैश्रमण ने जाकर यह सूचना शक्रेन्द्र को दी।

142. The Jrimbhak gods went in the north east direction after getting this order There they transformed themselves into Uttar Vaikriya bodies and reached King Kumbh's palace They placed the wealth as instructed, returned and reported to Vaishraman who in turn reported to Shakrendra

सूत्र १४३. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूण सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेग हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साह इमेयारूवं अत्थसपदाण दलयइ।

सूत्र १४३. मल्ली अर्हत् ने इसके बाद प्रात काल से मध्यान्ह के भोजन पूर्व तक प्रतिदिन एक करोड आठ लाख स्वर्ण-मुद्राएँ दान मे देना आरंभ किया। दान प्राप्त करने वालो मे सनाथ, अनाथ, पाथिक, पथिक, करोटिक, कार्पटिक आदि सभी थे।

143. After this Arhat Malli started giving in charity ten million eight hundred thousand gold coins every day up to lunch time Those who received charity included beggars, mendicants, travelers, wayfarers, orphans as well as the well off

कुंभ की भोजनशालाएँ

सूत्र १४४ तए णं से कुभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहूओ महाणससालाओ करेइ। तत्थ ण बहवे मणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विपुलं असणं पाण खाइमं साइम उवक्खडेति। उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छंति तं जहा–पंथिया वा, पहिया वा, करोडिया वा, कप्पडिया वा, पासडत्था वा, गिहत्था वा तस्स य तहा

आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति।

सूत्र १४४. उधर राजा कुंभ ने मिथिला नगरी में यत्र-तत्र-सर्वत्र अनेक भोजनशालाएँ बनवाईं। वहाँ पर अनेक वैतनिक कर्मचारी, जिन्हें भोजन भी दिया जाता था, प्रचुर भोजन सामग्री बनाने लगे। उन भोजनशालाओं मे जब भी, जो भी आता उसे स्वागत कर, विश्राम दे, सुखद आसन पर बैठाकर यथेष्ट भोजन कराया जाने लगा। इन भोजनशालाओं में पाथिक, पथिक, करोटिक, कार्पटिक, पाखण्डी, गृहस्थ आदि सभी आने लगे।

FOOD DISTRIBUTION BY KUMBH

144. At his end, King Kumbh opened many food distribution centres at various spots in Mithila. Many cooks were employed to prepare large quantities of eatables. Whenever and whoever went into these centres was greeted and provided ample food and comfort without any charges. These places were also frequented by all and sundry without any restrictions or discrimination

सूत्र १४५. तए णं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ– "एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण पाणं खाइमं साइमं बहूणं समणाय य जाय परिवेसिज्जइ।"

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं।
सुर-असुर-देव-दाणव-नरिंदमहियाण निक्खमणे॥

सूत्र १४५ मिथिला नगरी में चौक, चौराहे आदि सभी स्थानों पर अनेक लोग परस्पर चर्चा करने लगे–"हे देवानुप्रियो ! राजा कुंभ के महल में सर्वगुण-रस वाला स्वादिष्ट भोजन इच्छानुसार यथेष्ट मात्रा मे परोसा जाता है।" कहा भी है–

"सुर, असुर, देव, दानव, नरेन्द्र, चक्रवर्ती आदि द्वारा पूजित तीर्थंकर की दीक्षा के अवसर पर इच्छित दान पाने की घोषणा की जाती है और याचकों को उनकी इच्छानुसार तरह-तरह से दान दिया जाता है।"

145. At various spots like squares, junctions, etc. people started gossiping, "Beloved of gods ! Nutritious and sumptuous food, as much as you desire and can eat, is being served to all in the palace of King Kumbh " As is said—

"On the occasion of the initiation of a Tirthankar, the one who is revered by god, demon, deity, devil, king, and emperor alike, it is announced as well as done that charity will be given to all and sundry as much as they desire "

सूत्र १४६. तए णं मल्ली अरहा संवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीइं च होंति कोडीओ असिइ च सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थसपयाण दलइत्ता निक्खमामि त्ति मणं पहारेइ।

सूत्र १४६ तीन अरब अट्ठासी करोड अस्सी लाख सुवर्ण-मुद्राओ का दान दे चुकने पर अर्हत् मल्ली ने निश्चय किया कि अब मै दीक्षा ग्रहण करूँ।

146. When the total amount provided by the gods was given in charity Arhat Malli decided that now she will get initiated

देवो का कर्त्तव्य-पालन

सूत्र १४७ तेण कालेण तेण समएण लोगतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहि सएहि विमाणेहि, सएहि सएहि पासायवडिसएहि, पत्तेयं पत्तेय चउहि सामाणियसाहस्सीहिं, तिहि परिसाहि, सत्तहि अणिएहि, सत्तहि अणियाहिवईहि, सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि, अन्नेहि य बहूहि लोगतिएहि देवेहि सद्धि सपरिवुडा महयाहयनट्टगीयवाइय जाव रवेण भुजमाणा विहरंति। त जहा–

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य॥

सूत्र १४७ काल के उस भाग मे लोकान्तिक देवराज ब्रह्मलोक नामक पॉचवे देवलोक के अरिष्ट नामक विमान-क्षेत्र मे अपने-अपने विमान और उत्तम निवास मे उच्च स्वरो मे बजते वाद्य-यन्त्रो की ध्वनियो के बीच नृत्य और गायन का आनन्द ले रहे थे। उनमे से प्रत्येक चार-चार हजार सामानिक देवो, तीन-तीन परिषदो, सात-सात सेनापतियो सहित लश्करो, सोलह-सोलह हजार आत्मरक्षक देवो और अनेक लोकान्तिक देवो से घिरे हुए थे। उन (नव लोकान्तिक) देवराजो के नाम है–(१) सारस्वत, (२) आदित्य, (३) वह्नि, (४) वरुण, (५) गर्दतोय, (६) तुषित, (७) अव्याबाध, (८) आग्नेय, तथा (९) रिष्ट।[1]

१ इनमे से आठ कृष्ण राजि के मध्य आठ विमानो मे रहते हैं। रिष्ट, रिष्ट नामक विमान प्रतर मे रहते है।

GODS PERFORM THEIR DUTY

147. During that period of time the kings of gods at the edge of the universe in their gorgeous abodes in the space vehicles located in the Arishta area of the Brahmalok, the fifth dimension of gods were enjoying dance and vocal music accompanied by instrumental music Everyone of these kings was surrounded by four thousand gods owning space vehicles, three assemblies, seven armies with their commanders, sixteen thousand body guards and many other gods The names of these kings of gods are—1 Saraswat, 2 Aditya, 3 Vanhi, 4 Varun, 5 Gardatoya, 6 Tushit, 7 Avyabaadh, 8 Agneya, and 9 Risht *(of these first eight reside in eight different dimensions in the level of darkness or Krishna Raji and the ninth in the level known as Risht)*

सूत्र १४८. तए ण तेसि लोयतियाण देवाणं पत्तेयं पत्तेय आसणाइं चलंति, तहेव जाव "अरहताण निक्खममाणाण संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामो णं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ सबोहणं करेमो।" त्ति कट्टु एव संपेहेंति, संपेहित्ता उत्तरपुरच्छिम दिसीभायं वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एव जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल ताहि इट्ठाहि जाव एवं वयासी–

"बुज्झाहि भयव ! लोगनाहा ! पवत्तेहि धम्मतित्थं, जीवाणं हिय-सुह-निस्सेयसकरं भविस्सइ" त्ति कट्टु दोच्च पि तच्च पि एवं वयंति। वइत्ता मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र १४८ इन सभी लोकान्तिक देवो के आसन डोलने लगे तो उन्होंने अर्हत् मल्ली की दीक्षा लेने की इच्छा जानकर विचार किया–"दीक्षा लेने की इच्छा करने वाले तीर्थंकरो को सम्बोधित करना हमारा परम्परागत कर्त्तव्य है अत हमे उसका पालन करना चाहिये।" फिर उन्होने यथाविधि उत्तर वैक्रिय शरीर धारण किया और जभृक देवो की तरह असख्यात योजन पार कर कुभ राजा के महल मे प्रवेश किया। नूपुरो की ध्वनि वाले पंचरगे परिधान धारण किये वे देव अर्हत् मल्ली के पास आकर हाथ जोड़कर मधुर स्वर में बोले–

"हे भगवान ! हे लोकनाथ ! बोध प्राप्त करो। जीवों के लिए हितकारी, सुखकारी और मोक्ष के मार्ग रूप धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करो।" ये वचन तीन बार उच्चारित कर अर्हत् मल्ली को वन्दना-नमस्कार कर वे लौट गये।

148. The thrones of all these gods at the edge of the universe started trembling Getting aware of the desire of Arhat Malli to get initiated they thought, "To formally request for initiation to the Tirthankars with desire to renounce is our traditional duty, so we should perform it " They transformed into the Uttar Vaikriya bodies and like the Jrimbhak gods traveled infinite Yojans to arrive at the palace of King Kumbh Dressed in colourful apparel fitted with sweetly resonating rattles these gods appeared before Arhat Malli and joining their palms uttered in melodious voice—

"Bhagavan ! Lord of the universe ! Please pursue the path of enlightenment Please establish the ford of religion, propagated as the path of liberation, that is the source of beneficence and happiness for all beings " They uttered these words three times and returned after bowing before Arhat Malli

सूत्र १४९. तए णं मल्ली अरहा तेहि लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-"इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह।"

सूत्र १४९ तब अर्हत् मल्ली अपने माता-पिता के पास गए और हाथ जोडकर कहा-"हे माता-पिता ! मेरी इच्छा है कि आपकी आज्ञा पाकर, गृह त्यागकर, मुंडित होकर अनगार-प्रव्रज्या ग्रहण करूँ।"

माता-पिता ने उत्तर दिया-"हे देवानुप्रिये ! तुम्हे जिसमे सुख प्राप्त हो वैसा निर्विलम्ब करो।"

149. Arhat Malli now went to her parents and joining her palms she said, "Father and mother ! With your permission I wish to abandon the home, shave and get initiated as a homeless ascetic."

The parents replied, "Beloved of gods ! Without any delay, do as it pleases you "

अभिषेक समारोह

सूत्र १५०. तए णं कुंभए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाण जाव अट्ठसहस्साण भोमेज्जाणं कलसाणं ति। अण्णं च महत्थ जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह।" जाव उवट्ठवेंति।

सूत्र १५०. फिर राजा कुम्भ ने सेवकों को बुलाकर कहा–"स्वर्णादि आठ पदार्थों के प्रत्येक के एक हजार आठ-आठ कलश लाओ। साथ में तीर्थंकर के अभिषेक की समस्त श्रेष्ठ और बहुमूल्य सामग्री भी लाओ।" सेवकों ने राजाज्ञानुसार कार्य सम्पन्न कर दिया।

ANNOINTING CEREMONY

150. King Kumbh called his staff and said, "Bring one thousand eight urns each of eight different materials including gold. With these, also bring all the best and expensive things needed for the annointing of a Tirthankar" The attendants carried out the King's order

सूत्र १५१. तेणं कालेण तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया।

तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह।" जाव उवट्ठवेंति। तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा।

सूत्र १५१ काल के उस भाग मे चमर नामक असुरेन्द्र से लेकर अच्युत स्वर्ग के देवेन्द्र तक सभी चौंसठ इन्द्र वहाँ आ गये।

शक्रेन्द्र ने तब अभियोगिक देवो को बुलाया और कहा–"शीघ्र ही मनुष्यों द्वारा एकत्र अभिषेक सामग्री के समान दैविक अभिषेक सामग्री ले आओ।" अभियोगिक देवगण सब सामग्री ले आये और वह कलशादि समस्त दिव्य सामग्री मानवीय सामग्री में सम्मिलित कर दी गई।

151. During that period of time all the sixty four Indras (kings of gods and demons) including the demon king Chamar and the king of the gods of the Achyut dimension arrived there Shakrendra called the gods responsible for ceremonies and said, "At once bring all the things needed for the divine annointing, as the humans have collected." The ceremonial gods brought all the needed things and these divine things fused with the human things already present

सूत्र १५२. तए णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुह निवेसेइ, अट्ठसहस्सेण सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचइ।

सूत्र १५२. इसके बाद शक्रेन्द्र और राजा कुभ ने अर्हत् मल्ली को पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बैठाया और उक्त सामग्री से उनका अभिषेक किया।

152. Shakrendra and King Kumbh seated Arhat Mallı on a throne facing east and annointed him with the said things.

सूत्र १५३ तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सब्भिंतरं बाहिरिय जाव सव्वओ समंता आधावंति परिधावंति।

सूत्र १५३ भगवान मल्ली के अभिषेक के समय कई देव मिथिला के भीतर-बाहर आ-जा रहे थे।

153. At the time of the annointing ceremony of Arhat Mallı numerous gods continued to arrive at and leave that place

पालकी

सूत्र १५४. तए ण कुंभए राया दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेइ जाव सव्वालकार-विभूसियं करेइ, करित्ता कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ। सद्दावित्ता एव वयासी– "खिप्पामेव मणोरम सीयं उवट्ठवेह।" ते वि उवट्ठवेंति।

सूत्र १५४ फिर राजा कुभ ने सिहासन उत्तरमुखी करके रखवाया और भगवान मल्ली को सभी अलकारो से सजाकर बैठाया। उन्होने सेवकों को बुलाकर कहा–"जल्दी से मनोरमा नाम की पालकी लाओ।" सेवक वह पालकी ले आए।

THE PALANQUIN

154. King Kumbh got the throne placed facing north and seated Arhat Mallı after adorning her with all gorgeous ornaments He called his staff and said, "Go and get the palanquin named Manorama " The attendants immediately brought the palanquin

सूत्र १५५ तए ण सक्के देविंदे देवराया आभियोगिए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–"खिप्पामेव अणेगखंभं जाव मनोरम सीय उवट्ठवेह।" जाव सावि सीया त चेव सीय अणुपविट्ठा।

सूत्र १५५ इस पर शक्रेन्द्र ने अभियोगिक देवो को बुलाकर कहा–"जल्दी मे अनेक स्तम्भो वाली मनोरमा नामकी शिविका उपस्थित करो।" देवगण वह शिविका ले आये और वह शिविका मनुष्यो की पालकी मे समा गई।

155. Shakrendra also called the ceremonial gods and said, "Bring forth the Manorama divine palanquin " The gods brought it and it vanished into the human palanquin

सूत्र १५६. तए णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीय दुरूहइ। दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

सूत्र १५६ अर्हत् मल्ली सिहासन से उठे और पालकी के पास आकर उसकी प्रदक्षिणा कर उसमे चढकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके सिहासन पर बैठ गये।

156. Arhat Mallı got up from the throne, reached near the palanquın and went around ıt three tımes before ascendıng ıt and sıttıng facıng east.

सूत्र १५७ तए ण कुभए राया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ। सद्दावित्ता एवं वयासी–"तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालकार-विभूसिया मल्लिस्स सीय परिवहह।" तेवि जाव परिवहति।

सूत्र १५७ फिर राजा कुभ ने अठारह जाति-उपजाति के लोगो को बुलवाकर कहा–"हे देवानुप्रियो ! तुम लोग स्नानादि कर्मो से निपटकर सब प्रकार के आभूषण पहनकर अर्हत् मल्ली की पालकी उठाओ।" उन्होने राजाज्ञा का पालन किया।

157. Kıng Kumbh called people from all the eıghteen castes and sub-castes and saıd, "Beloved of gods ! Take your bath and get ready donnıng suıtable dresses After thıs, come and lıft the palanquın of Arhat Mallı " They followed the kıng's order

महाभिनिष्क्रमण

सूत्र १५८ तए ण सक्के देविदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्ल उवरिल्ल बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल उवरिल्ल बाह गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं। अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीयं परिवहति।

सूत्र १५८ उस मनोरमा पालकी की दक्षिण दिशा की ऊपरी बॉह शक्रेन्द्र ने पकडी, उत्तर दिशा की ऊपरी बॉह ईशानेन्द्र ने, दक्षिण दिशा की निचली चमरेन्द्र ने और उत्तर दिशा की निचली बली ने पकडी। शेष देवो ने यथोचित स्थानो पर से उस पालकी को पकडा।

THE GREAT RENUNCIATION

158. The upper arm of the south facıng sıde of the palanquın was held by Shakrendra The upper arm of the north facıng sıde was held

by Ishanendra. The lower arm of the north facing side was held by Chamarendra. The lower arm of the south facing side was held by Bali The remaining gods held the palanquin at different suitable points.

सूत्र १५९. पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं, तो हट्ठरोमकूवेहिं।
पच्छा वहंति सीयं, असुरिंदसुरिंदनागेंदा॥१॥
चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी।
देविंद-दाणविंदा, वहन्ति सीयं जिणिंदस्स ॥२॥

सूत्र १५९ सबसे पहले वह पालकी मनुष्यों ने उठाई और उनके रोम हर्ष से पुलक उठे। उसके बाद असुरेन्द्रों, सुरेन्द्रों और नागेन्द्रों ने उठाया। डोलते चपल कुण्डलों को धारण करने वाले और अपनी इच्छानुसार विक्रिया से बनाये आभरणों को धारण करने वाले देवेन्द्रों और दानवेन्द्रों ने जिनेन्द्र की पालकी उठायी।

159. As is said—"This palanquin was first of all lifted by human beings and every pore of their body was filled with joy After them, it was lifted by the Kings of demons, gods and serpents The kings of gods and demons, who wear dangling earrings and dresses created by divine process just by wishing for them, lifted the palanquin of the Jinendra, the conqueror of the senses."

सूत्र १६०. तए णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीय दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा अहाणुपुव्वीए एवं निग्गमो जहा जमालिस्स।

सूत्र १६० अर्हत् मल्ली जब मनोरमा पालकी पर आरूढ़ हो गए उस समय उनके आगे अष्ट मंगल अनुक्रम से चले। अर्हत् मल्ली के महाभिनिष्क्रमण का विस्तृत वर्णन जमाली के निर्गमन (भगवती सूत्र), अथवा मेघकुमार (प्रथम अध्ययन) के समान ही है।

160. When Arhat Malli ascended the palanquin eight auspicious things were carried ahead of her in proper sequence The detailed description of the great renunciation of Arhat Malli is same as that of Jamali (Bhagavati Sutra) or Meghkumar (first chapter of this book).

सूत्र १६१. तए णं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेइगया देवा मिहिलं रायहाणिं अब्भिंतर-बाहिरं आसियसंमज्जिय-संमट्ठ-सुइ-रत्थंतरावणवीहियं करेंति जाव परिधावंति।

सूत्र १६१. अर्हत् मल्ली जब दीक्षा ग्रहण करने के लिए निकले तब कई देव मिथिला नगरी को स्वच्छ करने में व्यस्त हो गये (इसका वर्णन राजप्रश्नीयसूत्र में सूर्याभदेव के वर्णन में विस्तार से मिलता है)।

161. When Arhat Mallı set out for gettıng ınıtıated, many gods were busy cleanıng the town of Mıthıla. (Detailed descriptıon avaılable in the Raȷ-prashnıya Sutra).

दीक्षा

सूत्र १६२. तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं ओमुयइ। तए णं पभावती हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणालंकारं पडिच्छइ।

सूत्र १६२. अर्हत् मल्ली सहस्राम्रवन उद्यान में श्रेष्ठ अशोकवृक्ष के नीचे आकर पालकी से उतरे। उन्होंने समस्त वस्त्राभूषणों का त्याग किया और प्रभावती देवी ने सब ले लिये।

INITIATION

162. When the palanquın reached under a great Ashoka tree ın the Sahasramravan garden Arhat Mallı got down from ıt She took out all the ornaments and Queen Prabhavatı collected these

सूत्र १६३. तए ण मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ। तए णं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ। पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ।

तए ण मल्ली अरहा 'णमोऽत्थु णं सिद्धाणं' ति कट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ।

सूत्र १६३ इसके बाद अर्हत् मल्ली ने अपने आप पंचमुष्टिक लोच किया और शक्रेन्द्र ने उन केशों को लेकर क्षीर सागर में प्रवाहित कर दिया। अर्हत् मल्ली ने 'नमोत्थुणं सिद्धाणं' का उच्चारण कर सिद्धो को नमस्कार कर सामायिक चारित्र अंगीकार कर लिया।

163. After thıs, Arhat Mallı pulled out all her haır (the five fistful pullıng out of hair). The Shakrendra collected these haır and ımmersed them ın the ocean of mılk. Arhat Mallı uttered 'Namotthunam Sıddhanam' as salutatıon to the lıberated souls and took the vow of the conduct of equanimıty.

सूत्र १६४. जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च देवाण मणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय-णिणाय-गीत-वाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के

यावि होत्था। ज समय च णं मल्ली अरहा सामाइयं चरित्तं पडिवन्ने तं समयं च णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने।

सूत्र १६४ जिस समय अर्हत् मल्ली ने चारित्र अगीकार किया उस समय शक्रेन्द्र के आदेश से देवो और मनुष्यो का कोलाहल तथा वाद्य यन्त्रो की ध्वनियाँ एकदम बन्द हो गई। चारित्र अंगीकार के तत्काल बाद ही मल्ली अर्हत् को मनुष्य के लिये दुर्लभ और श्रेष्ठ मन पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया।

164. At the moment when Arhat Mallı took thıs vow all gods and human beıngs became totally sılent and all musıcal ınstruments were stopped on the order of Shakrendra Immedıately after Arhat Mallı took the vow she acquıred the Manahparyava Jnana (the ultımate para-psychologıcal knowledge) that ıs rare to achıeve for any human beıng

सूत्र १६५. मल्ली ण अरहा जे से हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे, तस्स ण पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खे णं पुव्वण्हकालसमयसि अट्ठमेण भत्तेण अपाणएण, अस्सिणीहि नक्खत्तेण जोगमुवागएण तिहि इत्थीसएहि अब्भितरियाए परिसाए, तिहि पुरिससएहि बाहिरियाए परिसाए सद्धि मुडे भवित्ता पव्वइए।

सूत्र १६५ अर्हत् मल्ली ने हेमन्त ऋतु के दूसरे महीने और चौथे पक्ष मे पौष शुक्ला एकादशी के दिन पूर्वाह्न के समय निर्जल उपवास करके अश्विनी नक्षत्र का योग आने पर भीतरी परिषद की तीन सौ स्त्रियो तथा बाहरी परिषद के तीन सौ पुरुषो के साथ मुडित होकर दीक्षा ग्रहण की।

165. Arhat Mallı got ınıtıated durıng the second month and the fourth fortnıght of the wınter season The tıme was before noon on the eleventh day of the brıght half of the month of Paush and at that moment the moon was ın ıts first lunar mansıon, the Ashwını Arhat Mallı got ınıtıated along wıth three hundred women of the ınner assembly and three hundred men of the outer assembly

सूत्र १६६ मल्लि अरह इमे अट्ठ णायकुमारा अणुपव्वइसु, त जहा–

णदे य णदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य।
अमरवइ अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए ॥

सूत्र १६६ अर्हत् मल्ली का अनुसरण कर ज्ञातवश के आठ कुमार दीक्षित हुए, उनके नाम है–(१) नन्द, (२) नन्दिमित्र, (३) सुमित्र, (४) बलमित्र, (५) भानुमित्र, (६) अमरपति, (७) अमरसेन, और (८) महासेन।

166. Following the example of Arhat Malli eight princes from the Jnata clan also got initiated. There names are—1 Nand, 2 Nandimitra, 3 Sumitra, 4 Balamitra, 5. Bhanumitra, 6 Amarpati, 7 Amarsen, and 8 Mahasen.

सूत्र १६७. तए णं भवणवइ-वाणमन्तर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं करेंति, करित्ता जाव पडिगया।

सूत्र १६७ फिर भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क, और वैमानिक निकाय के देवों ने अर्हत् मल्ली का दीक्षा-महोत्सव किया। तब वे सब नन्दीश्वर द्वीप गये और अष्टाह्निका महोत्सव सपन्न कर अपने-अपने स्थान को लौट गये।

167. Now the gods from Bhavanpati, Vanavyantar, Jyotishka, and Vaimanik dimensions celebrated the initiation ceremony of Arhat Malli They then proceeded to the Nandishvar island and celebrated the Ashtanhika celebration before returning to their abodes

केवलज्ञान

सूत्र १६८ तए णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं, पसत्थेहिं अज्झवसाणेणं, पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तयावरण-कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलनाणदंसणे समुप्पन्ने।

सूत्र १६८ जिस दिन दीक्षा अंगीकार की थी उसी दिन पराह्नकाल मे, दिन के अन्तिम भाग में अशोक-वृक्ष के नीचे शिला पर बैठे हुए शुभ परिणामो, प्रशस्त अध्यवसाय, और विशुद्ध लेश्याओं के फलस्वरूप अर्हत् मल्ली के ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्मों का क्षय हो गया और वे अपूर्व करण (अष्टम गुणस्थान) को प्राप्त हुए। उसके बाद उन्हें अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, और निरावरण केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हुए।

OMNISCIENCE

168. On the same day, during the last part of the day sitting on a rock under an Ashoka tree, as a result of righteous endeavour, lofty attitude, and purified inner energies (Leshya) all the knowledge-veiling and perception veiling Karmas (Jnanavarniya and Darshanavaraniya Karma) were absolutely destroyed and Arhat Malli attained the level of Apurvakaran (the unique level or the eighth level

of spiritual upliftment). After this she acquired the infinite, unique, unimpeded, and unveiled Keval Jnana and Keval Darshan (ultimate knowledge and perception or the state of omniscience)

सूत्र १६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सव्वदेवाणं आसणाइं चलंति। समोसढा, धम्मं सुणेंति, अट्ठाहियमहिमा नंदीसरे, जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। कुंभए वि निग्गच्छइ।

सूत्र १६९ काल के उस भाग मे इस घटना से सभी देवों के आसन डोल गये। सभी देव अर्हत् के पास उपस्थित हुए और धर्मोपदेश ग्रहण किया। फिर वे नन्दीश्वरद्वीप में आष्टाह्निका महोत्सव करते हुए अपने स्थानों को लौट गये। राजा कुम्भ भी अर्हत् वन्दना को निकले।

169. During that period of time the thrones of gods trembled All the gods came to the Arhat and listened to her discourse They then proceeded to the Nandishvar island and celebrated the Ashtanhika celebration before returning to their abodes King Kumbh also set out to pay homage to the Arhat

सूत्र १७०. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावित्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयाओ दुरूढा सव्विड्ढिए जाव रवेण जेणेव मल्ली अरहा जाव पज्जुवासंति।

सूत्र १७०. जितशत्रु आदि छह राजा अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्रो को राज्य सिहासन पर बैठा पुरिससहस्स वाहिनियो पर बैठ अपने पूर्ण वैभव और गाजे-बाजे के साथ अर्हत् मल्ली के पास आकर उनकी उपासना करने लगे।

170. King Jitshatru and the other kings handed over the kingdoms to their elder sons, and came with all their grandeur and fanfare riding the Purisasahassa palanquins When they arrived near Arhat Malli they commenced her worship

सूत्र १७१. तए ण मल्ली अरहा तीसे महइ महालियाए कुंभगस्स रन्नो तेसि च जियसत्तु-पामोक्खाणं धम्म कहेइ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसि पडिगया। कुभए समणोवासए जाए, पडिगए, पभावई य समणोवासिया जाया, पडिगया।

सूत्र १७१ अर्हत् मल्ली ने कुम्भ राजा और जितशत्रु आदि छह राजाओं सहित उस विशाल धर्मसभा को उपदेश दिया। धर्मसभा समाप्त हुई और सब लोग अपने-अपने स्थानों को लौट गये। राजा कुभ श्रमणोपासक बन गये और रानी प्रभावती श्रमणोपासिका। वे भी अपने स्थान को चले गये।

171. Arhat Mallı gave a dıscourse in that large relıgıous assembly wıth Kıng Kumbh, Kıng Jıtshatru and the other kıngs. After the dıscourse the assembly was adjourned and everyone left. Kıng Kumbh also became a Shramanopasak and Queen Prabhavati a Shramanopasıka and they also left.

सूत्र १७२. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो धम्मं सोच्चा आलित्ते णं भंते जाव पव्वइया। चोद्दसपुव्विणो, अणंते केवले, सिद्धा।

सूत्र १७२ जितशत्रु आदि राजाओं ने धर्मोपदेश सुनकर कहा–"भगवन् ! यह ससार जरा-मरण की आग मे जल रहा है, अति भयंकर और अति विकट रूप से जल रहा है ।" ऐसे वचन कहकर वे सभी दीक्षित हुए। कालान्तर में चौदह पूर्वों के ज्ञाता हो केवलज्ञान प्राप्त कर सिद्ध गति में गये।

172. Jıtshatru and other kıngs saıd after the dıscourse, "Bhagavan! Thıs world ıs burnıng fiercely ın the fire of agıng and death ...." Pleadıng thus they all got ınıtıated. Wıth passage of tıme they acquıred the knowledge of the fourteen sublıme canons and finally got lıberated after attaınıng omnıscıence.

सूत्र १७३ तए णं मल्ली अरहा सहसबवणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ।

सूत्र १७३ अर्हत् मल्ली सहस्राम्रवन उद्यान से बाहर निकलकर जनपदों में विहार करने लगे।

173. Arhat Mallı left the Sahasramravan garden and started wanderıng ın dıfferent populated areas

संघ वर्णन

सूत्र १७४ मल्लिस ण अरहओ भिसग पामोक्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीस गणहरा होत्था।

मल्लिस्स ण अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसियाओ, बंधुमतीपामोक्खाओ पणपण्ण अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया होत्था।

मल्लिस्स णं अरहओ सावयाणं एगा सयसाहस्सीओ चुलसीइं च सहस्सा उक्कोसिया सावया होत्था।

मल्लिस्स ण अरहओ सावियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा सपया होत्था।

मल्लिस्स णं अरहओ छस्सया चोद्दसपुव्वीण, वीससया ओहिनाणीण, बत्तीसं सया केवलणाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाण, अट्ठसया मणपज्जवणाणीणं, चोद्दससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं।

सूत्र १७४. अर्हत् मल्ली के भिषक अथवा किशुक् आदि अट्ठाईस गण और गणधर थे। उनके शिष्यो की उत्कृष्ट सपदा मे चालीस हजार साधु, बधुमती आदि पचपन हजार साध्वियाँ, एक लाख चौरासी हजार श्रावक और तीन लाख पैसठ हजार श्राविकाएँ थी।

उनके शिष्यो मे छह सौ चौदह पूर्वधारी श्रमण, दो हजार अवधिज्ञानी, बत्तीस सौ केवलज्ञानी, पैतीस सौ वैक्रियलब्धिधारी, आठ सौ मन पर्यवज्ञानी, चौदह सौ वादी, और दो हजार अनुत्तरौपपातिक श्रमण थे।

DETAILS OF THE ORGANIZATION

174. Arhat Mallı had twenty eight groups of followers and twenty eight chief disciples lead by Bhishak (or Kinshuk) The maximum number of his disciples included forty thousand male ascetics, fifty five thousand female ascetics lead by Bandhumati, one hundred eighty four thousand Shravaks and three hundred sixty five thousand Shravikas

Among her disciples were six hundred all knowing ascetics (termed as Fourteen Purvadhar), two thousand Avadhijnani, three thousand two hundred omniscients, three thousand five hundred Vaikriya Labdhi Dharak (occult power), eight hundred ascetics with ultimate para-psychological knowledge (Manah-paryava Jnani), fourteen hundred logicians, and two thousand Anutaropapatik ascetics (destined to become gods and later to be liberated)

सूत्र १७५. मल्लिस्स अरहओ दुविहा अतगडभूमी होत्था। त जहा–जुगतकरभूमी, परियायतकरभूमी य। जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुयतकरभूमी, दुवासपरियाए अतमकासी।

सूत्र १७५ अर्हत् मल्ली की दो अन्तकृत भूमि थी। उनकी युगान्तकृत् भूमि उनके बाद बीस पट्टधारियों तक चली। उनकी पर्यायान्तकृत भूमि उनके केवलज्ञान के दो वर्ष बाद आरभ हुई।

175. Arhat Mallı had two Antakrit Bhumis (specific periods of time connected with the ending of the cycle of rebirth or liberation) Her

Yugantakrıt Bhumı contınued tıll the twentıeth head of the order after her (thıs Bhumı ıs the perıod startıng wıth the Nırvana of the Tırthankar and ends when the last of the Nırvana attaınıng heads of the order ıs lıberated) Her Paryayantakrıt Bhumı commenced after two years of her attaınıng omnıscıence (thıs Bhumı ıs the perıod startıng wıth the moment of the Tırthankar attaınıng omnıscıence and endıng when the first pure soul attaıns Nırvana)

निर्वाण

सूत्र १७६. मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूणि उड्ड उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियगुसमे, समचउरंस-सठाणे, वज्जरिसभनारायसंघयणे, मज्झदेसे सुहं सुहेण विहरित्ता जेणेव समेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संमेयसेलसिहरे पाओवगमणमणुववन्ने।

सूत्र १७६ अर्हत् मल्ली पच्चीस धनुष ऊँचे थे। उनका रग प्रियगु के समान था। उनका सस्थान समचतुरस्र और संहनन वज्रऋषभ था। वे मध्य देश से सुखपूर्वक विचरते हुए सम्मेद शिखर आये और वहाँ पादोपगमन अनशन का सकल्प ले लिया।

LIBERATION

176. Arhat Mallı was twenty five Dhanush (a mythıcal measure of length) tall Her complexıon was greenısh lıke black-mustard seed Her figure and constıtutıon were Samchaturas and Vajrarıshabh respectıvely (mythıcal specıficatıons of the human body) Movıng around undısturbed ın the central part of the country she arrıved at Sammed Shıkhar and took the ultımate vow

सूत्र १७७ मल्ली ण एग वाससय आगारवास पणपण्ण वाससहस्साइं वाससयऊणाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता, पणपण्ण वाससहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे, तस्स ण चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेण अद्धरत्तकालसमयंसि पचहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहि बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेण अपाणएणं, वग्घारियपाणी, खीणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जबुद्दीवपण्णत्तीए, नंदीसरे अट्ठाहियाओ, पडिगयाओ।

सूत्र १७७ अर्हत् मल्ली एक सौ वर्ष गृहवास मे रहे। पचपन हजार वर्ष मे सौ वर्ष कम समय तक वे केवलज्ञानी श्रमण के रूप मे रहे। इस प्रकार कुल पचपन हजार वर्षों की आयु पूर्ण कर ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास और दूसरे पक्ष मे चैत्र शुक्ला चतुर्थी के दिन

अर्द्ध-रात्रि के समय भरणी नक्षत्र का योग होने पर पाँच सौ साधुओं और पाँच सौ साध्वियों के साथ एक माह के निर्जल अनशन के बाद दोनों हाथ लम्बे रखकर चारों अघाति कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध हो गये। देवों ने आकर निर्वाण महोत्सव किया (जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुसार)। फिर वे सभी देव नन्दीश्वर द्वीप में अष्टाह्निका महोत्सव करते हुए अपने स्थानों को लौट गये।

177. Arhat Malli lived as a house-holder for one hundred years. She lived as an omniscient ascetic for one hundred years less fifty thousand years. Thus completing her age of fifty five thousand years, during the first month and the second fortnight of the summer season, on the fourth day of the bright half of the month of Chaitra, at midnight when the moon entered the second (Bharani) lunar mansion, after a one month long fast, in a posture with hands raised high Arhat Malli, along with five hundred male and five hundred female disciples, ending all the four non destructible Karmas became a Siddha (a liberated soul) The gods arrived and performed the Nirvana celebrations (Jambu-dveep Prajnapti) They then proceeded to the Nandishvar island and celebrated the Ashtanhika celebration before returning to their abodes

सूत्र १७८. एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र १७८. हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवे ज्ञाता अध्ययन का यही अर्थ कहा है। मैंने यही सुना है, ऐसा मै कहता हूँ।

178. Jambu! This is the text and meaning of the eighth chapter of the Jnata sutra according to Shraman Bhagavan Mahavir This is what I have listened and so I confirm.

॥ अट्ठम अज्झयणं समत्तं ॥

॥ आठवाँ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE EIGHTH CHAPTER ॥

॥ ज्ञाता-धर्मकथाग प्रथम भाग समाप्त ॥

॥ END OF THE FIRST PART OF JNATA-DHARMA-KATHANG ॥

उपसंहार

ज्ञातासूत्र की यह आठवी कथा एक विस्तृत कथा है। इसमे भगवान मल्लीनाथ का जीवन चरित्र तो है ही साथ ही कई उपकथाएँ भी है। जिनमे प्रत्येक मे कोई न कोई प्रेरक सन्देश छुपा है। श्रमणोपासक अर्हन्नक की कथा अडिग आस्था के महत्त्व को उजागर करती है। अपने धर्म-मार्ग पर स्थिर व्यक्ति को कोई भी शक्ति हानि नहीं पहुँचा सकती। चोक्खा परिव्राजिका की कथा भावनारहित कर्मकाण्ड की निरर्थकता को दर्शाती है। आत्मा को भव-मुक्त करना है तो आत्म-साधना के माध्यम से पापकर्मों से मुक्त होना होगा और सयम व तप से कर्ममल को धोना होगा। केवल स्नान-दानादि की औपचारिकता से मुक्ति प्राप्त नही हो सकती। अर्हत् मल्ली की जीवनगाथा इस अकाट्य सत्य को प्रकट करती है कि छल–माया आदि द्वारा अर्जित कर्मो को भोगे बिना उनसे निस्तार नही–चाहे कोई आत्मा कितनी ही शुद्ध या शक्तिमान क्यो न हो। साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जब आत्मा शुद्धि के पथ पर बढने की तीव्र लगन से प्रेरित हो आगे बढ जाती है तो उसके मार्ग मे कोई भी सासारिक बात बाधा उत्पन्न नही कर सकती चाहे वह यात्रा स्त्री के शरीर मे ही क्यो न हो।

आध्यात्मिक शिक्षा के अतिरिक्त इस कथा मे तत्कालीन सामाजिक, सास्कृतिक तथा राजनैतिक जीवन शैली का रोचक व सारगर्भित विवरण भी उपलब्ध होता है।

उपनय गाथा

उग्ग-तव-सजमवओ पगिट्ठफलसाहगस्स वि जियस्स ।
धम्मविसएवि सुहुमावि, होइ माया अणत्थाय ॥१॥

जह मल्लिस्स महाबलभवम्मि तित्थगरनामबधे वि ।
तवविसय-थोवमाया जाया जुवइत्तहेउति ॥२॥

१–उग्रतप तथा सयमवान् एव उत्कृष्ट फल के साधक जीव द्वारा की गई सूक्ष्म और धर्मविषयक माया भी अनर्थ का कारण होती है, यथा–

२–मल्लीकुमारी को महाबल के भव मे तीर्थंकरनामकर्म का बध होने पर भी तप के विषय मे की गई थोडी-सी माया भी युवतीत्व (स्त्रीत्व) का कारण बन गई।

CONCLUSION

This eighth story of Jnata Dharma Katha is an elaborate story Besides the story of Bhagavan Mallinath it contains many other tales,

every one of which has a concealed inspiring message The tale of merchant Arhannak highlights the importance of unwavering faith No power can harm a person who sticks with resolve to his chosen path The tale of Chokkha reveals the futility of thoughtless rituals If the soul has to be liberated from the trap of rebirth it is essential to avoid indulgence in sinful activities with the help of spiritual practices and wash off the accumulated slime of past karmas with the help of self-discipline and penance Mere rituals of bath and charity cannot lead to liberation The story of life of Arhat Malli highlights the absolute reality that even the most elevated and powerful of the souls cannot escape the consequences of acquired karmas without suffering It also reveals that when the soul is inspired by a deep craving to progress on the path of purification of soul, no mundane hurdle can hinder its development, even if it is in a female body

Besides the philosophical message this story contains an informative, absorbing, graphic and vivid description of social, cultural, and political life of that period

THE MESSAGE

A soul that indulges in practices of harsh penance and discipline earning a high status has also to suffer damaging consequences if it commits even a minute error in its religious conduct As—(1)

In spite of earning Tirthankar-naam-karma in the life as Mahabal, the soul that became Malli had to take birth as a female because of the minor error it committed in doing penances

परिशिष्ट

मिथिला–पूर्वी भारत की प्रसिद्ध प्राचीन नगरी। समस्त प्राचीन भारतीय वाङ्मय मे इस नगरी की चर्चा है। एक समय यह अत्यन्त विशाल और समृद्धिशाली नगरी थी। जैसा कि लम्बे समय के अन्तराल मे होता है–इस नगरी ने भी अनेक उतार-चढ़ाव देखे और अनेक नाम पाये। यही कारण है कि वर्तमान मे इसके मूल स्थान के सम्बन्ध में इतिहासकारो के अनेक मतव्य हैं। जातक के अनुसार मिथिला राज्य का विस्तार ३०० योजन था और उसमें १,६०० गॉव थे। एक अन्य स्थान पर यह उल्लेख है कि मिथिला का विस्तार ७ योजन है और समस्त राष्ट्र का विस्तार ३०० योजन। रामायण मे इसे जनकपुरी

व तीरभुक्ति कहा है। विविध तीर्थकल्प में देश को तिरहुति और नगर को जगती कहा है। वर्तमान में नेपाल की सीमा पर स्थित जनकपुर नामक ग्राम को मिथिला माना जाता है। विदेह राज्य, जिसकी राजधानी मिथिला थी, की सीमा उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गगा, पश्चिम में गडकी नदी और पूर्व में मही नदी तक वर्णित है। आज इस क्षेत्र मे मुजफ्फरपुर तथा दरभगा जिले हैं। सीतामढ़ी के निकट मुहिया नामक स्थान को भी कुछ लोग मिथिला मानते हैं। जिनप्रभसूरि ने तीर्थकल्प में इसे जगई नाम दिया है और सीतामढ़ी से पश्चिम मे सात मील पर स्थित बताया है। अठारहवी शताब्दी के जैन यात्रियों ने सीतामढ़ी को ही मिथिला बताया है।

मध्य देश–उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल, पश्चिम मे कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग से घिरे क्षेत्र को मध्य देश कहते है।

सिह निष्क्रीडित तप–सिह की क्रीडा के समान तप। जैसे सिह चलते-चलते मुडकर पीछे दौडता है उसी प्रकार जिस तप मे पिछले तप की आवृत्ति कर फिर आगे का तप किया जाय और उसी क्रम से आगे बढा जाये। इसकी प्रक्रिया चित्र मे बताई गई है।

APPENDIX

Mithila—A famous ancient town of eastern India It finds mention in almost all ancient Indian literature Once it was a large and prosperous town As it happens, this town has also gone through numerous ups and downs and change of names with passage of time That is the reason that historians have many different theories about its exact location According to the Jatak the state of Mithila was spread in an area of 300 Yojans and had 1600 villages within Another source informs that The spread of Mithila, the town, was only 7 Yojans and that of Mithila the state was 300 In Ramayan it has been named Janakpuri and Teerbhukti In Vividh Teerth Kalp the state is named Tirhuti and the town Jagati It is believed that Janakpur, a village on the Nepal border is ancient Mithila There are also mentions that the ancient state of Videh, with Mithila as capital, was defined as the area having the Himalayas in the north, the Ganges in the south, river Gandaki in the west and river Mahi in the east Today this area is covered by the districts of Muzaffarpur and Darbhanga Some people also believe that Muhia, near Sitamadhi, is ancient Mithila Jinprabhsuri has mentioned in his Teerthkalp that it is Jagai, seven miles west of Sitamadhi, that was Mithila in ancient times Some Jain pilgrims of eighteenth century believed that Sitamadhi itself was Mithila

Madhya Desh (Central India)—The area defined by the Himalayas in the north, the Vindhyas in the south, Kurukshetra in the west, and Prayag in the east

Simha Nishkreedit Tap—A penance scheduled like the movement of a lion As a lion while moving ahead turns and steps back, in this penance the earlier one is repeated and then the next one is done in progression The complete schedule is explained by illustration

■■

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन